कोटा व बून्दी नगरों के नगरीकरण का तुलनात्मक अध्ययन

Comparative Study of Urbanization of Kota and Bundi City

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

की पीएच.डी. (भूगोल) उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

सामाजिक विज्ञान संकाय

शोधार्थी:

प्रमोद कुमार

शोध निर्देशक:

डॉ. जय प्रकाश शर्मा

सहायक आचार्य, भूगोल
सामाजिक विज्ञान विभाग
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा (राज.)

2021

Department of Social Sciences
University of Kota, Kota

M.B.S. Road, Near Kabir Circle, Kota (Rajasthan) – 324005

Dr. Jai Prakash Sharma
Assistant Professor of Geography

E-mail : jpsharma@uok.ac.in

Certificate

I feel great pleasure in certifying that the thesis entitled "कोटा व बून्दी नगरों के नगरीकरण का तुलनात्मक अध्ययन" (Comparative Study of Urbanization of Kota and Bundi City) by Pramod Kumar under my guidance. He has completed the following requirments as per Ph.D. regulations of the University.

(a) Course work as per the University rules.

(b) Residential requirment of the University (200 Days) .

(c) Regularly submitted Annual Progress Report.

(d) Presented his work in the departmental Committee.

(e) Published two research papers in referred research journal.

I recommend the submission of thesis.

Date:

Dr. Jai Prakash Sharma
Assistant Professor (Geography)
University of Kota, Kota

ANTI-PLAGIARISM CERTIFICATE

It is certified that PhD Thesis Titled **''कोटा व बून्दी नगरों के नगरीकरण का तुलनात्मक अध्ययन'' (Comparative Study of Urbanization of Kota and Bundi City)** by Pramod Kumar has been examined by with the following anti-plagiarism tools. We undertake the follows:

a. Thesis has significant new work/knowledge as compared already published or are under consideration to be published elsewhere. No sentence, equation, diagram, table, paragraph or section has been copied verbatim from previous work unless it is placed under quotation marks and duly referenced.
b. The work presented is original and own work of the author (i.e there is no plagiarism).No ideas, processes, results or words of others have been presented as author's own work.
c. There is no fabrication of data or results which have been compiled and analyzed.
d. There is no falsification by manipulating research materials, equipment or processes, or changing or minting data or results such that the research is not accurately represented in the research record.
e. The thesis has been checked using 'URKUND' Softwere and found within limits as per HEC plagiarism Policy and instructions issued from time to time.

Pramod Kumar

Name & signature of
Research Scholar
Place : Kota
Date :

Dr. Jai Prakash Sharma

Name & Signature and
Seal of Research Supervisor
Place : Kota
Date :

शोध – सार

नगरीयकरण का अध्ययन नगरो के भौतिक विकास और एक विशिष्ट जीवन शैली के रूप में किया जाता है। विद्वानों ने नगरीकरण का शहरों के भौतिक विकास और एक विशिष्ट जीवन शैली के रूप में अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन 7 अध्यायों में संकलित है :

प्रथम अध्याय में शोध विशय का सामान्य परिचय, शोध का महत्व, शोध का उद्देश्य, साहित्य पुनरावलोकन, ऑकडों का संकलन, शोध प्रविधि का विवेचन किया गया है। **द्वितीय अध्याय** में नगरीकरण की स्थितियॉ जिसमें विश्व में नगरीकरण की स्थिति (उदभव काल, विकासशील,पूर्व आधुनिक,आधुनिक काल), भारत में नगरीकरण की स्थिति, राजस्थान में नगरीकरण की स्थिति का विवेचन किया है। **तृतीय अध्याय** में शोध विशय के अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिदृश्य जिसमें कोटा बून्दी नगरो की स्थिति, उच्चावच, जलवायु, मृदा, अपवाह तंत्र वन्स्पति आदि का विश्लेशण किया गया है। आर्थिक परिचय में उधोग, व्यवसाय, कृषि, पशुधन। जनानकिकीय स्थिति में जनसंख्या, धनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता, ग्रामीण व शहरी जनसंख्या, जन्म तथा मृत्युदर। मूलभूत सुविधाऐं में भोजन, पेयजल, विधुत, शिक्षा, परिवहन संचार, स्वास्थय सेवाऐं को सम्मिलित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में कोटा में नगरीकरण की स्थिति तथा प्रवृतियॉ जिसमें एतिहासिक परिपेक्ष, आकारिकी व प्रवृत्तियाँ, भूमि उपयोग, नगर का वर्तमान स्वरूप तथा प्रभाव क्षेत्र का सविस्तार वर्णन किया गया है। **पंचम अध्याय** में बून्दी में नगरीकरण की स्थिति तथा प्रवृतियॉ जिसमें एतिहासिक परिपेक्ष, आकारिकी व प्रवृत्तियाँ, भूमि उपयोग, नगर का वर्तमान स्वरूप तथा प्रभाव क्षेत्र का सविस्तार वर्णन किया गया है। **षष्ठम अध्याय** में कोटा तथा बून्दी नगरीकरण का तुलनात्मक स्वरूप जिसमें नगरीय आकारिकी, नगरीय जनसंख्या, नगरीय व्यवसायिक गतिविधियॉ, भूमि उपयोग, नगरीय प्रभाव क्षेत्र का तुलनात्मक वर्णित किया है। **सप्तम अध्याय** में सम्पूर्ण शोधकार्य का सारांश व उसकी समस्या व सुझाव को सविस्तार वर्णित किया गया है।

ग्रन्थावली :– उपरोक्त शोध से सम्बंधित पुस्तकों की सूची ग्रन्थावली के रूप में प्रस्तुत की गई हैं।

उपरोक्त शोध अध्ययन के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुचे हैं कि विश्व तथा भारत में नगरीकरण तेजी से हो रहा है। राजस्थान राज्य में भी नगरीकरण की गति उसी अनुपात में है। राजस्थान के प्रमुख नगरों में कोटा तथा बून्दी नगरों में नगरीकरण की गति अनुपातिक रूप से धीमी रही है। कोटा नगर का उदभव बून्दी से हुआ है परन्तु समय क्रम में कोटा नगर बून्दी से तेजी से आगे निकल गया है।

CANDIDATE'S DECLARATION

I hereby, certify that the work, which is being presented in the thesis, entitled ''कोटा व बून्दी नगरों के नगरीकरण का तुलनात्मक अध्ययन'' **(Comparative Study of Urbanization of Kota and Bundi City)** in partial fulfillment of the requirement for the award of the Degree of Doctor of Philosophy, carried under the supervision of **Dr. Jai Prakash Sharma, Assistant Professeor of Geography**and submitted to the **Department of Social Sciences (Geography), in the faculty of Social Sciences, University of Kota, Kota** represents my ideas in my own words and where others ideas or words have been included. I have adequately cited and referenced the original sources. The work presented in this thesis has not been submitted elsewhere for the award of anyother Degree or Diploma from any Institutions. I also declare that I have adhered to all principles or academic honesty and integrity and have not misrepresented or fabricated or falsified any idea/data/fact/source in my submission. I understand that any violation of the above will cause for disciplinary action by the University and can also evoke penal action from the source which have thus not been properly cited or from whom proper permission has not been taken when needed.

Date: **Pramod Kumar**

This is certify that above statement made by **Pramod Kumar (**Registration No. **RS/2424/16)** is correct to the best of my knowledge.

Date: **Dr. Jai Prakash Sharma**
Signature of Supervisor
Assistant Professor (Geography)
University of Kota, Kota

प्राक्कथन व आभार

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ के लिये मैं मेरे शोध निर्देशक डॉ. जय प्रकाश शर्मा सहायक आचार्य (भूगोल) सामाजिक विज्ञान विभाग, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा के प्रति ह्रदय से आभारी हूँ जिन्होने शोध अध्ययन के दौरान लगातार उच्च मार्गदर्शन दिया तथा हर पल सकारात्मक व्यवहार एवं समयानुकूल हर संभव प्रयास किये व रचनात्मक सहयोग, सुझाव तथा समस्त कार्य का गहन अवलोकन किया। आपने इस कार्य को सरल व सकारात्मक रूप से प्रस्तुत करने हेतु सार्थक भूमिका निभायी। मैं उनके मार्गदर्शन, प्ररेणा तथा सह्रदयी व्यवहार को शब्दों में पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करने में असमर्थ हूँ। मैं उनके प्रति श्रद्धावन्त हूँ , उनके पूर्ण सहयोग एवं आशीर्वाद से मेरा यह कार्य पूर्ण हो सका। मैं आपका सदैव आभारी रहूँगा। मैं उनके परिवार का भी आभारी हूँ, जिन्होंने समय – समय पर मुझे इस कार्य को पूर्ण करने में सहयोग दिया।

कोटा विश्वविद्याालय के सामाजिक विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर ऐ.ऐ. हनफी जी, डॉ. विक्रान्त शर्मा, श्री के.आर. चौधरी का भी ह्रदय से आभारी हूँ जिन्होने मुझे प्रेरित किया।

इसके साथ–साथ मैं राजकीय महाविद्यालय, कोटा के भूगोल विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष और रिटायर प्रिंसिपल श्री पी.के. सिंघल, डॉ. एल.सी.अग्रवाल (सह–आचार्य,भूगोल), डॉ.आलोक चौहान (सहायक आचार्य,भूगोल) वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा, के बहुमूल्य मार्ग दर्शन के लिए उनका कृतज्ञ हूँ और मेरे साथियों में डॉ. बुद्धि प्रकाश गौतम, राकेश राजोरा, योगेश मेहरा का भी आभार व्यक्त करना चाहूंगा जिन्होने समय–समय पर मुझे सहयोग दिया।

मैं अपने जीवन पथ प्रणेता पिताजी स्वर्गीय श्री रमेश चन्द एवं माता पारसी बाई को यह शोध ग्रन्थ समर्पित करता हूँ, जिन्होने मुझे अच्छाई, दृढ़ आत्म विश्वास से व पूर्ण मनोबल के साथ ईमानदारी से आगे बढ़ने हेतु हमेशा प्रोत्साहित किया। साथ ही मैं मेरी तीनों बहनों और तीनों जीजाजी का भी ह्रदय के अन्तःस्थल से आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे आशीर्वाद व आर्थिक सम्बल प्रदान करते हुए , शोधकार्य पूर्ण करने हेतु प्रेरित किया।

मैं अपने सहयोग के लिए महेन्द्र सिंह सोनी को भी धन्यवाद देना चाहुँगा, जिन्होने इस कार्य को पूर्ण कराने में आरम्भ से अन्त तक मेरा साथ दिया।

मैं केन्द्रीय एवं राज्य सरकार, जिला मुख्यालय, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा, राजकीय महाविद्यालय कोटा, सांख्यिकी विभाग, भारतीय सर्वेक्षण विभाग जयपुर, सूचना केन्द्र, नगर विकास न्यास, नगर निगम कोटा के सभी विभागों को हार्दिक धन्यवाद देना

चाहता हूँ, जिन्होंने अध्ययन के लिए आंकड़ें एवं सूचनाऐं उपलब्ध कराने में सराहनीय योगदान दिया हैं।

मैं मेरे मित्र शशिकान्त कहार, अजय सोनी, विजेन्द्र शाह और सभी साथियों का आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इस शोध कार्य को पूरा करने में मेरा सहयोग किया हैं। मैं मेरे प्रिय मित्र टंकण में कुशल श्री विनीत सोनेजी के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस शोध कार्य को कम्प्यूटर तकनीक द्वारा परिश्रमपूर्वक मुद्रित करने एवं समयबद्ध कार्य को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अन्त में मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ, जिनके आशीर्वाद ने मुझे इस शोध ग्रन्थ को प्रस्तुत करने योग्य बनाया।

दिनांक :

प्रमोद कुमार

अनुक्रमणिका

क्र.स.	विषय–वस्तु	पृष्ठ सं.
	प्राक्कथन व आभार	V-XVI
	अनुक्रमणिका	
	तालिका सूची	
	मानचित्र सूची	
	आरेख/आलेख सूची	
	शब्द संक्षेपण	
1.1	अध्याय–1 : प्रस्तावना	1–15
1.2	सामान्य परिचय	
1.3	विषय का महत्व	
1.4	अध्ययन के उद्देश्य	
1.5	साहित्य का पुनरावलोकन	
1.6	आँकडों का संकलन तथा आधार	
1.7	शोध प्रविधि	
	अध्ययन योजना	
2.1	अध्याय–2 : नगरीकरण की स्थितियाँ	16–48
2.2	विश्व में नगरीकरण की स्थिति	
	नगरीकरण	
	(क) उदभव काल	
	(ख) विकासशील अवस्था	
	(ग) पूर्व आधुनिक काल	
2.3	(ध) आधुनिक काल	
2.4	भारत में नगरीकरण की स्थिति	
	राजस्थान में नगरीकरण की स्थिति	

3.1	अध्याय–3 : अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिदृश्य	49–93
	भौतिक स्थिति	
	(क) अवस्थिति	
	(ख) उच्चावच	
	(ग) जलवायु	
	(घ) मृदा	
	(ड़) अपवाह तन्त्र	
	(च) वनस्पति	
3.2	आर्थिक परिचय	
	(क) उधोग	
	(ख) व्यवसाय	
	(ग) कृषि	
	(घ) पशुधन	
3.3	जनांकिकीय स्थिति	
	(क) जनसंख्या	
	(ख) धनत्व	
	(ग) लिंगानुपात	
	(घ) साक्षरता	
	(ड़) ग्रामीण व शहरी जनसंख्या	
	(च) जन्म तथा मृत्युदर	
3.4	मूलभूत सुविधाऐं	
	(क) व्यवसाय	
	(ख) कृषि	
	(ग) भोजन	
	(घ) पेयजल	
	(ड़) विधुत	

	(च) शिक्षा	
	(छ) परिवहन संचार	
	(ज) स्वास्थय सेवाऐं (चिकित्सा)	
	अध्याय–4 : कोटा में नगरीकरण की स्थिति तथा प्रवृत्तियाँ	94–153
4.1	ऐतिहासिक परिपेक्ष	
4.2	आकारिकी व प्रवृति	
4.3	भूमि उपयोग	
4.4	नगर का वर्तमान स्वरूप तथा प्रभाव क्षेत्र	
	अध्याय–5 : बून्दी में नगरीकरण की स्थिति तथा प्रवृत्तियाँ	154–206
5.1	ऐतिहासिक परिपेक्ष	
5.2	आकारिकी व प्रवृति	
5.3	भूमि उपयोग	
5.4	नगर का वर्तमान स्वरूप तथा प्रभाव क्षेत्र	
	अध्याय–6 : कोटा तथा बून्दी नगरीकरण का तुलनात्मक स्वरूप	207–222
6.1	नगरीय आकारिकी	
6.2	नगरीय जनसंख्या	
6.3	नगरीय व्यवसायिक गतिविधियाँ	
6.4	भूमि उपयोग	
6.5	नगरीय प्रभाव क्षेत्र	

	अध्याय–7 : सारांश (पुनरावलोकन)	223–230
	नगरीकरण की प्रमुख समस्याऐ कोटा बून्दी के	
7.1	सन्दर्भ में	
7.2	सुझाव	
7.3	निष्कर्ष	
	ग्रन्थावली	231–241
	परिशिष्ट	242–254

क्र.स.	तालिका सूची	पृष्ठ सं.
2.1.1	विश्व की कुल एवं नगरीय जनसंख्या वृद्धि (1800–1950)	18
2.1.2	महाद्वीपो के अनुसार नगरीय जनसंख्या वृद्धि एवं दर (1980–2000)	20
2.1.3	विश्व में नगरीकरण का प्रतिरूप	21
2.1.4	प्रमुख प्रदेशों द्वारा नगरीकरण की दर	22
2.1.5	विश्व नगरीकरण स्तर एवं प्रोदेशिक योगदान –2011	22
2.1.6	प्रमुख देशों में नगरीकरण स्तर –2011	25
2.1.7	2025 में विश्व के 10 वृहतम् नगर	26
2.3.1	भारत में नगरीकरण (1901–2011)	40
2.3.2	भारत मे दसलाखी नगरों की वृद्वि (1901–2011)	42
2.4.1	राजस्थान में नगरीकरण की प्रवृति (1901 – 2011)	44
2.4.2	राजस्थान मे नगरीकरण का स्तर	46
3.1.1	कोटा शहर का वार्षिक तापमान का परिवर्तन स्वरूप (2011 से 2015 तक)	56
3.1.2	कोटा शहर : औसत मासिक तापमान (2016)	57
3.1.3	कोटा शहर : वार्षिक वर्षा का परिवर्तित स्वरूप(2011–2015)	58
3.1.4	कोटा शहर : मासिक औसत वर्षा (मि.मी. में)	58
3.1.5	जिला बून्दी : वार्षिक वर्षा प्रतिरूप	60
3.1.6	सामान्य वर्षा (मी.मी.)	61
3.1.7	मृदा के प्रमुख संघटक	62
3.1.8	जिला बून्दी : वन एवं वनो का वर्गीकरण (2015)	67
3.2.1	कोटा शहर : स्थित वृहद एवं मध्यम श्रेणी के उद्योग	68
3.2.2	कोटा शहर के लघु उद्योगों के प्रकार एवं इकाईयों की संख्या	69
3.2.3	बून्दी में रीको द्वारा विकसित औद्योगिक क्षेत्र	70
3.2.4	व्यावसायिक संरचना–बून्दी–1991–2008	72
3.3.1	कोटा नगर की जनसंख्या वृद्धि (1901–2011)	74

3.3.2	बून्दी नगर में जनसंख्या वृद्वि की प्रवृत्ति–बून्दी–1901–2011	76
3.3.3	कोटा नगर का क्षेत्रफल, जनसंख्या, घनत्व व लिंगानुपात (2011)	77
3.3.4	कोटा नगर : साक्षरता (1961–2011)	78
3.3.5	बून्दी नगर की साक्षरता दर	79
3.3.6	कोटा नगर में पंजीकृत जन्म,मृत्यु (संख्या)	79
3.3.7	बून्दी नगर में पंजीकृत जन्म,मृत्यु (संख्या)	80
3.4.1	कोटा नगर व्यवसायिक संरचना (1991–2001)	81
3.4.2	जलापूर्ति कनेक्शन–कोटा–2012	85
3.4.3	जलापूर्ति–बून्दी–2008	85
3.4.4	विद्युत कनेक्शन एवं उपभोग–2012–कोटा	86
3.4.5	विद्युत आपूर्ति–बून्दी–2008	87
3.4.6	शैक्षणिक संरचना–कोटा–2012	88
3.4.7	शैक्षणिक संरचना–बून्दी–2008	89
3.4.8	विद्यमान चिकित्सा सुविधाएँ–कोटा–2012	93
4.2.1	कोटा नगर की जनसंख्या वृद्धि की प्रवृति (1901–2011)	101
4.3.1	भू–उपयोग–कोटा–2012	102
4.3.2	कृषि उपजमण्डी में कृषि उत्पादों की आवक (हजार मेट्रिक टन में)	108
4.3.3	प्रस्तावित वाणिज्यिक क्षेत्रों का विवरण – कोटा – 2031 (2023 के नगरीकरण योग्य क्षेत्र के बाहर अतिरिक्त प्रस्तावित क्षेत्र)	109
4.3.4	विद्यमान औद्योगिक इकाईयां एवं कर्मचारियों की संख्या – 2012	112
4.3.5	औद्योगिक गतिविधियों का विवरण – कोटा–2031	113
4.3.6	प्रस्तावित औद्योगिक क्षेत्र–कोटा–2031 (2023 के नगरीकरण योग्य क्षेत्र के बाहर अतिरिक्त प्रस्तावित क्षेत्र)	114
4.3.7	सरकारी एवं अर्द्व सरकारी कार्यालय – कोटा 2012	115
4.3.8	शैक्षणिक संरचना–कोटा–2012	120
4.3.9	जलापूर्ति कनेक्शन–कोटा–2012	124
4.3.10	विद्युत कनेक्शन एवं उपभोग–2012–कोटा	126

4.3.11	प्रस्तावित शैक्षणिक संरचना–कोटा–2031	127
4.3.12	प्रस्तावित भू–उपयोग– कोटा 2031	136
4.4.1	कोटा नगर में वार्ड़ो के अनुसार जनसंख्या (2011)	149
5.2.1	बून्दी नगर में जनसंख्या वृद्वि की प्रवृत्ति–बून्दी–1901–2011	160
5.3.1	विद्यमान भू–उपयोग–बून्दी–2008	161
5.3.2	बून्दी कृषि उपज मण्डी में जिन्सों की आवक वर्ष : 2007–2008	166
5.3.3	बून्दी में रीको द्वारा विकसित औद्योगिक क्षेत्र	167
5.3.4	शैक्षणिक संरचना–बून्दी–2008	170
5.3.5	प्रस्तावित भू–उपयोग– बून्दी 2033	174
5.3.6	प्रस्तावित आवासीय घनत्ववार क्षेत्रफल एवं जनसंख्या	178
5.3.7	प्रस्तावित प्रमुख वाणिज्यिक क्षेत्रों का विवरण–बून्दी–2033	180
5.3.8	प्रस्तावित सामुदायिक केन्द्रों का विवरण–बून्दी–2033	181
5.3.9	प्रस्तावित सामुदायिक केन्द्रों का विवरण–बून्दी–2033	183
5.3.10	प्रस्तावित शैक्षणिक सरंचना – बून्दी–2033	189
5.3.11	विद्यमान सड़कों का प्रस्तावित मार्गाधिकार–बूंदी–2008	193
5.3.12	विभिन्न मार्गो की प्रस्तावित मानक चौड़ाई–बूंदी–2033	195
5.4.1	बून्दी नगर में वार्ड़ो के अनुसार जनसंख्या (2011)	203
6.2.1	कोटा शहर की जनसंख्या वृद्धि (1901–2011)	210
6.2.2	बून्दी नगर में जनसंख्या वृद्वि की प्रवृत्ति–बून्दी–1901–2011	212
6.3.1	व्यावसायिक संरचना कोटा 2001–2011	213
6.3.2	व्यावसायिक संरचना–बून्दी–1991–2008	215
6.3.3	बून्दी में रीको द्वारा विकसित औद्योगिक क्षेत्र	216
6.4.1	भू–उपयोग–कोटा–2012	217
6.4.2	विद्यमान भू–उपयोग–बून्दी–2008	218

क्र.स.	मानचित्र सूची	पृष्ठ सं.
1	कोटा नगर – अवस्थिति मानचित्र	51
2	बून्दी नगर – अवस्थिति मानचित्र	52
3	कोटा नगर – उच्चावच मानचित्र	54
4	बून्दी नगर – उच्चावच मानचित्र	55
5	कोटा नगर – अपवाह मानचित्र	64
6	बून्दी नगर – अपवाह मानचित्र	65
7	कोटा नगर – भूमि उपयोग 2012	105
8	कोटा नगर – भूमि उपयोग (प्रस्तावित) 2031	139
9	कोटा नगर – वार्ड़ अवस्थिति	151
10	बून्दी नगर – भूमि उपयोग 2008	163
11	बून्दी नगर – भूमि उपयोग (प्रस्तावित) 2033	177
12	बून्दी नगर – वार्ड़ अवस्थिति	204

क्र.स.	आरेख / आलेख सूची	पृष्ठ सं.
1	विश्व नगरीकरण स्तर –2011	23
2	प्रादेशिक योगदान –2011	23
3	भारत में नगरीकरण (1901–2011)	40
4	राजस्थान में नगरीकरण की प्रवृति (1901 – 2011)	44
5	कोटा नगर की जनसंख्या वृद्धि (1901–2011)	74
6	बून्दी नगर में जनसंख्या वृद्वि की प्रवृत्ति–बून्दी (1901 – 2011)	76
7	भू–उपयोग–कोटा–2012	103
8	प्रस्तावित भू–उपयोग– कोटा–2031	137
9	विद्यमान भू–उपयोग– बून्दी–2008	161
10	प्रस्तावित भू–उपयोग– बून्दी 2033	175

शब्द संक्षेपण

ए.ए.ए.जी.	:	एनाल्स ऑफ द एसोसिएशन ऑफ अमेरिकन ज्योग्राफर्स
बी.एस.यू.पी.	:	बेसिक सर्विसेज फॉर अरबन पूअर
सी.बी.डी.	:	सेन्ट्रल बिजनीस डिस्ट्रक्ट
सी.एस.डी.	:	सेन्ट्रलशॉपिंग डिस्ट्रीक्ट
जी.पी.ओ.	:	जनरल पोस्ट ऑफिस
जे.एन.एन.यू.आर.एम.	:	जवाहरलाल नेहरू नवीनीकरण मिशन
एन.एच.	:	नेशनल हाईवे
आर.सी.सी.	:	रो सीमेन्ट कन्स्ट्रक्शन
आर.एस.	:	रेलवे स्टेशन
यू.आई.टी.	:	अरबन इम्प्रुवमेन्ट ट्रस्ट
यू. एन. ई. पी.	:	यूनाईटेड़ नेशन एनवायरनमेंन्ट प्रोग्राम
एन.आर.सी.पी.	:	नेशनल रिवर कनजरवेशन प्लान

अध्याय – 1

प्रस्तावना

1.1 सामान्य परिचय :–

नगरीयकरण का अध्ययन नगरो के भौतिक विकास और एक विशिष्ट जीवन शैली के रूप में किया जाता है। विद्वानों ने नगरीकरण का शहरों के भौतिक विकास और एक विशिष्ट जीवन शैली (नगरी) के रूप में अध्ययन किया है। पश्चिमी देशों में इस क्षेत्र में बहुत अधिक काम किया गया है। परन्तु भारत में नगरीकरण का अध्ययन अभी विकास की अवस्था में है।

पिछली दो शताब्दियों के दौरान ''औद्योगिक क्रान्ति'' तीव्र विकास एवं तकनीकी विकास के कारण समाज और शहर की पहचान में अनेक परिवर्तन हुए, क्योंकि शहरों में इस अवधि में अनेक परिवर्तन हुए। नगरो का इतिहास नगरीकरण का अध्ययन है, इस अवधि विशेष में शहरी केन्द्र के विस्तार और उन कारणों का अध्ययन किया जाता है जिनसे उनका विकास और अवनयन होता है। इसमें शहरों द्वारा उत्पन्न पर्यावरण का उससे सम्बन्धित सामान्य आयामों के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है, यह प्राकृतिक पर्यावरण, अर्थव्यवस्था, राजनीतिक तंत्र, सामाजिक ताने–बाने और शहरों में रहने वाले लोगों के सोच–विचार का आयाम है।

'नगर' के मुख्यतः दोलक्षण होते है – पहला, एक सीमित स्थान पर जनसंख्या का उच्च घनत्व और दूसरा जनसंख्या का मुख्यतः गैर–कृषक विशेषकर गैर–खेतिहर स्वरुप। शहरी जनसंख्या में वे लोग भी शामिल थे जो ग्रामीण वस्तुओं का शहर के बाजारों में क्रय–विक्रय करते थे। इस शोध में हम भारत के इस विषय पर अब तक किये गये शोधों के आधार पर तत्कालीन शहरी संरचना की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करेंगे।

गाँव के विपरीत शहरों की दो प्रमुख विशेषताओं पर अब आम सहमति है। प्रथम तो यह कि शहर एक घनी आबादी वाला ऐसा क्षेत्र था, जिसका विस्तार सीमित और निर्धारित था। दूसरा यह कि यहाँ की जनसंख्या प्रमुखतः गैर–कृषि आधारित थी। शहर की परिभाषा जनसंख्या और अधिकांश निवासियों के गैर–कृषि व्यवसाय के आधार पर देना सम्भव हो गया है। इस प्रकार शहरों में व्यक्ति–स्थान–अनुपात सीमित था और यहाँ के निवासी विविध प्रकार के व्यवसायों में कार्यरत थे। मानवीय इतिहास में शहरों के विकास को एक क्रान्ति के रूप में देखा गया है जिससे सभ्यता और इतिहास की शुरुआत हुई है।

भौगोलिक शोध से पिछले दो दशकों से नवीन प्रवृत्ति का विकास हुआ है। वर्तमान में भूगोल केवल क्षेत्रीय विशेषताओं एवं विभिन्नताओं के अध्ययन का विज्ञान ही नहीं है बल्कि यह विभिन्न प्राकृतिक एवं मानव निर्मित घटकों एवं पारिस्थितिकीय प्रभाव के अध्ययन को सम्मिलित करता है।

21वीं सदी के प्रभाव से किसी भी क्षेत्र में समग्र विकास का अध्ययन भूगोलवेत्ताओं का मुख्य उद्देश्य बन गया है। अध्ययन के अन्तर्गत उन सभी भौगोलिक तत्त्वों का विश्लेषण आवश्यक होताहै जिससे 'शहरी क्षेत्र में नगरीयकरण का सामाजिक एवं आर्थिक पर्यावरण पर प्रभाव' सुनिश्चित किया जा सकता है।

नगर आर्थिक क्रियाकलापों के केन्द्र होते हैं, जो विकास को गति प्रदान करते हैं। नगर पुरातन काल से आधुनिक काल तक मानवीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रमुख स्थल रहें हैं। नगर किसी भी देश की बड़ी आबादी को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, औद्योगिक, व्यापारिक एवं पारिस्थितिकी विकास के आधार स्तम्भ माने जाते हैं। अतः नगर किसी देश के विकसित व अविकसित होने का ज्ञान कराते हैं।

नगरीयकरण मानवता के संदर्भ में एक विकसित प्रारूप हैं। जिसको अनेक अर्थों में प्रयोग किया जाता रहा हैं। समाजशास्त्र के अनुसार ग्रामीण समाज का नगरी वातावरण में परिवर्तित होना या ग्रामीणों द्वारा नगरीय मूल्यों को अपनाना मानवशास्त्र के क्षेत्र में लोक संस्कृति का शहरी संस्कृति में परिवर्तित होना ही नगरीकरण हैं। जनांकिकीय संदर्भ में नगरीकरण वह प्रक्रिया हैं जिसके अन्तर्गत जनसंख्या विस्फोट के कारण शहर की जनसंख्या में वृद्धि होती हैं और ग्रामीण क्षेत्र से शहर की ओर प्रवास होता हैं। भूगोल में प्राकृतिक पर्यावरण में बदलाव तथा नये शहरों की उत्पत्ति को नगरीकरण कहा जाता हैं।

सामान्यतया नगरीकरण का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो अधिवासित प्रारूप में गत्यात्मक परिवर्तन लाता है यह परिवर्तन मुख्यतः जनसंख्या आकार, संरचना और कार्यिक क्षेत्र में होता हैं। जब ग्रामीण जनसंख्या नगरों की ओर प्रवास करती है या नगरों की जनसंख्या में प्राकृतिक तौर पर आशातीत वृद्धि होती हैं। नगरीकरण का अर्थ प्राथमिक उत्पादक व्यवसायों से तीव्रगति से द्वितियक तृतीयक या चतुर्थक उत्पादक व्यवसायों की ओर बढ़ने की प्रवृति से भी हैं। भूगोलवेत्ता ट्रिवार्था के अनुसार''नगरीयकरण एक चक्रीय प्रक्रिया है जिससे होकर राश्ट्र कृषि समाज से औद्योगिक समाज की ओर अग्रसर होते हैं।''

नगर विशेश के क्षेत्रफल जनसंख्या, व्यवसाय, संस्कृति तथा नगर की विभिन्न सुविधाओं की प्रवृति में होने वाले परिवर्तन तथा वृद्धि नगरीकरण की प्रवृत्ति का आधार माना जाता है। लेकिन जनसंख्या के अलावा अन्य तत्त्वों जैसे– व्यवसाय, संस्कृति, जनसुविधाओं के आँकड़ें हमें सुगमता से प्राप्त नहीं होते है। अतः नगरीकरण के लिये जनसंख्या को आधार माना जाता है। सामान्यतया कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि को ही नगरीकरण की वृद्धि का सूचक माना जाता है। नगरीकरण की प्रक्रिया एक चक्रीय प्रक्रिया है।

नगरीय जनसंख्या में वृद्धि दो रूपों में होती हैं :–

1. प्राकृतिक वृद्धि अर्थात् जन्म व मृत्यु दर में अन्तर के कारण।
2. कुल स्थानान्तरण अर्थात् नगरोन्मुख जनसंख्या का प्रवास।

शोध विषय का चयन –

कोटा व बून्दी नगरों में लोग भौतिकवादी एवं आधुनिकतावादी जीवन शैली की लालसा व ग्रामीण क्षेत्र में जीवनयापन में परेशानियों के कारण रोजगारोन्मुख आजीविका की तलाश में नगरीय क्षेत्र की ओर प्रवासित/स्थानान्तरित हो रहे है। जिसके कारण शहरी क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि का दबाव बढ़ने से लोगों को आधारभूत सुविधाओं से वंचित होना पड़ रहा है। इन समस्याओं से भोजन व आवास की समस्या, परिवहन की समस्या, शुद्ध पेयजल, निर्बाध विद्युतापूर्ति की समस्या, पारिस्थितिकी पर्यावरण की गुणवत्ता में गिरावट की समस्या, भमि उपयोग का बदलता स्वरूप, गिरते सामाजिक मूल्य, नैतिक मूल्यों का अवनयन, संयुक्त परिवारों का विघटन, स्लम बस्तियों के निर्माण से अपराध में वृद्धि की समस्या, बढ़ती बेरोजगारी, कचरे का संकेन्द्रण व जल निकासी की समस्या, दुर्घटनाओं में आशातीत वृद्धि चम्बल नदी के जलीय प्रदूशण से उत्पन्न समस्या इत्यादि कोटा व बून्दी नगरों की वैश्विक छवि को धूमिल कर रही है।

वर्तमान में कोटा व बून्दी नगर अन्य महानगरों की ही तरह ऊश्मीय द्वीप में परिवर्तित हो रहे है। बढ़ता औद्योगिकरण शहरीकरण का नवीनतम प्रतिरूप है जो पारिस्थितिकी तंत्र का विघटन कर रहा है। पर्यावरण असंतुलन की नवीन घटना की वजह से चम्बल नदी के जलीय प्रवाह में परिवर्तन की समस्या उत्पन्न हो गई है।

कोटा व बून्दी नगरों को मेगासिटी और औद्योगिक पार्क क्षेत्र में सम्मिलित करने की वजह से तथा शहर की ऐतिहासिकता और नगरीकरण के प्रभावों से आकर्शित होकर मैनें अपने विषय ''कोटा व बून्दी नगरों के नगरीकरण का तुलनात्मक अध्ययन''का अध्ययन करने का निश्चय किया, क्योंकि नगरीयकरण में वृद्धि होने से नगरीय क्षेत्र (भौगोलिक परिवेश) पर प्रभाव का अध्ययन कर भविश्य में समस्याओं के समाधान हेतु अपने सुझाव देकर, सुधार लाने का सार्थक प्रयास किया जा सकता हैं।

1.2 विषय का महत्व :–

नगरीकरण का स्तर किसी भी देंश के विकास स्तर का सूचक माना जाता है इसलिए जिस देश मेंनगरीकरण का प्रतिशत अधिक होता है उसे अधिक विकसित माना जाता रहा है इसलिए नगरीकरण तथा इससे सम्बन्धित अध्ययनों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है।

नगर के निर्माण में उसके भूगोल का महत्वपूर्ण योगदान होता हैं। नगर अपने वातावरण में मानव निर्मित दृश्य का जीता–जागता नमूना होता है। उस स्थान की भौगोलिक विशेशताएॅ नगर पर प्रभाव डालती है। किसी नगर की मुख्य विशेशता यह समझी जाती है कि उसके बसाव–स्थान पर कहॉ–कहॉ से रास्ते आकर मिलते है। नगर के ऊपर उसके वातावरण में निहित संसाधन व सम्पनता का प्रभाव पड़ता है। ये दोनों नगर के विस्तार में प्रभाव डालने वाली प्रमुख बातें होती है।नगर को किसी स्थान पर बनाये रखने में सबसे महत्वपूर्ण उसकी स्थिति है।

प्रत्येक नगर एक–सा नहीं होता वह उत्पति, स्थिति,आकार,कार्यो,आकारिकी आदि की दृश्टि से कुछ न कुछपरस्पर भिन्नता रखता है। नगरों का वर्गीकरण कार्यों के आधार पर सबसे अधिक महत्व रखता है। इस विषय में अनेक विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किये है। यद्यपि सभी नगर अकृषित कार्यो के लिये महत्व रखते है, लेकिन इनका अनुपात सब नगरों में एक –सा नहीं मिलता तथा साथ–साथ इन अकृषित कार्यो में शामिल कार्यो के अनुपात में भी भिन्नता मिलती है। कोई नगर व्यापारिक कार्यो के लिए महत्व रखता है, तो कोई औधोगिक कार्यो के लिए,तो कोई परिवहन एवं संचार कार्यो का केन्द्र है। अतः नगरीय भूगोल में कार्यात्मक वर्गीकरण पर जोर दिया है। नगर छोटा है या बड़ा यह उसके आकार द्वारा ही नही जाना जाता बल्कि यह उसमें पाये जाने वाले केन्द्रीय कार्यो पर निर्भर करता हैं।

प्रस्तुत शोध से कोटा व बून्दी नगरों की जनसंख्या के वर्तमान स्वरूप स्थिति का पता लगेगा। कोटा व बून्दी नगरों के नगरीकरण के तुलनात्मक अध्ययन से दोनों नगरों की सुविधाओं एवं समस्याओं का निराकरण किया जा सकेगा। नगरों के नगरीकरण के कारणों को समझा जा सकेगा साथ ही कोटा नगर के विकास का प्रभाव का लाभ बून्दी नगर पर भी देखने को मिलेगा। इस शोध से नगरीय विकास के लिए नई दिशा प्रदान होगी और नगर एक सुविकसित नगर के रूप में उभर कर सामने आयेंगे।

शोध की परिकल्पनाएँ –

- कोटा व बून्दी नगरों में नगरीकरण के कारण जनसंख्या वृद्धि का दबाव बढ़ता जा रहा हैं।
- नगरीकरण के कारण नगरीय आकरिकी के साथ भूमि उपयोग में परिवर्तन हो रहा हैं।
- नगरीकरण से नगरीय जनसंख्या का व्यावसायिक संरचना में परिवर्तन हो रहा हैं।
- नगरीकरण से पर्यावरणीय समस्याओं में वृद्धि हो रही है।

1.3 अध्ययन के उद्देश्य :–

नगरों का इतिहास अत्यन्त प्राचीन एवं रोचक है। नगर सबसे पहले कब बनें,यह अभी तक विवाद का विषय है। जब से नगर बने तब से लेकर आज तक उनके स्वरूप तथा कार्यो में परिवर्तन होते रहे है। ए.बी.गैलियन का कहना है कि प्रारम्भ में मानव को दो अवस्थाओं में से गुजरना पड़ा। इनमें से एक अवस्था पूर्ण पाशाण युग में हुई। इस समय मानव गुफाओं में से निकलकर बाहर खुले क्षेत्र में आया जहॉ उसने पेडो की शाखाओं व पतों की सहायता से झोपड़ियॉ बनायी और उसका यह कदम ही नगरीकरण की दशा में सबसे पहला कदम था। उतर पाशाण युग में मानव ने खेती करना,पशुओ को पालना शुरू कर दिया। वह एक स्थान पर प्रेम की भावना के साथ परिवार के रूप में रहने लगा। इस तरह से इस कृशक समुदाय ने सुरक्षा की भावना एक साथ रहकर ग्रामों के निर्माण में योग दिया। इन ग्रामों का बसाव–स्थान प्राकृतिक विपदाओं से पूर्णतया सुरक्षित था। उसने बसाव स्थानों के रूप में उच्च स्थलों,द्वीपों व प्रायद्वीपों को चुना। सबसे प्राचीन गॉव स्विस लेंक में पाइल्स पर बसा मिलता है। इन गॉवों ने ही विभिन्न कारणों से वर्तमान में नगरों का रूप धारण कर लिया है तथा वर्तमान में इनमें त्रीव नगरीकरण की प्रवृतियॉ दिखाई देती है।

इसी आधार पर प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैः–

1. नगरों के भौतिक एवं सांस्कृतिक स्वरूप का अध्ययन।
2. नगरीकरण एवं नगरीय अभिवृद्धि की प्रवृतियों के विभिन्न तथ्यों का क्षेत्रीय निरूपण।
3. नगरीकरण एवं बढती जनसंख्या की प्रवृतियों का क्षेत्रीय अध्ययन।
4. नगरीकरण की वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारकों एवं नगरीकरण के विकास की क्रमिक अवस्थाओं का क्षेत्र के परिपेक्ष्य में विश्लेशण एवं परीक्षण।
5. औधोगिकरण एवं यातायात के साधनों की त्रीवता का नगरीकरण पर प्रभाव।
6. नगरीकरण की प्रवृतियों का नगरीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव।
7. नगरीकरण के कारण नगर के सतत विकास पर प्रभाव।
8. सम्पूर्ण अध्ययन के पश्चात नगरीकरण की समस्याओं के सन्दर्भ में उचित सुझाव/नियोजन कार्य योजना प्रस्तुत करना।

1.4 साहित्य का पुनरावलोकन :–

भारत में नगरीय भूगोल के अध्ययन की शुरूआत का श्रेय मद्रास को जाता है। 1927 में सी.एस. श्रीनिवासाचारी ने मद्रास नगर के ऐतिहासिक विकास से अपने अध्ययनों की शुरूआत की। 1930 में डानने अपनें लेखों में अनेक दक्षिण भारतीय नगरों का अध्ययन प्रस्तुत किया। 1941 में कूरियनने नगर में जनसंख्या वितरण पर अपने विचार प्रकाशित कराए। सुब्रमण्यम ने तमिलनाडु के नगरों पर एक महत्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया। सी. ए. के. राव ने प्राचीन तथा मध्ययुगीन भारत में नगर नियोजन के बारे में एक अध्ययन प्रस्तुत किया। 1941 में देशपाण्डेने मुम्बई प्रांत के नगरों के विकास के प्रतिरूपो तथा नगरीकरण पर लेख प्रस्तुत किया। 1950 में स्पेट ने गंगा मैदान के पॉच नगरों–कानपुर,लखनऊ,आगरा,वाराणसी और अलीगढ़ का एकतुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। 1976 में पी.सी.अग्रवाल ने दुर्गा–भिलाई नगरीय समूह की आकारिकी एवंवृद्धि पर लेख प्रस्तुत किया। 1983 में एन. आर्शीवाद ने भारत के नगरों में गरीब व्यक्तियों के लिए मकानों की समस्या पर प्रकाश डाला। 1972 में आशीश बोस ने भारत और पाकिस्तान में लधु आकार के नगरों का नगरीकरण प्रक्रिया में योगदान पर लेख प्रस्तुत किया। 1975 में के.के.खाटूने बडोदा की गंदी बस्तियों पर विचार प्रकट किए। 1978 में जी.एच.कोगी के कर्नाटक के नगरों काकार्यात्मक वर्गीकरण प्रस्तुत किया। 1981 में जी.डी.सटलस ने कोयम्बटूर नगर का उदाहरण लेते हुए महानगरों में भूमि की बदलती हुई कीमतों पर प्रकाश डाला।

दिल्ली विश्वविद्यालय में एस.एस.भाटिया ने मार्क जेफरसन के प्राइमेंट नगर की विचारधारा की विवेचना की। 1962 में एम.पी.ठाकोर ने दिल्ली के नगरीय भूगोल पर अपना शोध ग्रन्थ लन्दन विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया। 1968 में सुन्दरम व चन्द्रशेखर ने भारतीय नगरों की आकारिकी पर एक लेख प्रस्तुत किया। सुदेश नांगियाने दिल्ली महानगरीय प्रदेश पर अपना एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित कराया। 1978 में एस.एस.शफी ने ग्रामीण–नगरीय सांत्यतता पर अपने विचार प्रस्तुत किए। 1978 में आर.पी मिश्रा ने मिलियन सिटिज इन इण्डिया पर एक ग्रन्थ का प्रकाशन कराया। 1958 में आई.एन.चावला ने पंजाब मैदान में नगरीय जनसंख्या के विकास की प्रवृतियों का अध्ययन किया। 1963 मेंचण्डीगढ के गोपाल कृश्णन ने चण्डीगढ का अमलैण्ड सीमांकित किया। 1958 में एल.आर.सिंहने नगर नियोजन कार्य में भूगोलवेताओं के महत्व को ऑका। 1961 में आर.एल.द्विवेदीने 1980 में पटना की जनांकिकी संरचना व पारिस्थितिकी पर प्रकाश डाला। 1961 मेंएच.एफ.हर्ट ने उतर प्रदेश के नगरीय

विकास पर शोध ग्रन्थ प्रस्तुत किया। आगरा में ए.आर.तिवारी ने लन्दन विश्वविद्यालय में आगरा नगर के नगरीय भूगोल पर शोध ग्रन्थ प्रस्तुत किया।

एम.एन.निगम ने लखनऊ के नगरीय भूगोल तथा एस.आर.बागला ने मुम्बई के नगरीय भूगोल पर अपना शोध ग्रन्थ आगरा विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया। मधुसूदन सिंह ने 1962 में मेरठ नगर व उसका अमलैण्ड पर शोध ग्रन्थ प्रस्तुत किया। एस.एस.श्री वास्तव ने फिरोजाबाद नगर व उसकी कार्यात्मक संरचना पर महत्वपूर्ण शोध ग्रन्थ प्रस्तुत किया,तथा 1970 में सुधा सक्सेना ने उतर प्रदेश के नगरीकरण पर अपने शोध ग्रन्थ को प्रकाशित करवाया। सहारनपुर के एस.सी.बंसल ने सहारनपुर नगर व उसके नगर प्रदेश पर अपना शोध ग्रन्थ 1972 में मेरठ विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया।

राजस्थान विश्वविद्यालय में एल.एन.उपाध्याय ने अजमेंर नगर पर अपना शोध ग्रन्थ प्रस्तुत किया। 1965 में अजमेर की आंतरिक संरचना पर लेख प्रस्तुत किया।1964 में एस.डाबरिया ने उदयपुर के ऐतिहासिक विकासपर एक लेख प्रकाशित किया।1964 में ही ए.एन. भट्टाचार्य व आर.एन.लोड़ा ने चितौडगढ के ऐतिहासिक विकास पर प्रकाश डाला। 1966 में जोधपुर नगर के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन पी.सी.कुमावतने प्रस्तुत किया। इसी वर्ष एल.एन. वर्मा ने अरावली प्रदेश में नगरों के बसाव – स्थानो के प्रकार पर अपने विचार प्रस्तुत किये। इन्द्रपाल गुप्ता ने नगरीय भूगोल से सम्बधित कई विषयों पर अपनेविचार प्रकट किये तथा जयपुर नगर की आकारिकी व उसके भौगोलिक विकास पर प्रकाश डाला। दिसम्बर 1987 में राजस्थान लोंक प्रशासन राजकीय संस्थान की प्रोफेसर राज बाला ने राजस्थान राज्य के नगरों की प्रशासकीय सीमाओं में परिवर्तन पर अपना एक लेख प्रस्तुत किया।

कुसुमलता तनेजा ने भारतीय नगरों की आकारिकी पर अपना शोध ग्रन्थ प्रकाशित कराया। के.के.दुबे ने केवल नगरों की भूमि के उपयोग एवं दुरूपयोग पर अपना अध्ययन प्रस्तुत किया। इसके अलावा 1964 में सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने भागलपुर,1965 में ए.रमेश ने तमिलनाडु,1968 में दीपाथापन ने जमशेदपुर,1969 में पी.एस.तिवारी ने मध्य प्रदेशों के नगरों,1969 में ओंकार सिंह ने उतर प्रदेश के नगरों,1967 में एन.बी.के.रेडडी ने पूर्वी कृश्णा गोदावरी प्रदेश के नगरों के कोटि प्रकार नियम पर अपनें शोधग्रन्थ एवं लेख प्रस्तुत किए। 1978 में ए.एन.बोस ने कोलकाता और ग्रामीण बंगाल लधु सेक्टर पर एक लेख प्रस्तुत किया। 1981 में पी.के.बोस ने मैसूर नगर अभिगमनकर्ताओं के काम पर आने के लिए प्रयोग किये जाने वाले यात्रा साधन पर एक लेख प्रकाशित कराया।

1980 में मुमताज खान ने राजस्थान के नगरीय केन्द्रो के आकार, परस्पर दूरी,एवं पदानुक्रम पर अपनें लेख प्रकाशित कराये। 1973 व 1980 में सुमति कुलकर्णी ने नासिक नगर की

तुलना अन्य समान आकार के भारतीय नगरों के साथ की तथा नासिक नगर में शॉपिगं केन्द्रों के स्थापन प्रारूपपर प्रकाश डाला। 1982 में बी.ठाकुरने जनसंख्या एवं बस्ती नियोजन के लिए सांख्यकीय तकनीकों का प्रतिपादन किया व कोलकाता की भूगोल पत्रिका में अपना लेख प्रकाशित कराया।

नवीनतम प्रकाशनों में जो लेख–वाराणसी की भूगोल पत्रिका में प्रकाशित हुए है उनमें जून 2003 में शाहनाज परवीन का लेख उतर प्रदेश में नगरीकरण की गतिशीलता उल्लेखनीय है। दिसम्बर 2003 के अंकमें ड़ी. गोअनामणि व उनके साथियों ने चेन्नई महानगर में गंदी बस्तियों के वितरण व उनकी पर्यावरणदशाओं पर प्रकाश डाला है। मार्च–जून 2004 के अंक में पैट्रिसिया बोनार्ड ने अफ्रीका में नगरीय विकास सेआने वाली कठिनाईयों व समस्याओं पर प्रकाश डाला है। 2010 में कीर्ति जादोन ने कोटा जिले के विकासमें परती भूमि प्रबन्धन एवं जलग्रहण क्षेत्र विकास का योगदान में अपना अध्ययन प्रस्तुत किया। 2011 में सुनील कुमार वर्मा ने श्री गंगानगर जिलें में नगरीय अभिवृद्धि केन्द्रों के विकास का भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत किया।

डेविस (1948**)** ने **दी अर्थ एण्ड मैन** में मनुष्य एवं मानव वातावरण के सम्बन्धों को स्पष्ट करते हुए बताया कि मानव किस प्रकार संसाधनों पर आश्रित रहता है और उसकी क्रियायें उसी अनुरुप बनती हैं तथा पृथ्वी तल के क्षेत्रों का अध्ययन प्रमुख होता हैं।

रैंमर(1952) ने **द मॉर्डन सिटी पापुलेशन रिसोर्सेज ऑफ सिटी ग्रोथ** में बढ़ते शहरीकरण की विवेचना कर उसके शहरीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव तथा समस्या पर कार्य किया।

ओडम (1966**)** ने **रीजेनेरेटिव सिस्टम डिस्कशन इन स्पेस फ्लाइट** व **इकोसिस्टम थ्योरी इन रिलेशन टू मैन** (1971) में पारिस्थितिकी को सभी जीवित प्राणियों की संरचना एंव कार्य की प्रकृति के रूप में माना जाता है। प्रकृति के सकल उत्पादन को अधिकतम करने की दिशा में शुद्ध प्रयास होता है।

मूर्तीएवं पाठक (1971) ने **डोमिनेन्स डाइवर्सिटी एण्ड नेट प्रोडक्शन इन दी ग्रासलेण्ड एट राजकोट इण्डिया** में संसाधन विकास एवं जनसंख्या का विशद्ध विवरण प्रस्तुत करते हुए अधिक उत्पादन के सुझाव दिये।

पार्क (1980) ने **मानव पारिस्थितिकी** में मानव और संसाधनो का विश्लेषण कर मनुष्य की समूहगत विशेषताओं का विशद्ध विवेचन किया।

दास (1993) ने **फन्डामेन्टल ऑफ इकोलॉजी** में संसाधन एवं जनसंख्या सम्बन्धों का अध्ययन कर बताया कि जनसंख्या वृद्धि में अशिक्षा, गरीबी आदि महत्वपूर्ण कारक हैं।

सान्डर्स कार ने 1911 में अपनी पुस्तक "The population problems A study in Human Evaluation' में जनसंख्या के आकार और विकास का विश्लेणात्मक अध्ययन किया।

हैरिस, सी. डी. ने 1943में नगरों के वर्गीकरण में सांख्यिकीय विधि का उपयोग किया। जिसके बाद नगरीय अध्ययनों में सांख्यिकी का प्रयोग अधिक पैमाने पर होने लगा।

जेलिन्सकी डब्ल्यू और ट्रिवार्था ने 1954 में ''उश्ण कटिबन्धीय अफ्रीका में जनसंख्या'' प्रतिरूप शीर्शक पर एक लेख प्रकाशित किया। जिसमें जनसंख्या अध्ययन के प्रति जागरूकता उत्पन्न की गई।

जानकी, वी. ए. ने 1954 में केरल राज्य के नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण अनुभवात्मक विधि के आधार पर नगरीय भूगोल नामक पुस्तक में किया जिसमें नगरों को प्रशासनिक, औद्योगिक, शिक्षा एवं सांस्कृतिक आदि अलग – अलग भागों में विभाजित किया ।

मॉसर एवं स्काट ने 1961 में जनांकिकी एवं सामाजिक आर्थिक मापदण्डों को लेते हुए बहुचरीय विश्लेशण विधि द्वारा ब्रिटिश नगरों का वर्गीकरण किया। उन्होंने इंग्लैण्ड और वेल्स से अधिक जनसंख्या वाले नगरों को कार्यात्मक विश्लेशण के लिए कई प्रकार के चर एकत्रित किये।

सिंह आर. एल. ने 1955 में बनारस शहर पर नगरीय भूगोल में नगरीय प्रभाव क्षेत्र का विस्तृत अध्ययन किया। जिससे नगर की सुख सुविधाओं के फैलाव क्षेत्र का वर्णन किया गया।

टर्नर ने 1962 में केलिफोर्निया विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अन्तर्राश्ट्रीय संगोश्ठी में भारतीय नगरों की आकारिकी से संबंध में शोध पत्र प्रस्तुत किया। जिसमें नगरों की आन्तरिक और बाहरी संरचना पर प्रकाश डाला।

आर. ए. लोढा ने 1964 में चित्तौडगढ़ नगर के ऐतिहासिक विकास पर शोध प्रबन्ध कार्य प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने बताया कि नगर के उद्‌भव के बाद नगर की विभिन्न अवस्थाओं में परिवर्तन होता हैं।

उपाध्याय एल. एन. ने 1965 में राजस्थान विश्वविद्यालय में अजमेर नगर पर शोध प्रस्तुत किया। जिसमें अजमेर नगर की आन्तरिक संरचना का उल्लेख किया जिसमें बताया की नगर का विकास किन–किन अवस्थाओं से हुआ।

जैलिन्सिकी ने 1956 में प्रकाशित पुस्तक "A prologue to population geography' में जनांकीकीय पक्षों के अध्ययन पर विशेश बल दिया। जिसमें आयु संरचना, लिंगानुपात, जनसंख्या घनत्व, जन्म दर, मृत्यु दर आदि का उल्लेख किया गया हैं।

कृश्ण गोपाल व अग्रवाल एस. के. ने 1970 में चंडीगढ़ नगर के प्रभाव क्षेत्र का सीमांकन कृषि पदार्थों की आपूर्ति, सब्जी आपूर्ति, अभिगमन क्षेत्र फुटकर व्यापार क्षेत्र, उच्च शिक्षा, सेवा व चिकित्सा क्षेत्र के आधार पर किया गया।

गुप्ता बी.एल. ने 1987 में अपने शोध प्रबन्ध "Market Morphology of Metropolitan City'में जयपुर शहर की बाजारीय आकारिकी एवं जयपुर के विकास पर सम्पूर्ण प्रकाश डाला। **आलम एस.एम. ने 1972** में हैदराबाद नमी के प्रभाव क्षेत्र का सीमांकन दैनिक समाचार पत्र, बस व रेल यातायात प्रभाव, सब्जी व दुग्ध आपूर्ति के आधार पर किया। **हैरिस सी.डी. ने 1986** में प्रकाशित अपनी पुस्तक में नगरीयकरण के विश्व प्रतिरूपों में हो रहे परिवर्तनों का विश्लेशणात्मक अध्ययन किया।

फ्राक सीत और गुहा बंगारी ने 1989 में "The declining city of an Indian Metropolitan'में दिल्ली शहर पर पडने वाले जनसंख्या दबाव का विश्लेशण अध्ययन किया। **गुप्ता विजय ने 1990** में कोटपुतली शहर पर लघु शोध प्रस्तुत किया जिसमें इन्होने नगर के ऐतिहासिक विकास, नगरीयकरण की विभिन्न अवस्थाओं में नगर का विस्तार से बताया गया हैं। **डॉ. सक्सैना अनीता 1992** में प्रकाशित शोध "Impact of Urbanization on environment a case study' में जयपुर पर नगरीयकरण के द्वारा पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों का उल्लेख किया तथा भूमि उपयोग, पर्यावरण, औद्योगिकीकरण, यातायात आदि का वर्णन किया। **मंजू देवी ने 1992** में "Integrated Rural Development and planning, Bhartpur Tehil, Bharatpur Rajasthan' नामक विषय पर अपना शोध प्रबन्ध कार्य प्रस्तुत किया। **सिन्हा मुरली मनोहर प्रसाद** ने **1980** में प्रकाशित पुस्तक "Impact of Urbanisation on land use in the rural-Urban fringe' में उत्तर प्रदेश के प्रमुख शहरों एवं गाँवों में कृषि के उपयोगी मृदा के लिए किस फसल को लगाया जाये एवं उनका कार्यात्मक विश्लेशण किया गया हैं। **रश्मि पारीक** ने **2002** में "Alwar city study in Uran Geomorphology' नामक विषय पर अपना शोध के नगरीय भूगोल, सेवा केन्द्रों, नगरीयकरण, नगरीय उपान्त, नगरीय आकारिकी, भूमि उपयोग आदि का अध्ययन किया गया।

श्री वास्तव ए. के. 2004 ने "Population Development Environment Health' में बढ़ती जनसंख्या के परिणामों का पर्यावरण व मानव स्वास्थ्य पर प्रभावों का विश्लेशण कर अपना शोध राजस्थान विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया। **अमिताभ कुण्डा ने 2006**में "Trend and Patterns of Urbanization and Environment protection in China' पर शोध प्रस्तुर कर नगरीयकरण के नगरीय प्रतिरूपों पर प्रभावों का अध्ययन किया।**फोर्ड ने 2013** में "Urban

Challenges for Urban population' में नगरीयकरण से नगरों में होने वाली समस्याओं के बारे में अध्ययन किया।

1.5 आँकड़ों का संकलन तथा आधार :–

किसी भी शोध के लिए शोधकर्त्ता को तथ्यों का संकलन, संकलन की विधियों, आँकड़ों का वर्गीकरण विश्लेशण एवं शोध प्रतिवेदन हेतु एक निश्चित प्रारूप का अध्ययन करना होता हैं। अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में तुलनात्मक एवं विश्लेशणात्मक बनाने के लिए मुख्यतः दो प्रकार की विधियाँ स्वीकृत की गई हैं।

1 आनुभाविक विधि

2 सांख्यिकी विधि

किसी भी शोध कार्य का अध्ययन करने के लिए दो प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया जाता हैं। 1 प्राथमिक आँकड़े 2 द्वितीयक आँकड़े। प्रस्तुत शोध कार्य प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़े के अनुसार किया गया है। प्राथमिक आँकड़े का संकलन अध्ययन क्षेत्र का सूक्ष्म अध्ययन करने के लिए प्रतिचयन विधि के द्वारा किया गया है जो नगर के वार्डो के अनुसार लिए गए। जिनसे लोगों के जीवन स्तर का आकलन किया गया। यह सम्पूर्ण कार्य प्रश्नावली/अनुसूची द्वारा किया गया।

शहर के सभी प्रकार के जनांकिकीय आँकड़ो को जनगणना विभाग से लिया गया है। इसके अलावा अन्य आँकड़े पर्यावरणीय बदलाव, मानव विकास, व्यावसायिक संरचना, भूमि उपयोग, साक्षरता, नगरीकरण आदि से सम्बन्धित होंगे। जो भारत सरकार व राजस्थान सरकार से प्रकाशित व अप्रकाशित सूचनाओं और पत्र–पत्रिकाओं से प्राप्त किये गये। विभिन्न संख्यात्मक नमूनों व तकनीकों से प्राप्त परिणामों आनुभाविक अध्ययन में आवश्यकतानुसार सारणीयन कर उनका विश्लेशण किया गया है। शोध अध्ययन में नवीन तकनीकों के आधार पर निर्मित मानचित्रों व आरेखों के साथ संयोजित कर अध्ययन किया गया है।

आँकडे के प्राप्ति स्त्रोत –

1 नगरीय योजना विभाग।

2 सूचना केन्द्र।

3 सांख्यिकीय रूपरेखा विभाग।

4 नगरीय विकास, भारत सरकार, नई दिल्ली।

5 नगर निगम।

6 राजस्व विभाग।

7 मौसम विभाग।

8 संबंधित क्षेत्र के विशेशज्ञों से परामर्श।

9 संबंधित साहित्य।

10 भारतीय जनगणना विभाग।

11 सर्वेक्षण रिपोर्ट

12 परिवहन विभाग।

1.6 शोध प्रविधि :–

किसी भी शोध कार्य में शोध प्राविधि का अपना महत्व है इसके आधार पर सम्पूर्ण शोध कार्य सम्पादित किया जाता है। इसके अन्तर्गत शोध से सम्बंधित विषय वस्तु के एकत्रीकरण तथा प्रस्तुतीकरण के माध्यमों का निर्धारण किया जाता है ताकि शोध कार्य व्यवस्थित रूप से हो पाये।

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक संमको का एकत्रण कर शोध बिन्दु को स्पश्ठ करने का प्रयास किया गया है। भूगोल जगत के आचार्य ओ.एच.के.स्पेट के अनुसार गणितीय विधियों का प्रयोग आधें सत्य को ही प्रतिपादित करता है शोध आधा सत्य परिणामों को समझनें एवं उनकी व्याख्या करने में निहित है। इस उक्तिको आधार मानते हुए तर्कशक्ति का प्रयोग करते हुए निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया है। शोध में एक निश्चित विधि एवं कमबद्ध सोपानों का प्रयोग करते हुए ऑकड़ो का संकलन तथा आंकलन करते हुए ऑकड़ों का वर्गीकरण,विश्लेशण,संश्लेशण,सारणीयन उचित स्थानों पर वर्णित करते हुए निरूपित किया है।

प्रस्तुत शोध कार्य में विश्लेशण को अवबोधनीय बनाने हेतु उचित प्रकार की वर्णनात्मक, गुणात्मक निगमनात्मक मानचित्रीकरण तकनिकों का समावेश किया गया है। विभिन्न भौगोलिक तथ्यों के विश्लेशण हेतु यथा स्थान मानचित्रों, आरेखों, आलेखों तथा सम्बधित उदाहरणों एवं व्याख्याओं का समावेश किया गया है। क्षेत्र भ्रमण साक्षात्कार/प्रश्नावली/अनुसुचीयों की यथा आवश्यक मदद ली गयी है।

1.7 अध्ययन योजना :–

शोध लेखन व पुस्तक लेखन की प्रविधियों में अध्ययन योजना एक महत्वपूर्ण उपबन्ध है। बिना अध्याय के लेखन कार्य क्रमहीन व निरर्थक माना जाता है। अतः किसी भी शोध कार्य के लिए अध्यायनुसार कार्य योजना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध अध्ययन 7 अध्यायों में संकलित है,सभी अध्यायों के पुनः कई उपअध्याय है। इन सभी अध्यायों की शोध अध्ययन में विशिश्ट भूमिका है। किसी एक अध्याय की अनुपस्थिति अध्ययन को शोध विषय से अर्थहीन बना देती है।

शोध अध्ययन में सर्वप्रथम शोध की आवश्यकता, महत्व, उद्देश्य, विधियॉ, साहित्य पूर्व में किये गये अध्ययन,अन्वेशण विधा आदि महत्वपूर्ण है।

प्रस्तुत अध्ययन 7 अध्यायों में संकलित है :

प्रथम अध्याय में शोध विषय का सामान्य परिचय, शोध का महत्व, शोध का उद्देश्य, साहित्य पुनरावलोकन, ऑकडों का संकलन, शोध प्रविधि का विवेचन किया गया है।

द्वितीय अध्याय में नगरीकरण की स्थितियॉ जिसमें विश्व में नगरीकरण की स्थिति (उदभव काल, विकासशील,पूर्व आधुनिक,आधुनिक काल), भारत में नगरीकरण की स्थिति, राजस्थान में नगरीकरण की स्थिति का विवेचन किया है।

तृतीय अध्याय में शोध विषय के अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिदृश्य जिसमें कोटा बून्दी नगरो की स्थिति, उच्चावच, जलवायु, मृदा, अपवाह तंत्र वन्स्पति आदि का विश्लेशण किया गया है।

आर्थिक परिचय में उधोग, व्यवसाय, कृषि, पशुधन।

जनानकिकीय स्थिति में जनसंख्या, धनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता, ग्रामीण व शहरी जनसंख्या, जन्म तथा मृत्युदर।

मूलभूत सुविधाऐं में भोजन, पेयजल, विधुत, शिक्षा, परिवहन संचार, स्वास्थय सेवाऐं को सम्मिलित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में कोटा में नगरीकरण की स्थिति तथा प्रवृतियॉ जिसमें एतिहासिक परिपेक्ष, आकारिकी व प्रवृत्तियाँ, भूमि उपयोग, नगर का वर्तमान स्वरूप तथा प्रभाव क्षेत्र का सविस्तार वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में बून्दी में नगरीकरण की स्थिति तथा प्रवृतियॉ जिसमें एतिहासिक परिपेक्ष, आकारिकी व प्रवृत्तियाँ, भूमि उपयोग, नगर का वर्तमान स्वरूप तथा प्रभाव क्षेत्र का सविस्तार वर्णन किया गया है।

षष्ठम अध्याय में कोटा तथा बून्दी नगरीकरण का तुलनात्मक स्वरूप जिसमें नगरीय आकारिकी, नगरीय जनसंख्या, नगरीय व्यवसायिक गतिविधियॉ, भूमि उपयोग, नगरीय प्रभाव क्षेत्र का तुलनात्मक वर्णित किया है।

सप्तम अध्याय में सम्पूर्ण शोधकार्य का सारांश व उसकी समस्या व सुझाव को सविस्तार वर्णित किया गया है।

ग्रन्थावली :– उपरोक्त शोध से सम्बंधित पुस्तकों की सूची ग्रन्थावली के रूप में प्रस्तुत की गई हैं।

अध्याय – 2
नगरीकरण की स्थितियाँ

2.1 विश्व में नगरीकरण की स्थिति :–

पृथ्वी पर मानव का अस्तिव काफी पुराना है जो आदि मानव से आज नगरों में रहने वाले सुसभ्य मानव के विकास की लम्बी अवधि को दर्शाता है। इस अवधि में मनुश्य जो आदिम काल में जंगलो और गुफाओं में रहता था कालान्तर में गॉव के रूप में झोपड़ीयॉ बनाकर स्थापित हुआ और आज गगनचुम्बी इमारतों के बीच नगरों तथा महानगरों में सधन रूप से पूरे विश्व में स्थापित हो चुका है। इसी क्रमिक अवस्था को हम सामान्यतः नगरीकरण के रूप जानते है। विश्व में नगरीकरण की इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को हम निम्नलिखित काल खण्ड़ों में बॉटकर देखते है।

नगरीकृत समाज, जो कि अधिकांश कस्बों व नगरों में केन्द्रित है, मानव के सामाजिक उद्‌भव में एक नूतन व अधारभूत सौपान है। यद्यपि पृथ्वी पर प्रथम नगर लगभग 5500 वर्ष पूर्व अस्तित्व में आ गये थे, किन्तु आकार में अत्यन्त छोटे तथा ग्रामीण समाज प्रधान थे। प्राचीन विश्व में नगरीकरण प्रक्रिया की गति बहुत धीमी थी। इन्ही प्रथम नगरीय बस्तियों के उत्तरोत्तर विकास के परिणामस्वरूप लगभग दो हजार वर्ष पश्चात् मेसोपोटामिया तथा मिस्त्र की नदी घाटियों में प्रथम वास्तविक नगर अस्तित्व में आए। 1000 ई.पू. तक विकसित तथा समकालीन विश्व के विशाल नगर बेबिलोन, उर, इरेच, मोहनजोदड़ो आदि भी आकार में बहुत छोटे थे। समकालीन विश्व में मात्र एक या दो प्रतिशत व्यक्ति ही नगरों में निवास करते थे। बड़े नगरों में भी 20000 से अधिक जनसंख्या नहीं थी।

यूरोप में 600 ई.पू. से 400 ई.पू. के मध्य नगरों का तीव्र विकास हुआ। एथेन्स, सिराम्पूज व कार्थेज जैसे कुछ नगरों ने बड़ा आकार ग्रहण किया। पाँचवी शताब्दी में ऐथेन्स की जनसंख्या एक लाख बीस हजार से एक लाख अस्सी हजार के मध्य थी। प्रथम बार रोम जैसे विशाल नगर का उद्‌भव हुआ, जो कि कई शताब्दियों तक विश्व वृहत्‌म् नगर बना रहा। कालान्तर में कुस्तुन्तुनिया को यह स्थान प्राप्त हुआ।

पूर्व मध्यकाल में नगरों का ह्रास होने के साथ ही नगरीकरण की दर में तीव्र गिरावट आई। नगरों के अनुमानित आकार से इसकी पुश्टि होती है। फ्लोरेंस (1338 ई.) 90000, वेनिस (1442 ई.) 190000, लन्दन (1377 ई.) 30000, नुरेम्बर्ग (1450 ई.) 20165, फ्रेकफर्ट (1440 ई.) 8719 आदि। मध्यकाल में यद्यपि नगरों का आकार छोटा ही था, किन्तु उद्योग, व्यापार व तकनीकी विकास के कारण कुल मिलाकर नगरीकरण का प्रसार हुआ। औद्योगिक क्रान्ति से पुर्व तक यूरोप एक कृषि प्रधान प्रदेश ही था। 1600 ई. मे एक लाख या अधिक जनसंख्या वाले नगरों में यूरोप की कुल जनसंख्या का 16 प्रतिशत, 1700 ई. में 1.9 प्रतिशत तथा 1800 ई. में 2.2 प्रतिशत भाग निवास करता था।

औद्योगिक क्रान्ति के कारण अठारहवीं शताब्दी के पश्चात् तीव्र एवं व्यापक नगरीकरण हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में 5000 से अधिक जनसंख्या वाले नगरों में विश्व की मात्र 3 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती थी, जो 1850 में दुगुनी से भी अधिक तथा 1900 में चार गुना से भी अधिक हो गई। एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों में निवास करने वालों की संख्या में उक्त अवधि में लगभग छः गुना वृद्धि हुई, जो कि अन्य वर्ग के नगरों की अपेक्षा सर्वाधिक थी। उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ में एक लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों में विश्व के मात्र 1.7 प्रतिशत व्यक्ति निवास करते थे। ऐसे नगरों की संख्या 50 से भी कम थी। 1850 में इनमें 2.3 प्रतिशत, 1900 में 5.50 प्रतिशत व्यक्ति निवास करने लगे तथा 1950 में 13.1 हो गई।

तालिका संख्या–2.1.1

विश्व की कुल एवं नगरीय जनसंख्या वृद्धि (1800–1950)

(जनसंख्या दस लाख में)

		5000 से अधिक जनसंख्या वाले नगर		20000 से अधिक जनसंख्या वाले नगर		100000 तथा अधिक जनसंख्या वाले नगर	
वर्ष	कुल जनसंख्या	जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	जनसंख्या	कुल जनसंख्या का प्रतिशत
1800	906	27.2	3.0	22.0	2.4	16.0	1.7
1850	1171	74.9	6.4	50.0	4.3	28.0	2.3
1900	1608	218.7	13.6	148.0	9.2	89.0	5.5
1950	2501	716.7	29.8	502.0	20.9	314.0	13.1

स्त्रोतः Breese G, the city in newly developing countries, OP. CIT, PP 6-21.

1801 में किसी भी देश का नगरीकरण स्तर पचास प्रतिशत नही था। उन्नीसवी शताब्दी के अन्त में ब्रिटेन विश्व का प्रथम नगरीकृत समाज बना। ब्रिटेन में हुआ तीव्र नगरीकरण औद्योगीकरण औपनिवेशिक साम्राज्य तथा व्यापार के कारण हुई आर्थिक विकास का ही परिणाम था। उन्नीसवी शताब्दी में यूरोप के तीन क्षेत्रो में नगरो का सर्वाधिक सकेन्द्रण हुआ। उत्तरी इटली, दक्षिणी फ्रांस तथा मध्य इंग्लेण्ड़।

यूरोप में जर्मनी दूसरा नगरीकृत देश बना। उत्तर पश्चिमी यूरोप ने नगरीकरण का यह स्तर 1930 में प्राप्त किया। 1970 तक नीदरलेण्ड व बैल्जियम यूरोप के उच्चतम नगरीकृत देश बने, जहाँ 80 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करने लगी। औद्योगिक दृश्टि से कम विकसित होने के कारण अल्बानिया (33 प्रतिशत) तथा पुर्तगाल (28 प्रतिशत) निम्नतम नगरीकरण वाले यूरोपीय देश थे। पूर्ववर्ती सोवियत संघ 1960 में नगरीकृत देशो की श्रेणी में आया। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलेण्ड़, जापान, फ्रांस, कनाड़ा, फिनलेण्ड़, अर्जेन्टीना, चिली, मैक्सिकों आदि देशो ने नगरीकृत होने का स्तर बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही प्राप्त कर लिया था। यूरोप, उत्तरी अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा द. अमेरिका के विकसित देश नगरीकरण की दौड़ में अग्रणी रहे। उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्द (1850–1900) में इनकी नगरीय जनसंख्या (5000 से अधिक जनसंख्या वाले नगरों में) में तीन गुना वृद्धि हुई जो कि अभूतपुर्व वृद्धि थी। एक लाख व अधिक जनसंख्या वाले नगरों के आधार पर नगरीय जनसंख्या में सर्वाधिक नो गुना वृद्धि अमेरिका में तथा लगभग चार गुना वृद्धि यूरोप में हुई। इनकी तुलना में एशिया महाद्‌ीप में मात्र डेढ़ गुना तथा अफ्रीका में तीन गुना वृद्धि हुई। किन्तु बीसवी शताब्दी में विकसित देशो की अपेक्षा एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमेरिका के विकासशील देशों में नगरीय वृद्धि काफी अधिक हुई।

1900–1950 की अवधि में एक लाख व अधिक जनसंख्या वाले नगरों की वृद्धि को आधार मानकर नगरीकरण का अध्ययन करने पर पाते है कि एशिया में छः गुना से अधिक तथा अफ्रीका में दस गुना वुद्धि हुई, जो कि अन्य महाद्वीपों की अपेक्षा अधिक थी। उन्नीसवी शताब्दी में अग्रणी रहे यूरोप मे इसी अवधि में मात्र ढ़ाई गुना वृद्धि हुई।

उन्नीसवी शताब्दी मे नगरीय जनसंख्या वृद्धि में विकसित देशो का अधिक योगदान रहा वहीं बीसवी शताब्दी में विकासशील देशो का योगदान बढ़ता गया। 1920–1930 के मध्य सर्वाधिक वृद्धि पूर्ववर्ती सोवियत, पूर्वी एशिया, अफ्रीका व लेटिन अमेरिका 40–50 प्रतिशत हुई। अगले दशक में भी यही स्थिति बनी रही। 1940–1950 के मध्य सर्वाधिक वृद्धि लेटिन अमेरिका (61 प्रतिशत), अफ्रीका (56 प्रतिशत) तथा दक्षिणी एशिया (52 प्रतिशत) में हुई। इनकी तुलना में विकसित देशो में न्यूनतम वृद्धि हुई जेसे यूरोप में 5 प्रतिशत, सोवियत संघ में 6 प्रतिशत तथा उत्तरी अमेरिका में 29 प्रतिशत। 1950 –1960 के दशक मे सर्वाधिक वृद्धि अफ्रीका में 69 प्रतिशत तथा लेटिन अमेरिका में 67 प्रतिशत हुई जबकि न्यूनतम यूरोप में 18 प्रतिशत तथा उत्तरी अमेरिका में 35 प्रतिशत हुई। विकासशील देशो की नगरीय जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि का प्रमुख कारण कुल जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि तथा ग्रामीण क्षेत्रो से नगरो की और निरन्तर होने वाला पलायन रहा है।

बीसवी शताब्दी के उत्तरार्द् (1950–2000) में नगरीय जनसंख्या में हुई तीव्र वृद्धि को देखते हुये इसे विश्व नगरीकरण का विस्फोटन काल कहते है। जहाँ विश्व जनंसख्या में लगभग दो गुना वृद्धि हुई, वही नगरीय जनसंख्या मे चार गुना से भी अधिक वृद्धि हुई। 1980 में लगभग 39 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती थी जो 2000 में 47 प्रतिशत हो गयी। उन्नीसवी शताब्दी की तुलना में बीसवी शताब्दी में विश्व नगरीकरण के प्रादेशिक स्वरूप में काफी अन्तर आया।

तालिका संख्या–2.1.2

महाद्वीपो के अनुसार नगरीय जनसंख्या वृद्धि एवं दर (1980–2000)

(जनसंख्या दस लाख में)

प्रदेश	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत		वृद्धि दर प्रतिशत (वार्षिक)
	1980	2000	1980–2000
अफ्रीका	27	38	4.4
यूरोप	69	75	0.8
उत्तरी अमेरिका	74	77	1.2
मध्य अमेरिका	60	67	3.1
दक्षिण अमेरिका	68	80	3.1
एशिया	27	38	3.6
ओसेनिया	71	70	1.4
विश्व	39	47	2.6

स्त्रोतः World Resources, UNEP 2000

विश्व नगरीकरण के वर्तमान प्रतिरूप व स्तर पर दृश्टिपात करे तो ज्ञात होता है कि यद्यपि विकसित देशों में नगरीकरण का स्तर सर्वाधिक है, किन्तु नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर विकासशील देशो में सर्वाधिक है। नगरीकरण के प्रादेशिक स्तर को देखे तो उत्तरी अमेरिका, यूरोप पूर्वी एशिया (चीन को छोड़कर), लेटिन अमेरिका व ओसेनिया की तीन चौथाई से अधिक जनसंख्या नगरीय है। दक्षिण व दक्षिण पूर्व एशिया तथा अफ्रीका में नगरीकरण का स्तर निम्नतम है। विश्व की लगभग आधी नगरीय आबादी एशिया महाद्वीप में निवास करती है। यूरोप का हिस्सा 19 प्रतिशत, अफ्रीका का 11 प्रतिशत, लेटिन अमेरिका का 10 प्रतिशत तथा उत्तरी अमेरिका का 8 प्रतिशत है। चीन में विश्व की 15

प्रतिशत नगरीय जनसंख्या है जो कि सर्वाधिक है। यह भारत में लगभग 10 प्रतिशत, संयुक्त राज्य अमेरिका में 7 प्रतिशत ब्राजील में 5 प्रतिशत तथा जापान में 3 प्रतिशत है। दस लाखी नगरों में विश्व की 40 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या संकेन्द्रित है।

दुनिया की आबादी वर्ष 2100 तक 1000 करोड़ (10 बिलियन) तक पहुँच जाएगी। अधिकांश जनसंख्या वृद्धि एशिया और अफ्रीका के उच्च प्रजनन देशों से होगी (संयुक्त राश्ट्र की रिपोर्ट)। तालिका 2.1.3 और 2.1.4 से पता चलता है कि एशिया और अफ्रीका अपनी शहरी आबादी में उल्लेखनीय वृद्धि करेगें। अफ्रीका में शहरी आबादी के तिगुने होने की सम्भावना है और एशिया में यह 1.7 बिलियन बढ़ जाएगी। एशिया शहरीकरण में 1.57 प्रतिशत से बढ़ रहा है। 1950 में एशिया की जनसंख्या 17.5 प्रतिशत से बढ़कर 1970 में 23.7 प्रतिशत, 2011 में 45 प्रतिशत हो गई, 2030 तक यह 55.5 प्रतिशत तक पहुँच जाएगी।

तालिका संख्या–2.1.3

विश्व में नगरीकरण का प्रतिरूप

शहरी जनसंख्या (प्रतिशत में)					
प्रदेश	1950	1970	2011	2030	2050
अफ्रीका	14.4	23.5	39.6	47.7	57.7
एशिया	17.5	23.7	45.0	55.5	64.4
यूरोप	51.3	62.8	73.0	77.4	82.2
लैटिन अमेरिका	41.4	57.1	79.1	83.4	86.6
उत्तरी अमेरिका	63.9	73.8	82.2	85.8	88.6
ओसेनिया	62.4	71.2	70.7	71.4	73.0
विश्व	29.0		52.1	59.9	68.70

स्त्रोतः United Nations, Development of Economic and Social affairs, Population Division (2011), world population prospects: The 2010 Revision, New York

तालिका संख्या–2.1.4

प्रमुख प्रदेशों द्वारा नगरीकरण की दर

नगरीकरण की दर				
प्रदेश	1950–1970	1970–2011	2011–2050	2030–2050
अफ्रीका	2.47	1.27	0.98	0.96
एशिया	1.52	1.57	1.10	0.74
यूरोप	1.02	0.36	3.31	0.30
लैटिन अमेरिका	1.61	0.80	0.28	0.19
उत्तरी अमेरिका	0.72	0.26	0.22	0.16
ओसेनिया	0.66	0.02	0.05	0.12

स्त्रोतः United Nations, Development of Economic and Social affairs, Population Division (2011), world population prospects: The 2010 Revision, New York

शहरीकरण के विविध स्तर से पता चलता है कि एशियाई क्षेत्र बहुत गतिशील है। एशिया क्षेत्रों में भारत शहरी आबादी के अनुपात में एक प्रमुख स्थान रखता है। भारत की शहरी आबादी चीन के बाद दुनिया में दुसरे स्थान पर है सभी देशों की कुल आबादी से अधिक है (एच डी आर 2000)। 2011 में, विश्व की 17 प्रतिशत आबादी पर भारत का कब्जा है। शहरी भारत का लगभग एक तिहाई (71 मिलियन) महानगरीय शहरों में रहता है।

तालिका संख्या–2.1.5

विश्व नगरीकरण स्तर एवं प्रोदेशिक योगदान –2011

(प्रतिशत में)

क्र.स.	प्रदेश	नगरीकरण स्तर	विश्व की नगरीय जनसंख्या में हिस्सा
1.	उत्तरी अमेरिका	82.2	8
2.	यूरोप	73.0	15
3.	लैटिन अमेरिका	79.1	13
4.	ओसेनिया	70.7	1

5.	अफ्रीका	39.6	11
6.	एशिया	45.0	52
	विश्व	52.1	100

स्त्रोत: United Nations, Department of Economic and Social Affairs Report 2012

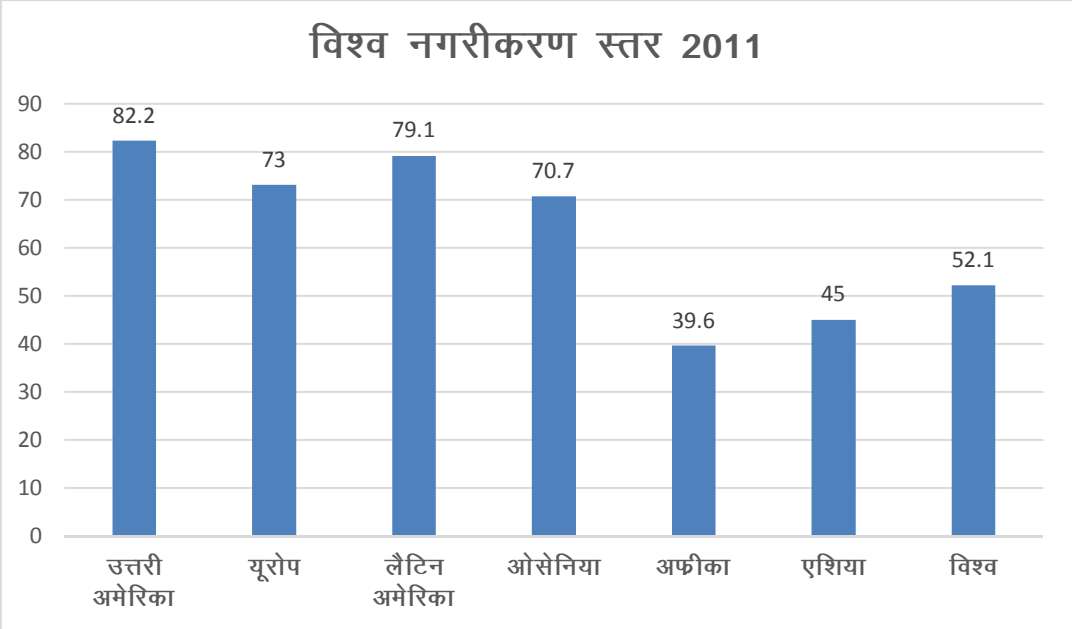

आलेख संख्या–1 : विश्व नगरीकरण स्तर –2011

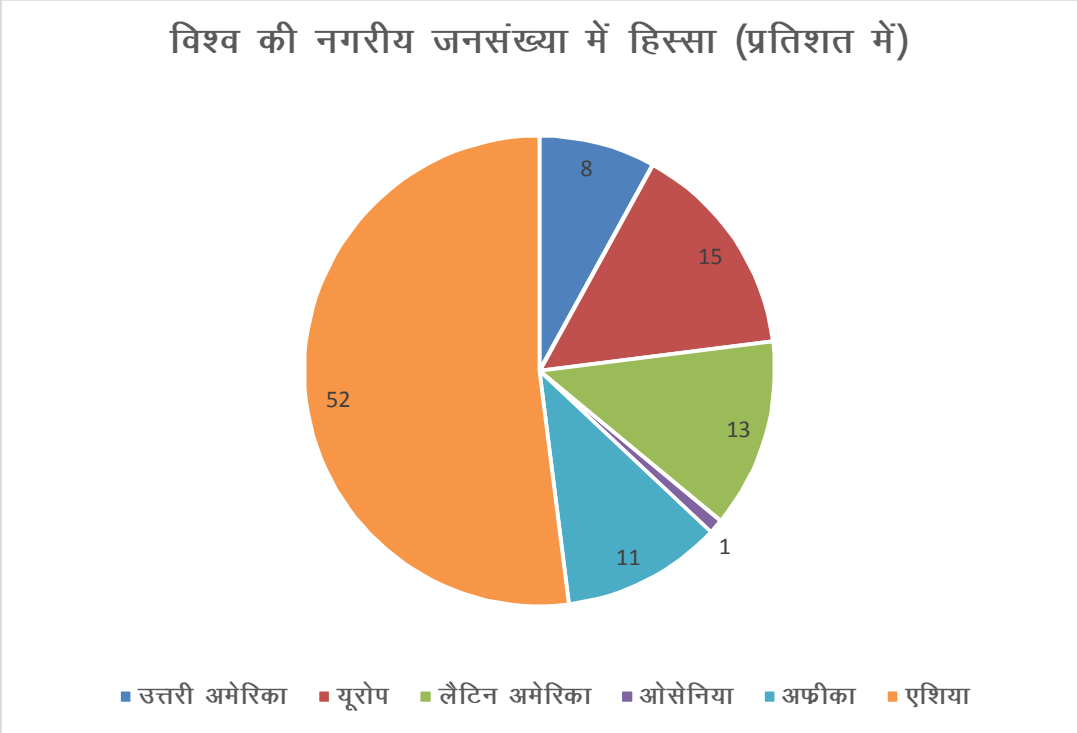

आलेख संख्या–2 : प्रादेशिक योगदान –2011

संयुक्त राश्ट्र संघ के सामाजिक ब्यूरो ने नगरीकरण की नवीनता के आधार पर विश्व को तीन प्रदेशों में रखा है–

(i) शीघ्र नगरीकृत प्रदेश – 1920 तक 25 प्रतिशत नगरीकरण का स्तर प्राप्त करने वाले प्रदेशों को इसमें शामिल किया गया। इनमें उत्तरी व पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका, शीतोश्ण दक्षिण अमेरिका, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलेण्ड़ शामिल है।

(ii) नवनगरीकृत प्रदेश – इसके अन्तर्गत उन प्रदेशों को सम्मिलित किया गया है जो 1920 तक तो 25 प्रतिशत नगरीकृत नही थे, किन्तु 1960 में हो गए। इसमें दक्षिण अमेरिका, मध्य अमेरिका, मुख्य भूमि, उत्तरी अफ्रीका व दक्षिण अफ्रीका सम्मिलित है।

(iii) न्यूनतम नगरीकृत प्रदेश – 1960 तक भी 25 प्रतिशत नगरीकरण का स्तर प्राप्त नहीं करने वाले प्रदेशों को इस वर्ग में रखा गया। इनमें पूर्वी एशिया मुख्य भूमि, मध्य एशिया, दक्षिण पूर्वी एशिया, दक्षिण–पश्चिमी एशिया, केरीबियन प्रदेश, उश्ण कटिबन्धीय अफ्रीका व अन्य औसेनिया सम्मिलित है।

कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत ही सामान्यतः नगरीकरण स्तर के सूचक के रूप में हे। यद्यपि 2008 में विश्व की आधी से अधिक जनसंख्या नगरों में निवास करने लग गयी किन्तु विश्व नगरीकरण स्तर में प्रादेशिक भिन्नता बनी रही। विश्व के विभिन्न देशों को 2011 की जनसंख्या के आधार पर पाँच वर्गो में रखा जा सकता है।

(1) अति निम्न नगरीकृत प्रदेश – इसमें वे सभी देश शामिल है जहाँ 19 प्रतिशत या इससे कम जनसंख्या नगरों में निवास करती है। यह अफ्रीकी तथा एशियाई देश है। नगरीकरण के स्तर में निरन्तर वुद्धि के कारण इस वर्ग में शामिल देशों की संख्या कम होती जा रही है। इक्कीसवीं शताब्दी में शुरूवाती समय में अफ्रीका में बुर्किनाफासो, बुरूण्ड़ी, नाइजर, एरीट्रिया, ईथियोपिया, मलांकी,खाण्डा व युगाण्डा, एशिया में कम्बोडिया, भूटान व नेपाल तथा ओसेनिया में पापुआ न्यूंगिकी व सोलोमन द्वीप अति निम्न नगरीकृत देशो की श्रेणी में सम्मिलित थे। देश औद्योगिक दृश्टि से पिछड़े होने के साथ ही कृषि भूमि की कमी के कारण भी अल्प विकसित हैं न्यूनतम नगरीकरण का स्तर भूटान में 7 प्रतिशत है।

(2) निम्न नगरीकृत प्रदेश – 20 से 39 प्रतिशत तक नगरीकरण का स्तर प्राप्त करने वाले देश इसमें शामिल है। ये अफ्रीका व एशिया महाद्वीप के है। भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश,

थाईलेण्ड़, अफगानिस्तान वियतनाम, म्यामांर आदि एशियाई देश इसी वर्ग में आते है। अफ्रीका से सोमालिया, मोजाम्बिक, केन्या माली, जिम्बाब्वे, जेम्बिया, तंजानिया, कोगों व गिनी इस वर्ग में शामिल है। लैटिन अमेरिका से मात्र गुयाना तथा मध्य अमेरिका से ग्वाटेमाला व हैति ही इस श्रेणी मे आते है।

(3) मध्यम नगरीकृत प्रदेश– इन देशो में नगरीकरण का स्तर 40 से 59 प्रतिशत है। अफ्रीका में मिस्त्र, अंगोला, कैमरून, मौरक्को, नाइजीरिया, घाना, सेनेगल, सूडान, द. अफ्रीका आदि, यूरोप में अल्बानिया, पुर्तगाल व रोमानिया लैटिन अमेरिका में सूरिनाम व निकारागुआ, एशिया में चीन, इण्डोनेशिया, सीरिया आदि देश इसमें शामिल है।

(4) उच्च नगरीकृत प्रदेशः– इन देशो में 60 से 79 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में निवास करती है। उत्तरी अमेरिका में मेक्सिको, अधिकांश लैटिन अमेरिका व यूरोप के देश इस वर्ग में आते है। एशिया मे इराक, ईरान, टर्की, फिलिपीन्स, ताइवान, उत्तरी कोरिया, जापान आदि उच्च नगरीकृत राश्ट्र है।

(5)अति उच्च नगरीकृत प्रदेश– इसमें विश्व के वह देश शामिल है जिसमें नगरीकरण का स्तर 80 प्रतिशत या अधिक है। इनमें से अधिकांश देश 1950 से पूर्व ही नगरीकृत थे। यूरोप मे ब्रिटेन, नीदरलेण्ड़, बैल्जियम, स्वीडन, डेनमार्क व लक्समबर्ग, लेटिन अमेरिका में अर्जेण्टाइना, ब्राजील, चिली, उरूग्वे व वेनेजुएला अफ्रीका में लीबिया, एशिया में इजरायल, द. कोरिया जोर्डन, सऊदी अरब, लेबनान इसमें शामिल है। प्रादेशिक दृश्टि से देखा जाए तो आस्ट्रेलिया विश्व का सर्वाधिक नगरीकृत प्रदेश है।

तालिका संख्या–2.1.6

प्रमुख देशों में नगरीकरण स्तर –2011

क्र.स.	देश	कुल जनसंख्या (करोड़)	नगरीकरण स्तर (प्रतिशत)
1.	चीन	135.4	51.1
2.	भारत	121.4	31.1
3.	स.रा.अमेरिका	31.7	79.0
4.	इण्डोनेशिया	23.2	48.1
5.	ब्राजील	19.5	84.3
6.	पाकिस्तान	18.4	34.9

7.	बांग्लादेश	16.4	25.1
8.	नाईजीरिया	15.8	48.2
9.	रूस	14.0	73.0
10.	जापान	12.7	65.8
11.	मैक्सिको	11.0	76.0
	विश्व	700.0	52.1

स्त्रोतः The statesman's yearbook - 2013

नगरीय वृद्धि के कारण बीसवीं शताब्दी को नगरीकरण की शताब्दी कह सकते है। वर्तमान में विश्व की नगरीय वुद्धि दर ग्रामीण की तुलना में चार गुना अधिक है। यदि इसी दर से वृद्धि होती रही तो 2050 तक नगरो में रहने वालो की संख्या दुगुनी अर्थात 6 अरब से अधिक हो जाएगी। तब विश्व की लगभग दो तिहाई जनसंख्या नगरों या कस्बों मे रहेगी।

एशिया तथा प्रशान्त प्रदेश के विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था वाले देशो में नगरीकरण की गति तीव्र है। यहाँ औसत वार्षिक नगरीय वृद्धि 4 प्रतिशत से अधिक है विश्व स्तर पर उच्चतम नगरीय वृद्धि दर अफ्रीका में 5 प्रतिशत से अधिक है। इस आधार पर भविश्य में सर्वाधिक वृद्धि एशिया व अफ्रीका महाद्वीपो में होगी।

वर्तमान में विकासशील देशो में महानगरों की संख्या में वृद्धि होगी। 1950 में विश्व के 15 वृहतम नगरों मे से मात्र 4 विकाशील थे जो कि 2000 में बढ़कर 11 हो गए। 2025 में संयुक्त राश्ट्र संघ प्रक्षेप के अनुसार विश्व में करोडी नगरों में से तीन–चौथाई विकसित देशों के बाहर स्थित होगें। इनमें से सर्वाधिक एशिया तथा अफ्रीका मे होगें। मुम्बई, लोगोस, दिल्ली, कराची तथा जकार्ता की जनसंख्या में 2001 से 2025 की अवधि में 1.5 गुना से लेकर 2.5 गुना तक वृद्धि होगी जो कि सर्वाधिक होगी। सर्वाधिक वृद्धि दर लोगोस तथा ढाका की रहेगी। संयुक्त राश्ट्र संघ रिपोर्ट के अनुसार 2025 में विश्व के प्रथम चार वृहतृम नगर टोकियो, मुम्बई, दिल्ली और शंघाई होगें जो कि सभी एशिया में है।

तालिका संख्या–2.1.7

2025 में विश्व के 10 वृहतम् नगर

नगर	जनसंख्या (दस लाख में)
टोकियो	38.7
दिल्ली	32.9

शंघाई	28.4
मुम्बई	26.6
मैक्सिको सिटी	24.6
न्यूयॉर्क – नेवार्क	23.6
साओपोलो	23.2
ढ़ाका	22.9
बिजिंग	22.6
कराची	20.2

स्त्रोतः UN Population Division, Urban Aggiomerations 1950-2025 New York, 2012

विकासशील देशो की तुलना में अमेरिका व यूरोप के वृहद् नगरों की जनसंख्या में नाम मात्र की वृद्धि होगी। अफ्रीका व एशियाई महानगरों की अत्यधिक वृद्धि के कारण स्थानीय प्रशासन के लिए जन सुविधाएं जुटाना मुश्किल हो जाएगा। ऐसी स्थिति में पर्यावरण की गुणवत्ता एवं जन स्वास्थ्य पर खतरा बढ़ जाएगा।

2.2 नगरीकरण :–

वर्तमान समय की महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक घटना नगरीकरण की भी है। नगरों में जनसंख्या क तीव्र गति से बढ़ना तथा नगरों की संख्या में अपार वृद्धि वर्तमान युग का महत्वपूर्ण तथ्य है। ऐसा कहा जाता है कि सबसे पहले नगर इस पृथ्वी पर 5000 से 6000 वर्ष पूर्व देखने में आये। अतः नगर पृथ्वी पर नये नहीं है। जब से इस धरातल पर सभ्यता का विकास हुआ है। प्राचीनकाल में यह प्रक्रिया धीमी गति से होती थी पर आज यह प्रक्रिया बहुत ही तीव्र गति से हो रही है।

प्रश्न यह है कि नगरीकरण क्या है? इसका शाब्दिक अर्थ है कि 'नगरीय हो जाना' अथवा 'बना देना'। नगरीकरण जनसंख्या के नगरीय होने से सम्बन्ध रखता है। यह नगरीय जनंसख्या जिन भू–भागों पर रहने लगती है वह नगरीय भू–भाग कहलाते है। इस प्रकार जनसंख्या का नगरीय होना, विभिन्न भू–भागो के नगरीय होने से जुडा हुआ है। अतः नगरीकरण मे जनसंख्या का नगरीय होना सबसे महत्वपूर्ण है। वास्तव में नगरीय जनसंख्या व उसके अनुपात में वृद्धि होना नगरीकरण कहलाता है। नगरीकरण को विभिन्न विद्धानों ने निन्म तरह से परिभाशित किया गया है।

जी.टी. ट्रिवार्या – कुल जनसंख्या में नगरीय स्थानों मे रहने वाली जनसंख्या के अनुपात को नगरीकरण का स्तर कहा जाता है।

"नगरीकरण प्रक्रिया का तात्पर्य कुल जनसंख्या में उस वृद्धि से है, जो कि नगरीय है' यह वृद्धि एक ही दर से नहीं होती।

"नगरीकरण की दर से हमारा तात्पर्य होता है कि विभिन्न समयो मे कुल जनसंख्या में कुल जनसंख्या में नगरीय बस्तियों मे रहने वाली जनसंख्या के अनुपात में कितनी वृद्धि हुई है।'

ई.ई. बर्गेल ने बताया है कि ग्रामों के नगरीय क्षेत्रो में परिवर्तित होने की प्रक्रिया को नगरीकरण कहते है।

ग्रिफिथ टेलर ने बताया है कि गाँवो से नगरो को जनसंख्या का स्थानान्तरण ही नगरीकरण कहलाता है।

किंग्सले डेविस के अनुसार कुल जनसंख्या में नगरीय बस्तियों में रहने वाली जनसंख्या के अनुपात या इस अनुपात में वृद्धि को नगरीकरण कहते है।

डेविस ने बताया है कि नगरीकरण सामाजिक जीवन के सम्पूर्ण प्रारूप में क्रांन्तिकारी परिवर्तन की और संकेत करता है। यह स्वयं आधारभूत अर्थव्यवस्था और तकनीकी विकास का परिणाम है।

बी.एस.घोश – नगरीकरण वह प्रक्रिया है, जिसमें गाँव कस्बों में और कस्बे नगरों में परिवर्तित होते जाते है।

आर.एम. नोर्थम – यह एक प्रक्रिया अथवा दशा है, जिसमें नगरीय जनसंख्या की वृद्धि, कुल प्रादेशिक वृद्धि दर से अधिक होती है।

पी.एम.हॉसर – के अनुसार नगरीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत कृषि समुदायों से कृश्येतर व औद्योगिक समुदायों की और लोगों की गति या प्रवाह सम्मिलित है।

मेक– के अनुसार नगरीकरण एक ऐसा गुब्बारा है, जिसमें प्रत्येक समाजविज्ञानी स्वंय का अर्थ फूंकता है।

एम. सारे – के अनुसार नगरीकरण व्यापारिक क्रिया पर घनिश्ठ रूप से निर्भर करता है और सबसे महत्वपूर्ण शहरों का स्थानीकरण परिभ्रमण के बडे मार्गो की पेंदी (Bed) के भीतर हुआ है।

वी.एल.एस. प्रकाशाराव – नगरीकरण एक प्रक्रिया के रूप में एकल केन्द्र अथवा बहु–नाभीय केन्द्र के चारो और अकृषित कार्य–कलापों व भूमि उपयोगो का संकेन्द्रण है। यह जनसंख्या के ग्रामीण क्षेत्र से नगरीय क्षेत्रो को प्रवास करने के परिणामस्वरूप घटित होता है। यह

नगरीय क्षेत्र या तो समीपवर्ती देहात क्षेत्र पर अपने विकास के लिए निर्भर करते है, अथवा आधुनिक संचार एवं परिवहन साधनों की सहायता से इस समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करने है। उपरोक्त परिभाशाओं से विदित होता है कि नगरीकरण स्थिर नहीं है, बल्कि गतिशील है। इसकी गति पर अर्थव्यवस्था का प्रभाव पड़ता है। यह अर्थव्यवस्था जितनी तीव्रता से कृषि अर्थव्यवस्था की और बढ़ती है, उतनी तेजी से नगरीकरण भी बढ़ता है। नगरो की जनसंख्या में वृद्धि के साथ–साथ उनकी संख्या में निरन्तर वृद्धि होती है। कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का अनुपात भी बढ़ता रहता है। इसीलिए यह कहा जाता है कि नगरीकरण एक प्रक्रिया है।

(क) उद्‌भव काल –

नगरों को इतिहास अत्यन्त प्राचीन एवं रोचक है। नगर सबसे पहले कब बने, यह अभी तक विवाद का विषय है। जब से नगर बने तब से लेकर आज तक उनके स्वरूप तथा कार्यो में परिवर्तन होते रहे है। कुछ नगर आज भी महत्वपूर्ण स्थिति तथा राजनेतिक परिस्थितियों के कारण अपने में सम्पूर्ण प्राचीन इतिहास को छिपाये हुए है। किन्तु अनेक नगर कालचक्र में अपना अस्तित्व समाप्त कर चुके है। कुछ नगरों का बार–बार पुनरूद्वार भी किया गया है। इस प्रकार नगरों का विकास, उत्थान या पतन समय के बदलते हुए मूल्यो के साथ होता रहा है।

पृथ्वी पर नगर सबसे पहले कब बने, यह प्रश्न हमें बार–बार सोचने पर विवश करता है। इसका सही उत्तर कोई भी विद्वान नही दे पाया है। ए.बी. गैलियन का कहना है कि प्रारम्भ में मानव को दो अवस्थाओं मे से गुजरना पड़ा। इनमें से एक अवस्था पूर्व पाशाण युग में मानव गुफाओं मे से निकलकर बाहर खुले क्षेत्र में आया जहाँ उसने पेड़ो की शाखाओं व पत्तो की सहायता से झोपड़ियाँ बनायी और उसका यह कदम ही नगरीकरण की दिशा में सबसे पहला कदम था। उत्तर पाशाण युग में मानव ने खेती करना, पशुओ को पालना शुरू कर दिया। वह एक स्थान पर प्रेम की भावना के साथ परिवार के रूप मे रहने लगा। इस प्रकार से इस कृशक समुदाय ने सुरक्षा की भावना से एक साथ रहकर गाँवों के निर्माण में योगदान दिया इन गांवो का बसाव स्थान प्राकृतिक विपदाओ से पूर्णतया सुरक्षित था। उन्होने बसाव–स्थानों के रूप में उच्च स्थलों, द्वीपों व प्रायद्वीपो को चुना। सबसे प्राचीन गाँव स्विस लेक में पाइल्स पर बसा मिलता है। इन गाँवों ने ही वर्तमान में नगरों का रूप धारण किया। एस.ए.क्वीन व एल.एफ.थोमस के अनुसार वर्तमान नगर गाँवो का ही परिवर्तित रूप है।

ऐतिहासिक खोजो एवं शोध पत्रो द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि ईसा से 5000–6000 वर्ष पूर्व तक नगर अस्तित्व मे आ चुके थे। किन्सले डेविस ने बताया है कि ईसा से 6000 वर्ष से 3000 वर्ष पूर्व तक के बीच का समय ऐसा है जिसमें नगर में आ चुके थे तथा ईसा से 3000 वर्ष पूर्व ऐसे नगरों का जन्म हो चुका था जिनको हम वास्तविक रूप से नगर का नाम दे सकते है। ग्रिफिथ टेलर का कहना है कि लगभग 6000–5000 ईसा पूर्व नगर सबसे पहले पृथ्वी पर देखने में आये। प्रारम्भ में नील व दजला – फरात नदियों की धाटियों में नगरो का विकास हुआ। यहॉ पर नगरों का जन्म ईसा से 4000 से 2500 वर्ष पूर्व हो चुका था। इरेच, उर, बेबीलोन नगर, मेसोपोटामिया में तथा मेम्फिस और थीबेस नगर नील धाटी में स्थापित हो गए थे। इनके बाद सिंधु धाटी में मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, चीन में शिंयाग यूरोप में एथेन्स और स्पार्टा व मेसो अमेरिका में टिकल नगर की स्थापना हुई।

भूमध्यसागर के पूर्वी भाग में नगरों का काफी विकास 3500 वर्ष पूर्व हो गया था। यहॉ पर सिड़ोन, टायरे, थेम्स, कोरिल्ज, सिरक्यूल, रोम कारफज नगर स्थापित हो गए थे। नगरीय विकास के पूर्व कृषि गॉवों की जनसंख्या 200 से 350 के बीच थी तथा वे कुछ एकड़ क्षेत्र पर ही फैले थे जबकि निम्न मेसोपोटामिया में स्थित नगर कई सौ एकड़ क्षेत्र में फैले गये थे। नगरीय विकास का जनसंख्या वृद्धि पर कोई प्रभाव देखने मे नही आया। आरम्भिक नगरीय सभ्यता का आधार कृषि था। नगरो के बनने से उसमे कोई परिवर्तन नही आया। नगरो की जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रो की अपेक्षा कम थी। 4500 वर्ष पूर्व मध्य – पूर्व एशिया के उपजाऊ अर्द्वचन्द्राकार क्षेत्र मे ग्रामीण जनसंख्या का धनत्व 2500 व्यक्ति प्रति 100 वर्ग मील था। जबकि मेसोपोटामिया मैदान की नगरीय बस्ती सुमेरिया मे यह धनत्व 5000 व्यक्ति प्रति 100 वर्ग मील था।

उत्तर पाशाण के मानव ने नगरीकरण की दिशा मे सबसे पहला कदम रखा था। यह मानव शिकार व भोजन संग्रह का कार्य करता था। जहॉं–जहॉं परिस्थितियां उसके अधिक अनुकूल थी वहॉं उसने जमीन पर जुताई बुआई का कार्य शुरू कर दिया। वह खेती के साथ–साथ पशुओ को भी पालने लगा। कृषि के अतिरिक्त उत्पादन ने विनिमय की भावना को पैदा किया। इससे यातायात सुविधाओं का विकास होने मे मदद मिली और मानव समूह परस्पर एक – दूसरे के अधिक निकट सम्पर्क मे आ गये। कृषि के साथ–साथ हल बनाने, पहिया बनाने तथा धातु का प्रयोग करना भी सीख गया था। अतः नगरीकरण की और मानव का पहला कदम सभ्यता की ओर बढ़ने की दिशा मे पहला कदम था। इसलिए कहा जाता है कि नगर उतने पुराने है, जितनी पुरानी सभ्यता।

उपरोक्त तथ्यों से स्पश्ट होता है कि नगरीय संस्कृति का उदभव तीन अवस्थाओं के पश्चात हुआ है। यह अवस्थाऐं क्रमशः शिकार एवं भोजन संग्रह, पशुचारण संस्कृति, कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था है। इसके पश्चात ही नगरीय अवस्था का जन्म हुआ है जो स्थायी जीवन का प्रतीक है। इस अवस्था की शुरूआत से लेकर वर्तमान तक नगरो के स्वरूप मे अनेक परिवर्तन देखने मे आते है।

(ख) विकासशील अवस्था –

मानव ने प्रारम्भ मे गुफा से निकलकर नगरो का निर्माण धीरे–धीरे शुरू कर दिया था। प्राचीनकाल के प्रारम्भ मे नगरीकरण का क्षेत्र नदी धाटियों के स्थान पर भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में स्थापित हो गया। इसका कारण व्यापारिक गतिविधियों का विकास व सीमित भूमिगत संसाधन थे। लगभग 600 ई.पू. में उत्तरी अफ्रीका, इटली व भूमध्य सागरीय भागों में 80 से अधिक औपनिवेशिक बस्तियाँ विकसित हो चुकी थी। अब कृषि के स्थान पर व्यापार नगरीकरण के प्रमुख कारक के रूप मे उभरकर सामने आया। प्राचीनकाल मे यूरोप, भारतीय उपमहाद्वीप, पूर्वी एशिया व मध्य अमेरिका मे नगरीकरण का प्रसार तीव्र गति से हुआ।

(1) यूरोप–

यूनानी नगर –आठवी शताब्दी ई.पू. मे भूमध्यसागर के उत्तरी किनारे पर एजियन सागर के निकटवर्ती भागो मे औपनिवेशिक नगरो का जन्म होने लगा। कृषि हेतु उपयुक्त समतल भूमि संसाधन की सीमिमता व बढ़ती जनसंख्या, भूमध्य सागर के विभिन्न द्वीपो व प्रायद्वीपो मे बन्दरगाह के लिए उपयुक्त स्थल आदि कारको ने यूनानियों को औपनिवेशिक नगरो की स्थापना एवं व्यावार हेतु प्रेशित किया। सर्वप्रथम इटली मे यूनानी औपनिवेशिक नगरो सिराक्पूज, कूमे, मासीलिया आदि की स्थापना हुई। पूनानियो के उपनिवेश, भूमध्यसागर से लेकर काला सागर तक विस्तृत क्षेत्र मे फैले होने से अनेक व्यापारिक नगरो की स्थापना हुई जैसे – इटली मे नेपुल्स, सिसली मे सेलिनस, एशिया माइनर में एफिसस, सार्डिस।

रोमन नगर – 700 ई.पू. से 500 ई.पू. के मध्य यूरोप मे नगरीय विकास का केन्द्र धीरे–धीरे यूनान से इटली की ओर स्थानान्तरित हो गया। यहाँ एट्रक्शन लोगो ने कई नगर बनवाऐं। इसका प्रभाव प्रायद्वीपीय इटली के उत्तरी भाग, एपेनिनि के पश्चिम, उत्तरी स्विटजरलैण्ड व दक्षिणी जर्मन तक हुआ। रोमन लोग, यूनानी तथा एट्रक्सन से प्रभावित हुए। 500 ई.पू. मे रोमन साम्राज्य की स्थापना के साथ ही नगरीकरण का प्रसार प्रथम बार आल्पस के उत्तर की और हुआ। रोमन काल मे नगरो का निर्माण राइन नदी से डेन्यूब नदी तक विस्तृत भू–भाग पर हुआ।

रोम, लंदन, टयूरिन, लियोन्स, एक्वालिया, पार्क, ब्रुसेल्स, पेरिस, पुश्रेच, कोलोन, स्ट्रासबर्ग, कोर्डक्स, वियेना, जाग्रेव जैसे प्रमुख नगरो का जन्म रोमन काल मे ही हुआ। रोमन साम्राज्य के अन्तिम काल मे कुस्तुन्तुनिया तथा बाइजेक्टिपम नगरो का विकास हुआ। कारथागोनोवा, मापोस, हरमोस, ओस्टिया तथा डेलोस जैसे बन्दरगाह नगरो का भी विकास हुआ।

(2) एशिया –

प्राचीन काल मे एशिया महाद्वीप मे भारत, चीन तथा जापान के कई नगरो का विकास हुआ। चीन मे प्रौगेतिहासिक नगरो के पश्चात नगर निर्माण का दूसरा युग लगभग 300 ई. पू. में प्रारम्भ हुआ। विशाल चीनी साम्राज्य में लियांगचाऊ, खोतान, अन्हसी, सुचारू, कैन्टन, नानकिंग तथा चेगटु नगर अस्तित्व मे आए। चीन के नगरीकरण का प्रभाव निकटवर्ती जापान पर भी पड़ा। ओसाका इस समय जापान के प्रमुख नगर के रूप मे विकसित हुआ। इस प्रकार अटलांटिक तट पर स्थित आइबेरिया से लेकर प्रशान्त तट पर चीन तक फैली विशाल पेटी मे स्थित अधिकांश नगर मोटे तौर पर ग्रिड विन्यास पर आधारित थे।

भारत – भारत मे यह विशाल मौर्य साम्राज्य व गुप्त साम्राज्य का काल था। दोनो ही साम्राज्यो का विस्तार भारतीय उप महाद्वीप के विस्तृत भू–भाग पर होने के साथ ही सुरक्षा व प्रशासनिक स्थिरता के कारण प्रत्येक क्षेत्र मे उन्नति हुई। भारतीय इतिहास मे स्वर्ण युग के नाम से अंकित इस काल मे अनेक क्षेत्रो मे प्रथम बार नगरीकरण हुआ। छठी शताब्दी ई. पू. में कौशाम्बी, अयोध्या, श्रावस्ती, राजगृह, चम्पा, काशी, वैशाली तथा उज्जेन भारत के प्रमुख नगर थे।

(3) मध्य अमेरिका –

एशिया, यूरोप व भूमध्यसागीय अफ्रीका के बाहर प्रथम बार मध्य अमेरिका मे लगभग तीसरी शताब्दी ई.पू. मे नगरीय सभ्यता का विकास हुआ। मैक्सिको, ब्रिटिश होण्डुरास व ग्वाटेमाल मे विकसित सभ्यता को माया सभ्यता के नाम से जाना जाता हैं। कोपान, क्विरिगुआ व पेलेक्क प्रारम्भिक नगरों के रूप वर्तमान ग्वटिमाला मे विकसित हुए। भूमि पर जनाधिक्य बढ़ने से उत्तर की ओर स्थानान्तरण हुआ तथा मापापान, उक्समल ओर चिचेन नगर अस्तित्व मे आए। टिफाल, कैलकमुल, कोपान तथा पैलेनक्यू मध्य अमेरिका क्षेत्र के चार विशालतम नगर थे।

(ग) पूर्व आधुनिक काल –

मानव ने नगरो का निर्माण काफी तेजी से किया यह अवस्था मध्यकाल की समाप्ति से लेकर औद्योगिक क्रान्ति तक के काल को पुनर्जागरण काल या पूर्व आधुनिक अवस्था कहा

जाता है। इसमे 1500 ई. से 1800 ई. तक की अवधि शामिल है जिसमे मध्यकालीन प्रभाव घटता जा रहा था एवं आधुनिक प्रवृतियों का समावेश होता जा रहा था। मध्यकाल के अन्त मे व सोलहवी शताब्दी मे राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र मे अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए जिनका नगरीय विकास पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा।

बारूक योजना – पूर्व आधुनिक अवस्था की प्रमुख विशेशता बारूक नगर योजना का विकास है। इस काल को बारूक युग भी कहा गया है। पुराने नगरो को परिवर्तित दशाओं के अनुरूप बसाने के लिए इस योजना का विकास किया गया। इस योजना मे नगरीय आकारिकी मे मार्ग सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व बन गए। पूर्ववर्ती संकरे मार्गो के स्थान पर ज्यामितीय नियमितता वाले ऐसे चौडे मार्गो का विकास किया गया। चौडे राजमार्गो के साथ ही फव्वारो व उद्योनो से युक्त राजमहलो का निर्माण भी बारूक योजना का एक भाग था। नगर परकोटे का तारा प्रतिरूप पर पुनर्निर्माण किया गया। आधुनिक परिवहन साधनो को देखते हुए वर्तमान मे इस योजना की उपयोगिता बहुत कम रह गई है। इस कमियों के उपरान्त भी पूर्व आधुनिक अवस्था मे ही नही बल्कि आधुनिक अवस्था मे भी कई नगरों का निर्माण बारूक योजना पर आधारित रहा है। जैसे टोकियो, नई दिल्ली, सेनफ्रांसिस्को, शिकांगो, वाशिंगटन।

(1) यूरोप – यूरोप मे मध्यकाल के उतरार्द्व मे महामारियो, तुर्क आक्रमण व युद्वों के कारण कुछ समय के लिए नगरीय विकास थम गया। किन्तु सोलहवीं से अठारहवी शताब्दी के मध्य नगरीय जीवन का विकास नए रूप मे हुआ। राजधानी नगर साम्राज्य की शक्ति और वैभव प्रदर्शन के प्रतीक बन गए। नवीन राजधानियों के रूप मे नगरो का विकास तीव्र गति से हुआ। वर्सेलीज, मेड्रिड, म्यूनिख, वियेना, बुडापेस्ट, वार्सा, सेण्टपीटर्सबर्ग व कोपनहेगन राजधानी नगरो के रूप में स्थापित हुए। बारूक प्रणाली पर यूरोप के विभिन्न भागो मे कई मध्य व सुन्दर नगर बसाए गए इनमे सार लुइस, कार्ल्सरूहे, रास्टार, वर्सेलीज आदि प्रमुख थे। फ्रांस मे पेरिस, लियोन्स, नाइस व बोर्डो, इटली में रोम फ्लोरेंस व नेपुल्स तथा इग्लैण्ड में लन्दन को सुधार करके आकर्शक बनाया गया।

(2) उत्तरी अमेरिका – नई दुनिया की खोज के बाद सोलहवी शताब्दी मे उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट के सहारे औपनिवेशिक बस्तियों की स्थापना यूरोपीय लोगो द्वारा की जाने लगी। सत्रहवीं शताब्दी मे जिन नगरो की स्थापना हुई उनमें न्यूयार्क, बोस्टन, विलियम्स बर्ग व फिलाडेल्फिया प्रमुख थे। अठारहवीं शताब्दी में अमेरिकी नगरों का तीव्र विकास हुआ। पूर्वी समुद्री तट पर कई नवीन नगरों की स्थापना के साथ ही ओहियों व

मिसिसिपी नदी धाटियों मे भी नगरो की स्थापना हुई। इसी काल में प्रशान्त तट पर प्रथम नगर अस्तित्व मे आए। ड्रेटॉयट, न्यू आर्लियन्स, बाल्टीमूर, सेन्टलुइस, सेनडियागो, पिटसबर्ग, क्लीवलैण्ड, सेनफ्रासिस्को व लॉस एजिल्स जैसे वर्तमान प्रमुख नगरो का जन्म इसी काल में हुआ।

(3) दक्षिणी अमेरिका – सर्वप्रथम स्पेनवासियों ने सोलहवी शताब्दी में दक्षिणी अमेरिका में औपनिवेशिक बस्तियों की स्थापना की। लीमा 1600 ई. मे 14000 की जनसंख्या सहित दक्षिणी अमेरिका का प्रमुख नगर था। सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्व तक भी बस्तियां बहुत छोटी थी। ब्यूनस आपर्स भी एक छोटी बस्ती के रूप मे था जो कि सत्रहवी शताब्दी के अन्त मे नगर का स्वरूप प्राप्त कर सका। इसी काल मे पेरानाम्बुको, बहिया, रियोडिजेनेरा तथा सेन्टियागा नगरों का जन्म हुआ।

(4) एशिया – पूर्व आधुनिक अवस्था मे एशिया के दक्षिण पूर्वी व मध्यवर्ती भाग में अनेक नगरों का जन्म होने के साथ ही पूर्ववर्ती नगरों के आकार मे भी पर्याप्त वृद्वि हुई। पीकिंग पुनर्जागरण काल के अन्त तक एशिया का वृहतम नगर बना रहा इस समय शंघाई भी चीन का एक प्रमुख नगर था। टोकियो जो कि मध्यकाल मे एक छोटी बस्ती के रूप में था, 1600 ई. में शोगन सामान्तों द्वारा राजधानी बनाने के पश्चात तीव्र गति से बढ़ने लगा। जापान मे सोलहवी शताब्दी मे कई छोटे–छोटे दुर्ग नगरो का जन्म हुआ। मध्य एशिया मे सोलहवीं शताब्दी में ताशकंद, समरकन्द, फरगना, बुखारा, काबुल व गजनी प्रमुख नगर थे। उपनिवेशीकरण के कारण दक्षिण–पूर्वी एशिया मे सिंगापुर रंगून व मनीला सहित कई बन्दरगाह नगरों की स्थापना हुई।

भारत – भारत मे यह राजनैतिक स्थिरता का काल था। मध्यकाल के अन्त मे व सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में सिकन्दर लोदी ने अपने साम्राज्य मे अनेक नगरों की स्थापना की, जिनमें आगरा भी शामिल है। मुगल साम्राज्य की स्थापना के कुछ समय पूर्व ही अहमदनगर, सूरत, बुरहानपुर, गोलकुण्डा आदि नगरो की स्थापना हो चुकी थी। मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ ही भारत मे नगरीय विकास की दृश्टि से एक नए युग का सुत्रपात हुआ। शेरशाह सूरी के सक्षिप्त शासनकाल (1540–45) में राश्ट्रीय महत्व के सड़क मार्गो व पुलों का निर्माण होने से व्यापारिक नगरो का विकास होने लगा। उसने पाटलिपुत्र नगर का निर्माण करवाया, जो बाद मे पटना कहलाने लगा। अकबर के शासनकाल (1556–1605) मे नगरो का अत्यधिक विकास हुआ। अकबर काल मे निर्मित नगरो मे इलाहाबाद, फतेहपुर सीकरी, फिरोजाबाद, जलालाबाद, तिलहर, अकबरपुर, जलालपुर व

लखनऊ प्रमुख नगर थे। नवीन नगरों की स्थापना के साथ ही अयोध्या, मथुरा तथा बनारस जैसे प्राचीन धार्मिक नगरो का पुनरूत्थान हुआ। अमृतसर, बंगलौर, हैदराबाद, बरेली, राजमहल, चन्द्रगिरी व हुगली सोलहवी शताब्दी मे विकसित अन्य प्रमुख नगर थे। मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह ने 1559 मे चित्तौडगढ़ से राजधानी परिवर्तन कर उदयपुर नगर की स्थापना नवीन राजधानी के रूप में की। सोलहवी शताब्दी में रायसिंह के काल में बीकानेर, मानसिंह के काल में आमेर सुर्जन हाड़ा के काल में बून्दी तथा सत्रहवी शताब्दी मे माधोसिह के काल में कोटा नगर का विकास द्रुत गति से हुआ है।

(ध) आधुनिक काल :–

आधुनिक काल में नगर औद्योगिक सभ्यता के विकास की देन हैं। इस सभ्यता का जन्म नगरीय बस्तियों के जन्म व विकास में सहायक हुआ हैं। इसने नगरों के आकार व रूप पर भारी प्रभाव डाला हैं। अनेक नगर बड़े–बड़े उद्योगों की गतिविधियों के केन्द्र बन गये हैं। उद्योगो ने अपना इतना अधिक प्रभुत्व स्थापित कर लिया हैं कि यदि उद्योग का पतन हो जाता हैं तो उस नगर का अस्तित्व भी संदिग्ध हो जाता हैं। उद्योगों ने रहने वाले लोगों की आर्थिक एवं सामाजिक दशा पर गहरा प्रभाव डाला है। विश्व के बड़े–बड़े औधेगिक नगर उसकी आर्थिक सभ्यता का प्रतीक बन गये हैं। उनकी सामाजिक दशा भी काफी विकसित मिलती हैं। यातायात व संचार के नवीन विकसित साधनों का नगर पर काफी प्रभाव पड़ा हैं। इन साधनों ने नगर के आर्थिक व भौतिक ढाँचे में व्यापक परिवर्तन किये हैं। यह नगर इन साधनों के केन्द्र बन गये हैं। आधुनिक समय में विकसित वैज्ञानिक यन्त्रों का सबसे अधिक प्रयोग नगरों में होता हुआ मिलता है। नगरवासी सबसे अधिक सुविधाजनक एवं सम्पन जीवन व्यतीत करते हैं। नगर में रहने वाले लोगों का जीवन–स्तर ग्रामीण लोगों से अधिक ऊँचा पाया जाता है। इसी कारण विश्व के विकसित देशों में अधिकांश जनसंख्या नगरों में निवास करती है। ब्रिटेन की 86 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में रहती है स्पश्ट है कि अधिक नगरीय जनसंख्या सम्पत्रता व विकसित सभ्यता का परिचायक है। आधुनिक नगरों ने अपने आकार में भारी वृद्धि की है। वहाँ पर जनसंख्या व मकानों की भारी भीड़–भाड़ मिलती है। इस कारण अनेक नगरों में नगरीय सुविधाओं का अभाव हो गया है जिसका नगरवासियों के जीवन–स्तर पर प्रतिकुल प्रभाव पड़ा है। नगरीय पर्यावरण अत्यन्त प्रदूशित हो गया है। सड़कों पर वाहनों का भारी जमाव, बढ़ता हुआ शोर, नई–नई बीमारियों व महामारियों का फैलना, प्रदूशित जल एवं वायु आदि परेशानियों ने नगरीय जीवन को दूभर बना दिया है। लगभग सभी बड़े औद्योगिक व व्यापारिक नगर गंदी बस्तियों की समस्याओं

से ग्रसित हैं। नगरों में अनेक प्रकार के अपराध बढ़ गए हैं। नगरों के भीतर आर्थिक व सामाजिक असमानताओं ने उनके ढाँचे को चरमरा दिया है। आधुनिक में नगर सुविधाओं के स्थान पर असुविधाओं के प्रतीक बन गए हैं।

आधुनिक काल के नगरों एवं नगरीकरण की प्रमुख विशेशताएँ :–

औद्योगिक क्रान्ति के कारण तीव्र नगरीकरण हुआ। उच्च यंत्रीकरण तथा वैज्ञानिक प्रविधियों के प्रयोग से कृषि के वाणिज्यिक स्वरूप का विकास हुआ, जो कि बढ़ती नगरीय जनसंख्या की भोजन आपूर्ति हेतु आवश्यक था। परिवहन मार्गों एवं साधनों के विकास से नगरों के उपनगरीय क्षेत्र तथा सेवा प्रदेश में वृद्धि हुई। खनन ने अनेक नगरों की स्थापना एवं वृद्धि को प्रभावित किया है। औपनिवेशिक के कारण एशिया, अफ्रीका व अमेरिका महाद्वीपों में अनेक नवीन नगरों की स्थापना व्यापारिक केन्द्रों के रूप में की गई है। विश्वविद्यालय, सैनिकों छावनियों व पर्यटन केन्द्रों के निकट कई नगरों का विकास हुआ। प्राकृतिक वृद्धि तथा ग्रामीण क्षेत्रों से होने वाले स्थानान्तरण के कारण नगरीय जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई।

आधुनिक काल में महानगरों का तीव्र विस्तार हुआ तथा विभिन्न नगरों के मध्य की दूरियाँ धटती गई। परिणामस्वरूप विस्तृत नगरीय क्षेत्र विकसित हुए, जिन्हें मेट्रोपालिस, सन्नगर, मेगालोपालिस व मेगासिटी कहा गया। विभिन्न देशों के विभाजन एवं विश्व युद्धों ने भी नगरों को प्रभावित किया। जनसंख्या के अत्यधिक संकेन्द्रण से नगर जन सुविधाओं के अभाव, बेरोजगारी, गन्दी बस्तियाँ तथा पर्यावरण प्रदूशण जैसी अनेक समस्याओं से गस्त हो गए।

2.3 भारत मे नगरीकरण की स्थिति :–

नगरीकरण एक सामाजिक–आर्थिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी क्षेत्र की जनसंख्या का एक बड़ा भाग कस्बो ओर नगरो मे संकेन्द्रित हो जाता है। भारत में सिन्धु घाटी सम्यता के अन्तर्गत विकसित मोहनजोदड़ो ओर हड़प्पा ऐसे बड़े ओर नियोजित नगर है। इस समय के अन्य नगरो मे लोथल, रंगपुर, रोजदी (गुजरात), रूपड़, कोटला निहांग (पंजाब), वाणावली (हरियाणा), काली बांगन (राजस्थान) आदि प्रमुख है। सिन्धु धाटी की सभ्यता ओर नगरो के कमी के बाद देश में नगरीकरण की शुरूआत आर्यो के आने के बाद (2500 ई.पू.) शुरू हुई जिसके फलस्वरूप तक्षशिला, इन्द्रप्रस्थ, मिथिला, द्वारका, कान्यकुब्ज (कन्नौज), ताम्रलिप्ति आदि नगर अस्तित्व मे आये।

बौद्वकालीन भारत राजनैतिक–प्रशासनिक दृश्टि से 16 महाजनपदों (राज्यों) में विभक्त था। पाटलिपुत्र (पटना) नगर की स्थापना 500 ई.पू. के समीप अजातशत्रु द्वारा 'पाटली' नामक गाँव के समीप की गयी थी। मौर्य शासन काल में यह राजधानी बन गया तथा 200–190 ई.पू. और 410–450 ई. के बीच विश्व का सबसे बड़ा नगर हो गया। इसी दौरान दन्तपुर (आन्ध्रप्रदेश), सुवर्णगिरी (कर्नाटक), कोल्हापुर (महाराश्ट्र), भड़ौच (गुजरात), तिरूचिरापल्ली (तमिलनाडु), जालन्धर (पंजाब), श्रीनगर (कश्मीर) आदि नगरो का भी विकास हुआ। हर्शवर्धन के शासन के दौरान कन्नौज, कान्ची, थानेश्वर, अयोध्या, वतापी, काशी, मालाकूट, उज्जेन, मदुराई देश के प्रमुख नगर है।

मध्ययुग के दौरान मुस्लिम शासको द्वारा दिल्ली, दौलताबाद, सहारनपुर, खुर्जा, लहरपुर, फिरोजाबाद, जौनपुर, आगरा, इलाहाबाद, फतेहपुर सीकरी, जलालाबाद, लखनऊ, तिलहर, अकबरपुर, जलालपुर, शहजहांपुर, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, आजमगढ़, औरंगाबाद, बंगलोर, सिरा, हैदराबाद, अमृतसर, बरेली, अजमेर, हुगली, सिकन्दराबाद आदि नगरो की स्थापना की गई।

चेरा, चौला ओर पांड्या शासको द्वारा मदुराई, कांचीपुरम, त्रिवेन्द्रम, तिरूनलवेली, कोयम्बटूर, कुम्बाकोरम, नागरकोइल अलेप्पी, तिरूचिरापल्ली, राजमहेन्द्री एवं तिरूपति आदि नगर विकसित किए गए।

औपनिवेशिक काल में औद्योगिक वस्तुओं के आयात ओर कच्चे माल के निर्यात हेतु दीव, दमण, पणजी, मरमुगाव (पुर्तगालियो द्वारा), मुम्बई, सूरत, चैन्नई, कोलकाता (अग्रेजो द्वारा), माही, कालीकट, पाण्डिचेरी (फ्रांसीसियो द्वारा), कोची एवं ट्रांकीज (डचों द्वारा) बन्दरगाह नगरो का विकास किया गया इसी प्रकार मसूरी, लैण्डोर, हलदानी, नैनीताल, दार्जिलिंग, शिमला, महाबलेश्वर, रांची, पंचमढ़ी जैसे पहाड़ी नगरो की स्थापना की गयी। इसी दौरान स्थानीय राजाओं एवं शासकों ने राजधानियों एवं गढ़ों के रूप में जयपुर, भरतपुर, फैजाबाद, गाजियाबाद, झांसी, मिर्जापुर आदि नगरो की स्थापना की।

सन् 1857 की क्रान्ति के बाद देश मे रेलमार्गो का निर्माण हुआ जिसके कारण रेल जंक्शन के रूप में कई नगरों (मुगलसराय, टुण्डला, काठगोदाम अद्दनेरा) की स्थापना हुई वही कई पुराने नगरों (इलाहाबाद, कानपुर, नागपुर, गाजियाबाद आदि) नगरो के कार्यो और मध्य मे अभिवृद्वि हुई।

भारत के आधुनिक नगरीकरण के अध्ययन हेतु भारतीय जनगणना विभाग द्वारा सन् 1881 से 10 वर्ष के नियमित अन्तराल पर उपलब्ध आंकड़ो के आधार पर 1881 मे की गई प्रथम जनगणना के अनुसार केवल 9.3 प्रतिशत जनसंख्या नगरो मे निवास करती थी, जो 1891

में 0.1 प्रतिशत वृद्वि के साथ 9.4 प्रतिशत हो गई। इस प्रकार नगरीय जनसंख्या में दशकीय वृद्वि एक प्रतिशत से भी कम रही। इस अवधि को हम नगरीय जनसंख्या में वृद्वि से स्थिरता एवं मंद वृद्वि की दृश्टि से स्थिरता एवं मंद वृद्वि का काल कह सकते है।

नगरीकरण का लम्बा इतिहास रखने वाले देश ने मात्र 10.8 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या के साथ बीसवी शताब्दी मे प्रवेश किया। 1901 मे देश मे कुल 1851 नगरीय स्थान थे, जिससे 2.58 करोड़ व्यक्ति निवास करते थे। प्रथम श्रेणी (एक लाख व अधिक जनसंख्या) के नगरों की संख्या मात्र 25 थी, जिनमे देश की नगरीय जनसंख्या का 25.8 प्रतिशत भाग निवास करता था। कोलकाता देश का सबसे बड़ा नगर था, जिसकी जनसंख्या 14.88 लाख थी। देश की राजधानी होने के साथ ही यह प्रमुख बन्दरगाह भी था। द्वितीय व तृतीय स्थान पर क्रमशः मुम्बई (8.12 लाख) तथा चैन्नई (5.94 लाख) नगर थे। तीनो ही नगर अंग्रेजो द्वारा विकसित किए गए थे। द्वितीय श्रेणी (50000 से 99999 जनसंख्या) व तृतीय श्रेणी (20000 से 49999 जनसंख्या) के नगरों की संख्या क्रमशः 42 तथा 136 थी। इनमे देश की 26.9 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या निवास करती थी। चतुर्थ, पंचम व ाश्टम श्रेणी (2000 से कम जनसंख्या) के नगरो की संख्या 1645 थी। लगभग 90 प्रतिशत नगर बहुत छोटे थे, जहॉ देश की लगभग आधी नगरीय जनसंख्या निवास करती थी।

भारत मे 1901 के पश्चात हुए नगरीकरण को निम्न कालों मे बाँट सकते है :–

(1) हास एवं मन्द नगरीकरण काल (1907 – 1931) –

बीसवी शताब्दी के प्रथम दो दशको में महामारियों एवं अन्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण नगरीय जनसंख्या प्रतिशत मे कमी आई प्रथम दशक मे मात्र 0.4 प्रतिशत वृद्वि से नगरीय जनसंख्या 2.58 करोड से बढ़कर 2.59 करोड हो गई, किन्तु नगरीकरण स्तर अब भी 10.8 प्रतिशत ही रहा इस अवधि मे अनेक मार्गो मे अकाल (1903–08), प्लेग (1904), मोतीसरा (1905–08), मवेश्या (1901) आदि के प्रकोप से मृत्यु दर मे वृद्वि हुई। अगले दशक में पुनः एन्फ्लुएंजा महामारी (1918–1919) के प्रकोप ने मृत्यु दर को बढ़ा दिया जो कि 47 प्रति हजार हो गई। इस अवधि में जहाँ ग्रामीण जनसंख्या में 1.3 प्रतिशत कमी हुई, वही नगरीय जनसंख्या 8.3 प्रतिशत वृद्वि के साथ 2.81 करोड हो गई। अब नगरीय जनसंख्या 10.3 प्रतिशत से बढ़कर 11.2 प्रतिशत हो गई। 1921–1930 के दशक मे आपदाओ ओर अन्य बिमारियों से मुफ्त रहने के कारण नगरीकरण की प्रक्रिया ने प्रथम बार कुछ गति पकड़ी। मृत्युदर मे अत्यधिक कमी आई जो कि 47 प्रति हजार से धटकर 36 प्रतिहजार रह गई। जन्म दर पूर्व की भाँति ही 46 प्रति हजार बनी रही। इस प्रकार प्राकृतिक वृद्वि के कारण

देश की जनसंख्या मे 11 प्रतिशत की वृद्वि हुई। नगरीय जनसंख्या 19.1 प्रतिशत वृद्वि के साथ 3.35 करोड़ हो गई। कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का योगदान 11.2 से 11.9 प्रतिशत हो गया। इस अवधि मे कुल नगरीय केन्द्रो की संख्या 1974 से बढ़कर 2103 हो गई। इस प्रकार बीसवीं शताब्दी के प्रथम तीन दशकों में (1901–1930) नगरीय जनसंख्या 10.8 प्रतिशत से बढ़कर 11.9 प्रतिशत ही हो पाई। अतः इस काल को मन्द नगरीकरण काल कहा गया है।

(2) मध्यम नगरीकरण काल (1931–1961) –

1931–1940 के दशक मे द्वितीय विश्व युद्व, उद्योगो के विकास हेतु किए गए प्रयास तथा प्राकृतिक आपदाओं से सुरक्षा के कारण नगरीकरण की प्रक्रिया पूर्व की अपेक्षा तीव्र हो गई। नगरीय जनसंख्या 32 प्रतिशत वृद्वि के साथ 4.42 करोड़ हो गई, जो कुल जनसंख्या का 13.9 प्रतिशत थी। 1901 से 1930 की अवधि में नगरीय जनसंख्या मे कुल जितनी वृद्वि हुई थी, उससे डेढ़ गुना वृद्वि अकेले 1931– के दशक मे हुई। 1941–1950 का दशक कई धटनाओं व परिवर्तनों से भरा हुआ था। इसके पूर्वार्द्व पर द्वितीय विश्व युद्व तथा उतराई पर देश विभाजन व स्वतन्त्र भारत की औद्योगिक नीतियों का प्रभाव पड़ा। इस काल में नगरीकरण की सर्वाधिक 41.4 प्रतिशत वृद्वि अंकित की गई। भारत विभाजन के कारण लाखों व्यक्ति विस्थापित हुए। लगभग एक करोड़ गैर मुस्तिल पाकिस्तान से भारत आए तथा लगभग 75 लाख मुस्लिम पाकिस्तान से भारत छोडकर गए। नगरों की संख्या 2424 से बढ़कर 1951 मे 3059 हो गई तथा नगरीय जनसंख्या 4.41 करोड़ से बढ़कर 6.24 करोड़ हो गई। मात्र इस दशक मे ही नगरीय जनसंख्या मे 1.83 करोड की वृद्वि हुई जो विगत चार दशकों (1901–1941) में हुई कुल वृद्वि के बराबर थी। 1961 मे नगरीय जनसंख्या बढ़कर 7.89 करोड़ हो गई, जो कुल जनसंख्या का 1.8 प्रतिशत थी। इस प्रकार 1931 से 1960 के मध्य नगरीय जनसंख्या मे कुल 4.5 करोड़ की वृद्वि हुई तथा नगरीय जनसंख्या 11.9 प्रतिशत से बढ़कर 18 प्रतिशत हो गई।

तालिका– 2.3.1

भारत में नगरीकरण (1901–2011)

(जनसंख्या 10 लाख में)

जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या	दशकीय वृद्धि (प्रतिशत)	नगरीय जनसंख्या (प्रतिशत)	दशकीय वृद्धि (प्रतिशत)	नगरीय (प्रतिशत)	नगरों की संख्या
1901	238.39	–	25.85	–	10.8	1917
1911	252.09	5.75	25.94	0.35	10.3	1909
1921	251.32	-0.31	28.18	8.22	11.2	2047
1931	278.97	11.00	33.45	19.14	11.9	2219
1941	318.66	14.22	44.15	31.97	13.9	2424
1951	361.08	13.31	62.44	41.38	17.9	3059
1961	439.23	21.51	78.93	26.41	18.0	2699
1971	548.15	24.80	109.09	38.23	19.9	3119
1981	683.32	24.66	159.70	46.02	23.2	4019
1991	846.30	23.85	217.18	36.19	25.7	4689
2001	1027.01	21.34	285.53	31.33	27.78	5167
2011	1210.02	17.64	377.11	31.80	31.16	7935

स्त्रोत – भारतीय जनगणना – 2011

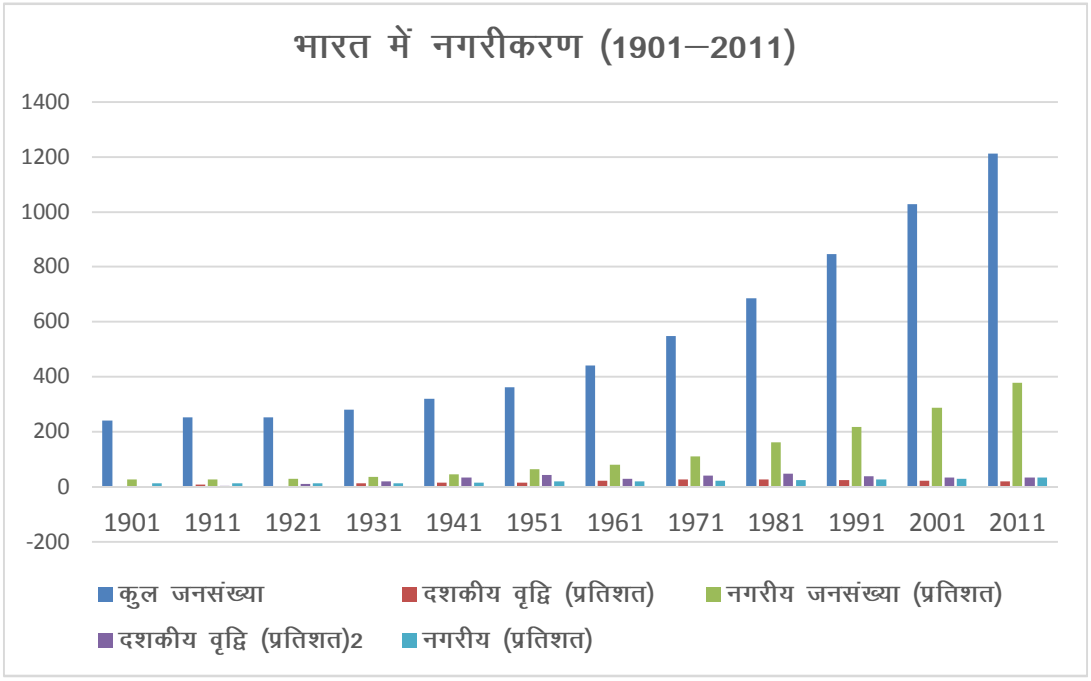

आलेख संख्या–3 : भारत में नगरीकरण (1901–2011)

(3) तीव्र नगरीकरण काल (1961–2011) –

1961 के बाद आर्थिक विकास की गति मे दृढ़ता आने के साथ–साथ नगरीय विकास की गति भी तीव्र होने लगी। 1961 मे नगरीय जनसंख्या 7.8 करोड़ थी जो पचास वर्शो मे बढ़कर 2011 मे 37.11 करोड़ हो गई। यह वृद्वि बीसवी शताब्दी में हुई कुल नगरीय वृद्वि से भी अधिक है। 1961–1971 के दशक मे नगरीय जनसंख्या में 38.2 प्रतिशत की वृद्वि हुई, जो पूर्ववर्ती दशकों से डेढ़ गुना अधिक थी। 1971 मे नगरीय जनसंख्या 10.91 करोड़ हो गई, जो कुल जनसंख्या का 19.9 प्रतिशत थी। नगरो की संख्या भी 2699 से बढ़कर 3119 हो गई।

1971–1981 के दशक मे भी नगरीकरण की गति तीव्र रही। 46.1 प्रतिशत वृद्वि दर के साथ नगरीय जनसंख्या 10.91 करोड़ से बढ़कर 15.97 करोड़ हो गई। इस दशक में हुई वृद्वि नगरीय इतिहास की सर्वाधिक वृद्वि रही। अब कुल जनसंख्या मे नगरीय जनसंख्या का भाग 23.3 प्रतिशत हो गया। कुल नगरों की संख्या भी 4019 हो गयी। 1981–1991 के दशक मे यद्यपि नगरीकरण की गति तीव्र रही, किन्तु यह विगत दशकों की अपेक्षा मन्द थी। अब नगरीय जनसंख्या 15.97 करोड़ से बढ़कर 21.71 करोड़ हो गई एवं कुल जनसंख्या मे नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 23.3 से बढ़कर 25.7 हो गया। इस दशक में नगरीय जनसंख्या में 5.74 करोड़ की वृद्वि हुई। नगरो की संख्या बढ़कर 4689 हो गयी।

बीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में नगरीय जनसंख्या में 31.48 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। यह देश की कुल जनसंख्या में हुई दशकीय वृद्वि 21.34 प्रतिशत से तो डेढ़ गुना थी, किन्तु 1961 से 2001 के मध्य हुई नगरीय वृद्वि मे न्यूनतम रही। 2001 मे नगरीय जनसंख्या 21. 71 करोड़ से बढ़कर 28.55 करोड़ हो गई। इस प्रकार शताब्दी के अन्तिम दशक में नगरीय जनसंख्या मे लगभग 7 करोड़ की वृद्वि हुई, जो कि अनेक देशो की कुल नगरीय जनसंख्या से भी अधिक है।

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक (2001–2011) में नगरीय जनसंख्या में 31.80 प्रतिशत की वृद्वि हुई। अब नगरीय जनसंख्या बढ़कर 37.71 करोड़ हो गयी कुल नगरो की संख्या मे एक दशक मे लगभग डेढ़ गुणा वृद्वि हुयी। 2011 मे नगरीकरण का स्तर 31.16 प्रतिशत हो गया। नगरों की संख्या बढ़कर 7935 हो गयी। इस वृद्वि मे पूर्व की भाँति प्राकृतिक वृद्वि तथा ग्रामीण–नगरीय स्थानातंरण की प्रमुख भूमिका रही।

तालिका– 2.3.2

भारत मे दसलाखी नगरों की वृद्वि (1901–2011)

वर्ष	दस लाखी नगरों की संख्या	जनसंख्या (दस लाख में)	कुल नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	दशकीय वृद्वि दर
1901	01	1.48	5.73	–
1911	02	2.76	10.65	86.48
1921	02	3.13	11.14	13.40
1931	02	3.41	10.18	8.94
1941	02	5.31	12.02	55.79
1951	05	11.75	18.81	121.32
1961	07	18.10	22.23	54.10
1971	09	27.83	25.51	53.75
1981	12	42.10	26.41	51.35
1991	23	70.66	32.50	67.16
2001	35	107.88	37.80	52.85
2011	53	160.72	42.44	50.00

स्त्रोत – भारतीय जनगणना – 2011

किंडसले डेविस ने 1962 मे भारत की नगरीय जनसंख्या एवं नगरीकरण के संबंध मे जो 2000 तक के अनुमान दिए थे, वो काफी उच्चानुमान साबित हुए है। 1971–1981 के दशक में वार्षिक वृद्वि दर 2.46 प्रतिशत, 1981–1991 के दशक में 2.38 प्रतिशत, 1991–2001 के दशक में 2.13 प्रतिशत तथा 2001–2011 में 1.76 प्रतिशत रही। इसकी तुलना मे नगरीय जनसंख्या की वृद्वि दर काफी अधिक रही, किन्तु इसमे भी निरन्तर हास हुआ है। 1971–1981 के दशक मे नगरीय जनसंख्या की वार्षिक वृद्वि दर 4.6 प्रतिशत, 1981–1991 के दशक मे 3.9 प्रतिशत, 1991–2001 तथा 2001–2011 के दशको में 3.1 प्रतिशत रही। 2011–2021 के दशक मे नगरीय जनसंख्या की वार्षिक वृद्वि दर 3.0 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। संयुक्त राश्ट्र संध के जनसंख्या प्रक्षेपो के अनुसार 2021–2031 के दशक में भारत मे नगरीय वृद्वि दर 2.5 प्रतिशत वार्षिक रहेगी। किन्तु तब भी यह दर विश्व की नगरीय जनसंख्या की औसत वृद्वि दर विश्व की नगरीय जनसंख्या की औसत वृद्वि दर 1.7

प्रतिशत से काफी अधिक होगी। उच्च वृद्वि दर के कारण 2021 मे भारत मे नगरीय जनसंख्या 50 करोड़ हो जाएगी, किन्तु तब भी नगरीकरण का स्तर 39 प्रतिशत ही हो पाएगा। संयुक्त राश्ट्र संघ प्रक्षेपों के अनुसार 2025 मे दिल्ली की जनसंख्या 3.2 करोड़ हो जाएगी तथा यह विश्व का दूसरा वृद्वतम नगर होगा। मुम्बई 2.6 करोड़ जनसंख्या के साथ देश का दूसरा बड़ा नगर हो जायेगा। भारत 2050 मे ही नगरीकृत देशो की श्रेणी मे आ जायेगा।

2.4 राजस्थान मे नगरीकरण की स्थिति :–

नगरीकरण से तात्पर्य ऐसे समाज के परिवर्तन की प्रक्रिया से है जो मुख्य रूप से चरित्र, अर्थव्यवस्था संस्कृति और जीवन शैली में ग्रामीण है, जो मुख्य रूप से नगरी है व औद्योगिक ओर सेवा क्षेत्र में संलग्न है। जी.टी.ट्रिवार्था नगरीकरण के स्तर को कुल जनसंख्या के अनुपात के रूप में परिमाणित किया गया है जो नगरी स्थानों में निवास करता है। एस. सी. बंसल ने कहा है कि नगरीकरण को एक पुरानी प्रक्रिया कहा जा सकता है लेकिन हाल ही के दशको में नगरीकरण मे तेजी देखी गई है। कस्बों की आबादी मे उच्च वृद्वि ओर कस्बों की संख्या में उच्च वृद्वि भी आधुनिक अवधि की मुख्य विशेशता है।

कृषि क्रान्ति, औद्योगिक क्रान्ति, परिवहन क्रान्ति, शिक्षा, रोजगार के अवसर और पुश ओर पुल जैसे कई कारक मुख्य रूप से नगरीकरण के लिए जिम्मेदार रहे है। नगरीकरण के कारको के बीच पुश ओर पुल कारको के प्रभाव ने ग्रामीण नगरी प्रवास नगरीकरण को बढ़ाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लगभग 3 मिलियन लोग हर हफ्ते नगरो मे आ रहे है। नगरीकरण की तीव्र दर यदी सही में आर्थिक विकास को प्रमाणित करने वाली प्रमुख प्रक्रियाओं मे से एक है। नगरीकरण स्वयं एक समाज मे आर्थिक और तकनीकी परिवर्तनो का एक उत्पाद है ओर बदले मे यह अर्थव्यवस्था ओर प्रौद्योगिकी मे बदलाव लाता है। यह ऐसी तकनीक है जो अर्थव्यवस्था को आकार देने के साथ–साथ नगरीकरण की गति ओर विशेशता को भी दर्शाती है। संयुक्त राश्ट्र (2014) के अनुसार नगरीकरण दुनिया की लगभग दो तिहाई आबादी 2050 तक नगरी वातावरण मे रहने के लिए तैयार है। यह अनुमान लगाया जाता है कि 2050 तक विकासशील दुनिया का लगभग 64% ओर विकसित दुनिया का 86% नगरीकरण का स्तर कम है (2011 मे 31.2%) लेकिन नगरी क्षेत्रो मे रहने वाले लोगो की एक बड़ी संख्या है ओर विश्व की नगरी आबादी का 10.6% हिस्सा है। नगरीय क्षेत्र सम्पूर्ण देश तथा राजस्थान के लिए आर्थिक विकास के संचालक के

रूप मे उभर रहे है। इसमें कोई अपवाद नही है परन्तु राज्यों मे मध्यम रूप मे नगरीकरण हो रहा है। 2011 के अनुसार जो कि 24.87% है।

राजस्थान मे नगरी आबादी 1901 मे 1.48 मिलियन से बढ़कर 2011 मे 17.05 मिलियन हो गई। राजस्थान मे पूर्ण नगरी आबादी पिछले ग्यारह दशको के दौरान ग्यारह गुना से अधिक बढ़ गई है। जबकि नगरीकरण का स्तर (कुल जनसंख्या के प्रतिशत के रूप मे नगरी जनसंख्या) भी दो गुना नही हो सकता है क्योकि ग्रामीण और नगरी आबादी की विकास दर के बीच बहुत कम अन्तर है।

तालिका 2.4.1

राजस्थान में नगरीकरण की प्रवृति (1901 – 2011)

जनगणना वर्ष	नगरीकरण का स्तर प्रतिशत में	जनगणना वर्ष	नगरीकरण का स्तर प्रतिशत में
1901	14.41	1961	16.18
1911	12.87	1971	17.4
1921	13.73	1981	20.49
1931	14.15	1991	22.39
1941	14.67	2001	24.52
1951	17.1	2011	24.81

स्त्रोत :– भारतीय जनगणना 2011

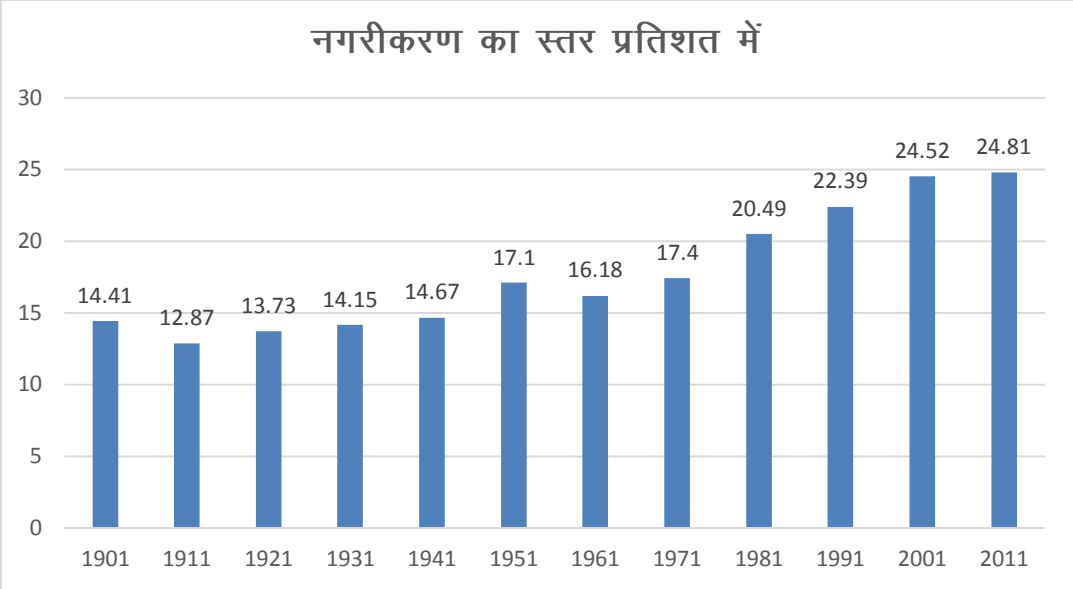

आलेख संख्या–4 : राजस्थान में नगरीकरण की प्रवृति (1901 – 2011)

राजस्थान मे नगरीकरण का स्तर 1901 मे 14.41% से बढ़कर 2011 मे 24.87% तक लगातार बढ़ रहा है। 1901 ओर 1941 राजस्थान मे नगरीकरण का स्तर भारत की तुलना मे बहुत अधिक था। 14.41% जनसंख्या राजस्थान के नगरी क्षेत्रो मे वर्ष 1901 मे रहती थी जबकि भारत मे यह 10.84% थी। वर्ष 1941 मे राजस्थान ओर भारत के लिए यह 14.67% ओर 13.86% थे। वर्ष 1951 मे राजस्थान मे नगरीकरण का स्तर भारत के बराबर था लेकिन 1961 से राजस्थान नगरीकरण के स्तर के मामले मे पीछे हो गया। वर्ष 2011 मे राजस्थान मे नगरी जनसंख्या का अनुपात 24.81% था जो राश्ट्रीय औसत 31.16% से कम है। अगर हम 2011 के नगरीकरण के स्तर की तुलना अन्य राज्यो से करते है जैसे गुजरात (42.6%), पंजाब (37.5%), हरियाणा (34.9%) ओर मध्यप्रदेश (27.6%) तो पाते है कि राजस्थान पिछड़ रहा है।

तालिका– 2.4.1 के ऑकड़ो की झलक देखने के बाद सम्पूर्ण अध्ययन अवधि को राजस्थान राज्य मे नगरीकरण के तीन प्रमुख समयो मे तार्किक रूप से विभाजित किया जा सकता है।

(1) धीमे नगरीकण की अवधि (1901 – 1941)
(2) मध्यम नगरीकण की अवधि (1951 – 1971)
(3) तेजी नगरीकण की अवधि (1981 – 2011)

(1) धीमे नगरीकण की अवधि (1901 – 1941) –

1991 ओर 1941 के बीच की अवधि ने न केवल राजस्थान मे बल्कि पूरे देश में धीमी गति से नगरीकरण हुआ । यह आदिम कृषि अर्थव्यवस्था का समय था। वास्तव मे यह अवधि विशेश रूप से वर्ष 1905, 1908, 1911 ओर 1918 मे अकाल ओर महामारी द्वारा चिन्हित की गई थी। इस अवसर के दौरान कई माहामारी जैसा कि हैजा, मलेरिया, चेचक ओर प्लेग हुआ। आम तौर पर यह माहामारी अकाल से जुडी थी, जिसके परिणाम स्वरूप राज्य के सभी शहरो मे आबादी लगभग घट गई। नगरी स्थानों मे रहने वाली जनसंख्या का अनुपात 1901 मे 14.41% से घटकर 1911 मे 12.81% हो गया। 1918–19 की महामारी राज्य के नगरी क्षेत्रो मे भारी मृत्यु दर का कारण बनी। 1920 के बाद से ही राज्य के नगरी इलाको मे आबादी बहुत धीमी गति से बढ़ने लगी। 1941 मे नगरीकरण का स्तर 14.67% तक पहुँच गया जो 1901 मे नगरीकरण स्तर से सिर्फ 0.26% अधिक था। इस अवधि मे नगरीकरण के स्तर का औसत मूल्य 14% रहा।

(2) मध्यम नगरीकण की अवधि (1951 – 1971) –

राजस्थान मे 1951 – 1971 के बीच मे मध्यम नगरीकरण का अनुभव हुआ। कुल जनसंख्या मे नगरी आबादी का अनुपात 1941 मे 14.67% से बढ़कर 1951 मे 17.1% हो गया। वह इसलिए हुआ क्योकि राजथान ने देश के विभाजन के समय सिंध, बलूचिस्तान ओर बहावलपुर रियासत के लाखो प्रवासियां को शरण दी थी। इन प्रवासियो को राजस्थान के सभी शहरो मे रखा गया था। यह तथ्य राजस्थान के लगभग सभी प्रमुख नगरो में सिंधी उपनिवेशो के अस्तित्व का समर्थन करता है। 1971 मे नगरीकरण का स्तर थोडा बढ़ गया ओर 17.4% तक पहुँच गया। इस अवधि के दौरान नगरीकरण का औसत स्तर 17% रहा।

(3) तेजी नगरीकण की अवधि (1981 – 2011) –

1981 से 2011 के बीच की अवधि को राजस्थान में तीव्र नगरीकरण की अवधि कहा जा सकता है। यह न केवल राजस्थान मे बल्कि पूरे देश मे सुधारो का युग था। औद्योगिक विकास ने ग्रमीण क्षेत्र अधिशेश जनशक्ति को आकर्शित किया ओर ग्रामीण–नगरी प्रवास हुआ, फलस्वरूप नगरी क्षेत्रो में तेजी से जनसंख्या वृद्वि हुई । कुल जनसंख्या मे नगरी आबादी का अनुपात 1971 मे 17.4% से बढ़कर 1981 मे 20.49% हो गया। राज्य मे 1991, 2001 ओर 2011 में नगरीकरण के क्रमिक जनगणना वर्शो मे क्रमशः 22.39%, 24.52% ओर 24.87% तक पहुँच गया। इस अवधि मे नगरीकरण का ओसत स्तर 23% रहा है।

तालिका– 2.4.2

राजस्थान मे नगरीकरण का स्तर

क्र. सं.	जिले	कुल जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या	कुल जनसंख्या मे नगरी आबादी प्रतिशत में
1	कोटा	1951014	1176604	60.3
2	जयपुर	6626178	3471847	52.4
3	अजमेर	2583052	1035410	40.1
4	जोधपुर	3687165	1264614	34.3
5	बीकानेर	2363937	800384	33.9
6	चुरू	2039547	576235	28.3
7	गंगानगर	1969168	535432	27.2
8	सीकर	2677333	633906	23.7

9	झुंझुनू	2137045	489079	22.9
10	पली	2037573	460006	22.6
11	टोंक	1421326	317723	22.4
12	भीलवाड़ा	2408523	512654	21.3
13	नागौर	3307743	637204	21.3
14	बरां	1222755	254214	20.8
15	धौलपुर	1206516	247450	20.5
16	सिरोही	1036346	208654	20.1
17	बून्दी	1110906	222701	20.0
18	सवाई माधोपुर	1335551	266467	20.0
19	उदयपुर	3068420	608426	19.8
20	हनुमानगढ़	1774692	350464	19.7
21	भरतपुर	2548462	495099	19.4
22	चित्तोडगढ़	1544338	285264	18.5
23	अलवर	3674179	654451	17.8
24	झालावाड़	1411129	229291	16.2
25	राजसंमन्द	1156597	183820	15.9
26	करौली	1458248	218105	15.0
27	जैसलमेर	669919	89025	13.3
28	दौसा	1634409	201793	12.3
29	प्रतापगढ़	867848	71807	8.3
30	जालौर	1828730	151755	8.3
31	बाँसवाड़ा	1797485	127621	7.1
32	बाड़मेर	2603751	181837	7.0
33	डुंगरपुर	1388552	88743	6.4
	राजस्थान	68548437	17048085	24.87

स्त्रोत :– भारतीय जनगणना 2011

राजस्थान मे नगरी आबादी पिछले ग्यारह दशको के दौरान ग्यारह गुना से अधिक हो गई यानि 1901 मे 1.48 मिलियन से 2011 में 17.05 मिलियन हो गई। जबकि नगरीकरण का

स्तर दो गुना भी नही हो सका, क्योंकि ग्रामीण ओर नगरी आबादी की विकास दर में बहुत कम अंतर रहा है। राजस्थान मे नगरीकरण का स्तर 1901 मे 14.41% से बढ़कर 2011 मे 24.81% तक लगातार बढ़ रहा है।

अध्याय – 3

अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिदृश्य

3. अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक परिदृश्य

नगर की उत्पति एवं विकास में विभिन्न भौगोलिक कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अनुकूलतम भौगोलिक दशाओं से नगर की विकास प्रक्रिया परिपोशित होती है। भौगोलिक तत्वों के अन्तर्गत मुख्य रूप से प्राकृतिक, आर्थिक एवं जनसांख्यिकीय तथा मूलभूत सुविधाऐं को सम्मिलित किया जाता है।

प्राकृतिक तत्वों के अन्तर्गत स्थिति, उच्चावच, जलवायु, मृदा, अपवाह, वनस्पति, सम्मिलित की जाती गई हैं जबकि आर्थिक तत्वों में उद्योग,व्यवसाय, कृषि, पशुधन तथा जनसांख्यिकीय तत्वों में जनसंख्या के विभिन्न स्वरूप व मूलभूत तत्वों में व्यवसाय, कृषि, भोजन, पेयजल, विधुत, शिक्षा, परिवहन संचार, स्वास्थय सेंवाऐं सम्मिलित है। यह सभी तत्व प्रत्येक नगर के उद्भव एवं विकास के साथ–साथ उसके वर्तमान स्वरूप को ही नही अपितु भविश्य के विकास को भी निर्धारित करते है। कोटा व बून्दी नगर विभिन्न भौगोलिक परिस्थितियों की अनुकूलता के कारण आज राजस्थान के प्रमुख नगर है। इसके विकास एवं संरचना में भौगोलिक तत्वों का निरंतर योगदान रहा है अतः इनका विश्लेशण प्रस्तुत अध्याय में किया गया हैं

3.1 भौतिक स्थिति :–

(क) अवस्थिति :– कोटा नगर $25^0 11'$ उत्तरी अक्षांश तथा $75^0 51'$ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। अक्षांशीय स्थिति के अनुसार यह उश्णकटिबंधीय क्षेत्र में स्थित है। कोटा नगर की स्थिति एक 'केन्द्रीय स्थल' के रूप में है। हाड़ौती प्रदेश का 'हदय स्थल' कोटा न केवल हाड़ौती में अपितु राजस्थान में महत्वपूर्ण रखता है।

कोटा राजस्थान राज्य की राजधानी जयपुर से 240 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। राज्य के अन्य निकटवर्ती नगरों से इसकी दूरी – अजमेर 185 कि.मी., टोंक 140 कि.मी., बून्दी 40कि.मी., झालावाड़ 85 कि.मी., बारां 80 कि.मी., सवाई माधोपुर 208 कि.मी. है । यह राश्ट्रीय राजमार्ग 12 पर स्थित है, जो जयपुर–जबलपुर को संयुक्त करता है। साथ ही एक अन्य राश्ट्रीय राजमार्ग 27 भी यहॉ से गुजरता है, जो मध्यप्रदेश के शिवपुरी तक जाता है। कोटा न केवल राजस्थान अपितु मध्यप्रदेश के बीना, रतलाम, इंदौर, भरतपुर, जबलपुर आदि से जुड़ा हुआ है। कोटा पश्चिमी रेल मार्गो का प्रमुख जंक्शन है। यह दिल्ली–मुम्बई रेल मार्ग पर स्थित है। दिल्ली यहॉ से 550 कि.मी. है और मुम्बई 800 कि.मी. दूर है। यहॉ से 2 अन्य रेल मार्ग कोटा–बीना ओर कोटा–चित्तौड़गढ़ जाता है। स्पश्ट है कि कोटा की स्थिति परिवहन एवं क्षेत्रीय दृश्टि से महत्वपूर्ण है। इस स्थिति का प्रभाव यहॉ के विकास क्रम पर स्पश्ट दृश्टिगोचर होता है।

LOCATION MAP

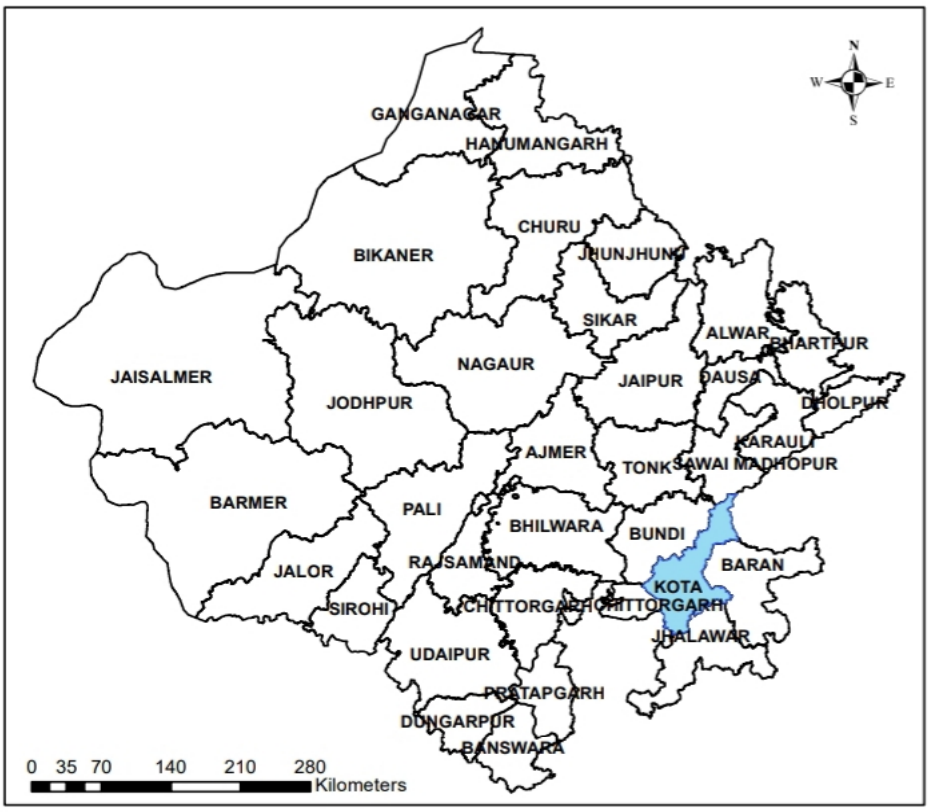

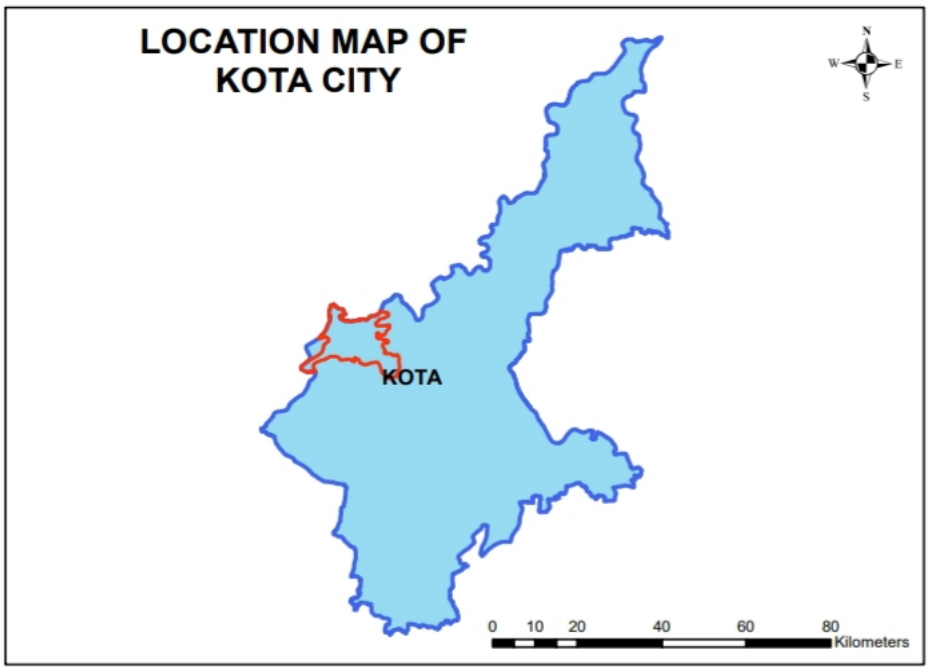

मानचित्र संख्या–1 : कोटा नगर – अवस्थिति मानचित्र

LOCATION MAP

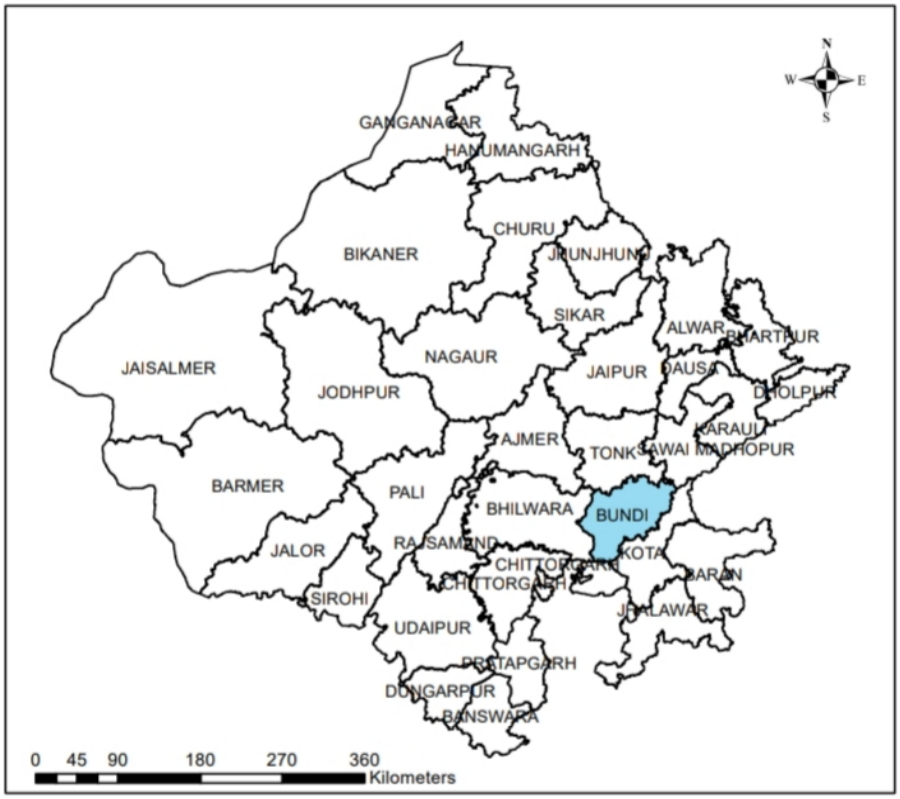

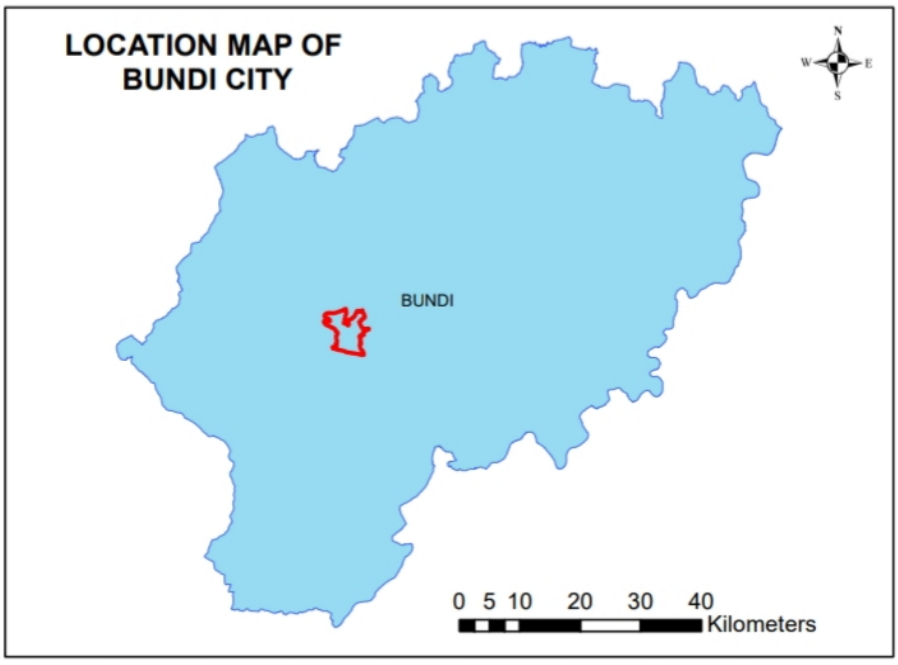

मानचित्र संख्या–2 : बून्दी नगर – अवस्थिति मानचित्र

राजस्थान के दक्षिणी– पूर्वी भाग (हाड़ौती) के अन्तर्गत बून्दी नगर कोटा सम्भाग का प्रमुख ऐतिहासिक नगर है। इसका विस्तार $25^0$43′उत्तरी अक्षांश तथा $75^0$64′पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। बून्दी नगर का कुल क्षेत्रफल 27.79 वर्ग कि.मी. है। क्षेत्रफल की दृश्टि से बून्दी जिले का राजस्थान में 22 वाँ स्थान है। यह कोटा से 35 कि.मी. उतर–पश्चिम में,राज्य की राजधानी जयपुर से 216 कि.मी. की दूरी पर,कोटा – चितौड़–उदयपुर बड़ी रेलवे लाइन पर स्थित है। राश्ट्रीय उच्च मार्ग संख्या –12 (जयपुर – जबलपुर) बून्दी नगर के मध्य से गुजरता है। राज्य राजमार्ग संख्या – 9 (चितौड़गढ़ – बून्दी) एवं राज्य उच्च मार्ग संख्या 29, बून्दी से (लाखेरी एवं इन्द्रगढ़) होता हुआ सवाईमाधोपुर तक जाता है।

(ख)उच्चावच :–

कोटा नगर हाड़ौती के पठार पर स्थित है। यद्यपि नगरीय सीमा के उच्चावच को देखा जाये तो इनमें विविधता है। नगर का उत्तरी ओर मध्य भाग चम्बल का मैदानी क्षेत्र है जबकि सम्पूर्ण दक्षिणी भाग या नया कोटा पथरीला धरातल रखता है। भीमगंजमण्डी क्षेत्र में 20 से 25 फीट की गहराई तक मृदा है जो प्राचीन काल में चम्बल नदी द्वारा जमा की गई है। नगर की समुद्र तल से ऊँचाई 253.3 मीटर है तथा सामान्य ढाल दक्षिणी, दक्षिणी–पूर्व से पश्चिम एवं उत्तरोन्मुखी है।

बून्दी राजस्थान के दक्षिण–पूर्व में माध्य समुद्र तल से 266 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। अरावली की पर्वत श्रृंखला बून्दी जिले के मध्य से गुजरती है। उतर – पूर्व और दक्षिण – पश्चिम दिशाओं में दो पर्वत श्रेणियॉ फैली हुई है। पुराना बून्दी नगर संकरी घाटी में स्थापित है। इसकी सबसे ऊंची चोटी लगभग 440 मीटर नगर के समीप ही है। नगर के तीनों तरफ ऊंची पहाड़ियॉ व दक्षिण दिशा में समतल कृषि भूमि है।

बून्दी जिला भौतिक विभाग की दृश्टि से हाडौती पठार के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है। बून्दी जिले की आकृति अनियमित चतुर्भुजाकार है जो दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व की और अरावली श्रेणियों से आवृत है। बून्दी जिले का भू–आकृतिक स्वरूप मूलतः विंध्यन एवं अरावली श्रेणी की देन है। जिले का मुख्य भू–आकृतिक स्वरूप अरावली श्रेणी है जो पहाड़ियों के रूप में बून्दी जिले के लगभग मध्य में दक्षिण–पश्चिम से उत्तर–पूर्व दिशा में फैली हुई है। अरावली श्रेणी बून्दी जिले में हिण्डोली तहसील के खण्डारिया गाँव से प्रवेश करती है तथा 96 कि.मी. दूरी तय करने के उपरांत इन्द्रगढ़ तहसील के कनकपुरा ग्राम के समीप बून्दी जिले की सीमा से बाहर निकल जाती है। बून्दी जिले में अरावली श्रेणी की औसत ऊँची चोटी जिला मुख्यालय से 10 कि.मी. पश्चिम में सथूर (1793 फीट) है।

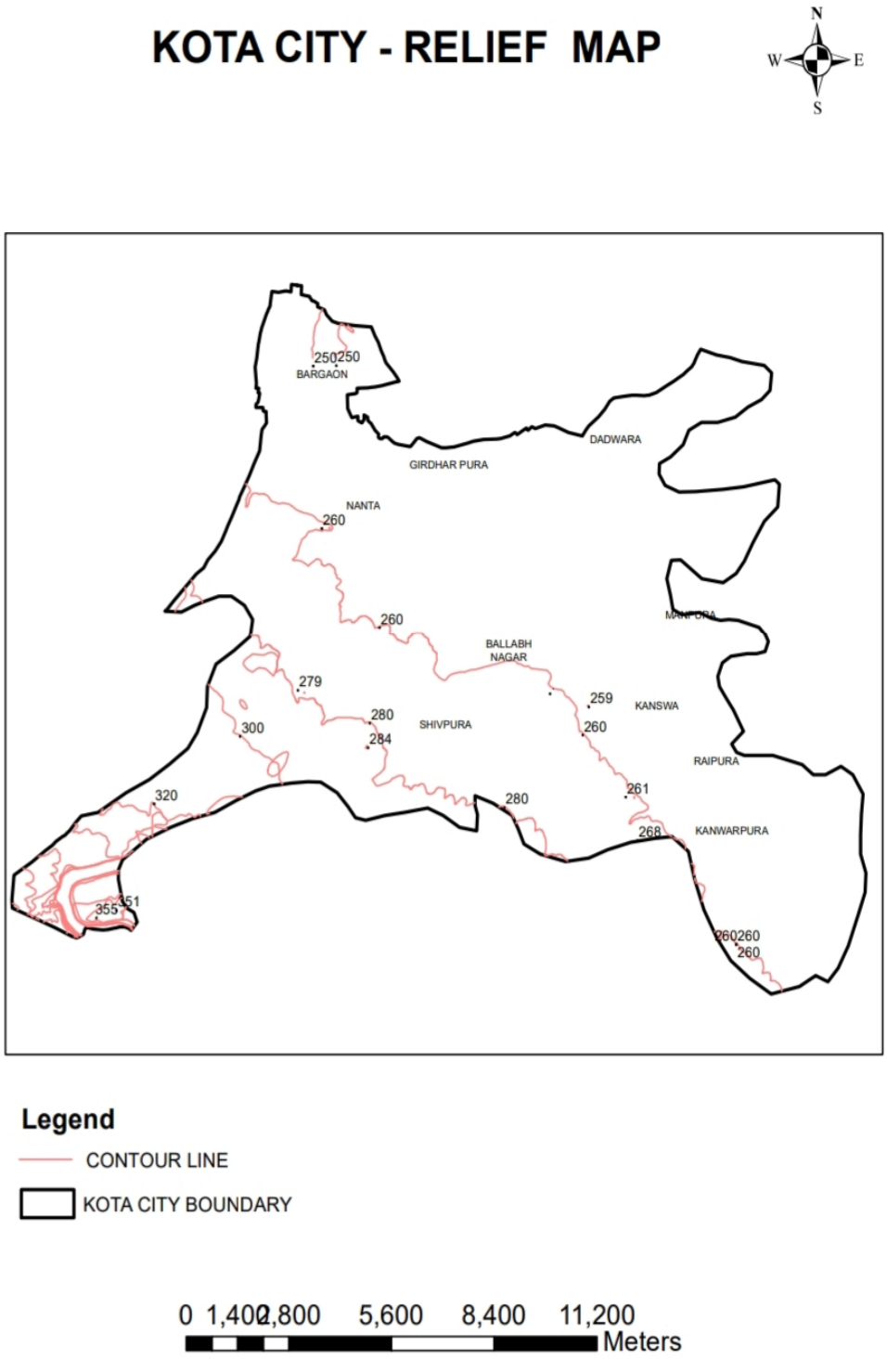

मानचित्र संख्या–3 : कोटा नगर – उच्चावच मानचित्र

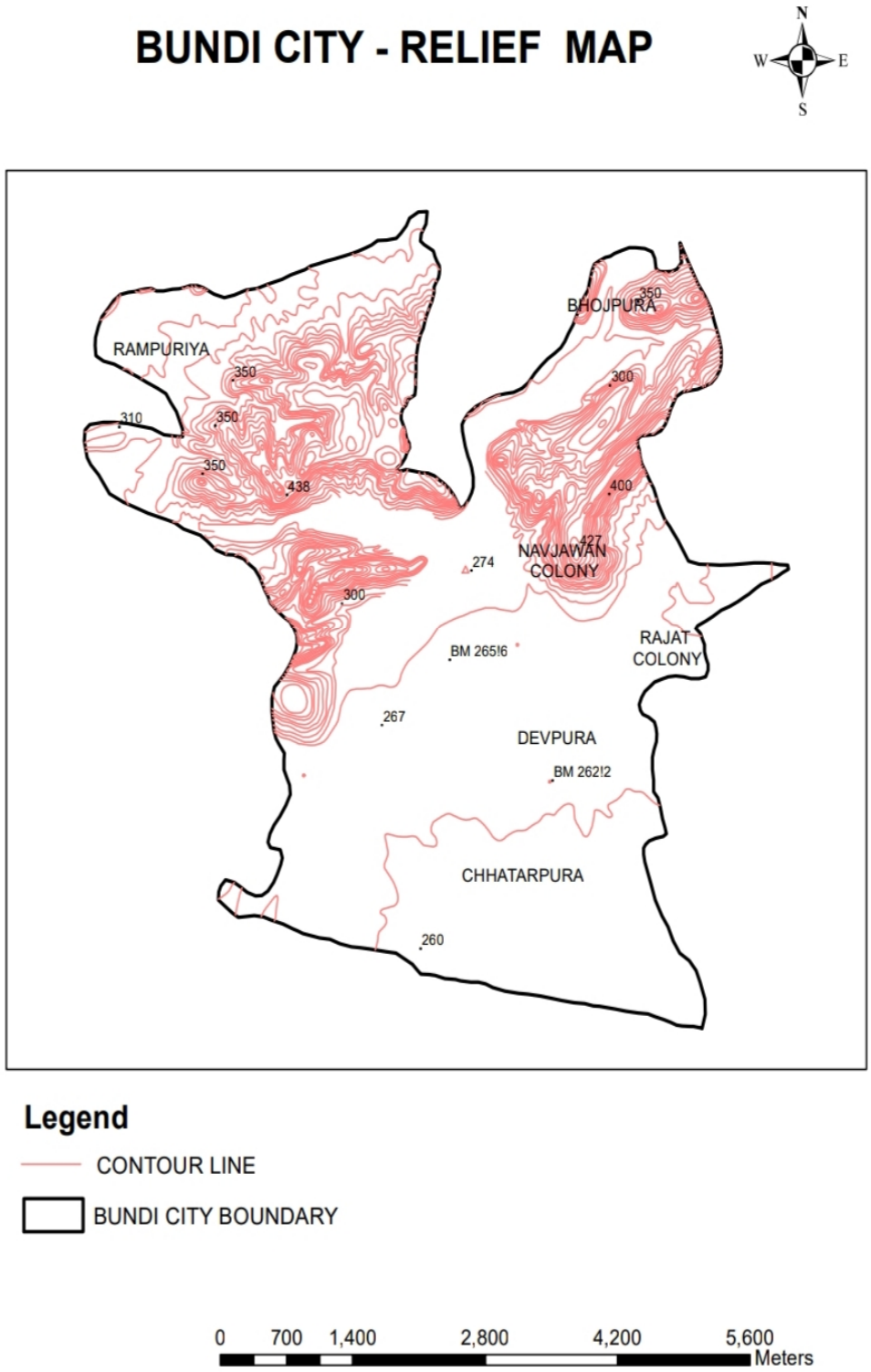

मानचित्र संख्या–4 : बून्दी नगर – उच्चावच मानचित्र

अन्य ऊँची चोटियाँ बून्दी (1626 फीट) तथा लाखेरी (1648 फीट) है। बून्दी जिले का पश्चिमी भाग मुख्यतः अरावली क्रम की शिश्ट चट्टानों से निर्मित है। मध्य भाग में अपर विंध्यन काल की चूना पत्थर चट्टानें पाई जाती है। पूर्वी एवं उत्तरी भाग में जलज चट्टानें पाई जाती है। सम्पूर्ण बून्दी जिला मुख्य रूप से ग्रेनाइट, नीस, शिश्ट, चूना, पत्थर, बालुका पत्थर से निर्मित चट्टानों से आवृत है। बून्दी जिले में अरावली श्रेणी की नियमित श्रृंखला चार दरों द्वारा बाधित है – प्रथम दर्रा बून्दी तहसील में जहाँ से राश्ट्रीय राजमार्ग 12 गुजरता है, द्वितीय कुछ पुर्व में जैनिवास के निकट जँहा से टोंक को मार्ग जाता है, तृतीय रामगढ़ व खटकड़ के मध्य जहाँ से मेज नदी ने अपना मार्ग बनाया है, चतुर्थ उत्तर–पूर्व में लाखेरी में स्थित है। बून्दी जिले की एक अन्य प्रमुख भू–आकृतिक संरचना बून्दी तहसील के सथूर ग्राम के निकट महान सीमान्त भ्रंश (ळतमंज ठवनदकंतल थ्नसज) है। जहाँ पर विंध्यन व अरावली क्रम की चट्टानें अलग होती है। जिले का सामान्य ढाल उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व को है।

(ग) जलवायुः–

मानसुन के मौसम को छोड़कर कोटा शहर की जलवायु शुश्क है। सर्दी का मौसम नवम्बर के मध्य से प्रारम्भ होकर फरवरी के अन्त तक पाया जाता है। जनवरी का महिना सबसे अधिक ठण्डा होता है। इस समय दैनिक तापमान अधिकतम 24.10^0सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान $6^0.1$ सेल्सियस रहता है। दिन ओर रात का तापमान मार्च के अन्त से लेकर मई तक तेजी से बढ़ता है। मई का महिना सबसे गर्म महिना होता है। अधिकतम दैनिक तापक्रम 42.28^0 सेल्सियस तथा न्यूनतम 27.16^0 सेल्सियस रहता है । दक्षिणी–पश्चिमी मानसून के आने से तापमान में कमी आती है तथा दक्षिणी–पश्चिमी मानसून के समाप्त होने पर तापमान में अल्प वृद्वि होती है ।

तालिका संख्या – 3.1.1

कोटा शहर का वार्षिक तापमान का परिवर्तन स्वरूप (2011 से 2015 तक)

क्र.सं.	वर्ष	अधिकतम तापमान ^0C	न्यूनतम तापमान ^0C	औसत तापमान ^0C
1	2011	47.4	6.1	27.3
2	2012	48.4	7.5	28.2
3	2013	46.4	5.3	29.5

4	2014	46.4	6.2	26.9
5	2015	46.9	6.2	26.9

स्त्रोत : भारतीय मौसम विज्ञान सूचना विभाग, जयपुर।

तालिका संख्या – 3.1.2

कोटा शहर : औसत मासिक तापमान (2016)

क्र.सं.	माह	अधिकतम तापमान ^{0}C	न्यूनतम तापमान ^{0}C	औसत तापमान ^{0}C
1	जनवरी	24.2	10.6	16.9
2	फरवरी	26.0	12.8	19.4
3	मार्च	32.7	18.6	25.6
4	अप्रैल	38.6	24.8	31.7
5	मई	42.1	29.3	35.7
6	जून	39.6	28.5	34.1
7	जुलाई	33.6	26.2	29.9
8	अगस्त	31.5	25.0	28.3
9	सितम्बर	34.3	25.0	29.6
10	अक्टूबर	34.0	22.0	28
11	नवम्बर	29.6	15.6	22.6
12	दिसम्बर	25.1	12.0	18.6

स्त्रोत : भारतीय मौसम विज्ञान सूचना विभाग, जयपुर।

शीतकाल में आकाश प्रायः साफ रहता है, ग्रीश्मकाल तथा मानसून के महिनों में हल्के बादलों से युक्त होता है। दक्षिण–पश्चिमी मानसून में हल्के बादल छाये रहते है। अधिकतम वर्षा जुलाई–अगस्त के महिनों में होती है तथा न्यूनतम वर्षा 150–350 मिमी. तक रहती है तथा न्यूनतम वर्षा नवम्बर से जनवरी के महिने मे होती है जो कि 0.5–0.6 मिमी. होती है।

तालिका संख्या – 3.1.3

कोटा शहर : वार्षिक वर्षा का परिवर्तित स्वरूप(2011–2015)

क्र.सं.	वर्ष	वर्शा (सेमी. में)
1	2011	88.17
2	2012	65.18
3	2013	126.91
4	2014	79.71
5	2015	66.93

स्त्रोत : कार्यालय जिला कलक्टर, भू.अ., कोटा।

तालिका संख्या – 3.1.4

कोटा शहर : मासिक औसत वर्षा (मि.मी. में)

क्र.सं.	माह	औसत वर्षा (मि.मी. में)
1	जनवरी	3.5
2	फरवरी	11.3
3	मार्च	13.9
4	अप्रैल	4.5
5	मई	8.6
6	जून	185.4
7	जुलाई	332.1
8	अगस्त	246.2
9	सितम्बर	118.0
10	अक्टूबर	14.5
11	नवम्बर	16.0
12	दिसम्बर	5.0

स्त्रोत : कार्यालय जिला कलक्टर, भू.अ., कोटा।

मानसून के मौसम को छोड़कर कोटा शहर की जलवायु शुश्क है। वर्ष को सामान्यतः तीन मौसम में बाँटा जाता है –

1. **शीतकाल** – मध्य नवम्बर से फरवरी तक का समय शीतकाल का होता है। शीतकाल में तापमान में गिरावट आती है तथा कोटा नगर का अधिकतम तापमान 23^0 सेल्सियस से 29^0 सेल्सियस के मध्य रहता है तथा न्यूनतम तापमान 6^0 सेल्सियस से भी कम हो जाता है, औसत तापमान 16^0 सेल्सियस से 21^0 सेल्सियस तक रहता है। इस काल में वर्षा बहुत कम होती है तथा वाश्प दाब में भी कमी आती है।

2. **ग्रीश्मकाल** – मार्च से जून के मध्य का समय ग्रीश्मकाल कहलाता है। ग्रीश्मकाल मे तापमान 34^0 सेल्सियस से 43^0 सेल्सियस तक रहता है तथा मानसून तापमान 15^0 सेल्सियस से 28^0 सेल्सियस तक है। मई माह में सबसे अधिक तापमान होता है।

3. **वर्षाकाल** – मध्य जून से अक्टूबर तक का समय वर्षा काल कहलाता है । औसत तापमान 26^0 सेल्सियस से 33^0 सेल्सियस तक रहता है। जुलाई माह में सबसे अधिक लगभग 332 मिमी. वर्षा होती है, वर्षाकाल में वाश्पदाब में वृद्वि होती है।

बून्दी नगर की जलवायु सम है। गर्मियों में यहॉ का अधिकतम दैनिक तापमान 48.8^0 सेल्सियम तथा न्यूनतम तापमान 5^0 सेल्सियम तक रहता है। नगर की औसत वार्षिक वर्षा 76 सेन्टीमीटर जुलाई से सितम्बर तक होती है। गर्मी के मौसम में हवाएँ पश्चिम से पूर्व की और तथा सर्दी के मौसम में उत्तर पूर्व से दक्षिण – पश्चिम की और चलती है।

डॉ. एल.आर. भल्ला ने अपनी पुस्तक "राजस्थान का भूगोल' में बून्दी जिले को आर्द्र जलवायु प्रदेश के अन्तर्गत रखा है। जबकि कोपेन के जलवायु वर्गीकरण के आधार पर बून्दी जिले को CwG जलवाय प्रदेश के अन्तर्गत रखा गया है। ग्रीश्म ऋतु का औसत तापमान 32^0 से 34^0 से.ग्रे. रहता है। कभी–कभी यह 42^0 से.गे. तक भी पहुँच जाता है। शीत ऋतु का औसत तापमान 16^0 से 18^0 से.ग्रे. के मध्य ही रहता है। बून्दी जिले में वर्षा का वार्षिक औसत 72.41 से.मी. है जिसका 95 प्रतिशत भाग मानसून काल में प्राप्त होता है। शेष वर्षा मावट के रूप में शीतकालीन मानसून से प्राप्त होती है। सबसे गर्म महीना मई तथा सबसे ठंड़ा महीना जनवरी का है। जलवायु की दृश्टि से सबसे आदर्श समय अक्टूबर से फरवरी का है।

तालिका संख्या – 3.1.5

जिला बून्दी : वार्षिक वर्षा प्रतिरूप

से.मी.

वर्ष	औसत वार्षिक वर्षा	वास्तविक वर्षा	औसत से विचलन
1995	76.41	76.36	–0.05
1996	76.41	90.45	+14.04
1997	72.41	77.72	+5.31
1998	72.41	54.15	–18.26
1999	72.41	66.18	–6.23
2000	72.41	57.61	–14.80
2001	72.41	80.91	+8.50
2002	72.41	35.29	–37.12
2003	72.41	69.25	–3.16
2004	72.41	66.37	–6.04
2005	72.41	58.87	–13.54
2006	72.41	61.92	–10.49

स्त्रोत – जिला सांख्यिकी विभाग, बून्दी

बून्दी जिले में तहसील अनुसार वार्षिक वर्षा के वितरण प्रतिरूप का विश्लेशण करने पर ज्ञात होता है कि बून्दी जिले में वार्षिक वर्षा का सर्वाधिक औसत केशवरायपाटन तहसील में 80.33 सेमी. है। जबकि न्यूनतम औसत नैनवाँ तहसील में 61.01 से.मी. है। उपरोक्त विश्लेशण से स्पश्ट है कि उक्त 12 वर्ष की अवधि में मात्र तीन वर्शो में सामान्य से अधिक वर्षा हुई है। बून्दी जिले में वर्षा परिवर्तनशीलता प्रतिरूप ने बून्दी जिले के कृषि प्रतिरूप को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है जिसका प्रभाव कृषि आधारित उद्योगों की अवस्थिति व विकास पर पड़ा है।

तालिका संख्या – 3.1.6

सामान्य वर्षा (मी.मी.)

वर्ष / केन्द्र	सामान्य वर्षा	वास्तविक वर्षा	सामान्य से अन्तर वृद्धि (+) या कमी (–)
2011	72.41	84.14	(+)11.73
2012	72.41	59.83	(–)12.58
2013	72.41	92.43	(+)20.02
2014	72.41	76.33	(+)39.23
2015	72.41	79.63	(+)72.23
केन्द्र (2015)			
1.बून्दी	72.41	83.6	(+)11.19
2.तालेड़ा	72.41	82.8	(+)10.39
3.के.पाटन	72.41	76.8	(+)43.9
4.इन्द्रगढ़	72.41	63.6	(–)88.1
5.नैनवा	72.41	72.0	(–)0.41
6.हिण्डोली	72.41	99.0	(+)26.59

(ध) मृदाः–

कोटा शहर में मिट्टी का वातावरणीय एवं प्राकृतिक आधार पर दो भागों में वर्गीकरण किया गया है।

1. मध्यम काली मिट्टी –

काली मिट्टी एल्यूवियम से उत्पन्न हुयी है जो कि विंध्यन श्रेणी एवं डेक्कन ट्रेप की भूरी चट्टानों का उत्पादन है। यह मिट्टियाँ राजस्थान के दक्षिणी–पूर्वी, पूर्वी एवं उत्तरी पूर्वी जिलों में बँटी हुयी हैं।

2. पहाड़ी मिट्टी –

पहाड़ी मिट्टी अरावली और विंध्यन श्रेणी के साथ–साथ पायी जाती है। मिट्टी की गहराई कम है और सतह पर पथरीली या कंकरपाये जाते हैं। पहाड़ी मिट्टी सामान्यतः स्वरूप में हल्की है और रंग में लालीमा युक्त भूरी से ग्रे युक्त भूरी हैं।

तालिका संख्या – 3.1.7

मृदा के प्रमुख संघटक

क्र.सं.	प्रमुख संघटक	संगठन का प्रतिशत
1	जीवांश पदार्थ	5 से 12
2	अजैविक पदार्थ	38 से 47
3	मृदा वायु	15 से 35
4	मृदा जल	15 से 35

स्त्रोत : कार्यालय जिला कलक्टर, भू.अ., कोटा।

नवीन मृदा वर्गीकरण पद्धति के अनुसार बून्दी जिले की मृदा को तीन प्रमुख व पाँच उपभागों में बाँट सकते है। जिसके आधार पर बून्दी जिले का मृदा वर्गीकरण निम्न प्रकार है –

1. वर्टीसॉल्स : (अ) गहरी काली मृदा
   (ब) मध्यम काली मृदा
2. इन्सेप्टीसॉल्स (अ) छिछली काली
3. अल्फीसॉल्स (अ) पुरातन जलोढ़
   (ब) मिश्रित लाल–काली मृदा

भू–आकृतिक दृश्टि से प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र के अर्न्तगत होने के कारण बून्दी जिले की मिट्टियों में काली मृदा के गुण न्यूनाधिक मात्रा में पाये जाते है।

1. अल्फीसॉल्स – यह मृदा मुख्यतः बून्दी जिले के उत्तर व उत्तर–पश्चिमी भागों में फैली हुई है। पहाड़ी व चट्टानी क्षेत्र होने के कारण इस भाग की मृदा के दो उपवर्ग (अ) मिश्रित लाल–काली मृदा (ब) पुरातन जलोढ़ मृदा। इस मृदा का निर्माण ग्रेनाईट, नीस व शिश्ट जैसी चट्टानों के अपरदन से प्राप्त पदार्थ से हुआ है। इसका लाल रंग लोहे के आक्साइड की उपस्थिति के कारण है।

2. वर्टीसॉल्स – यह मृदा बून्दी जिले के पूर्वी तथा दक्षिणी–पूर्वी भागों में पाई जाती है। इस मृदा के दो उपवर्ग गहरी काली मृदा व मध्यम काली मृदा है। यह मृदा, हाड़ौती पठार, जो दक्कन लावा पठार का ही एक भाग है, के अपरदन से प्राप्त पदार्थो से निर्मित है बून्दी तहसील के दक्षिणी व दक्षिणी–पूर्वी भाग में विशेशतः मध्यम काली मृदा तहसील के दक्षिणी व दक्षिणी–पूर्वी भाग में विशेशतः मध्यम काली मृदा फैली है तथा केशवरायपाटन में विशेशतः गहरी काली मृदा का विस्तार पाया जाता है। यह मृदा विशेशतः सरसों, सोयाबीन, धान, मसाले आदि की कृषि हेतु उपयुक्त है।
3. इन्सेप्टीसॉल – में मृदा का प्रमुख उपवर्ग छिछली काली मृदा का है। अरावली के पूर्वी ढालों एवं तलहटी के मैदानों में छिछली काली मृदा पाई जाती है। पहाड़ी व पर्वतीय भाग होने के कारण मृदा हल्की कम गहरी तथा छिछली है। जिसमें सरसों, मक्का, गेंहूँ आदि की कृषि सिंचाई की सहायता से की जाती है।

(ड़) अपवाह तन्त्रः–

इसके अन्तर्गत किसी क्षेत्र की नदियों एवं उनकी सहायकों की स्थिति,संख्या, प्रवाह किसी अपवाह बेसिन का आकार, घाटी की बनावट विकास की अवस्था एवं अपवाह प्रतिरोध के प्रकार आदि का अध्ययन किया जाता है। शहर का आधा भाग कठोर चट्टानों से निर्मित है। यह नगर के दक्षिणी भाग में स्थित है। नगर में सतत् वाहिनी नदी चम्बल है जो शहर के दक्षिण–पश्चिम भाग से शहर में प्रवेश करती है। यह नदी शहर के बीच में होकर उत्तर–पश्चिम दिशा से निकलती है। शहर के मध्य भाग में कोटा बैराज बाँध स्थित है। इस बैराज से दो उप नहरें निकाली गयी हैं। दाँयी मुख्य नहर शहर के पूर्व दिशा में बहती है, दूसरी नहर बाँयी मुख्य नहर है जो पश्चिम–उत्तर दिशा की ओर बहती है। शहर के जल स्त्रोतों में किशोर सागर तालाब, सूर सागर तालाब एवं उम्मेदगंज तालाब दाँयी मुख्य नहर से जुड़े हुए हैं।

नगर में उत्तर–पश्चिम दिशा में अभेड़ा तालाब एवं अन्य छोटे तालाब स्थित हैं। नगर के अधिकतर नालों को चम्बल नदी में मिलाया गया हैं। इन सभी जल स्त्रोतों का प्रवाह उत्तर की ओर है। चम्बल नदी दक्षिण दिशा सेउत्तर दिशा की ओर बहती है। इस नदी की औसत ऊँचाई 50 मीटर केलगभग है। इस नदी में साजीदेहड़ा का नाला किशोरपुरा पुलिया के पास आकर मिलता है। वक्फ नगर का नाला जो अधरशिला के पास चम्बल में गिरता है। इसके अलावा किशोरपुरा कब्रिस्तान नाला, बोरो की बगीची कानाला, बालाकुंड नाला, नयापुरा नाला आदि नालें आकर चम्बल नदी में मिलते हैं।

KOTA CITY - DRAINAGE MAP

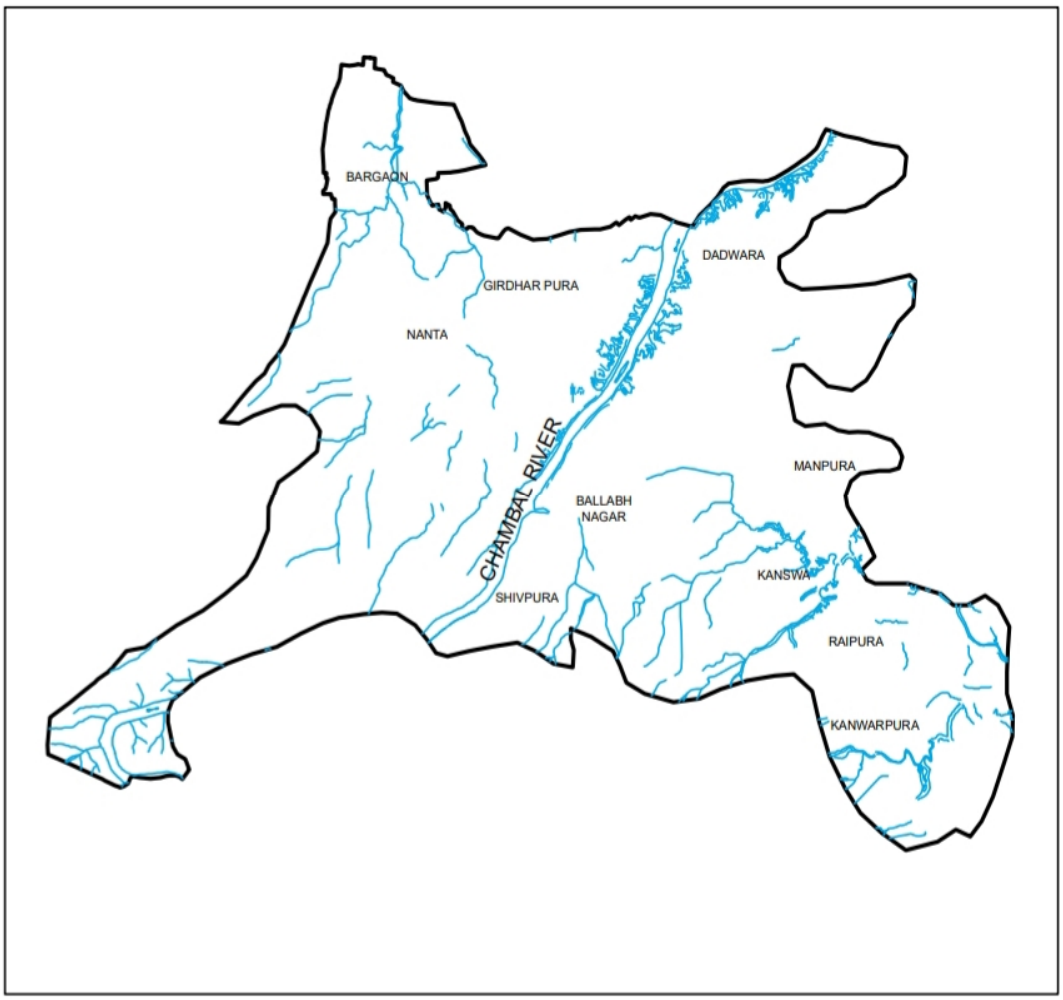

Legend

DRAINAGE LINE

KOTA CITY BOUNDARY

0 1,500 3,000 6,000 9,000 12,000 Meters

मानचित्र संख्या–5 : कोटा नगर – अपवाह मानचित्र

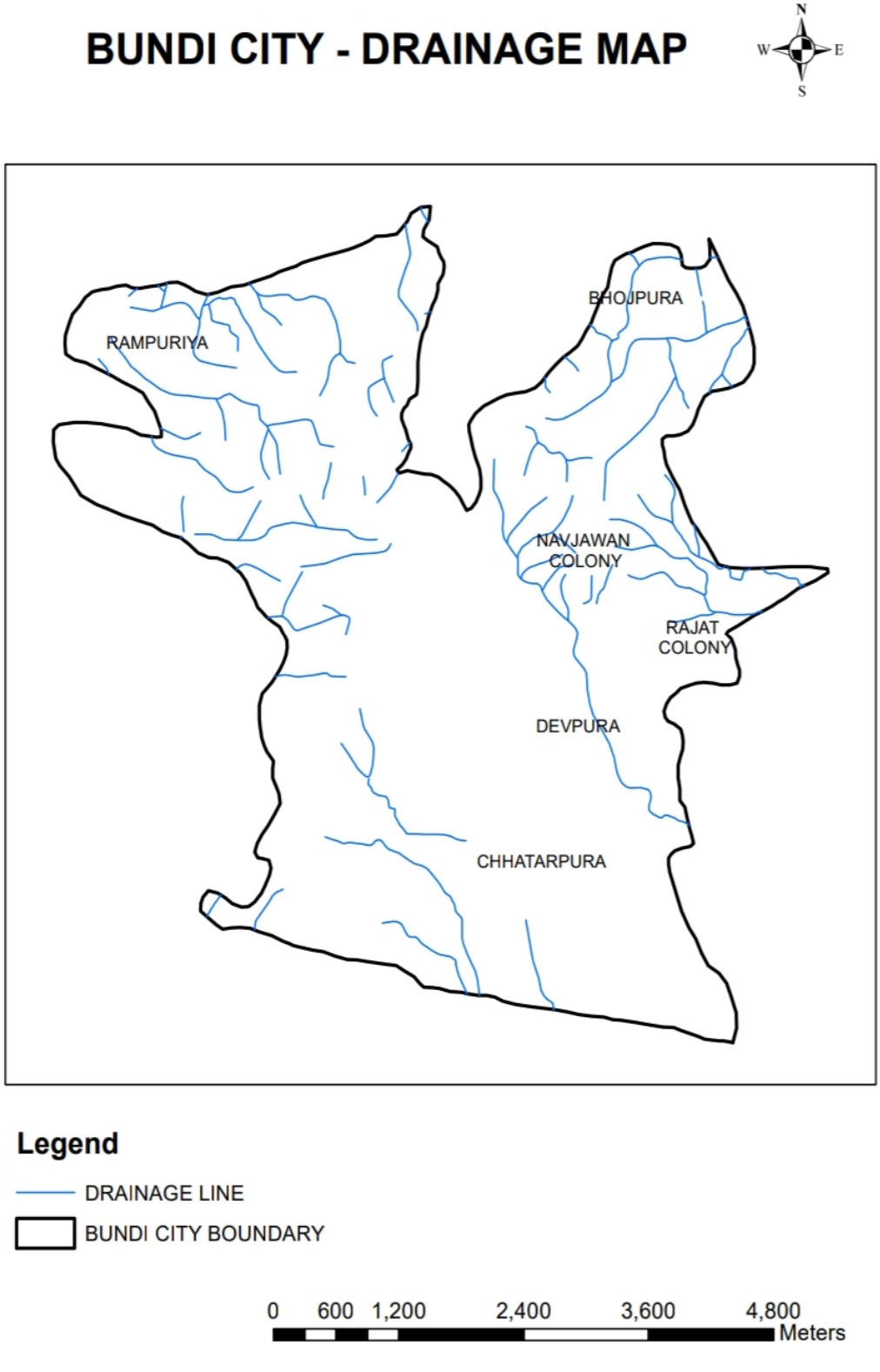

मानचित्र संख्या–5 : बूंदी नगर – अपवाह मानचित्र

बून्दी जिले का अपवाह तंत्र मुख्यतः चम्बल मेज, मांगली, कुराल, बाजन, घोड़ा पछाड़ तथा तालेड़ा की नदियों द्वारा निर्मित है। जिसके विश्लेशण से स्पश्ट है कि बून्दी जिले की मुख्य नदी चम्बल नदी है यद्यपि चम्बल नदी बून्दी जिले से होकर प्रवाहित नहीं होती है तथापि कोटा व बून्दी जिले की सीमा बनाती हुई प्रवाहित होती है। यह नदी बून्दी जिले की चम्बल की मुख्य सहायक नदी मेज नदी है। चम्बल नदी को चर्मण्यवती के नाम से भी जाना जाता है। केशवरायपाटन में चम्बल नदी के किनारे भगवान केशवराय जी का भव्य मंदिर है। यहाँ प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर मेला भरता है। मेज नदी बून्दी जिले में चम्बल की मुख्य सहायक नदी है।

मांगली नदी मेज नदी की सहायक नदी है। जो मेवाड़ से आकर घोड़ा पछाड़ तथा तालेड़ा की नदियों का पानी लेकर भैंसखेड़ा के पास मेज नदी में मिल जाती है। तालेड़ा की नदी मांगली नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है जो बिजोलिया से निकलकर तालेड़ा तहसील में बहती हुई संगवदा में मांगली से मिल जाती है। कुराल नदी बून्दी जिले की एक प्रमुख नदी है जो ऊपरमाल के पठार से निकलकर बून्दी के पूर्व में प्रवाहित होती हुई चम्बल नदीं में मिल जाती है। घोड़ा पछाड़ नदी मांगली नदी की सहायक नदी है यह मुख्यतः बून्दी तहसील में प्रवाहित होती है। बून्दी के शासक राव सुभाण्ड देव 1433–1456 जब युद्व के पश्चात् घोड़े लूटकर लौट रहे थे तो यह नदी पार करते समय घोड़े बहकर दूर निकल गये अतः इस नदी को घोड़ा पछाड़ नदी कहते है। बून्दी जिले में अनेक छोटी बडी झीलें भी स्थित है जिनका निर्माण यहाँ के हाड़ा शासकों ने करवाया। इनमें जैतसागर प्रमुख है जिसका निर्माण अंतिम मीणा सरदार जैता ने 13 वीं शताब्दी में करवाया। नौलखा तालाब जिसे 'छोटा तालाब' भी कहते है का निर्माण राव उम्मेद सिंह द्वारा 1762 ई. में करवाया गया। गोविन्द सागर कुंड का निर्माण राव रघुवीर सिंह द्वारा करवाया गया। अन्य झीलों में कनक सागर (दुगारी), रामसागर (हिंडोली), फूलसागर (बून्दी) प्रमुख है।

(च) वनस्पतिः–

किसी भी भौगोलिक प्रदेश में या भूमि सतह पर वनस्पति का वह आवरण जिसके उगने फलने–फूलने तथा विकसित होने में मानव की कोई भूमिका नही होती उसे 'प्राकृतिक वनस्पति' कहते है।

कोटा शहर तथा इनके आस–पास के क्षेत्रों में वन 'ब' 34 वर्ग के अर्न्तगत आते है। इस उपखण्ड में प्राप्त होने वाले मुख्य वनस्पति निम्न प्रकार है –

1. एनोजिसस पेन्डूला वन – मुख्य प्रजातियाँ–धाँकड़ा, गुर्जन तथा तेन्दु आदि।
2. मिश्रित वन –खेजड़ा, खैर, बेल, कदम्ब तथा आमलतास, कोहड़ा, बेहड़ा आदि।
3. बबूल–इन वनों में पाये जाने वाले बबूल, नागरा, खेड़ी, राड़ी, केनवास दुर्लभ माने जाने वाला चन्दन के वृक्ष इस क्षेत्र में पाये जाते है। इस क्षेत्र में पाये जाने वाले वृक्षों में धाऊ, बहेड़ा, महुआ, करैया, या कारा, सालर, ढ़ाक, शीशम, सदारिया, गूलर, जामुन, नीम, पीपल, आम तथा सेमल है।

धार की प्रमुख प्रजातियों में लपला, रतारदा, सुखाल, फरार, भालकी तथा चलोना प्रमुख है। कोटा शहर में कई उद्यान है जहॉ इनके प्रकार के वृक्ष, सजावटी पौधें तथा घासों की विभिन्न किस्में पाई जाती है। कोटा शहर में मुख्य उद्यान चम्बल उद्यान है जो कि रावतभाटा रोड़ पर स्थित है तथा छत्र विलास उद्यान नयापुरा क्षेत्र में स्थित है। इसके अतिरिक्त अनेक छोटे उद्यान–नेहरू उद्यान, सी. बी. गार्डन, गाँधी उद्यान आदि स्थित है तथा रियासती क्षेत्रों में कई पार्क स्थापित किये गये, जहाँ अनेक प्रकार के वृक्ष तथा सजावटी पौधों को लगाया जाता है। अण्टाघर चौराहे से स्टेशन जाने वाले मार्ग में कई वृक्षों की किस्में पायी जाती है। जिनमें मुख्य बबूल, बहेड़ा, खेजड़ा, गूलर, जामुन, शीशम, ढ़ाक, चन्दन नीम, पीपल, आम तथा सेमल आदि के वृक्ष प्रमुख रूप से पाये जाते है।

बून्दी जिले में मुख्य रूप से उश्ण मानसूनी पतझड़ वन पाये जाते है। जिनमें धोकड़ा, ढाक, गूलर, आम, बरगद, नीम, तेंदू, जामुन, खैर, कीकर, बबूल आदि के वृक्ष बहुतायत से पाये जाते है।

बून्दी जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 24.28 प्रतिशत क्षेत्र वनों के अन्तर्गत है। बून्दी जिले की पहाड़ियाँ झाड़ीदार वनों से आच्छादित है। जिनमें ढ़ाक, धोकड़ा, खैर, महुआ, तेंदू, बबूल आदि के वृक्ष छोटी–छोटी झाडियों के मध्य पाये जाते है। वर्षा काल में बून्दी की पहाड़ियाँ हरी–भरी होकर बड़ा ही मनोरम दृश्य उपस्थित करती है। बून्दी जिले की नैनवाँ तहसील में स्थित रामगढ़ वन्य जीव अभ्यारण्य बून्दी जिले का जैव आरक्षित तथा सुरक्षित वन का क्षेत्र है।

तालिका संख्या – 3.1.8

जिला बून्दी : वन एवं वनो का वर्गीकरण (2015)

कि.मी.

जिला बून्दी	आरक्षित वन	संरक्षित वन	अवर्गीकृत वन	योग
	804.71	706.65	14.04	1525.40

वृत्त	आरक्षित वन	संरक्षित वन	अवर्गीकृत वन	योग
बून्दी	134.81	19.80	1.44	156.05
हिण्ड़ोली	102.92	200.35	1.55	304.82
केशवरायपाटन	–	–	–	–
नैनवाँ	–	147.02	8.81	155.83
डाबी	323.03	90.17	1.00	414.74
इन्द्रगढ़	31.67	124.61	1.24	157.52
रामगढ़	113.42	124.16	–	237.58
जवाहर सागर	98.86	–	–	98.86

स्त्रोत – जिला सांख्यिकी विभाग, बून्दी

3.2 आर्थिक परिचय :–

(क) उद्योग :–

रियासत के समय कोटा में महत्वपूर्ण उद्योग सूती वस्त्र उद्योग था। वर्ष 1898 में कोटा शहर से 25 मील दूर पूर्व दिशा में पलायथा में रूई के बिनौलों की छोटी सी फैक्ट्री स्थापित की गयी। कोटा ईमारती पत्थर काद्वितीय प्रमुख उत्पादक है। कोटा में खनन किया जाने वाला पत्थर कोटा स्टोन के नाम से जाना जाता है। कोटा शहर में कोटा स्टोन प्रसरण की कई इकाईयाँ स्थित हैं तथा परिवहन आने–जाने की सुविधाने कोटा को औद्योगिक नगरी की श्रेणी में रखा है।

तालिका संख्या – 3.2.1

कोटा शहर : स्थित वृहद एवं मध्यम श्रेणी के उद्योग

क्र.सं.	उद्योगों के नाम	उद्योगों की स्थिति
1.	कोटा थर्मल पावर स्टेशन	सकतपुरा–कुन्हाड़ी
2.	सी.एफ.सी.एल.	श्रीराम नगर
3.	श्रीराम सीमेन्ट वर्क्स	श्रीराम नगर
4.	श्रीराम रेयन्स	श्रीराम नगर
5.	तिलम संघ, राजस्थान कोटा प्रोजेक्ट	रावतभाटा रोड़, कोटा
6.	इन्स्ट्रूमेन्टेशन लिमिटेड	औद्योगिक क्षेत्र
7.	ओम मेटल्स, इन्फ्रा प्रोजेक्ट लिमिटेड	इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र

8.	सेमकोर ग्लास लिमिटेड	नोहरा गांव, बाराँ रोड़
9.	कोटा जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड	रावतभाटा रोड़, कोटा
10.	ग्वालियर पॉलिपाइपस लिमिटेड	रावतभाटा रोड़, कोटा
11.	मल्टीमेटल्स लिमिटेड	इन्डस्ट्रियल क्षेत्र
12.	मंगलम सीमेन्ट लिमिटेड	आदित्य नगर
13.	नीर श्री सीमेन्ट	आदित्य नगर
14.	नोबल ग्रेन इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड	सुल्तानपुर रोड
15.	इन्फोकोम इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड	इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र

स्त्रोत : कार्यालय जिला उद्योग केन्द्र, कोटा।

कोटा शहर में वृहद्, मध्यम तथा लघु उद्योग संचालित हैं। वृहद् तथा मध्यम उद्योगों की संख्या मुख्य रूप से वर्ष 2007 के अनुसार 15 है तथालघु उद्योगों की श्रेणी में कोटा शहर में लगभग 6621 लघु उद्योग स्थापित हैं। मल्टीमेटल्स लिमिटेड में कॉपर आधारित सलॉय–प्यूल्स, रॉड्स, सेक्शन और कॉपर प्रिन्ट सेल्स का उत्पादन होता हैं तथा यह औद्योगिक क्षेत्र में स्थित हैं।

तालिका संख्या – 3.2.2

कोटा शहर के लघु उद्योगों के प्रकार एवं इकाईयों की संख्या

क्र.सं.	उद्योगों के प्रकार	इकाईयों की संख्या
1.	कृषि आधारित	567
2	तम्बाकू और सोडा वाटर	10
3	सूती वस्त्र उद्योग	26
4	ऊनी, रेशमी, कृत्रिम उद्योग	627
5	जूट आधारित	14
6	रेडीमेड गारमेन्ट्स	285
7	काष्ट आधारित फर्नीचर	859
8	कागज एवं कागज उत्पाद	154
9	चमड़ा आधारित	853
10	रसायन आधारित	159

11	प्लास्टिक एवं पेट्रोल आधारित 142	142
12	खनिज आधारित 1158	1158
13	धातु आधारित 850	850
14	अभियांत्रिकी इकाईयाँ 145	145
15	इलेक्ट्रीकल्स मशीन्स तथा ट्रान्सपोर्ट 130	130
16	रिपेयरिंग एण्ड सर्विसिंग 394	394
17	क्ले यूसेन्सिल्स 41	41
18	अन्य 207	207
	कुल 6621	6621

स्त्रोत : कार्यालय जिला उद्योग केन्द्र, कोटा।

वर्तमान में बून्दी में 153 एकड़ भूमि औद्योगिक प्रयोजनार्थ काम में आ रही है, जो विकसित क्षेत्र का लगभग 7.22 प्रतिशत है। उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या वर्ष 1991 एवं 2001 में क्रमशः 3494 (19.54 प्रतिशत) एवं 5233 (20 प्रतिशत) थी। वर्ष 1981 से 2001 के बीच उद्योागों में कार्यरत व्यक्तियों का प्रतिशत बढ़ा है। आस पास के क्षेत्र में खनिज व कृषि उत्पादन होने के कारण बून्दी में औद्योगिक क्षेत्रों का विकास किया गया है।

तालिका संख्या – 3.2.3

बून्दी में रीको द्वारा विकसित औद्योगिक क्षेत्र

क्र.सं.	औद्योगिक क्षेत्र का नाम	क्षेत्रफल
1.	बाई पास सड़क, बून्दी (बी.पी.आर.)	9.61 एकड़
2.	बून्दी–चित्तौड़ सड़क, बून्दी (बी.सी.आर.)	22.30 एकड़
3.	बून्दी–नैनवॉ सड़क, बून्दी (बी.एन.आर.)	17.30 एकड़
4.	हट्टी पुरा औद्योगिक क्षेत्र	71.36 एकड़
		कुल 120.57 एकड

स्त्रोतः रीको कार्यालय, बून्दी।

इन औद्योगिक क्षेत्रों में मुख्य रूप से कृषि आधारित तेल व चावल मिलें उद्योग चल रहे है। इन औद्योगिक क्षेत्रों के अलावा भी चित्तौड़ एवं सिलौर रोड़ पर कई औद्योगिक ईकाईयॉ कार्यरत हैं, जिनमें मुख्यतः चावल मिलें है।

बून्दी शहर में बीड़ी बनाना, कपड़े बुनना, रंगाई, छपाई, बर्तन, जुते, बढ़ई–गिरी, लाख की चूड़ियॉ इत्यादि प्रमुख कुटीर उद्योग है। बून्दी में घरेलू उद्योग की 604 ईकाईयॉ पंजीकृत है, जिनमें कुल 4217 कार्मिक कार्यरत है।

(ख) व्यवसाय :–

कोटा नगर के कुल विकसित क्षेत्र का लगभग 75 प्रतिशत अर्थात् 750 एकड़ भूमि पर वाणिज्यिक गतिविधियाँ संचालित हैं। थोक तथा फुटकर व्यापार दोनों ही व्यावसायिक नगर कोटा के अन्दर तथा साथ–साथ विकसित हुए हैं। शहर कोट के अन्दर का मुख्य व्यावसायिक क्षेत्र लाड़पुरा से टिपटा तक आते हैं।

लाड़पुरा से टिपटा में लाड़पुरा बाजार, रामपुरा बाजार, बर्तन बाजार,बजाज खाना, घण्टाघर, किराना व सर्राफा, अग्रसेन बाजार किराना, शक्करतेल का थोक व्यापार एव जनरल मर्चेन्ट, शास्त्री मार्केट रेडिमेडगारमेन्ट्स, इन्द्रा बाजार, सब्जीमण्डी क्षेत्र आदि कोटा शहर के प्रमुख बाजार है। कोटा नगर में थोक व्यापार होता है जैसे– कपड़े का थोक मार्केट,जनरल मार्केट, सर्राफा बाजार आदि जिसमें लगभग 800 दुकानें हैं। कोटा नगर के बाहर नये विकसित क्षेत्रों में मुख्य रूप से गुमानपुरा, मोटर मार्केट,नयी धानमण्डी, ट्रांसपोर्ट नगर विकसित हुए हैं।

सन 1991 एवं 2001 की जनगणना के अनुसार बून्दी नगर की जनसंख्या का कार्यशील सहभागिता अनुपात क्रमशः 27.49 प्रतिशत व 29.44 प्रतिशत रहा। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार बून्दी नगर में कुल 26,168 व्यक्ति कार्यशील थे। वर्ष 1991 व 2001 की गणना से स्पश्ट होता है कि बून्दी नगर में उद्योगों में क्रमशः 19.54 प्रतिशत व 20 प्रतिशत एवं व्यापार व वाणिज्यिक गतिविधियों में लगभग 22 प्रतिशत व्यक्ति कार्यशील है। स्पश्ट है कि बून्दी औद्योगिक एवं व्यापार गतिविधियों के मुख्य केन्द्र के रूप में विकसित हो रहा है।

तालिका संख्या – 3.2.4

व्यावसायिक संरचना–बून्दी–1991–2008

क्र. सं.	व्यवसाय	1991		2001		2008	
		कामगार व्यक्तियों की संख्या	काम करने वाले कुल व्यक्तियों का प्रतिशत	कामगार व्यक्तियों की संख्या	काम करने वाले कुल व्यक्तियों का प्रतिशत	कामगार व्यक्तियों की संख्या	काम करने वाले कुल व्यक्तियों का प्रतिशत
1.	कृषि, खनन एवं सहायक गतिविधियॉ	2021	11.30	3140	12	3910	12
2.	उद्योग	3494	19.54	5234	20	6516	20
3.	निर्माण	1001	6.60	1570	6	1955	6
4.	व्यापार एवं वाणिज्य	3955	22.12	5757	22	7167	22
5.	परिवहन एवं संचार	1721	9.62	2355	9	2932	9
6.	अन्य सेवाऍ	5689	31.82	8112	31	10100	31
		17881	100.00	26168	100.00	32580	100.00

स्त्रोत – जनगणना भारत सरकार एवं नगर नियोजन विभाग अनुसार।

(ग) कृषि :–

कोटा व बून्दी नगर तथा इसके आस–पास के क्षेत्रों में फसलों के दो मौसम मुख्य हैं – रबी और खरीफ। मुख्य खरीफ की फसल अथवा बरसाती फसलें जैसे– ज्वार, मक्का, चावल, मूंग, उड़द, मूँगफली और तिल जून–जुलाई माहमें बोयी जाती हैं एवं सितम्बर–अक्टूबर में इनकी कटाई होती हैं। रबी के मौसम में जिन फसलों की बुवाई होती है वे हैं – गेहूँ, चना, जौ, मसूर की दालें, धनियाँ आदि। यह फसलें अक्टूबर–नवम्बर में बोयी जाती हैं एवं मार्च में इसकी कटाई होती हैं। इनकी सफाई आदि का कार्य मई तक चलता रहता है। कोटा स्टोन और कोटा साड़ी के नाम से पहचान बनाने वाला कोटा शहर अब गुलाब उत्पादन की दृष्टि से अपना प्रमुख स्थान रखता है।

(ध) पशुधन :–

कोटा में चौपाया पशु की मालवी भीड़ अधिकाधिक पायी गयी हैं। मालवी बैल अत्यधिक परिश्रमी होते हैं। कोटा में एक बहुउद्देशीय पशुचिकित्सालय क्षेत्र पशु रोग निदान प्रयोगशाला, भ्रमणशील पशु शल्य चिकित्सालय, बांझ निवारण इकाई, मेरेक्त एवं पुलोरम इकाई, क्षय रोग नियंत्रण इकाई कार्यरत हैं, जो पशु पालकों को विशेषज्ञ सुविधाऐं प्रदान करती हैं।

कोटा में पशु मेले आयोजित किये जाते हैं। कोटा शहर का पशु मेला आश्विन शुक्ल माह को 10–15 दिन तकनगर–निगम कोटा द्वारा आयोजित किया जाता है, जिसमें विभिन्न स्थानों से जैसे–मध्य प्रदेश व राजस्थान के अन्य भागों से बकरी, ऊँट, भैंस आदि पशु आते हैं।

बून्दी नगर पशु पालन तथा पशु संसाधन की दृश्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बून्दी नगर में पाले जाने वाले प्रमुख पशु गाय, बैल, भैंस, बकरी, भेड़ तथा मुर्गे व मुर्गियाँ है।

बून्दी जिले में पशुओं से कई प्रकार के उत्पाद भी प्राप्त किए जाते हैं जैसे ऊन, मांस, हड्डियाँ, चमड़ा, दूध आदि। बून्दी जिले में ऊन उत्पादन लगभग 141 टन प्रतिवर्ष, माँस उत्पादन लगभग 800 टन प्रतिवर्ष, हड्डियों का उत्पादन 589 टन प्रतिवर्ष है। डेयरी विकास कार्यक्रम की दृश्टि से बून्दी जिले में स्थित दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियों की संख्या 154 थी तथा कुल सदस्य संख्या 8708, कुल दुग्ध संकलन मात्रा 9296094 लीटर व दुग्ध अवशीतन केन्द्र की संख्या एक है।

3.3 जनांकिकीय स्थिति :–

(क) जनसंख्या –

2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 1951014 व्यक्ति है जिसमें 1021161 पुरूष एवं 929853 महिलाऐं हैं। इस जनसंख्या के अन्तर्गत 774410 कुल ग्रामीण जनसंख्या है जिसमें 401331 पुरूष एवं 373079 महिलाऐं सम्मिलित हैं। यहाँ पर नगरीय जनसंख्या 1176604 व्यक्ति है जिसमें 619830 पुरूष एवं 556774 महिलाऐं सम्मिलित है।

जनसंख्या वृद्धि – जनसंख्या वृद्धि से तात्पर्य किसी निश्चित क्षेत्र में पाये जाने वाली जनसंख्या में निश्चित समय अन्तराल में वृद्धि अथवा कमी होती है।

तालिका संख्या – 3.3.1

कोटा नगर की जनसंख्या वृद्धि (1901–2011)

वर्ष	जनसंख्या	अन्तर	वृद्धि दर (प्रतिशत में)
1901	33657	-	-
1911	32753	-904	-2.69
1921	31707	-1046	-3.19
1931	32876	+6169	+19.46
1941	47389	+9463	+24.98
1951	65107	+17768	+37.53
1961	120345	+55238	+84.84
1971	212991	+92646	+76.98
1981	358241	+145250	+68.20
1991	537371	+179130	+50.00
2001	694316	+156945	+29.21
2011	1001694	+307378	+44.27

स्त्रोत : सांख्यिकी रूपरेखा 2011, आर्थिक सांख्यिकी निदेशालय राजस्थान, जयपुर

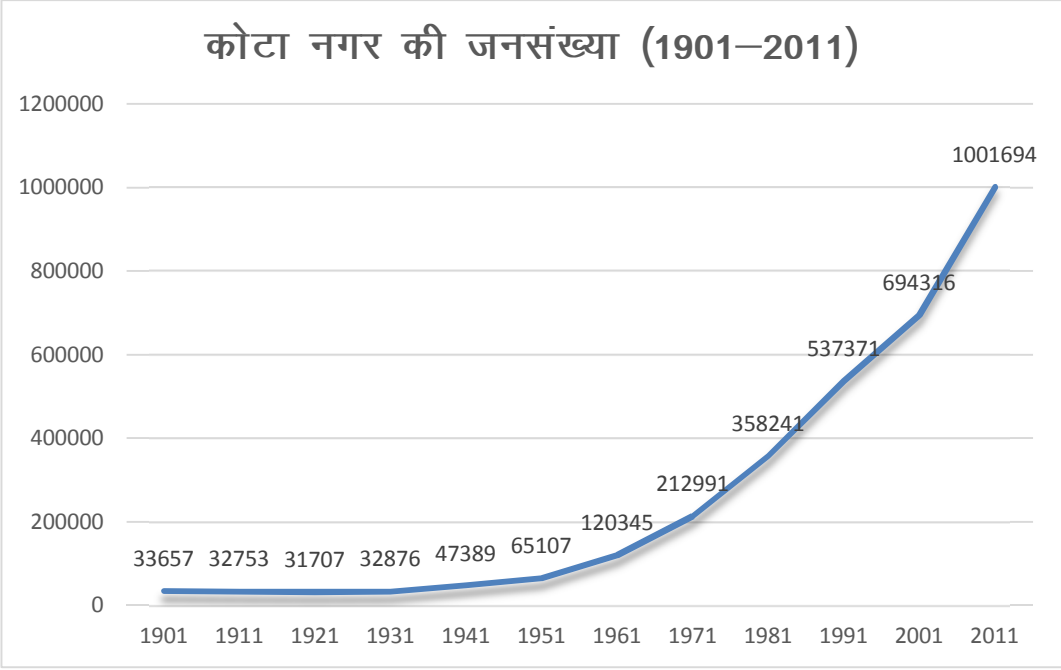

आलेख संख्या–5 : कोटा नगर की जनसंख्या वृद्धि (1901–2011)

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 1901 में कोटा नगर की जनसंख्या 33657 थी, किन्तु 1911 एवं 1921 में यहाँ की जनसंख्या में कमी अंकित की गयी। इसका कारण उस समय सम्पूर्ण प्रदेश में पड़नेवाला 'छप्पानियाँ अकाल' था।

1941 एवं 1951 में क्रमशः 47389 एवं 65107 जनसंख्या थी। वर्ष 1951 के पश्चात् नगर की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई तथा 1961 में 120345 तथा 1971 में 212991 हो गयी। वर्ष 2001 में यहाँ की जनसंख्या 694316 अंकित की गयी। जनसंख्या वृद्धि दर 1951–1961 के दशक में सर्वाधिक 84.84 प्रतिशत रही। ऋणात्मक वृद्धि दर 1911–1921 के दशक में रही। 1960–1961 में वृद्धि दर 76.98 प्रतिशत थी, जो 1981–91 में 50 प्रतिशत रह गयी और 1991–2000 के दशक में 29.21 प्रतिशत रही जो जनसंख्या वृद्धि में लगभग 21 प्रतिशत कमी रही जो परिवार कल्याण कार्यक्रमों की सफलता का द्योतक है। 2001 से 2011 में जनसंख्या वृद्धि दर 44.27 प्रतिशत रही जो पुनः जनसंख्या वृद्धि दर को प्रदर्शित करती है। इस प्रकार पिछले दशकों में 1961 के दशक तक जनसंख्या वृद्धि हुई तथा इसके बाद 2001 तक वृद्धि दर में लगातार कमी हुई तथा 2011 में पुनः वृद्धि दर बढ़ने लगी। इस प्रकार आने वाले समय में यह जनसंख्या वृद्धि की समस्या मुसीबत का कारण बन सकती है।

बून्दी नगर की जनगणना के आंकड़े सन 1901 से उपलब्ध है। सन 1901 में बून्दी नगर की जनसंख्या 19,313 थी। प्राकृतिक आपदाओं जैसे अकाल व बीमारियों के कारण वर्ष 1911–1921 के दशक में जनसंख्या वृद्वि –17.28 प्रतिशत रही है। फलस्वरूप सन 1941 तक नगर की जनसंख्या में मामूली वृद्वि हुई। सन 1941–1951 एवं 1951–1961 के दशक में वृद्वि दर क्रमशः 8.88 प्रतिशत एवं 16.66 प्रतिशत ही रही। वर्ष 1961 के पश्चात नगर की जनसंख्या में तेजी से वृद्वि हुई, जिसका मुख्य कारण चम्बल परियोजना से सिंचाई के साधन उपलब्ध होने के कारण कृषि उत्पादों में वृद्वि होने लगी। जिससे ग्रेन मण्डी का निर्माण व कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना प्रमुख रहा। वर्ष 1961 से 2001 तक के 40 वर्शो के दौरान बून्दी नगर की जनसंख्या 26,448 से बढ़कर 88,871 तीन गुना से भी अधिक हो गयी, और 2011 में बढ़कर 115559 हो गयी। जो नगर की तीव्र विकास की ओर इंगित करती है।

तालिका संख्या – 3.3.2

बून्दी नगर में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति–बून्दी–1901–2011

वर्ष	जनसख्या	दस वर्ष का अन्तर	प्रतिशत वृद्धि (+) या कमी(–)
1901	19313	–	–
1911	19598	(+)285	(+)1.48
1921	16105	(–)3493	(–)17.28
1931	17991	(+)1886	(+)11.71
1941	20846	(+)2855	(+)15.87
1951	22697	(+)1851	(+)8.88
1961	26478	(+)3781	(+)16.66
1971	34492	(+)8014	(+)30.27
1981	48027	(+)13535	(+)39.24
1991	65047	(+)17020	(+)35.44
2001	88871	(+)23824	(+)36.63
2011	115559	(+)26688	(+)30.03

स्त्रोतः जनगणना प्रतिवेदन, 2011,राज.।

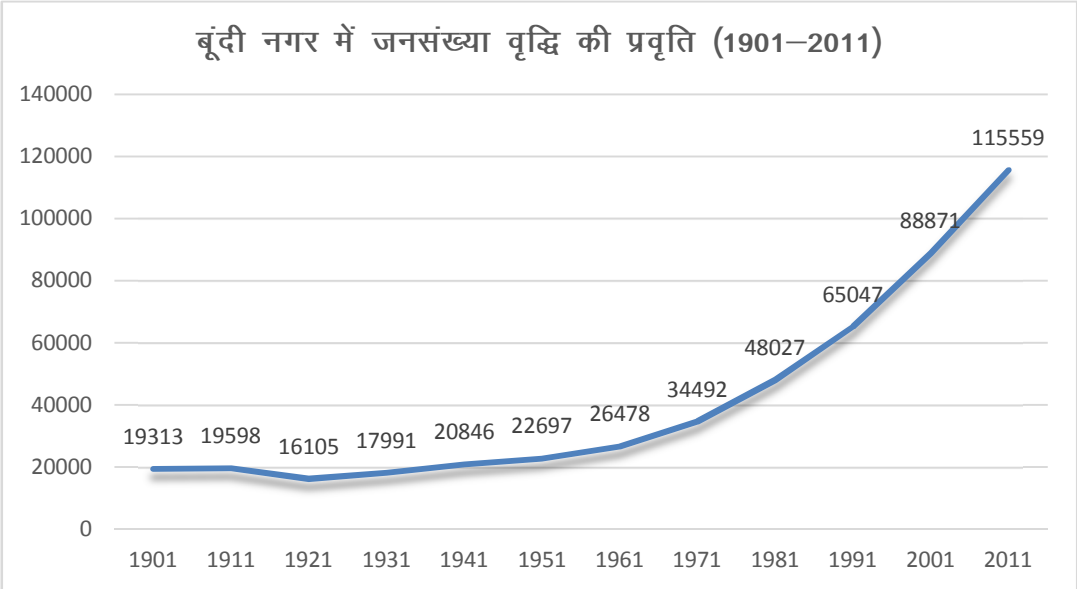

आलेख संख्या–6 : बून्दी नगर में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति–1901–2011

(ख) घनत्व :–

2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ का घनत्व 374 व्यक्ति प्रति वर्गकिलोमीटर है जो 2001 में 301 प्रति वर्ग किलोमीटर था। यहाँ पर नगरीय घनत्व 2064 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जो 2001 में 2705 व्यक्ति प्रतिवर्ग किलोमीटर था। अर्थात् नगरीय घनत्व में कमी दर्ज की गई। यहाँ पर ग्रामीण जनघनत्व 166 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जो 2001 में 149 प्रतिवर्ग किलोमीटर था। इस प्रकार जनघनत्व में नगरीय जनघनत्व में कमी एवं ग्रामीण जनघनत्व में वृद्धि हुई है।

2011 की जनगणना के अनुसार बून्दी नगर का घनत्व 192 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जो 2001 में 166 प्रति वर्ग किलोमीटर था। इस प्रकार बून्दी नगर के घनत्व में वृद्धि हो रही है।

(ग) लिंगानुपातः–

कोटा जिले का 2011 के आँकड़ों के अनुसार लिंगानुपात 911 महिलाऐं प्रति हजार पुरूष है जिसमें कोटा नगर का लिंगानुपात 898 महिलाऐं प्रति हजार पुरूष है तथा ग्रामीण लिंगानुपात 930 महिलाऐं प्रति हजार पुरूष हैं। 2001 में कुल लिंगानुपात 896 महिलाऐं प्रति हजार पुरूष था जिसमें कोटा नगर का लिंगानुपात 886 महिलाऐं प्रतिहजार पुरूष तथा ग्रामीण लिंगानुपात 908 महिलाऐं प्रति हजार पुरूष था। इस प्रकार लिंगानुपात में वृद्धि दर्ज की गई।

तालिका संख्या – 3.3.3

कोटा नगर का क्षेत्रफल, जनसंख्या, घनत्व व लिंगानुपात (2011)

वर्ष	जनसंख्या	क्षेत्रफल	जनसंख्या			घनत्व (प्रति वर्ग किलोमीटर)	लिंगानुपात (महिलाऐं प्रति हजार पुरूष)
			पुरूष	स्त्री	योग		
2001	ग्रामीण	4906.95	382495	347453	729948	149	908
	नगरीय	310.05	444633	393944	838577	2705	886
	योग	**5217.00**	**827128**	**741397**	**1568525**	**301**	**896**
2011	ग्रामीण	4647.03	401331	373079	774410	166	930
	नगरीय	569.97	619830	556774	1176604	2064	898
	योग	**5217.00**	**929853**	**929853**	**1951014**	**374**	**911**

स्त्रोत : सांख्यिकी रूपरेखा 2016, आर्थिक सांख्यिकी निदेशालय राजस्थान, जयपुर

प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या लिंगानुपात कहलाती है बून्दी जिले का लिंगानुपात 2011 में 926 हैं और 2001 में लिंगानुपात 907 था। 1991 में लिंगानुपात 891 था। हर दशक में लिंगानुपात बढ़ रहा है।

(घ) साक्षरता :–

जनसंख्या का साक्षर होना किसी भी देश की विकासशील अर्थव्यवस्था के लिए अति आवश्यक है। कोटा नगर में साक्षरता की दृष्टि से उच्च श्रेणी की साक्षरता दर है। कोटा नगर की साक्षरता की दर 81.71 प्रतिशत है। कोटा नगर में पुरूष साक्षरता दर 88.91 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 73.71 प्रतिशत है।

तालिका संख्या – 3.3.4

कोटा नगर : साक्षरता (1961–2011)

वर्ष	पुरूष	महिला	कुल साक्षरता
1961	34.48	9.36	22.68
1971	36.76	12.3	25.28
1981	53.18	20.28	37.84
1991	51.38	23.45	38.84
2001	76.8	61.1	69.4
2011	88.91	73.71	81.71

स्त्रोत : सांख्यिकी रूपरेखा 2016, आर्थिक सांख्यिकी निदेशालय राजस्थान, जयपुर

बून्दी नगर का जुड़ाव आस पास के क्षेत्रों से कोटा की अपेक्षा सीमित ही रहा है फिर भी जन जागरूकता तथा सरकारी योजनाओं के कारण बून्दी की साक्षरता भी ठीक ही रही हैं।बून्दी जिले की साक्षरता वर्ष 2011 में 61.52 प्रतिशत रही इसी प्रकार बून्दी नगर की साक्षरता भी इससे अधिक रही है जो कि तालिका से स्पश्ट है।

तालिका संख्या – 3.3.5

बून्दी नगर की साक्षरता दर

वर्ष	योग			ग्रामीण			नगरीय		
	व्यक्ति	पुरूष	स्त्री	व्यक्ति	पुरूष	स्त्री	व्यक्ति	पुरूष	स्त्री
2001	55.57	71.68	37.79	51.37	68.50	32.46	73.11	84.96	60.04
2011	62.31	76.52	47.00	58.13	73.47	41.56	78.67	88.51	68.16

स्त्रोत : जनगणना प्रतिवेदन,राज.2011

(ड़) ग्रामीण व शहरी जनसंख्या :–

वर्ष 2011 के अनुसार कोटा जिलें की ग्रामीण जनसंख्या 68.8 प्रतिशत रही वही नगरी जनसंख्या का प्रतिशत वर्ष 2011 में 31.2 रहा हैं। कुल साक्षरता 76.56 प्रतिशत रही जिसमें पुरूष साक्षरता 86.31 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता 65.87 प्रतिशत रही। ग्यातव्य है कि कोटा चूकिं पूर्ण नगर है अतः उसकी जनसंख्या 2011 के अनुसार 1001694 हैं।

वर्ष 2011 के अनुसार बून्दी जिलें की ग्रामीण जनसंख्या 71.92 प्रतिशत हैं वही नगरी जनसंख्या का प्रतिशत वर्ष 2011 में 28.08 रहा हैं। ग्यातव्य है कि बून्दी चूकिं पूर्ण नगर है अतः उसकी जनसंख्या 2011 के अनुसार 115559 हैं।

(च) जन्म तथा मृत्युदर :–

कोटा की उपलब्ध तालिका के अनुसार वर्ष 2013 में पैदाहोने वाले बच्चों की संख्या 59963 रही वही 13794 लोगों की मृत्यु हुई वर्ष 2014 में पैदाहोने वाले बच्चों की संख्या 53380 रही वही 12794 लोगों की मृत्यु हुई इसी प्रकार वर्ष 2015 में पैदा होने वाले बच्चों की संख्या 63690 रही वही 18135 लोगों की मृत्यु हुई अन्यों वर्शों में भी यही स्थितियॉ दिखाई देती है।

तालिका संख्या – 3.3.6

कोटा नगर में पंजीकृत जन्म,मृत्यु (संख्या)

वर्ष / नगर	जन्म			मृत्यु		
	पुरूष	स्त्री	योग	पुरूष	स्त्री	योग
2011	29596	24619	54215	7024	5994	13018
2012	29376	26831	56207	7721	5834	13555

2013	31696	28267	59963	8910	4884	13794
2014	28417	24963	53380	8131	4663	12794
2015	34106	29584	63690	11064	7071	18135
कोटा	25285	22192	47477	5857	3302	9159

स्त्रोतः– कार्यालय उप निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी, कोटा

बून्दी की उपलब्ध तालिका के अनुसार वर्ष 2013 में पैदाहोने वाले बच्चों की संख्या 21411 रही वही 6696 लोगों की मृत्यु हुई वर्ष 2014 में पैदाहोने वाले बच्चों की संख्या 17046 रही वही 5709 लोगों की मृत्यु हुई इसी प्रकार वर्ष 2015 में पैदा होने वाले बच्चों की संख्या 18421 रही वही 8292 लोगों की मृत्यु हुई अन्यों वर्शों में भी यही स्थितियॉ दिखाई देती है।

तालिका संख्या – 3.3.7

बून्दी नगर में पंजीकृत जन्म,मृत्यु (संख्या)

वर्ष/नगर	जन्म			मृत्यु		
	पुरूष	स्त्री	योग	पुरूष	स्त्री	योग
2011	10693	9599	20292	3740	2407	6147
2012	11346	10193	21539	3718	2296	6014
2013	10546	10153	21411	4147	2549	6696
2014	8399	7935	17046	3457	2254	5709
2015	9914	8507	18421	5289	3003	8292
बून्दी	4578	3620	8196	508	341	849

स्त्रोतः– कार्यालय मुख्य चिकित्सा अधिकारी,बून्दी

3.4 मूलभूत सुविधाऐं :–

(क) व्यवसाय :–

कोटा की नगरीय कुल कार्यशील जनसंख्या 2011 के आँकड़ों के अनुसार 391491 व्यक्ति है जिसमें 314676 पुरूष एवं 79815 महिलाऐं सम्मिलित हैं जो कुल जनसंख्या का 33.27 प्रतिशत है। इसी प्रकार सीमांत कुल नगरीय जनसंख्या 45196 व्यक्ति है जिसमें 26512 पुरूष एवं 18684 महिलाऐं सम्मिलित हैं जो कुल जनसंख्या का 3.84 प्रतिशत भाग है। यहाँ

पर अकार्यशील नगरीय जनसंख्या 785113 व्यक्ति है जिसमें 301154 पुरूष एवं 483959 महिलाऐं सम्मिलित हैं। इसमें कुल जनसंख्या का 66.73 प्रतिशत व्यक्ति सम्मिलित हैं। इस प्रकार सर्वाधिक अकार्यशील जनसंख्या नगर में निवास करती हैं।

जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना –

कोटा शहर की कुल विकसित क्षेत्र की लगभग 4.75 प्रतिशत भूमि पर व्यावसायिक गतिविधियाँ कार्यरत हैं।

तालिका संख्या – 3.4.1

कोटा नगर व्यवसायिक संरचना (1991–2001)

क्र. सं.	व्यवसाय	पुरूष	प्रतिशत	स्त्री	प्रतिशत	कुल जनसंख्या	प्रतिशत
1	काश्तकार	7321	2.51	1509	2.79	8830	2.6
2	खेतीहर मजदूर	5354	1.83	2472	4.57	7826	2.3
3	पारिवारिक उद्योग	9977	3.41	5612	10.37	15589	4.5
4	अन्य कार्यों में संलग्न जनसंख्या	269512	92.25	44538	82.38	314050	90.7
		292164	100	54131	100.01	346295	100

स्त्रोत : सांख्यिकी रूपरेखा 2016, आर्थिक सांख्यिकी निदेशालय राजस्थान, जयपुर

तलिकानुसार नगर में काश्तकार 7321 पुरूष एवं 1509 महिलाऐं है जो कुल जनसंख्या का 2.51 प्रतिशत पुरूष एवं 2.79 प्रतिशत महिलाऐं सम्मिलित हैं। खेतीहर मजदूर में 5354 पुरूष व 2472 महिलाऐं हैं जिसमें कुल जनसंख्या का 1.83 प्रतिशत पुरूष व 4.57 प्रतिशत महिलाऐं सम्मिलित हैं। पारिवारिक उद्योग में 9977 पुरूष व 5612 महिलाऐं सम्मिलित है जिसमें पुरूष 3.91 प्रतिशत एवं महिलाऐं 10.37 प्रतिशत भागीदारी रखती हैं। अन्यकार्य करने वाले व्यक्तियों में 269512 पुरूष व 44538 महिलाऐं हैं जिसमें पुरूष 92.25 प्रतिशत एवं महिलाऐं 82.28 प्रतिशत भागीदारी रखती हैं अर्थात् यहाँ की अधिकांश जनसंख्या गैर कृषि कार्यों में संलग्न हैं।

नगर के कुल विकसित क्षेत्र का लगभग 7.08 प्रतिशत अर्थात 150 एकड़ भूमि पर वाणिज्यिक गतिविधियॉ संचालित है। बून्दी नगर में वाणिज्यिक गतिविधियाँ (थोक एवं फुटकर व्यापार) नगर–कोट के अन्दर तथा नगर–कोट के साथ–साथ विकसित हुए है। नगर–कोट के अन्दर वाणिज्यिक क्षेत्र सदर बाजार में संकड़े मार्गो पर सघन क्षेत्र में चल रहा है। नगर–कोट के अन्दर का बाजार क्षेत्र अनियोजित व भीड़–भाड़ वाले क्षेत्र में चल रहा है। चौगान दरवाजा एवं मीरागेट व शहर–कोट की दीवार के साथ–साथ बाजार विकसित हुए है। जिसमें मुख्य रूप से कपड़ा मार्केट, सर्राफा, किराना, जनरल मर्चेण्ट एवं बर्तन इत्यादि वाणिज्यिक गतिविधयाँ सम्मिलित है। आजाद पार्क के आस–पास के क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियॉ चल रही है। इन क्षेत्रों में अतिक्रमण के भारी दबाव के कारण बाजार अव्यवस्थित होते जा रहे है। नगर–कोट के बाहर नये विकसित क्षेत्रों में पुराने शहर के समीप लंका गेट के बाहर कृषि उपज मण्डी विकसित हुई है। इसके साथ ट्रांसपोर्ट, ऑटो–रिपेयर वर्कशॉप, पेट्रोल पम्प इत्यादि राश्ट्रीय राजमार्ग नम्बर 12 के बाई पास पर विकसित हो रहे है। सिलोर मार्ग पर कुछ व्यापारिक गतिविधियॉ चल रही है। अनाज भण्डारण हेतु गोदाम मुख्य रूप से अनाज मण्डी के पास एवं चित्तौड़ सड़क पर स्थित है। पत्थर व्यवसाय वर्तमान में सिलोर सड़क पर एवं मीरा दरवाजे के समाने जैत सागर मार्ग पर, अव्यवस्थित रूप से चल रहा है। शहर का भवन निर्माण सामग्री का अधिकांश व्यापार मीरा दरवाजे के बाहर केन्द्रित है। नैनवॉ सड़क पर मिश्रित बाजार विकसित हो रहा है। लंका दरवाजे के बाहर एक नियोजित वाणिज्यिक केन्द्र विकसित किया गया है। इसके अतिरिक्त नए विकसित क्षेत्रों में फुटकर मिश्रित वाणिज्यिक गतिविधियॉ चल रही है। बून्दी नगर राज्य में पर्यटन की दृश्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण कस्बा है। जैत सागर के पास आरटीडीसी का होटल व इसके आस–पास के क्षेत्र में निजी होटल चल रहे है।

(ख) कृषि :–

कोटा व बून्दी नगर के आस–पास की जनसंख्या कृषि कार्यो में कार्यरत है, जिसमें किसान गेंहू, चावल, ज्वार, सोयाबीन, सब्जी आदि कृषि जिन्सों को उत्पादित करते हैं। कृषि के लिए वरदान साबित हुई चम्बल नदी की दो नहरें हैं, जो नगर के दायीं एवं बायीं ओर से निकाली गई है, यह नहरें यहाँ के किसानों की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है।

कोटा व बून्दी नगर के आस–पास के ग्रामीण परिवेश में कृषि का कार्य होता है, परन्तु यह कार्य बहुत छोटे स्तर पर किया जाता है। इसका मुख्य कारण है, कोटा नगर का बढ़ता नगरीकरण, परन्तु कोटा व बून्दी नगर के आस–पास के गाँव कृषि कार्य करते है। प्रचुर मात्रा में जल संसाधन उपलब्ध होने के कारण यहाँ के किसान 4 प्रकार की कृषि करते हैं।

(1) वर्षा कालीन कृषि –

वर्शा कालीन कृषि में यहाँ के किसान मुख्य रूप से सोयाबीन, चावल की कृषि करते हैं। यह कोटा व बून्दी नगर की ग्रामीण आबादी की मुख्य नकदी फसलें है। इसके साथ–साथ वर्षाकालीन फसलों में मोटे खाद्य अनाज भी बोये जाते है, जिनमें मक्का, बाजरा, ज्वार आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त मोटे अनाजों में दलहन और तिलहन की फसलें भी उगायी जाती है। दलहन में उड़द, मूंग, अरहर, चावला प्रमुख है। तिलहन फसलों में सोयाबीन, तिल, तारामीरा, अलसी तथा मूंगफली भी पैदा की जाती है।

(2) शरद कालीन कृषि–

शरद कालीन कृषि में चम्बल सिंचाई परियोजना के कारण यहाँ पर जल की प्रचुर मात्रा होने के कारण यहाँ पर शीतकाल में मोटे अनाजों के रूप में गेहूँ, जौ उगाये जाते है, जबकि दलहन फसलों में चना, मसूर, मटर, सांगरी की फसल मुख्य है। इसके साथ–साथ ही शीतकालीन नकदी फसल के रूप में सरसों तथा मसाला फसलें भी उत्पन्न की जाती है, जिसमें धनिया, लहसुन, मुख्य है। वर्तमान में धनिया एवं लहसुन की पैदावार के आँकडों में कोटा संभाग का मुख्य स्थान है।

(3) ग्रीश्मकालीन फसलें–

ग्रीश्मकालीन फसलों में मुख्य रूप से पशुओं के चारे के रूप में उगायी जाने वाली फसलें आती हैं, जो हमें चारे के साथ–साथ बीज भी उपलब्ध कराती है, जो प्रायः बहुत मूल्यवान होते है। इसके अन्तर्गत मुख्य फसलें रजका, ज्वारी, चरी तथा राजघास मुख्य है।

(4) जायद की फसलें –

यह फसलें मुख्य रूप से बहुत कम समय में उत्पन्न हो जाती हैं, जिनमें मुख्य रूप से सब्जी वाली फसलें तथा कुछ रसीले फलों वाली फसलें उत्पन्न की जाती है। सब्जी वाली फसलों में पालक, भिण्डी, लोकी, कद्दू प्रमुख है। इसके साथ फलों वाली फसलों में तरबूज, खरबूजा, ककड़ी प्रमुख हैं। इसके साथ–साथ ही यहाँ शरद ऋतु के समान ही छोटे स्तर पर फूलों की खेती भी की जाती है, जिनमें मुख्यतः गुलाब, हजारा, हजारी तथा नौरंगी के फूलों की कृषि भी की जाती है।

इस प्रकार कोटा व बून्दी नगर के सामीप्य के ग्रामीण परिवेश में जनजीवन को स्थिर बनाने के लिए, कोटा व बून्दी ग्रामीण क्षेत्र के किसान उपरोक्त फसलें उत्पन्न करके जीविकोपार्जन करतें हैं।

(ग) भोजन :–

कोटा व बून्दी में सामान्यः यहॉ सभी वर्गो, श्रेणीयों व धर्मों के लोग निवास करते है अतः अपनी–अपनी प्रकृति अनुसार भोजन का उपयोग किया जाता है कुछ शाकाहारी है तो कुछ माँसाहारी है लेकिन चूकि कोटा व बून्दी हाड़ोती क्षेत्र में स्थित है जो एक पठारी भाग है। यहाँ जलवायु अधिकाशः शीतोश्ण व उश्ण अधिक है। अतः गर्मीयों के दिनों में यहाँ प्याज का उपयोग होता है क्योकि ये क्षेत्र गर्मीयो में लू से अत्यिधिक प्रभावित रहता है अतः इस समय दही,छाछ व,प्याज व पौदिना का भोजन में अधिक उपयोग होता है साथ ही यहॉ के पानी की स्थिति के अनुसार मिर्च मसालों का अधिक उपयोग होता है जो कि सामान्यः इस क्षेत्र में विख्यात भोजन जो कोटा कचौरी व बून्दी का रायता के नाम से विख्यात है में अन्दर तेज मिर्च मसालों का उपयोग किया जाता है अन्य स्थितियों में रोटी सब्जी व दाल चावल तथा कभी–कभी बाटी चूरमा बाफला का भी प्रचलन लोंगो के बीच भोजन के रूप में रहा है अन्य परिस्थितियों में पुड़ी, पराठे ,रोटी, सब्जी का उपयोंग सामान्यः किया जाता है।

(घ) पेयजल :–

कोटा नगर चम्बल नदी के किनारे स्थित है अतः नगर में पेय जल की आपूर्ति का स्त्रोत चम्बल नदी है। बैराज से बायें एवं दायें मुख्य नहर निकल रही है। दायें मुख्य नहर नगर के मध्य से कन्सुआ औद्योगिक क्षेत्र के समीप से निकल रही है। अतः कोटा नगर में कृषि, औद्योगिक एवं घरेलू जल आपूर्ति की पर्याप्त समता है। इसके अतिरिक्त ट्यूबवेल एवं हैण्डपंप भी जल वितरण के मुख्य स्त्रोत है। चम्बल नदी के किनारे बैराज एवं इसका बड़ा जलाशय अकेल गढ़ में स्थित है। नगर का प्रमुख जह आपूर्ति केन्द्र अकेल गढ़ के नाम से ही जाना जाता है। वर्तमान में अकेल गढ़ में स्थित संयत्र की पीने योग्य पानी वितरण करने की वास्तविक आपूर्ति 251 एम.एल.डी. एवं वांछित आपूर्ति 269 एम.एल.डी. है।

अकेलगढ़ एवं जलआपूर्ति केन्द्र की स्थापना वर्ष 1927 में हुई थी। नगर के दक्षिण में गत 10 वर्शो में नगर विकास न्यास, कोटा द्वारा कई आवासीय योजनाएँ विकसित की गई है, जिनमें जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा अभी तक जलापूर्ति विकसित नही की जा सकी है। इस क्षेत्र में नगर विकास न्यास द्वारा विकसित कुछ योजनाओं में ट्यूबवेल से सप्लाई की जा रही है। नगर के दक्षिण में महावीर नगर, इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र इत्यादि क्षेत्रों में जल आपूर्ति का पर्याप्त दबाब नही है।

वर्मतान में चम्बल नदी के पश्चिम मे हुए नगरीय विस्तार की आवश्ययकता के दृश्टिगत चम्बल नदी के पश्चिमी किनारो पर कोटा बैराज के जलाशय से इन्टेकवेल, सकतपुरा जल

आपूर्ति केन्द्र एवं यहां से जलापूर्ति नेटवर्क की वृहद परियोजना विकासतर हैं। नगर में लगभग 85% आबादी को जन स्वाथ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा जल आपूर्ति की जा रही है। वर्तमान में औसत जल आपूर्ति 240 लीटर प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन है। नगर में जल वितरण पाईप लाईन की कुल लम्बाई 1257 कि.मी. है। इसके अतिरिक्त नगर में जल आपूर्ति हेतु 1116 हैण्डपम्प, 90 ट्यूबवैल, 23 ओवरहेड टैंक एवं 13 सी.डब्ल्यू.आर. हैं। ओवरहैड टैंक एवं सी.डब्ल्यू.आर की कुल भराव क्षमता लगभग 325 लाख लीटर है।

तालिका संख्या – 3.4.2

जलापूर्ति कनेक्शन–कोटा–2012

क्र.सं.	मद	कनेक्शनों की संख्या
1	घरेलू	158122
2	व्यावसायिक	4017
3	औद्योगिक	1227
4	अन्य	831
	योग	164197

स्त्रोत : जनस्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग, कोटा

बून्दी शहर की जल आपूर्ति शहर के विभिन्न स्थानों से 20 नल कूपों द्वारा 8 उच्च जलाशयों से प्रति दिन लगभग 9.48 लाख लीटर जलापूर्ति की जाती है। नगर में प्रति व्यक्ति दिन जल आपूर्ति 106 लीटर है।

तालिका संख्या – 3.4.3

जलापूर्ति–बून्दी–2008

क्र.सं.	जलापूर्ति कनेक्शन की किस्म	कनेक्शनों की संख्या
1	आवासीय	15175
2	वणिज्यिक	492
3	औद्योगिक	72
4	अन्य (पी.एस.पी.ओ. सहित)	65
	कुल	**15804**

स्त्रोतः– जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, बून्दी।

(ड़) विद्युत :–

कोटा नगर में चम्बल नदी के पश्चिम में 1240 मेगावॉट का सुपर थर्मल पॉवर प्लाण्ट है। समीपवर्ती जिलों में यथा झालावाड़ में कालीसिंध पॉवर प्रोजेक्ट, बारां जिले में छबड़ा थर्मल पॉवर प्लांट तथा अडानी पॉवर प्लान्ट, वर्तमान में विकसित किये जा रहे है।

कोटा नगर के निकट मुख्य पन विद्युत उत्पादन केन्द्र राणाप्रताप सागर, गांधी सागर एवं जवाहर सागर बांध स्थित है। कोटा के समीप ही रावतभाटा में एटॉमिक पॉवर स्टेशन है। कोटा नगर से लगभग 49 कि.मी. की दूरी पर अन्ता कस्बे में गैस आधारित विद्युत उत्पादन केन्द्र एन.टी.पी.सी. भी है। निजी क्षेत्र के छोटे बायोमॉस पॉवर प्लांट नगर में रंगपुर के समीप तथा सवाईमाधोपुर जिले में उनियारा एवं बारां जिले में छीपाबड़ौद में स्थापित हैं, जो कि कचरे/भूसे से बिजली का उत्पादन करते हैं। इस प्रकार वर्तमान में कोटा एवं उसके आस–पास के क्षेत्रों से कुल 4600 मेगावॉट विद्युत उत्पादन हो रहा है, जो कि वर्ष 2015 तक बढ़ कर 8000 मेगावॉंट होना विकासरत है।

कोटा नगर में जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड द्वारा वर्तमान व्यवस्था का रख–रखाव एवं वितरण किया जाता है। नगर में विद्युत आपूर्ति का मुख्य स्त्रोत सकतपुरा एवं बारां सड़क पर डायरा स्थित दो 220/132 के. वी. विद्युत केन्द्र एवं महावीर नगर, गोपाल मिल, वृहद् औद्योगिक क्षेत्र स्थित तीन 132 के. वी. विद्युत केन्द्र हैं।

इनके अतिरिक्त नगर में विभिन्न क्षेत्रों में लगभग बीस 33 के. वी. विद्युत उप केन्द्र कार्यरत/निर्माणधीन हैं। रानपुर में 220/132 के. वी. विद्युत केन्द्र प्रस्तावित है।

तालिका संख्या – 3.4.4

विद्युत कनेक्शन एवं उपभोग–2012–कोटा

क्र.सं.	मद	कनेक्शन	प्रतिदिन उपयोग (लाख यूनिटों में)
1	घरेलू	2,20,976	11.64
2	औद्योगिक	5,035	13.73
3	सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था	482	0.67
4	अन्य	55,780	14.34
	योग	**2,82,273**	**40.38**

स्त्रोत : जयपुर विद्युत निगम लि0, कोटा।

बून्दी शहर में विद्युत आपूर्ति जयपुर विद्युत वितरण निगम द्वारा समुचित ग्रिड व्यवस्था से की जाती है। वर्तमान में विद्युत आपूर्ति 132 के. वी. ग्रिड सब स्टेशन से नगर को विभिन्न 33/11 के. वी. के सब स्टेशनों के माध्यम से की जा रही है। बून्दी नगर में कुल विद्युत उपभोग का दैनिक औसत 1.78 लाख यूनिट है।

तालिका संख्या – 3.4.5

विद्युत आपूर्ति–बून्दी–2008

क्र.सं.	मद	कनेक्शनों की संख्या
1	घरेलू	13157
2	वाणिज्यिक	2967
3	कृषि	362
4	औद्योगिक	257
5	स्ट्रीट लाईट	27
6	अन्य	102

स्त्रोतः– जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, बून्दी।

(च) शिक्षा :–

कोटा नगर में वर्तमान में कोटा विश्वद्यिालय, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, अभियांत्रिकी महाविद्यालय, चिकित्सा महाविद्यालय, पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, राजकीय महाविद्यालय, वाणिज्य महाविद्यालय एवं जानकी देवी बजाज महिला महाविद्यालय कार्यरत हैं। उल्लेखित शैक्षणिक संस्थानों के संस्थापन एवं विकास के कारण गत दशक में कोटा नगर का स्वरूप औद्योगिक नगरी से शैक्षणिक नगरी के रूप में विकसित हुआ है।

नगर में निजी क्षेत्र में विगत वर्शें में 1 विश्वविद्यालय झालावाड़ सड़क पर केवल नगर के समीप, 8 अभियांत्रिकी महाविद्यालय, 1 दन्त चिकित्सा महाविद्यिालय एवं अनेक सामान्य एवं व्यावसायिक महाविद्यालय स्थापित हुए है। वर्तमान में निजी क्षेत्र के 2 विश्वविद्यालय व भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (I.I.T.) रानपुर में तथा 1 कृषि विश्वविद्यालय बोरखेड़ा सड़क पर प्रस्तावित है। इसके अतरिक्ति 53 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय/माध्यमिक विद्यालय एवं 356 निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय/माध्यमिक विद्यालय हैं। वर्तमान में 151

राजकीय प्राथमिक / उच्च प्राथमिक एंव निजी विद्यालय एवं महाविद्यालय किराये के भवनों में अपर्याप्त स्थानों पर संचालित हैं, जहाँ पर मापदण्डों के अनुरूप सुविधाओं का अभाव है।

तालिका संख्या – 3.4.6

शैक्षणिक संरचना–कोटा–2012

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर (संख्या)	आयु वर्ग	आयु वर्ग में विद्यालय जाने योग्य बालक/बालिकाओं की संख्या (अनुमानित)	कुल पंजीकृत	कुल भर्ती विद्यालयों का शिक्षा योग्य/बालक /बालिकाओं पर प्रतिशत	विद्यालय में औसत छात्रों की संख्या	विद्यालय की संख्या
1	प्राथमिक विद्यालय (1–5)	5–10	25,122	23,363	93	132	191
2	उच्च प्राथमिक विद्यालय (6–8)	11–13	45,089	40,129	89	159	283
3	मध्यमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय (6–8)	14–17	1,07,360	96,798	90.16	258	416
	योग	–	177571	160290	–	549	890

स्त्रोतः नगर नियोजन विभाग व कार्यालय प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, कोटा।

उपरोक्त विद्यालय एवं महाविद्यालयों के अतिरिक्त कोटा नगर में पिछले दशक में कई तकनीकी कोचिंग संस्थान विकसित हुए हैं, जिसमें अभियान्त्रिकी एवं चिकित्सा संस्थानों में प्रवेश परीक्षाओं की कोंचिग दी जाती है। इन कोचिंग संस्थानों में लगभग 80,000 विद्यार्थी प्रति वर्ष कोचिंग प्राप्त करते हैं। इन संस्थानों में राजस्थान राज्य के अलावा अधिकांश राज्यों, जैसे मध्य प्रदेश, छतीसगढ़, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, गुजरात एवं अन्य राज्यों से विद्यार्थी आते है। इसका प्रभाव कोटा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों पर भी

पड़ा है, जिसके कारण विद्यालयों एवं विद्यार्थियों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्वि हुई है। उक्त कोचिंग संस्थानों का प्रभाव यहाँ की अर्थव्यवस्था पर विशेश रूप से हुआ है, अर्थव्यवस्था के उत्थान के फलस्वरूप नगर के महानगरीय स्वरूप की शुरूआत हुई है।

बून्दी नगर में वर्तमान राजकीय एवं मान्यता प्राप्त विद्यालयों सहित 35 प्राथमिक व 60 उच्च प्राथमिक विद्यालय है। यहॉ 5 राजकीय सीनियर सैकण्डरी विद्यालय क्रमशः 2 छात्र एवं 3 छात्राओं हेतु है। दो राजकीय माध्यमिक विद्यालय, जिनमें एक छात्र एवं एक छात्राओं हेतु है। सभी विद्यालयों के पास भवन व खेल का मैदान है। नगर में 10 निजी उच्च माध्यमिक व 21 निजी माध्यमिक विद्यालय है। अधिकांश निजी विद्यालय किराये के भवनों में अपर्याप्त स्थानों पर संचालित हैं, जहॉ पर मापदण्डों के अनुरूप सुविधाओं का अभाव है।

यहॉ पर 2 राजकीय महाविद्यालय है, जिनमें से एक कोटा मार्ग पर छात्रों एवं एक लंका दरवाजे पर छात्राओं हेतु है। वाणिज्यिक शिक्षा हेतु 2 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान हैं, जिनमें से एक राजकीय व एक निजी क्षेत्र में है। एक शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं एक डाईट का प्रशिक्षण संस्थान है।

तालिका संख्या – 3.4.7

शैक्षणिक संरचना–बून्दी–2008

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर	आयु वर्ग	आयुवर्ग में विद्यालय जाने योग्य छात्र /छात्राओं की संख्या (अनुमानित)	कुल पंजीकृत छात्र	कुल भर्ती विद्यार्थियों का शिक्षा योग्य छात्र/ छात्राओं पर प्रतिशत	विद्यालय में औसत छात्रों की संख्या	विद्यालयों की संख्या
1	प्राथमिक विद्यालय (कक्षा नर्सरी से 5 तक)	3–10	18240	11583	63.50	331	35
2	उच्च प्राथमिक विद्यालय (कक्षा 6 से 8 तक)	11–13	9120	5694	62.43	95	60
3	सैकण्डरी/सीनियरसैकण्डरी विद्यालय (कक्षा 9 से 12 तक)	14–17	7980	88.63	88.63	215	38

स्त्रोतः नगर नियोजन विभागीय सर्वेक्षण ।

(छ) परिवहन संचार :–

हवाई सेवा :–

कोटा नगर में हवाई सेवा नियमित उपलब्ध नहीं है परन्तु हवाईजहाज व हेलीकॉप्टर लेण्ड करने के लिए हवाई अड्डा झालावाड़ रोड़ पर बनाया गया है। हवाई अड्डे का उपयोग मौसम की जानकारी प्राप्त करने हेतु किया जाता है तथा इसका उपयोग समय–समय पर विशिष्ट अतिथियों के हवाई मार्ग द्वारा आने–जाने के समय किया जाता है। आपात स्थिति में हेलीकॉप्टर की सेवाऐं लेने के काम आता है।

रेल मार्ग :–

कोटा नगर दिल्ली–मुम्बई बड़ी रेलवे लाइन का एक प्रमुख जंक्शन है तथा दिल्ली से लगभग 470 किलोमीटर तथा मुम्बई से 920 किमी. की दूरी पर स्थित है। कोटा नगर राज्य की राजधानी जयपुर से 240 किलोमीटर दूरी पर रेल मार्ग द्वारा जुड़ा हुआ है। कोटा नगर में रेल परिवहन में निरन्तर हो रही प्रगति का परिणाम है कि कोटा रेल द्वारा कटनी, देहरादून, चित्तौड़गढ़, जयपुर, दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, गोरखपुर, आगरा, जम्मू तक जुड़ गया है। कोटा नगर में ट्रेकवाइज17 स्टेशन है। इस प्रकार कोटा–बीना खण्ड लाइन की लम्बाई 303 किमी है। जिसमें 6 स्टेशन आते हैं। मुम्बई–मथुरा खण्ड दोहरी लाइन 1244 किलोमीटर लम्बी है। यात्रियों की सुविधा के लिए कोटा जंक्शन एवं डकनिया स्टेशन पर कम्प्यूटर से आरक्षण की व्यवस्था की गयी है। कोटा जंक्शन से प्रतिदिन औसत 9430 यात्री रेल द्वारा यात्रा करते हैं।

सड़क मार्ग :–

कोटा नगर के मध्य से दो राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरते हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 12 जयपुर से जबलपुर तथा राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 27 पिण्डवाड़ा से शिवपुरी जाता है। कोटा में केन्द्रीय बस स्टेण्ड नयापुरा विवेकानन्द चौराहे के समीप जयपुर मार्ग पर स्थित है। कोटा से अजमेर वाया बून्दी देवली, केकड़ी, कोटा से जयपुर वाया बून्दी देवली, टोंक, कोटा से झालावाड़, अकलेरा, कोटा से चेचट, कोटा – बून्दी, कोटा–देवली, कोटा–रामगंजमण्डी, कोटा–अकलेरा वाया दरा, सांगोद, खानपुर, झालरापाटन, पिड़ावा, कोटा से सांगोद वाया दरा, कनवास, कोटा से बकानी वाया दरा, झालावाड़ झालरापाटन राष्ट्रीयकृत मार्ग हैं। कोटा में नया केन्द्रिय बस स्टेण्ड नये नगर में बनाया गया है।

नगरीय परिवहन :–

नगर में आंतरिक परिवहन के साधन हेतु टेक्सी, ऑटो रिक्शा, मिनिडोर, टेम्पो, मिनीबस, रिक्शा एवं ताँगे उपलब्ध हैं। माल परिवहन हेतु ट्रकों द्वारा कोटा से सामान बाहर भेजा जाता है।

यातायात व्यवस्था :–

बून्दी नगर कोटा–चित्तौड़ बड़ी रेल लाईन पर स्थित है। रेलवे स्टेशन, राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 के दक्षिण में नगर से छत्रपुरा सड़क से जुडा हुआ है। बून्दी से कोटा, चित्तौड़ नीमच, उदयपुर एवं कोटा से देश के अन्य प्रमुख नगरों से बड़ी रेल लाईन से सीधा सम्पर्क है। बून्दी नगर के मध्य से राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 (जयपुर–जबलपुर) गुजरता है। जिस पर भारी यातायात एवं स्थानीय यातायात का अत्यधिक दबाव रहता है, जिससे यातायात सम्बन्धी कई समस्याओं उत्पन्न होती है। राज्य राजमार्ग संख्या 9 (चित्तौड़–बूंदी) व 29 (लाखेरी–इन्द्रगढ़–सवाईमाधोपुर) बूंदी से निकलते है। इनके अतिक्ति बून्दी शहर मे प्रमुख सड़क मार्ग रेलवे ओवर ब्रिज से बस स्टेण्ड, आजार्द पार्क से बाई पास सड़क तक, सर्किट हाउस, लंका दरवाजा, बाई पास तक का मार्ग, छत्रपुरा सड़क, सिलोर सड़क, महावीर सर्किल से मीरागेट, बाणगंगा तक का मार्ग जहॉ पर यातायात का अत्यधिक दबाव रहता है। बून्दी शहर का विस्तार नैनवॉ सड़क पर, सिलोर सड़क, छत्रपुरा सड़क एवं बाई पास के आस पास के क्षेत्र में हो रहा है। अतः विभिन्न आवासीय क्षेत्रों एवं कार्य स्थलों की दूरी बढ़ती जा रही है, जिससे सड़कों पर यातायात का दबाव बढ़ रहा है। पुराने शहर में गलियॉ बहुत संकड़ी व टेढ़ी–मेढ़ी है, जिसके कारण यातायात अवरूद्व होता है। शहर में निश्चित सड़क व्यवस्था नहीं है। प्रमुख बाजार पुराने नगर के अन्दर है, जिससे नगर के अन्दर यातायात का भारी दबाव रहता है।

बस तथा ट्रक टर्मिनल :–

राजस्थान पथ परिवहन निगम का बस स्टेण्ड नगर के अन्दर कलेक्ट्रेट के पास सामान्य अस्पताल के सामने स्थित है। नगर के मध्य में स्थित होने के कारण बसों के आवागमन में अत्यधिक असुविधा रहती है। यहॉ पर बहुत भीड़ भाड़ रहती है। रणजीत टॉकिज के आस पास के क्षेत्र से निजी जीपों का संचलान होता है, जिससे नैनवॉ सड़क पर यातायात असुविधा जनक रहता है। बाई पास सड़क पर मोटर मार्केट विकसित किया गया है। बाई पास सड़क पर ऑटो मोबाईल रिपेयर दुकानें होने से इस क्षेत्र में भी यातयात का दबाव रहता है।

रेल व हवाई सेवा :–

बून्दी, कोटा–चित्तौड़ बड़ी रेल लाईन पर एक प्रमुख स्टेशन है। रेलवे स्टेशन नगर के दक्षिण में स्थित है। बून्दी में हवाई अड्डा व हवाई पट्टी उपलब्ध नहीं है।

(ज) स्वास्थ्य सेवाऐं (चिकित्सा) :–

कोटा नगर में राजकीय सामान्य अस्पताल नयापुरा क्षेत्र में स्थित है जो कि 'महाराव भीमसिंह अस्पताल' के नाम से जाना जाता है। चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना होने के पश्चात महाराव भीमसिंह चिकित्यालय, चिकित्सा महाविद्यालय से संबंद्व है। इसकी वर्तमान क्षमता 474 बिस्तर की है। इसी परिसर में जे.के.लोन महिला चिकित्सालय एवं टी.बी. अस्पताल भी है। इन सभी को मिलाकर महाराव भीमसिंह चिकित्सालय व संलग्न समूहों की कुल क्षमता 849 बिस्तर की है। मेडिकल कॉलेज से सबंद्व 1000 बिस्तर का अस्पताल भी अस्तित्व में आ चुका है एवं आंशिक रूप से विभिन्न विभागों की 470 बिस्तर की क्षमता कार्यशील हो चुकी है। इसके अतिरिक्त रामपुरा सैटेलाइट चिकित्सालय, इ.एस.आई. अस्पताल, रेलवे अस्पताल एवं प्रथम श्रेणी आयुर्वेदिक औशधालय एवं एलोपैथिक डिस्पेन्सरियों की कुल संख्या 28 है, जिनकी कुल क्षमता 208 बिस्तर की है। वर्तमान में कोटा में आयुर्वेदिक चिकित्सालय, होम्योपेथिक चिकित्सालय एवं यूनानी चिकित्सालयों की कुल संख्या 12 हैं, जिनकी कुल क्षमता 30 बिस्तर की है। पिछले दशक में प्रमुख निजी अस्पतालों में दादाबाड़ी क्षेत्र में भारत विकास परिशद अस्पताल कार्यरत है एवं इसके अतिरिक्त नगर में लगभग 85 निजी नर्सिंग एवं मेटरनिटी होम कार्यरत हैं। अधिकांश निजी नर्सिंग होम अपर्याप्त स्थल एवं अपर्याप्त सुविधाओं के साथ कार्यरत है।

कोटा संभाग के अन्तर्गत बून्दी, सवाई माधोपुर, बारां, झालावाड़ एवं कोटा जिला आते हैं। उक्त जिलों की अधिकांश जनता उच्चतर चिकित्सा सुविधाओं के लिये कोटा नगर पर निर्भर है।

बून्दी नगर में राजकीय सामान्य अस्पताल शहर के मध्य में बस स्टेण्ड के समाने स्थित है, जो कि पण्डित बृज सुन्दर शर्मा (सामान्य चिकित्सालय) के नाम से जाना जाता है। इसकी वर्तमान क्षमता 212 बिस्तर की है। इसी परिसर में महिला चिकित्सालय भी है। इसके अतिरिकत पुलिस लाईन बून्दी में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (पी.एच.सी.) है, जिसमें 6 बिस्तर की क्षमता है व बालचन्द पाड़ा, बून्दी में एडपोस्ट डिस्पेंसरी है।

तालिका संख्या – 3.4.8

विद्यमान चिकित्सा सुविधाऍं–कोटा–2012

क्र. सं.	चिकित्सालय / किलनिक	चिकित्सालय की संख्या	विस्तरों की संख्या
1	एलोपैथिक		
(अ)	राज.सामान्य चिकित्सालय (चिकित्सा महाविद्यालय से सम्बद्व)	1	474
	(i) महाराव भीमसिंह चिकित्सालय	1	325
	(ii) जे. के. लोन व टी. बी. अस्पताल	1	470
	(iii) न्यू मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल	1	10
2	ई.एस.आई., रामपुरा सेटेलाइट अस्पताल एवं अन्य स्वास्थ्य सुविधायें	28	208
3	राज. आयुर्वेदिक चिकित्सालय, युनानी चिकित्सालय एवं होम्योपेथिक चिकित्सालय	12	30
4	निजी चिकित्सालय, मेटरनिटी होम, नर्सिंग होम इत्यादि	86	1150
	योग	**129**	**2657**

स्त्रोतः– सी.एम.एच.ओ. / विभिन्न चिकित्सालयों से प्राप्त आंकड़े।

बूंदी में एक आयुर्वेदिक चिकित्सालय 10 बिस्तर की क्षमता का एवं एक आयुर्वेदिक औशधालय व एक होम्योपेथिक औशधालय है। नगर में कई निजी पंजीकृत नर्सिंग एवं मेटरनिटी होम कार्यरत है। अधिकांश निजी नर्सिंग होम अर्पाप्त स्थल व अपर्याप्त सुविधाओं के साथ कार्यरत है। शहर में सामान्य चिकित्सालय के उत्तर में पशु चिकित्सालय है।

उपरोक्त वर्णन से हमें शोध क्षेत्र के नगरों यथा कोटा तथा बून्दी के भौगोलिक परिदृश्य की आधारभूत जानकारी प्राप्त होती है जिसका प्रभाव इन नगरों के रूप, आकार तथा विकास की गति पर स्पश्ट रूप से दिखाई देता है।

अध्याय – 4

कोटा में नगरीकरण की स्थिति तथा प्रवृत्तियाँ

कोटा में नगरीकरण की स्थिति तथा प्रवृत्तियाँ :–

कोटा नगर राजस्थान का एक बड़ा तथा महत्वपूर्ण नगर है जो आर्थिक,सामाजिक, राजनैतिक तथा भौगोलिक रूप से अपनी विशेश पहचान रखता है। राजस्थान के नगरों में कोटा नगर में नगरीकरण की प्रक्रिया तुलनात्मक रूप से बेहतर दिखाई देती है जिसका परिणाम इसके आज दिखाई देने वाली विकसित रूप पर देखा जा सकता है इस नगर के नगरीकरण की प्रकिया को निम्नलिखित शीशर्कों में वर्णित किया गया है।

4.1 ऐतिहासिक परिपेक्ष :–

कोटा शहर की नगरीकरण प्रवृत्ति संबंधी पर्याप्त जानकारी प्राप्त करने के लिए इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को विस्तार से समझने, जिसमें नगर का धीरे–धीरे किस प्रकार विस्तार हुआ, की जानकारी आवश्यक है। ऐतिहासिक दृश्टि से महत्त्वपूर्ण रहे, इस भू–भाग का तेरहवी शताब्दी में गौरव क्षीण होगया तथा अस्त व्यस्तता एवं अराजकता व्याप्त हो गई। इस क्षेत्र को पुनः गौरव हाड़ा नरेशों द्वारा दिलाया गया है। सन् 1241 ई. मे चम्बल के इस पार जहाँ कोटा नगर बसा है, इस क्षेत्र के तत्कालीन उत्पति अकेलगढ के कोटिया भील को मार कर जैतसी ने इस भू–भाग पर अपना अधिकार स्थापित किया। पूर्व में जैतसी का पिता समरसी कोटिया भील को, अपने वश में नही कर सका था। अतः जैतसी ने इस सफलता से उत्याहित होकर यही रहने और अपना अधिकार क्षेत्र बढाने का निश्चय किया। अपने पिता की आज्ञा से जैतसी ने, जिस स्थान पर कोटिया पर विजय प्राप्त की थी, उसी स्थान पर आवास बनवाना प्रारम्भ किया। यह वही स्थान है, जहाँ आज कोटा का गढस्थित है। जैतसी के इस प्रारंभिक निर्माण से कोटा नगर की स्थापना का सूत्रपात हुआ। उसके पिता ने उसे यह भू–भाग बून्दी की जागीर के रूप में स्थापित करने की आज्ञा दे दी। उस काल की परम्परा के अनुसार किसी के वध के पाप से मुक्ति पाने के उद्‌देश्य को दृश्टिगत रखते हुए जैतसी ने अपने नये नगर का नाम कोटिया के नाम पर रखा।

जैतसी के यहाँ रहने व जागीर बनाने से कोआ मे ंउसके सैनिकों, सेना अधिकारियों तथा जागीर के कर्मचारियों ने भी अपने आवास बनाना प्रारम्भ किये। इनकी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अन्य सभी जातियों, वर्गो एवं विधाओं के नागरिकों ने भी यहाँ बसना और अपने आवास बनाना प्रारम्भ कर दिया। इस प्रकार तेरहवी शताब्दी में इस कोटा नगर की स्थापना हुई। गढ के निर्माण के साथ ही कोटा नगर में जिन प्रारम्भिक बस्तियों को निर्माण हुआ उनके नाम है–राधाविलास, रेतवाली, टिपटा, चारहाटडी, सराय कास्थान एवं पाटनपोल आदि। नगरनिर्माण के साथ ही इसकी सुरक्षा के लिए शहरपनह, बुर्जे एवं

शहर द्वारों का निर्माण कराया गया।प्रारम्भ मे इस नये नगर के तीन दरवाजे ही थे, जिनके नाम है–भीलवाडा दरवाजा (किशोरपुरा दरवाजा), पाटनपोल एवं कैथूनीपोल। जैसे–जैसे इस नगर की जनसंख्या बढने लगी, वैसी ही नये–नये मोहल्ले बसते गए और इस प्रकार हिरनबाजार, लखारापाडा, मकबरा, मोखापाडा, बजाजखाना, ठठेराबाजार आदि बस्तियों का निर्माण हुआ। इस बस्तियों के निर्माण के पश्चात् उस समय की जिस आधुनिक बस्ती का निर्माण हुआ, वह थी रामपुरा। रामपुरा बाजार एवं बस्ती का नाम कोटा राज्य के नरेश रामसिंह जी प्रथम के नाम पर रखा गया।रामपुरा बस्ती बनने के पश्चात् इसके चारो ंऔर कोटबनवाया गया और एक नया दरवाजा बनाया गया, जिसको रामपुरा दरवाजा नाम दिया गया। अभी तक जो बस्ती रामपुरा बनने तक थी, उसके एक और चम्बल नदी थी तथा दूसरी और सारण (खाई या नहर) तथा दो तालाब थे।

कोटा राज्य का जैसे–जैसे विस्तार होता गया वैसे–वैसे यहाँ के निवासियों की संख्या बढती गई और इसी प्रकार अन्य नई बस्तियों का निर्माण होता चला गया। नवीन बस्तियों में श्रीपुरा, मोखापाडा तथा लाडपुरा का नाम झालाजालमसिंह की पुत्री लाडकंवर के नाम पर रखा गया। सारण के मोखे की समीप की बस्ती को मोखापाडा का नाम दिया गया। लाडपुरा मोहल्ले के अंत में लाडपुरा दरवाजा तथा मोखापाडा एवं श्रीपुरा की समाप्ति पर सूर्यपोल या सूरजपोल दरवाजा बनाया गया। कोटा नगर के सभी दरवाजे एक कोट तथा एक गेटवाले थे। सूरजपोल से लाडपुरा दरवाजे तक कोटा का जो शहर पनाह बनाया गया वह काफी उँचा तथा बहुत ही मजबूत है, यह देश के सृदृढतम शहर पना हों में से एक है। कोटा के उपरोक्त वर्णित मुख्य मोहल्लों में अनेक उप बस्तियों एवं सैकडों गलियों की नामावली, बहुत विस्तृत एवं लम्बी है तथा अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय है।

इसके पश्चात् कोटा नगर में जिन बस्तियों का निर्माण हुआ, वे सब शहर पनाह के बाहर ही बनी। स्वतंत्रता से पूर्व इनमें महाराव गुमानसिंहजी के नाम पर गुमानपुरा, नयापुरा, गोरधपुरा, कोटडी, छावनी तथा भीमगंजमंडी आदि बस्तियों बसी। कोटा में औद्योगिक कारखानों के आने के बाद, इस नगर पर आबादी का जो विकट दवाब पडा तो अनेकानेक बस्तियों का निर्माण हुआ। इनमें से कुछ मुख्य बस्तियाँ एवं नये मोहल्लों के नाम है–विज्ञाननगर, दादाबाडी, तलवंडी, महावीर नगर, बंसतविहार, सरस्वतीकॉलोनी , बजरंगनगर, वैभवनगर, मालाफाटक कॉलोनी आदि। जैतसी द्वारा नगर की स्थापना के साथ ही कोटा के आस पास का क्षेत्र बून्दी की एक जागीर के रूप में जैतसी तथा उसके वंशजो के द्वारा एक लम्बे समय तक शासित होता रहा, लेकिन 1546 ई. मे. मालवा के दो पठान बन्धु केसर खाँ एवं डोकर खाँ ने जैतसी के वंशज कन्ह से कोटा छीन लिया, लेकिन 26

वर्ष बाद ही बून्दी नरेश राव सुर्जन ने केसर खाँ एवं डोकर खाँ को युद्ध में मारकर कोटा पुनः प्राप्त कर लिया तथा इसका शासन अपने पुत्र भोज के सुपुर्द कर दिया। भोज की मृत्यु के बाद उसके छोटे पुत्र हृदय नारायण ने कोटा पर लगभग 15 वर्ष राज्य किया, उस समय भोज का ज्येश्ठ पुत्र राव रतन बून्दी का राजा था। जहाँगीर के काल में मुगल शहजादा खुर्रम विद्रोही हो गया तथा उसे दबाने के लिए जहाँगीर ने अपने विश्वस्त सेनानायक रावरतन को दक्षिण भेजा। खुर्रम के साथ रावरतन के युद्ध में उसे छोटे पुत्र मोधोसिंह ने बडी वीरता दिखाई, लेकिन कोटा का शासक हृदय नारायण युद्ध क्षेत्र से भाग खडा हुआ, इस सेना राज होकर जहाँगीर ने कोटा का राज्य उस से छीन कर अस्थायी रूप से रावरतन को दे दिया। रावरतन कर छोटा पुत्र माधोसिंह था। माधोसिंह को जहाँगीर ने अपने अन्तिम काल में कोटा राज्य दे दिया , उसको कोटा राज्य का फरमान 1632 ई. में मिला।

माधोसिंह की मृत्यु के बाद उस का पुत्र रावमुकुन्द सिंह कोटा का शासक बना। इसके बाद उसका पुत्र जगत सिंह तत्पश्चात् उस के वंश के प्रेमसिंह, किशोर सिंह, रामसिंह, जाजव ने युद्व में वीरता पूर्वक लडते हुए वीरगति प्राप्त की एवं भीमसिंह कोटा के राजा बने। भीमसिंहजी के बाद उनके पुत्र अर्जुनसिंह महाराव हुए, उनके पश्चात् दुर्जनलाल एवं अजीत सिंह राजा बने। तत्पश्चात् कोटा के महाराव शत्रुसाल, गुमानसिंह, उम्मेदसिंह, किशोर सिंह हुए जो कि यद्यपि राजा थे, परन्तु राज्य की वास्तविक शक्ति फौजदार झाला जालम सिंह ने चालाकी से अपने हाथों में ले ली। झाला जालम सिंह अपने युग का राजस्थान का विलक्षण व्यक्ति था, वह वीर था साथ ही चालाक, चतुर एवं कुटनीतिज्ञ भी था। रामसिंह के पश्चात् महाराव शत्रुशाल राजा हुए, परन्तु उनके शासन के अधिकार अधिकांश समय कौंसिल के हाथ में रहे। शत्रुसाल की मृत्यु के बाद महाराव उम्मेद सिंह द्वितीय कोटा के राजा हुए। महाराव उम्मेदसिंह द्वितीय आधुनिक कोटा के निर्माता माने जाते हैं, उन्होंने 1889 से 1940 तक कोटा पर राज्य किया। निर्माण कार्य की दृश्टि से तो महाराव उम्मेद सिंह कोटा के शाहजहाँ माने जाते है। उनकी सफलता में उनके दो सलाहकार दीवान चौबे रघुनाथ दास एवं उनके गुरू, व्यक्तिगत सचिव मुंशी शिवप्रताप का विशेश हाथ रहा। मुंशी शिवप्रताप जी ने ही आज के कोटा के राजकीय महाविद्यालय की हर्बट हाई स्कूल के रूप में स्थापना में अभूतपूर्व योगदान किया महाराव उम्मेदसिंह जी के बाद 1940 में महाराव भीमसिंह जी द्वितीय कोटा नरेश बने, जिनके समय में 1948 में कोटा का, राजस्थान राज्य में स्वन्त्रता पश्चात् विलय हुआ। इसके पश्चात् राजनैतिक दृश्टि से पिछड़ा होने के कारण कुछ समय इसकी प्रगति रूकी रही, लेकिन कुछ ही काल में कोटा के लिए चर्मण्यवती

वरदान सिद्व हुई तथा पानी–बिजली, बड़ी रेल लाइन की सुविधा के कारण, कोटा की औद्योगिक प्रगति हुई और वह आज राजस्थान का सर्वोच्च एवं देश का प्रमुख औद्योगिक एवं शैक्षणिक नगर हो गया है। शहर में ऐतिहासिक एवं अन्य महत्त्वपूर्ण भवन श्री बृजनाथ की का मंदिर, कँवरपरी के महल, सैलार गाजी दरवाजा, नौबतखाना, कोट्या भैरूजी, झाला हवेली, जनाने महल, आनन्द महल, हवा महल है इन भवनों में भित्ति चित्र कोटा चित्र शैली के सर्वोत्कृश्ठ चित्र माने जाते है।

लगभग 670 वर्ष पूर्व, कोटा भील आदिवासियों की एक छोटी आबादी थी, जहाँ पर मिट्टी की झोपड़ियाँ एवं एक छोटा सा किया था। इसका नाम भीलों के मुखिया कोटिया के नाम पर रखा गया था। चौदहवीं शताब्दी (सन् 1342) के मध्य में इसे बून्दी के हाड़ा राजपूतों ने जीतकर लगभग दो शताब्दी बाद चम्बल नदी के किनारे एक किला बनाया। आबादी विस्तार के साथ उत्तर एवं पूर्व की ओर परकोटे बनाये गय। भौतिक अवरोधों के कारण नगर का विस्तार उस समय पश्चिम एवं दक्षिण में नही हुआ।

रेलवे, जल व्यवस्था, बिजलीघर, हवाई अड्डा इत्यादि के विकास के बाद उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक कोटा नगर ने आधुनिक युग में प्रवेश किया। जब परकोटे के बाहर भी इसका विस्तार हुआ। उत्तर में कोटा जंक्शन के नजदीक भीमगंजमण्डी क्षेत्र विकसित हुआ। आजादी के बाद, देश के विभाजन के परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में पश्चिमी पाकिस्तान से शरणार्थी कोटा आये। उत्तर में कोटा जंक्शन के समीप एवं पूर्व में गुमानपुरा के समीप इन शरणार्थियों को बसाने के लिये नऐ आवासीय क्षेत्र विकसित किये गए।

चम्बल परियोजना के प्रथम चरण में सन् 1961 में कोटा बैराज एवं गांधीसागर बांध के पूर्ण होने से इस क्षेत्र में नये आर्थिक अवसर उपलब्ध हुए। दक्षिण–पूर्व में कन्सुआ ग्राम के समीप एक बड़ा औद्योगिक क्षेत्र स्थापित हुआ। कोटा का विकास जो कि चम्बल नदी व रेलवे लाईन के मध्य उत्तर–दक्षिण अक्ष पर हो रहा था, औद्योगिक क्षेत्र के विकास के साथ पूर्व–पश्चिम अक्ष पर शुरू हुआ। इसके बाद दक्षिण में झालावाड़ सड़क पर इन्स्टूमेंटेशन फैक्ट्री एवं इसकी आवासीय कॉलोनी, पूर्व में जे. के. उद्योग एवं इसकी आवासीय कॉलोनी तथा श्रीराम उद्योग एवं इसकी आवासीय कॉलोनी विकसीत हुई। इसके अतिरिक्त भी कई वृहद् एवं मध्यम उद्योगों की स्थापना हुई। पश्चिम में चम्बल नदी के अवरोध के कारण विकास न्यूनतम हुआ। इस काल में अधिकांशतः विकास दक्षिण दिशा में रेलवे लाईन व रावतभाटा सड़क के मध्य राजस्थान आवासन मण्डल एवं नगर विकास न्यास द्वारा नियोजित रूप से जहाँ सरकारी भूमि उपलब्ध थी, हुआ। उत्तर दिशा में रेलवे स्टेशन के

समीपवर्ती क्षेत्रों में भी कृषि भूमि पर आवासीय कॉलोनियों विकसित हुई। कन्सुआ औद्योगिक क्षेत्र के पास कृषि भूमि अवाप्त नही हो पाई। अतः रिक्त भूमि पर कच्ची बस्तियाँ विकसित हो गयी। चम्बल के पश्चिम में थर्मल प्लांट के निर्माण से इस दिशा में भी कुछ विकास हुआ। इसके उपरान्त अधिकांशतः विकास दक्षिण दिशा में रेलवे लाईन व रावतभाटा सड़क के मध्य राजस्थान आवासन मण्डल व नगर विकास न्यास द्वारा नियोजित रूप से जहाँ सरकारी भूमि उपलब्ध थी, पर हुआ।

विगत् 10 वर्शों में राज्य सरकार द्वारा नगरीय विकास की निजी क्षेत्र में भागीदारी से नियोजित रूप में विकास हेतु टाउनशिप पॉलिसी जारी किये जाने के फलस्वरूप नगर के पूर्व एवं पश्चिम दिशा में निजी कृषि भूमि पर तेजी से नगर का विस्तार हुआ। जिला प्रशासन द्वारा बड़ी मात्रा में सिवायचक भूमि नगर विकास न्यास को हस्तान्तरित किये जाने के फलस्वरूप लखावा व रानपुर क्षेत्र तथा नगर के पश्चिम में नान्ता व राम नगर क्षेत्र में नगर विकास न्यास द्वारा कई योजनाओं का विकास कार्य हाथ में लिया गया। रीको द्वारा रानपुर में औद्योगिक क्षेत्र का विकास किया गया।

4.2 आकारिकी व प्रवृति :–

नगरीय आकारिकी का अर्थ नगरों के आकार या स्वरूप के विषय में विवेचना करना है। अंग्रेजी भाशा का Morphology ग्रीक भाशा के दो शब्दों Morphy = from अर्थात आकार (रूप) तथा logos = Discourse अर्थात विवरण से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है। Discourse on from आकार के बारे में विवरण। आकारिकी शब्द का प्रयोग मुख्यतः जीव विज्ञान में पादपों व जन्तुओं के रूप तथा संरचना के सम्बन्ध में किया गया है। लेकिन भूगोल में इसका प्रयोग भू–आकृतिक विज्ञान व बस्तियों के भूगोल में किया जाने लगा है। नगरीय आकारिकी के अन्तर्गत नगरों की आकृति व आन्तरिक संरचना का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

आर.ई मर्फी के अनूसारः– आकारिकी अध्ययन के अन्तर्गत नगरीय क्षेत्रों के स्वरूप सम्बन्धी तत्वों जैसे गलियों व सड़को की व्यवस्था , भवनों का स्वरूप तथा वास्तव में सम्पूर्ण नगरीय भूदश्यों का अध्ययन किया जाता है।

ओ.पी.सिंह के अनुसार :– वास्तविक रूप नगर के भीतर पाये जाने वाले भिन्न–भिन्न स्वरूप और संरचनात्मक प्रतिरूप उसकी आकारिकी का परिचय देते है। उन के अनुसार आकारिकी के अन्तर्गत नगर के अन्दर पाये जाने वाली दो प्रकारकी विशेशताओं अध्ययन

किया जाता है। 1.नगर की भौतिक स्वरूप व व्यवस्था। 2.नगर की आन्तरिक कार्यात्मक संरचना।

कोटा नगर का विकास भी मुख्यतः चम्बल के बीहड़ो में सुरक्षा व कृषि एवं पीने और अन्य कार्यों के लिए सदा वाहिनी चम्बल नदी की उपलब्धता के कारण ही सम्भव हो पाया है। कालान्तर में बून्दी नगर के अपेक्षा कोटा नगर विकास की दोड़ में आगे निकल गया इसमें यहॉ के बेहतर भोगोलिक दशाओं का योगदान प्रमख रहा है। यातायात के साधनों व सम्पर्क रास्तों के विकास होने से कोटा अधिक बेहतर ढ़ंग से अन्य प्रदेशों से जुड़ गया और इस कारण विकास को गति प्राप्त हुई।

शुरूआती समय में यहॉ औधोगिक विकास ने बहार से लोगों को आजीविका के लिए आकर्शित किया तो उधोगो के तेजी से विकास हुआ यह औधोगिक नगर बन गया इसे दिल्ली व जयपुर के काउन्टर मेग्नेट के रूप में विकसित किया जाने लगा कलंटर में पुनः आये बदलाव व उधोगो के पतन के साथ यहॉ बच्चों के लिए कोचिंग की शुरूआत हुई और वह आज कोचिंग उधोग के रूप में स्थापित हो गया जहॉ पुरे भारत से लाखों बच्चें पढ़ने आते है। विकास की गति में कोटा नगर ने परकोटे में बंद अपनी आकारिकी की सीमितता को तोड़ का परकोटे के बाहर फैलाव शुरू किया जिससे परकोटे के अन्दर की तंग गलियों,बाजारों व आवासों को एक खुली जगह प्राप्त होती चली गयी जिससे मुख्यतः गुमानपुरा व एरोड्रम के आस पास के क्षेत्रों ,स्टेशन क्षेत्रों व मुख्य सड़कों के दोनो और कुछ व्यस्थित बाजारों का विकास हुआ जो आज बड़े बड़े मोल के रूप में स्थापित हो चुके है। नगर के उतर में स्टेशन क्षेत्र से लेकर नगर के दक्षिण में महावीर नगर , कोटा विश्वविद्यालय तक व पूर्व में नया नोहरा ,बोर्खंडी से लेकर पश्चिम में चम्बल पार नान्ता क्षेत्र तक नगर का फैलाव हो चुका है। पश्चिम में चम्बल नदी की रोक के कारण इस क्षेत्र में नगरीय विकास धीमा हुआ, कोटा में मुख्यतः नगर के विकास की प्रवृति राश्ट्रीय राजमार्गों व राजकीय मार्गों के साथ देखी जाती है जो इसे हवाई जहाजनुमा आकृति प्रदान करती है जो सामान्यतः अधिकांशनगरों की मुख्य आकारिकी व प्रवृति भी है।

प्रवृति :–

1901 में कोटाशहर की जनसंख्या 33657 थी, किन्तु 1911 एवं 1921 में यहाँ की जनसंख्या में कमी अंकित की गयी। इसका कारण उस समय सम्पूर्ण प्रदेश में पड़नेवाला 'छप्पानियाँ अकाल' था। 1941 एवं 1951 में क्रमशः 47389 एवं 65107 जनसंख्या थी एवं वृद्धि दर क्रमशः 24.98 प्रतिशत व 37.53 प्रतिशत रही। वर्ष 1951 के पश्चात् शहर की जनसंख्या में

तेजी से वृद्धि हुई, जिसका प्रमुख कारण नगर में बड़े –बड़े उद्यागों की स्थापना रही तथा 1961 में 120345 तथा 1971 में 212991 हो गयी। वर्ष 2001 में यहाँ की जनसंख्या 694316 अंकित की गयी। जनसंख्या वृद्धि दर 1951–1961 के दशक में सर्वाधिक 84.84 प्रतिशत रही। ऋणात्मक वृद्धि दर 1911–1921 के दशक में रही। 1960–1961 में वृद्धि दर 76.98 प्रतिशत थी, जो 1981–91 में 50 प्रतिशत रह गयी और 1991–2000 के दशक में 29.21 प्रतिशत रही जो जनसंख्या वृद्धि में लगभग 21 प्रतिशत कमी रही जो परिवार कल्याण कार्यक्रमों की सफलता का द्योतक है। 2001 से 2011 में जनसंख्या वृद्धि दर 44.27 प्रतिशत रही जो पुनः जनसंख्या वृद्धि दर को प्रदर्शित करती है । इस प्रकार पिछले दशकों में 1961 के दशक तक जनसंख्या वृद्धि हुई तथा इसके बाद 2001 तक वृद्धि दर में लगातार कमी हुई तथा 2011 में पुनः वृद्धि दर बढ़ने लगी। जो तीव्र विकास का अपने आप में उदाहरण है।

तालिका संख्या 4.2.1

कोटा नगर की जनसंख्या वृद्धि की प्रवृति (1901–2011)

वर्ष	जनसंख्या	अन्तर	वृद्धि दर (प्रतिशत में)
1901	33657	-	
1911	32753	-904	-2.69
1921	31707	-1046	-3.19
1931	32876	+6169	+19.46
1941	47389	+9463	+24.98
1951	65107	+17768	+37.53
1961	120345	+55238	+84.84
1971	212991	+92646	+76.98
1981	358241	+145250	+68.20
1991	537371	+179130	+50.00
2001	694316	+156945	+29.21
2011	1001694	+307378	+44.27

स्त्रोतः– सांख्यिकी रूपरेखा 2011, आर्थिक सांख्यिकी निदेशालय राजस्थान, जयपुर

4.3 भूमि उपयोग :–

कोटा नगर 1971 में 2,12,991 की आबादी का नगर था। वर्ष 1971 में एवं 1991 में नगर की नगर परिशद सीमा क्रमशः 34,880 एकड़ व 50,589 एकड़ थी। वर्तमान में नगर निगम सीमा क्षेत्रफल लगभग 1,30,260 एकड़ (527.03 वर्ग कि.मी.) हैं नगर का वर्तमान नगरीयकृत क्षेत्र 32,880 एकड़ है, जिसमें से केवल 21,221 एकड़ ही विकसित क्षेत्र के अन्तर्गत् है, शेश भूमि सरकारी आरक्षित, कृषि अन्य रिक्त एवं अर्द्व विकसित, जलाशय व राख निस्तारण के अन्तर्गत् आती है। नगर के अन्दर सघन आबादी के विकास के कारण आवासीय क्षेत्र विकसित क्षेत्र का 43.84% है। नगर औद्योगिक नगर होने के फलस्वरूप औद्योगिक उपयोग के अन्तर्गत 19.09% क्षेत्र आता है। आमोद–प्रमोद के अन्तर्गत केवल 2.40% क्षेत्र सम्मिलित है, जबकि सार्वजनिक एवं अर्द्वसार्वजनिक उपयोग के अन्तर्गत 13.24% क्षेत्र है। वाणिज्यिक भू–उपयोग 5.51% तथा सरकारी एवं अर्द्वसरकारी उपयोग के अन्तर्गत केवल 1.15% क्षेत्र ही है।

तालिका संख्या – 4.3.1

भू–उपयोग–कोटा–2012

क्रं. सं.	भू–उपयोग	क्षेत्रफल (एकड़ में)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	नगरीकृत क्षेत्र का प्रतिशत
1	आवासीय	9304	43.84	28.30
2	वाणिज्यिक	1170	5.51	3.56
3	औद्योगिक	4050	19.09	12.32
4	सरकारी एवं अर्द्वसरकारी	243	1.15	0.74
5	आमोद प्रमोद	510	2.40	1.55
6	सार्वजनिक व अर्द्वसार्वजनिक	2810	13.24	8.55
7	परिसंचरतण	3134	14.77	9.53
	विकसित क्षेत्र	21221	100.00	64.54
8	जलाशय	1391		4.23
9	कृषि	365		1.11
10	अन्य रिक्त एवं अर्द्वविकसित भूमियां	3283		9.98
11	सरकारी आरक्षित	5759		17.52
12	राख निस्तारण क्षेत्र	861		2.62
	नगरीकृत क्षेत्र	32880		100.00

स्त्रोतः– नगर नियोजन विभाग एवं सलाहकार सर्वेक्षण एवं आंकलन

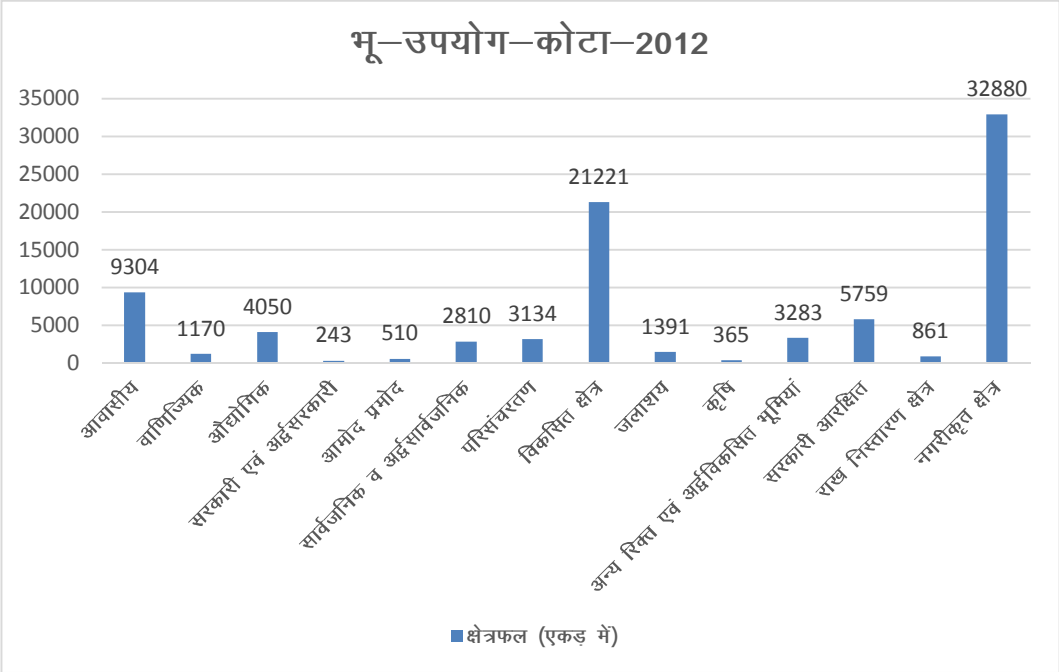

आलेख संख्या–7 : भू–उपयोग–कोटा–2012

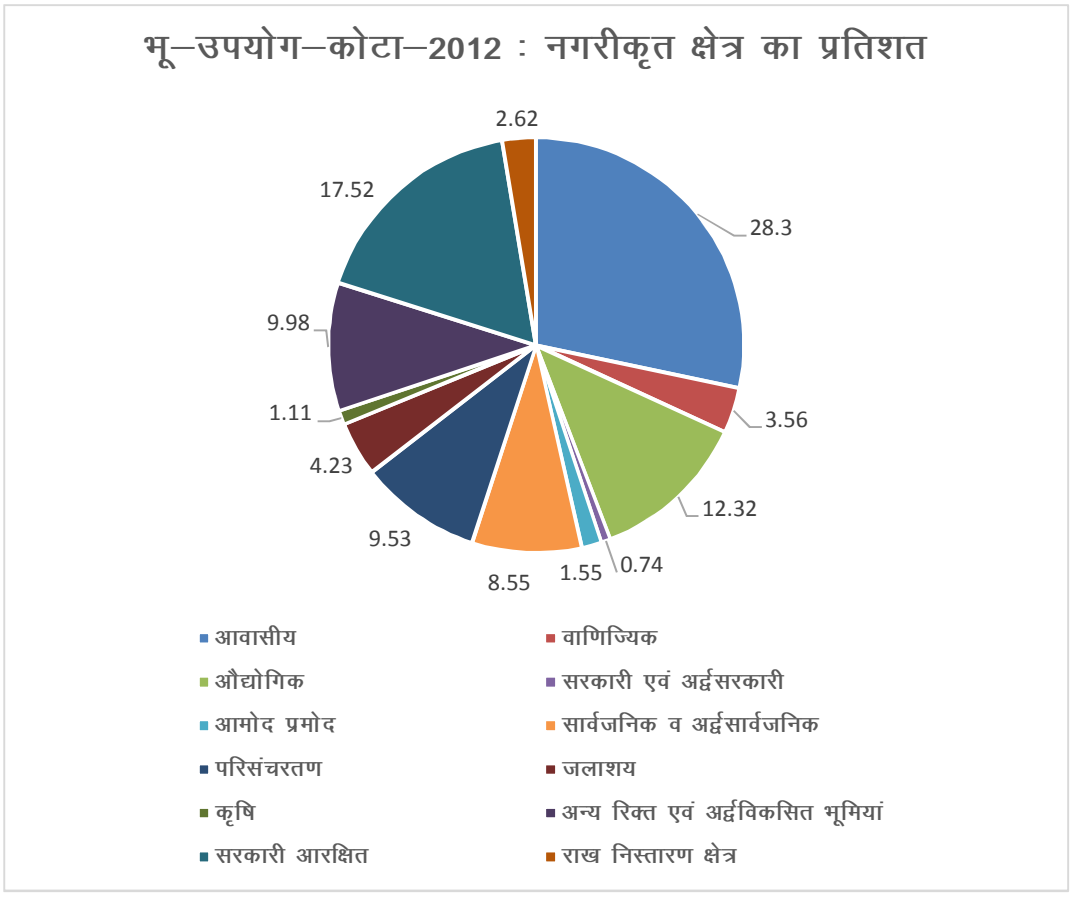

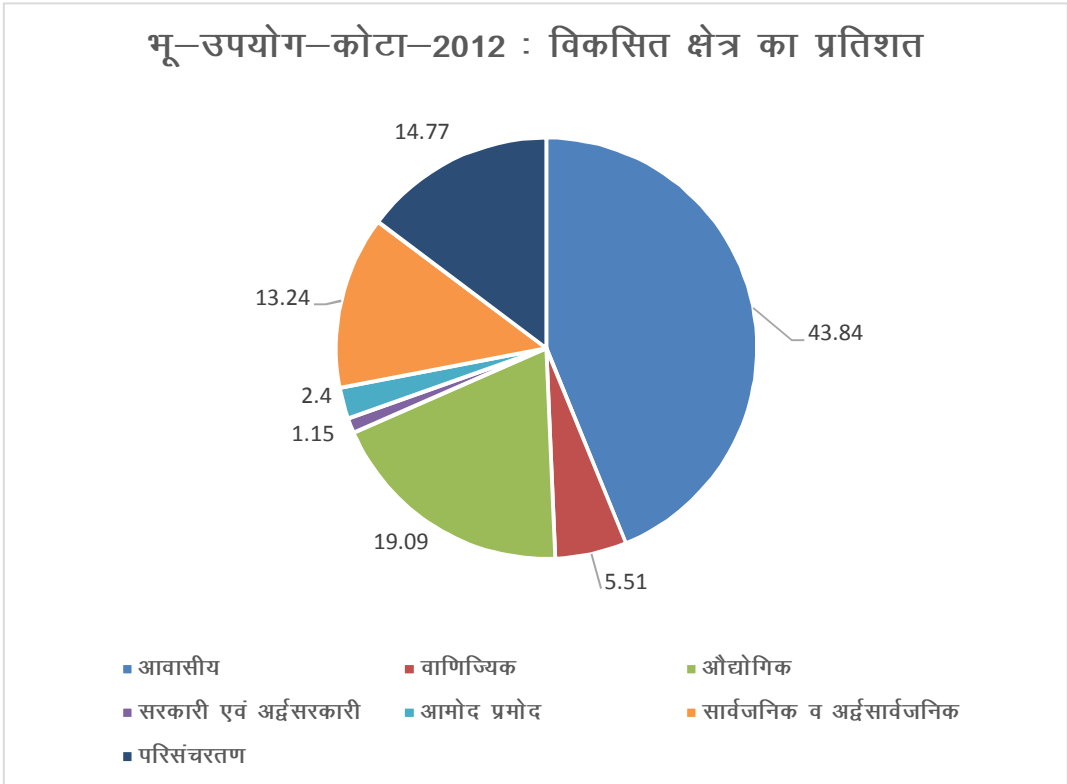

आलेख संख्या–7 : भू–उपयोग–कोटा–2012

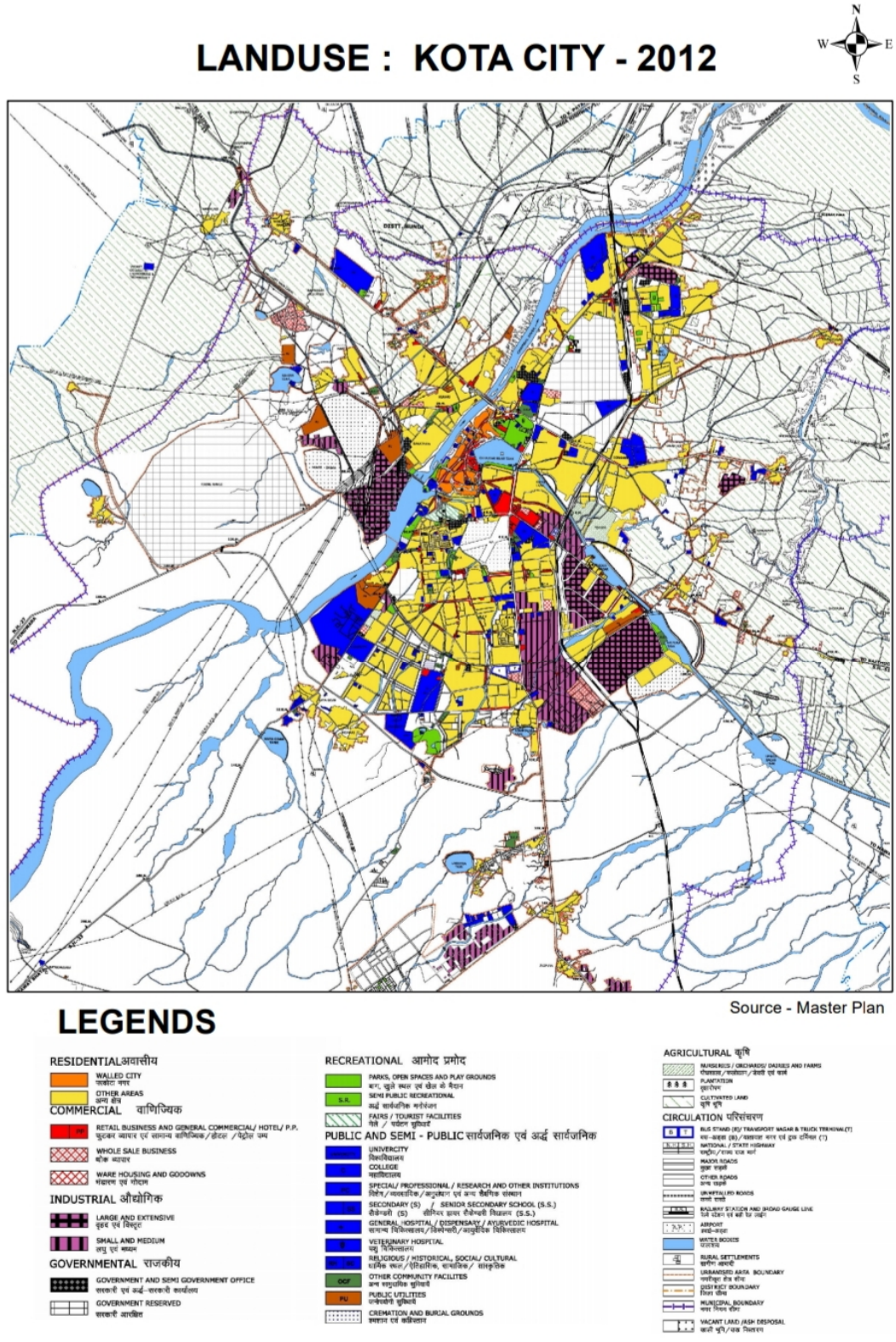

मानचित्र संख्या–7 : कोटा नगर – भूमि उपयोग 2012

(1) आवासीय :–

(अ) आवासन :–

वर्ष 2012 के सर्वेक्षण के अनुसार आवासीय उपयोग के अन्तर्गत कुल क्षेत्र 9,304 एकड़ है, जो विकसित क्षेत्र का 43.84% है। वर्तमान में औसत आवासीय घनत्व लगभग 107 व्यक्ति प्रति एकड़ है। कोटा नगर निगम सीमा 60 वार्डों में विभक्त है, जिसमें से परकोटे के अन्तर्गत 10 वार्ड आते हैं,जिनका क्षेत्रफल लगभग 570 एकड़ एवं औसत घनत्व लगभग 250 व्यक्ति प्रति एकड़ है। अधिकतम घनत्व वार्ड संख्या 30 का ,924 व्यक्ति प्रति एकड़ है। परकोटे के बाहर के क्षेत्र में बल्लभबाड़ी,बल्लभनगर,दादाबाड़ी, विज्ञान नगर, तलवण्डी, महावीर नगर, केशवपुरा एवं अन्य नई विकसित आवासीय योजनाओं में औसत आवासीय घनत्व 51–150 व्यक्ति प्रति एकड़ है। नगर के दक्षिण में वर्ष 1991 के पश्चात् नगर विकास न्यास एवं राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा विकसित की गई योजनायें, जैंसे रंगबाड़ी, श्रीनाथपुरम्, आर. के. पुरम, विवेकानंद नगर, गणेश नगर, सुभाश नगर, इत्यादि आवासीय योजनाओं का लगभग 25% से अधिक क्षेत्र खाली है, जिनका क्षेत्रफल लगभग 1000 एकड़ है। इसके पश्चात् कृषि भूमियों पर हो रहे अधिकृत/अनाधिकृत विकास की दिशा में नगर विकास न्यास द्वारा विकासरत अन्य योजनाओं मोहन लाल सुखाड़िया, लखावा आवासीय योजना, रानपुर आवासीय योजना, इत्यादि आवासीय योजनाओं का क्षेत्रफल लगभग 750 एकड़ है। इसके अतिरिक्त राज्य एवं केन्द्र सरकार की योजनाओं के तहत् अफोर्डेबल हाऊसिंग योजना प्रेम नगर, कंसुआ, भदाना, बालिता इत्यादि आवासीय योजनाऐं निर्माणरत है। नगर के पश्चिम में चम्बल नदी के पार स्थित वार्डों , क्रमशः 1,2,व 27 में औसत घनत्व 5–30 व्यक्ति प्रति एकड़ है। नगर के कम घनत्व के क्षेत्रों में वार्डं संख्या 7,11,22,26,43 एवं 56 में भी औसत घनत्व 5–30 व्यक्ति प्रति एकड़ है।

(ब) कच्ची बस्तियां :–

कोटा नगर में 84 कच्ची बस्तियां है, जिनमें लगभग 3,06,300 व्यक्ति निवास कर रहे हैं। अधिकांश कच्ची बस्तियाँ औद्योगिक क्षेत्र के समीप नदी एवं नालों के किनारे, सरकारी भूमि पर विकसित हुई ह। नगर विकास न्यास एवं नगर निगम द्वारा नियमति कच्ची बस्तियों में मूलभूत सुविधाऐं उपलब्ध करवाने हेतु समय–समय पर विकास कार्य करवाये गए है। इस दौरान वर्ष 2005 के पश्चात केन्द्र सरकार के अभियान जे.एन.एन.यू.आर.एम. के तहत योजना समन्वित आवास एवं कच्ची बस्ती विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत नगर निगम कोटा की 34 बस्तियों एवं नगर सुधार की 4 बस्तियों की मूलभूत सुविधाओं का विकास, आवास

निर्माण एवं पुनर्स्थापन के कार्य हुए है जिससे इन कच्ची बस्तियों में निवास कर रहे लोगों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है। अन्य अनियमित कच्ची बस्तियों में मूलभूत सुविधाओं का अभाव है, कई कच्ची बस्तियों नदी एवं नालों के बहाव क्षेत्र में स्थित है।

नगर में अनियमित एवं अनियोजित ढंग से बसे हुए क्षेत्रों के लिये नवीनीकरण कार्यक्रम बनाये जाना प्रस्तावित है। ऐतिहासिक दृश्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्रों के लिये भी संरक्षण कार्य किये जाने का प्रस्ताव है। नियमित कच्ची बस्ती क्षेत्रों में पर्यावरण सुधार कार्यक्रम की आवश्यकता होती है, ताकि इनमें आधारभूत सुविधाऐं जैसे कि पीने का पानी, सार्वजनिक शैचालय, बरसाती नालियाँ, सड़कों पर रोशनी इत्यादि का उचित प्रबन्ध किया जा चुके। पुनर्वास उन क्षेत्रों का किया जायेगा, जो आवास योग्य नही है। पुनर्विकास कार्य उन क्षेत्रों के लिये किया जायेगा जहां कच्ची बस्तियां नियमित हो चुकी हैं। कच्ची बस्ती क्षेत्रों के सुधार और उनके पुनर्विकास पर विशेश ध्यान दिया जाना प्रस्तावित है। कच्ची बस्ती क्षेत्रों के सुधार एवं उनके पुनर्विकास के लिए राज्य सरकार के कार्यक्रमों जैसे – एकीकृत आवास एवं कच्ची बस्ती विकास योजना, राजीव आवास योजना, महात्मा गांधी राश्ट्रीय रोजगार गारन्टी योजना, हाऊसिंग फॉर ऑल – 2022, प्रधानमन्त्री आवास योजना, मुख्यमन्त्री जनआवास योजना–2015 आदि के तहत् योजनाओं के क्रियान्वयन पर विशेश ध्यान दिया जाना प्रस्तावित है। विस्थापन और पुनर्वास की समस्याओं पर एकीकृत दृश्टिकोण से विचार किया जाकर इस कार्य हेतु विस्तुत योजनाऐं विकसित किया जाना प्रस्तावित है।

(2) वाणिज्यिक :–

नगर के कुल विकसित क्षेत्र का लगभग 5.51% अर्थात 1170 एकड़ भूमि पर वाणिज्यिक गतिविधियाँ संचालित है। मुख्य कार्य कलाप जैसे थोक एवं फुटकर व्यापार दोनों ही नगर परकोटे के अंदर तथा नगर परकोटे के साथ–साथ विकसित हुए हैं। नगर परकोटे के अंदर का मुख्य वाणिज्यिक क्षेत्र लाड़पुरा से टिपटा तक जिसमें लाड़पुरा बाजार, रामपुरा बाजार, बर्तन बाजार, बजाज खाना, घण्टाघर (किराना, सर्राफा) अग्रसेन बाजार (किराना, शक्कर–तेल का थोक व्यापार एवं जनरल मर्चेण्ट), शास्त्री मार्केट (रेडीमेड गारमेंट), इन्द्रा मार्केट, सब्जी मंडी क्षेत्र नगर कोट के मुख्य बाजार है। नगर परकोटे के अंदर मुख्य बाजार, जैसे कपड़े का थोक मार्केट, जनरल मार्केट एवं सर्राफा मार्केट इत्यादि वाणिज्यिक गतिविधियों को परकोटे के बाहर छोटे तालाब क्षेत्र में नगर विकास न्यास, कोटा द्वारा नयावाणिज्यिक केन्द्र विकसित कर विस्थापित किया गया है। वर्तमान टिम्बर मार्केट भी नगर के भीड–भाड वाले क्षेत्र में पुराने नगर के समीप स्थित है। नगर परकोटे के बाहर गये विकसित क्षेत्रों में मुख्यतः गुमानपुरा, शॉपिंग सेन्टर, मोटर मार्केट, नयी धानमंडी,

विश्वकर्मा नगर, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर में नगर का प्रमुख फर्नीचर मार्केट एवं बिल्डिंग मेटेरियल मार्केट स्थित है।

विगत वर्शो में हवाई अड्डा चौराहे के समीप स्थित नई धानमण्डी को इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र में विकसित धानमण्ड़ी परिसर में स्थानांतरति कर दिया गया है। इस प्रकार रिक्त हुए नई धानमण्डी परिसर में नगर के अन्दरूनी भाग से थोक फल एवं सब्जीमण्डी को विस्थापित किया गया है। डी.सी.एम. सड़क पर कार्यरत ट्रांसपोर्ट नगर को, नगर विकास न्यास द्वारा नगर के बाहरी दक्षिणी भाग में, झालावाड़ सड़क पर गोबरिया बावड़ी चौराहे के समीप नया परिवहन नगर विकसित कर स्थानांतरित किया गया है। हालांकि डी.सी.एम. सड़क पर अभी–भी आंशिक रूप से ट्रांसपोर्ट गतिविधियां चल रही है। नगर के मध्य अवांछित स्थलों पर चल रहे पत्थर व्यवसाय को व्यवस्थित ढंग से बसाने हेतु नगर विकास न्यास, कोटा द्वारा झालावाड़ सड़क एवं परिवहन नगर के समीप ही स्टोन मण्डी विकसित कर स्थानान्तरित किया गया है। एरोड्रम चौराहे पर वर्शो से कार्यरत कार बाजार संबंधी गतिविधियों को कंसुआ सड़क पर सूरसागर तालाब के निकट स्थानान्तरित किया गया है।

अनाज भण्डारण हेतु गोदाम रावतभाटा सड़क, माला रोड एवं डकनिया रेलवे स्टेशन एवं रानपुर औद्योगिक क्षेत्र, कैथून सड़क बारां सड़क के समीप स्थित है। तेल कम्पनियों के डिपो रेलवे लाईन के पूर्व में रेलवे कॉलोनी के समीप स्थित हैं। नगर के अधिकांश होटल, नगर के मध्य से गुजर रहे राश्ट्रीय राजमार्ग के आसपास स्थित है। इसके अतिरिक्त नये विकसित क्षेत्रों में रंगबाड़ी सड़क, दादाबाड़ी, बसन्त विहार सड़क, छावनी, तलवण्डी चौराहे के आस पास, विज्ञान नगर इत्यादि स्थानों पर फुटकर मिश्रित व्यवसाय चल रहा है। कोटा में विशिश्ट श्रेणी की कृषि उपजमण्डी स्थित है, जहाँ पर भारी मात्रा में अनाज, दलहन एवं तिलहन एवं मसाले का प्रमुख वाणिज्यिक केन्द्र है।

तालिका संख्या – 4.3.2

कृषि उपजमण्डी में कृषि उत्पादों की आवक (हजार मेट्रिक टन में)

वर्ष	2010	2011	2012
अनाज	315.68	321.92	483.84
दलहन	6.77	15.38	23.02
तिलहन	207.06	248.07	339.66
मसाला	86.85	104.91	96.12
अन्य	25.22	30.69	38.77
कुल उत्पादन	641.58	720.97	981.43

स्त्रोतः– कृषि उपजमण्डी समिति, कोटा

भौगोलिक विशेशताओं के कारण कोटा आसपास के क्षेत्रों के लिये विभिन्न वाणिज्यिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। उत्पाद केन्द्र के रूप में विकसित होने के कारण यहां पर आर्थिक नियोजन की पर्याप्त संभावनाऐं है, चम्बल सिंचित क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहां कृषि आधारित वाणिज्यिक गतिविधियां भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

ऐसा अनुमान लगाया गया है कि वर्ष 2031 तक लगभग 1,38,600 व्यक्ति अर्थात कुल काम करने वालों का लगभग 22 प्रतिशत विभिन्न वाणिज्यिक गतिविधियों में कार्यशील होंगे। उक्त योजना बनाते समय भूमि की उपलब्धता के आधार पर कुल वाणिज्यिक गतिविधियों के उचित वितरण का ध्यान रखा गया है ताकि ये अधिकांश व्यक्तियों के लिये सुविधाजनक रहे। अतः विभिन्न वाणिज्यिक केन्द्र पदानुक्रम में विकसित किये जायेंगे ताकि विभिन्न स्तरों की सुविधाऐं सुलभ हो सकें।

तालिका संख्या – 4.3.3

प्रस्तावित वाणिज्यिक क्षेत्रों का विवरण – कोटा – 2031

(2023 के नगरीकरण योग्य क्षेत्र के बाहर अतिरिक्त प्रस्तावित क्षेत्र)

क्र.सं.	विवरण	क्षेत्रफल (एकड़ में)
1	शहरी केन्द्र	..
2	उप नगर केन्द्र (1)	37
3	जिला केन्द्र (4)	158
4	अन्य वाणिज्यिक क्षेत्र	250
5	विशिष्ट एवं थोक व्यापार	359
6	भण्डारण एवं गोदाम	133
	योग	**937**

मास्टर प्लान में धानमण्ड़ी, टिम्बर मार्केट, पत्थरमण्ड़ी, फल एवं सब्जीमण्ड़ी इत्यादि के लिये उपयुक्त स्थल प्रस्तावित किये गए है। इस प्रकार वाणिज्यिक उपयोग के अन्तर्गत कुल अतिरिक्त प्रस्तावित क्षेत्र लगभग 937 एकड़ होगा, जो अतिरिक्त प्रस्तावित विकसित क्षेत्र का लगभग 2.20% होगा।

उन सभी प्रमुख, उप प्रमुख एवं अन्य सड़कों, जिनका मास्टर प्लान में मार्गाधिकार 60 फीट से कम नहीं हो, उनमें लगती हुई भूमियों पर वाणिज्यिक, खुदरा व्यापार तथा सार्वजनिक एवं अर्द्वसार्वजनिक विकास अनुज्ञेय होंगे। इस हेतु भू–उपयोग परिवर्तन सक्षम प्राधिकारी

द्वारा ही किया जा सकेगा। यह विकास एकल सम्पत्ति अथवा 100 फीट की गहराई, जो भी कम हो, में ही किया जा सकेगा। जहां जिस सड़क की वास्तविक चौड़ाई अथवा मार्गाधिकार, मास्टर प्लान में दर्शाये गए प्रस्तावित मार्गाधिकार से वर्तमान में कम है, वहां एकल सम्पत्ति की गहराई उतनी ही दूरी के लिये बढ़ जायेगी जितनी कि उस सड़क की प्रस्तावित चौडाई सडक के उस तरफ एवं उस भाग में मध्यरेखा से कम पड रही हो। एकल सम्पत्ति की यह बढी हुई गहराई जो कि सउक के मार्गाधिकार कम होने के कारण मिली है, यह अनियवार्य रूप से सेटबैक के साथ खुली छोड़ी जायेगी, जब तक की स्थानीय निकास सडक के विकास अथवा अन्य सेवाओं के विस्तार हेतु इस भूमि का अधिग्रहण नही कर लेती है।

मास्टर प्लान में प्रस्तावित सड़क का मार्गाधिकार छोड़कर ही वाणिज्यिक अनुमति दी जायेगी। वाणिज्यिक क्षेत्रों में मिश्रित भू–उपयोग अनुज्ञेय होंगे जिसके तहत वाणिज्यिक के साथ आवासीय, वाणिज्यिक से साथ होटल, मल्टीप्लेक्स, कार्यालय, एन्टरटेनमेन्ट कॉम्लेक्स आदि उपयोग देय होंगे।

(1) शहरी क्षेत्र :–

वर्ष 2031 तक की आवश्यकताओं हेतु मास्टर प्लान–2031 के अन्तर्गत मास्टर प्लान–2023 के नगरीयकरण योग्य क्षेत्र के पश्चात कोई अतिरिक्त क्षेत्र प्रस्तावित नही किया गया है।

(2) उप नगर क्षेत्र :–

वर्ष 2031 तक की आवश्यकताओं हेतु मास्टर प्लान–2031 के अन्तर्गत मास्टर प्लान–2023 के नगरीयकरण योग्य क्षेत्र के बाहर सड़क उत्तरी योजना क्षेत्र में अतिरिक्त एक उप नगर केन्द्र प्रस्तावित किया गया है जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग 37 एकड़ है।

(3) जिला केन्द्र :–

वर्ष 2031 तक की आवश्यकताओं हेतु मास्टर प्लान–2031 के अन्तर्गत मास्टर प्लान–2023 के नगरीकरण योग्य क्षेत्र के बाहर शहरी केन्द्र एवं उप नगर केन्द्र में यातायात को कम करने की दृश्टि से एवं व्यावसायिक गतिविधियों के विकेन्द्रीकरण हेतु विभिन्न योजना क्षेत्रों में 4 जिला केन्द्र प्रस्तावित किये गए है, जिनका कुल क्षेत्रफल लगभग 105 एकड़ है। जिला केन्द्र में खुदरा दुकाने , सिनेमा हॉल, होटल,रेस्टोरेंट,सामुदायिक भवन, मनोरंजन केन्द्र,स्वास्थ्य केन्द्र,अग्निशमन केन्द्र,ड़ाक एवं तारघर कार्यालय, पुलिस स्टेशन,खुले स्थल इत्यादि का प्रावधान रखा जायेगा। अतः जिला केन्द्र प्रत्येक योजना क्षेत्र के वाणिज्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृति केन्द्र के रूप में कार्य करेगा।

(3) औद्योगिक :–

वर्तमान में 4050 एकड़ भूमि औद्योगिक प्रयोजनार्थ काम में आ रहीं है, जो कि विकसित क्षेत्र का लगभग 19.09% है। उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या वर्ष 1971, 1981 एवं 2001 में क्रमशः 17,950 (28.2%), 29,634 (28.9%) एवं 36,073 (23.6%) थी। वर्ष 1981 से 2012 के बीच उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों के प्रतिशत में गिरावट का प्रमुख कारण यहां की कुछ प्रमुख इकाईयों का बन्द होना है तथा कोंचिग गतिविधियों की वृद्वि से भी आमजन का सेवा क्षेत्र में रूझान बढ़ा है।

अतः वर्तमान में औद्योगिक परिवेश को देखते हुए यह स्पश्ट है कि बड़ी रेल लाईन, चम्बल नदी एवं बिजली की उपलब्धता के कारण 60 के दशक में यहाँ बड़े उद्योगों की स्थापना हुई, जिनमें श्रीराम उद्योग (वर्तमान में बंद), इन्स्टूमेंटेशन लि. इत्यादि प्रमुख है। प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र डी.सी.एम. रोड़ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट का क्षेत्रफल लगभग 1100 एकड़, झालावाड़ रोड इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र, जिसका क्षेत्रफल लगभगा 900 एकड़ है। विशेश औद्योगिक क्षेत्र, आढ्.एल. का क्षेत्रफल लगभग 60 एकड़ है। कन्सुआ सड़क के उत्तर में स्थित औद्योगिक क्षेत्र जिसमें लघु एवं मध्यम उद्योग स्थापित हैं का क्षेत्रफल लगभग 190 एकड़ है। रीको द्वारा नगर के दक्षिण में रानपुर स्थित औद्योगिक क्षेत्र का क्षेत्रफल लगभग 300 एकड़ है।

मास्टर प्लान–2023 में बारां सड़क पर प्रस्तावित औद्योगिक क्षेत्र विकसित नही हो सका। सेमकोर उद्योग भी वर्ष 2011 से बन्द है। वर्तमान में नगर में 27 बड़े एवं मध्यम उद्योग स्थापित है, जिनमें से 14 उद्योग उत्पादन दे रहे हैं। अन्य 13 उद्योग किन्ही कारणों`स उत्पादन नही दे पा रहे है। इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र में मुख्यतः कोटा स्टोन कटिंग व पॉलिशिंग तथा रसायन आधारित उद्योग इकाईयाँ स्थापित हैं। इन प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों के अलावा रावतभाटा सड़क पर तिलम संघ, सोयाबीन प्लांट एवं सरस डेयरी स्थित है।

विगत वर्शों में कोटा, इसके एवं आस–पास के क्षेत्रों में स्थित 8 सोयाबीन प्लांट कार्यरत होने से सोयाबीन तेल एवं डी0ओ0सी0 के उत्पादन के मुख्य केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। कोटा में मुख्यतः कोटा स्टोन, सैण्ड स्टोन, तिलहन, दलहन, अनाज, खाद्यान, खाद, मैटेलिक एवं नान मैटेलिक ऑक्साइड, वेल्डिंग रॉड एवं रसायन उद्योग स्थित है। इन उद्योगों के मुख्य उत्पादन तेल, पाईप, दूध, हींग, खाद, रसायन, ग्लास, सीमेन्ट, सिल्क साड़ी, धागा, अन्य कपड़े, रेडिमेड, फर्नीचर, कागज, स्टेशनरी, चमड़े की वस्तुऐं, रबड़, प्लास्टिक, खनिज, टाईल्स, विद्युत मशीनरी, ऑटोमोबाइल स्पेयर पार्ट्स, ट्रांसपोर्ट उद्योग, मरम्मत मशीनरी, निर्माण संबंधी औजार एवम् मशीनें, सर्विस उद्योग इत्यादि है।

तालिका संख्या – 4.3.4

विद्यमान औद्योगिक इकाईयां एवं कर्मचारियों की संख्या – 2012

क्र. सं.	उद्योग के प्रकार	इकाईयों की संख्या	कर्मचारियों की संख्या
1	कृषि आधारित	767	3120
2	तम्बाकू एवं तम्बाकू उत्पाद आधारित	14	100
3	कपास एवं सूती कपड़ा आधारित	46	147
4	ऊनी, सिल्क एवं कृत्रिम धागा आधारित	193	116
5	जूट एवं जूट आधारित	14	90
6	रेडमेड एवं कढ़ाई/कशीदाकारी आधारित	710	2356
7	लकड़ी व लकड़ी के फर्नीचर आधारित	992	2946
8	कागज एवं कागज उत्पाद आधारित	182	791
9	चमड़ा आधारित	867	2117
10	रसायन एवं रसायन आधारित	224	1242
11	रबड़, प्लास्टिक एवं पैट्रो आधारित	188	999
12	खनिज आधारित	1502	6732
13	धातु आधारित	1195	1481
14	अभियान्त्रिकी आधारित	550	1481
15	बिजली मशीनरी एवं यातायात से संबंधित उपकरण/औजार आधारित	169	693
16	मरम्मत एवं सेवा आधारित	1240	3482
17	वृहद् एवं अन्य विविध औद्योगिक इकाईयां	5340	25050
	कुल संख्या	**14193**	**52946**

स्त्रोत : जिला उद्योग केन्द्र एवं रीको, कोटा

औद्योगिक :–

राज्य में कोटा जिला औद्योगिक दृश्टि से महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जिसका मुख्य कारण राज्य एवं देश के प्रमुख औद्योगिक एवं व्यापारिक केन्द्रों से कोटा से कोटा का रेल एवं सड़क मार्ग से जुड़ा होना तथा कोटा के आस पास खनिज संसाधनों का उपलब्ध होना है। यह अनुमानित किया गया है कि वर्ष 2031 तक लगभग 1,35,450 व्यक्ति उद्योगों में कार्यरत रहेंगे, जो कि कुल कार्यशील व्यक्तियों का 21.50 प्रतिशत होगा। यह अपेक्षित है कि नये औद्योगिक क्षेत्रों/ईकाईयों की स्थापना करते समय प्रदूशण नियंत्रण मण्डल के मानदण्ड़ों के अनुसार हरित क्षेत्र विकसित किये जावें। नये औद्योगिक क्षेत्र एवं औद्योगिक क्षेत्र के मध्य 100 फुट चौड़ी हरितिमा पट्टी विकसित की जावे।

तालिका संख्या – 4.3.5

औद्योगिक गतिविधियों का विवरण – कोटा–2031

क्र. सं.	उद्योग का प्रकार	काम करने वाले व्यक्तियों की संख्या	काम करने वालों का प्रतिशत	प्रस्तावित नियोजित घनत्व प्रति (एकड़ में)	नियोजित क्षेत्रफल (एकड़ में)
1	घरेलू उद्योग	13,545	10	–	–
2	वृहद् तथा लघु एवं मध्यम उद्योग	1,21,905	90	25–30	4,880
	योग	1,35,450	100	–	4,880

स्त्रोत : नगर नियोजन विभाग एवं सलाहकार अनुमान

औद्योगिक क्षेत्र :–

कोटा नगर में निम्नानुसार औद्योगिक क्षेत्र प्रस्तावित किये गए हैं:–

(i) कन्सुआ औद्योगिक क्षेत्र :–

मास्टर प्लान–2031 के अन्तर्गत पूर्व मास्टर प्लान–2023 के नगरीकरण योग्य क्षेत्र के बाहर औद्योगिक उपयोग हेतु लगभग 219 एकड़ अतिरिक्त स्थल प्रस्तावित है।

(ii) इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र :–

यहऔद्योगिक क्षेत्र पूर्व मास्टर प्लान–2023 के नगरीयकरण योगय क्षेत्र के अन्तर्गत झालावाड़ सड़क एवं रेलवे लाईन के मध्य स्थित है।

(iii) रानपुर औद्योगिक क्षेत्र :–

मास्टर प्लान–2031 के अन्तर्गत पूर्व मास्टर प्लान–2023 के नगरीकरण योग्य क्षेत्र के बाहरझालावाड़ सड़क के पश्चिम में रानपुर योजना क्षेत्र में स्थित ग्राम रानपुर में रीको द्वारा कुबेर औद्योगिक क्षेत्र, एग्रो फूड पार्क I एवं एग्रो फूड पार्क IIविकसित किया जा चुका है एवं कुबेर औद्योगिक क्षेत्र विस्तार प्रस्तावित है। रानपुर योजना क्षेत्र में स्थित सरकारी भूमि पर उद्योगों हेतु 765 एकड़ अतिरिक्त भूमि प्रस्तावित की गई है। यह औद्योगिक क्षेत्र कोटा नगर औद्योगिक माँग की भी पूर्ति करेगा।

(iv) अन्य औद्योगिक क्षेत्र :–

मास्टर प्लान–2031 के अन्तर्गत पूर्व मास्टर प्लान–2023 के नगरीकरण योग्य क्षेत्र के बाहर शम्भूपरा ग्रोथ सेन्टर में लगभग 76 एकड़ अतिरिक्त भूमि पर औद्योगिक क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है। जिला उद्योग केन्द्र द्वारा नगर दक्षिण में रानपुर के समीप भीमपुरा औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया गया था जो कि आंशिक रूप से विकसित है, को भी मास्टर प्लान–2031 के क्षेत्र अन्तर्गत प्रस्तावित किया गया है।

तालिका संख्या – 4.3.6

प्रस्तावित औद्योगिक क्षेत्र–कोटा–2031

(2023 के नगरीकरण योग्य क्षेत्र के बाहर अतिरिक्त प्रस्तावित क्षेत्र)

क्र.सं.	औद्योगिक क्षेत्र का नाम	क्षेत्रफल (एकड़ में)
1	कन्सुआ औद्योगिक क्षेत्र	219
2	रानपुर औद्योगिक क्षेत्र	765
3	अन्य औद्योगिक क्षेत्र • शम्भूपुरा ग्रोथ सेन्टर • भीमपुरा औद्योगिक क्षेत्र	 076 240
	योग	1300

(4) राजकीय :–

(अ)सरकारी एवं अर्द्धसरकारी कार्यलय :–

वर्ष 1971 में कोटा नगर में सरकारी कार्यालयों के अन्तर्गत 105 एकड़ (1.8%) क्षेत्र था, जो 2012 में बढ़कर 243 एकड़ हो गया, जो कि कुल विकसित क्षेत्र का 1.15%है। संभागीय आयुक्त एवं सिंचित क्षेत्र विकास आयुक्त कार्यालय नगर विकास न्यास, राजस्थान आवासन मण्डल कार्यालय, पुराना एवं नवनिर्मित नगर निगम कार्यालय, जन स्वाथ्य अभियांत्रिक

विभाग कार्यालय, आयकर आयुक्त कार्यालय, रावतभाटा रोड़ पर दशहरा मैदान के समीप स्थित है। जिला कलक्टर, कार्यलय पुलिस उप महानिरिक्षक कार्यालय, जिला एवं सैशन न्यायालय, सार्वजनिक निर्माण विभाग, सिंचाई विभाग, विद्युत वितरण निगम एंव जिला ग्रामीण पुलिस अधीक्षक कार्यालय, बारां सड़क पर स्थित है। पश्चिमी रेलवे का संभागीय कार्यालय माला रोड़ पर रेलवे स्टेशन के समीप स्थित है। मुख्य डाकघर एंव टेलिफोन विभाग का मुख्य कार्यालय नयापुरा में स्थित है।

विगत वर्शों में पटवार मण्डल का कार्यालय रावतभाटा सड़क पर नयागांव मे एवं क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी का कार्यालय झालावाड़ सड़क पर ग्राम लखावा के समीप स्थापित हुए है।

वर्तमान में कोटा नगर में केन्द्र, राज्य सरकार, अर्द्वसरकारी एवं स्थानीय निकायों में कुल काम करने वालों की संख्या लगभग 43,773 है, जो कुल जनसंख्या का 4.37% है। वर्तमान में कई सरकारी एवं अर्द्वसरकारी कार्यालय निजी आवासीय भवनों एवं किराये के भवनों में चल रही है। सरकारी एवं अर्द्वसरकारी कार्यालयों की वर्ष 2012 की स्थिति को तालिका में दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या – 4.3.7

सरकारी एवं अर्द्व सरकारी कार्यालय – कोटा 2012

क्र.संख्या	कार्यालय के प्रकार	कुल कार्यालयों की संख्या	कर्मचारियों की संख्या
1	केन्द्र सरकार	27	18772
2	राज्य सरकार	280	13326
3	अर्द्व सरकारी (केन्द्र)	85	3387
4	अर्द्व सरकारी (राज्य)	82	5153
5	स्थानीय निकाय	08	3135
	योग	**482**	**43773**

(ब) सरकारी आरक्षित

वर्तमान में स्टेशन सड़क पर सेना परिसर स्थित हैं इसके अलावा बारां सड़क पर शहरी पुलिस लाईन लगभग 20 एकड़ भूमि पर स्थित है। ग्रामीण पुलिस लाईन रेलवे लाईन के पूर्व एवं बारां सड़क के दक्षिण में बोरखेड़ा पुलिया के समीप स्थित है। रावतभाटा सड़क पर अकेलगढ़ एवं डेयरी के समीप आर.ए.सी. क्षेत्र स्थित है। नगर के पश्चिम में ग्राम शम्भूपुरा

एवं डाबी सड़क पर पार्यावरण औद्योगिक क्षेत्र के मध्य सेना की फायरिंग रेन्ज स्थित है। सरकारी आरक्षित भूमि का कुल क्षेत्रफल लगभग 5759 एकड़ है।

राजकीय

(1)सरकारी एवं अर्द्धसरकारी कार्यालय :–

कोटा दक्षिण–पूर्वी राजस्थान का सम्भागीय मुख्यालय होने के कारण यहां पर काफी संख्या में सरकारी कार्यालय हैं, साथ ही यहां रेलवे, चम्बल परियोजना इत्यादि के भी मुख्य कार्यालय हैं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि वर्ष 2031 तक सरकारी एवं अर्द्धसरकारी कार्यालयों में कुल कार्यशील व्यक्तियों का 15% अर्थात लगभग 94,500 व्यक्ति कार्यरत होंगे। सरकारी एवं अर्द्धसरकारी कार्यालयों हेतु 2031 की भावी आवश्यकताओं के लिये शम्भूपुरा ग्रोथ सेन्टर तथा रानुपर योजना क्षेत्र में सरकारी उपयोग हेतु कुल 63 एकड़ अतिरक्ति भूमि मास्टर प्लान में प्रस्तावित है।

(2) सरकारी आरक्षित :–

नगर के पश्चिम में ग्राम शम्भूपरा के निकट डाबी सड़क पर सेना के लिए फायरिंग रेन्ज एवं रानुपर में सी.आर.पी.एफ. हेतु आरक्षित भूमि सहित कुल 3,150 एकड़ भूमि सरकारी आरक्षित रखा जाना प्रस्तावित है। नगर के पश्चितम में ग्राम शम्भूपुरा एवं डाबी सड़क पर पर्यावरण औधेगिक क्षेत्र के मध्य सेना की फायरिंग रेन्ज स्थित है। सरकारी आरक्षित भूमि का कुल क्षेत्रफल लगभग 5759 एकड़ है।

(5) आमोद–प्रमोद :–

वर्तमान में कोटा नगर में आमोद–प्रमोद के अन्तर्गत कुल 510 एकड़ भूमि विकसित है, जो कि कुल विकसित क्षेत्र का 2.40% है, जबकि 1971 में कुल विकसित क्षेत्र की 6.6% भूमि इसके अन्तर्गत सम्मिलित थी। इसका प्रमुख कारण नगरी स्तर के आमोद–प्रमोद स्थल, खेल के मैदान एवं उद्यानों का पर्याप्त मात्रा में विकसित नहीं होना रहा है। नदी, जलाशयों, नहरों इत्यादि के कारण कोटा में कई प्राकृतिक सुन्दर स्थल हैं।

(अ)उद्यान एवं खुले स्थल :–

कोटा में नगर के मध्य काफी पुराना छत्र विलास उद्यान स्थित है। नगर के विकास के साथ–साथ चम्बल उद्यान, गांधी उद्यान, ट्रेफिक गार्डन, भीतरिया कुण्ड उद्यान इत्यादि विकसित हुए है। विभिन्न योजनाओं में छोटे स्तर के कई उद्यान, पार्क इत्यादि नगर विकास न्यास एवं आवासन मण्डल एवं नगर निगम द्वारा विकसित किये गए हैं।

गत वर्शो में नगर विकास न्यास ने नगर के मध्य स्थित ऐतिहासिक छत्र विलास उद्यान, रंगबाड़ी बालाजी मन्दिर के आस–पास का जीर्ण–क्षीर्ण उद्यान, नेहरू उद्यान, गोपाल निवास

बाग, नागा जी का बाग एवं कई स्थानीय पार्को में रखरखाव एवं योजना बद्व विकास किया गया है। इसके अतिरिक्त चम्बल उद्यान, गांधी उद्यान यातायात उद्यान, भीतरिया कुण्ड इत्यादि का समुचित रख–रखाव एवं योजनाबद्व विकास प्रस्तावित है।

नगर के दक्षिण में खड़े गणेशजी मन्दिर के पास नगर स्तर के गणेश उद्यान परिसर का विकास कार्य नगर विकास न्यास द्वारा कराया जा रहा है, जिसका कुल क्षेत्रफल लगभग 100 एकड़ है।

(ब) स्टेडियम एवं खेल मैदान :–

कोटा नगर के मध्य छत्र–विलास उद्यान के समीप महाराव भीमसिंह स्टेडियम स्थित है, जहां पर गणतन्त्र दिवस एवं स्वतन्त्रता दिवस इत्यादि प्रमुख कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। महाराव भीमसिंह स्टेडियम के समीप ही राश्ट्रीय स्तर का खेल मैदान भी स्थित है। इसके समीप ही नगर विकास न्यास द्वारा तरणताल विकसित किया गया है। नये विकसित क्षेत्रों में रेलवे कॉलोनी, दादाबाड़ी, तलवण्डी, कुन्हाड़ी एवं नान्ता में स्थानीय स्तर के स्टेडियम एवं खेल मैदान स्थित हैं। वर्तमान में श्रीनाथपुरम क्षेत्र मे नगर विकास न्यास द्वारा स्टेडियम का निर्माण कार्य करवाया जा रहा है। विभिन्न महाविद्यालयों एवं विद्यालयों में भी खेल के मैदान उपलब्ध है।

(स) अर्द्ध सार्वजनिक मनोरंजन :–

कोटा में नगर के मध्य छत्र विलास उद्यान में उम्मेद क्लब स्थित है। सिविल लाईन्स एवं रेलवे कोलानी में ऑफिसर्स क्लब तथा मिलिट्री क्षेत्र में क्लब स्थित है। गत वर्शों में कैथून सड़क पर एक निजी क्लब की स्थापना भी हुई है।

(द) मेले एवं पर्यटन सुविधाऐं :–

कोटा में नगर में रावतभाटा सड़क पर ऐतिहासिक दशहरा मेला भरता है। इस मेले के साथ ही पशु मेला भी भरता है। दशहरण मेला, नगर एवं संभाग की जनता के लिये व्यावसायिक तथा पारिवारिक मनोरंजन का प्रमुख केन्द्र है। वर्तमान दौर में छोटे स्तर पर उद्योग मेला, गृह साज सज्जा सामग्री मेला, भवन निर्माण सामग्री एवं प्रोपर्टी व्यवसाय से संबंधित मेले भी हर वर्ष आयोजित होने लगे है।

नगर के मध्य चम्बल नदी पर कोटा बैराज है, जिसके दक्षिण में विस्तृत जल–भराव क्षेत्र है। इसके अलावा चम्बल उद्यान से चम्बल नदी में नौकायान की सुविधा भी उपलब्ध है, जो पर्यटकों को आकर्शित करती है। कोटा नगर में प्रमुखतयाः गढ़ पैलेस, संग्रहालय, छत्र विलास तालाब एवं उद्यान, जग–मंदिर, कोटा–बैराज, कन्सुआ मंदिर, चम्बल उद्यान, भीतरिया कुण्ड, अधर–शिला, क्षार–बाग, अभेड़ा महल एवं तालाब इत्यादि प्रमुख पर्यटन

आकर्शण के स्थल है, इसके अतिरिक्त कोटा संभाग एवं आसपास के क्षेत्र में सवाईमधोपुर में बाघ–अभ्यारण्य, रणथम्भौर किला एवं गणेश मन्दिर बून्दी जिले में बून्दी नगर का सिटी पैलेस एवं भित्ती चित्र, रानी जी की बावड़ी, चौरासी खम्भों की छतरी एवं अन्य पर्यटन स्थल जैसे गेपरनाथ, चट्टानेशवर, रामेश्वरम, मेनाल एवं भीमतल स्थित प्राकृति झरने, केशवरायपाटन में ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व के मंदिर एवं धाट, रावतभाटा में ऐतिहासिक बाड़ोली मंदिर, राणाप्रताप सागर, जवाहर सागर एवं बारां जिले में सीताबाड़ी, भण्ड देवरा मन्दिर, शेरगढ़ अभयारण्य इत्यादि, कोटा जिले में दरा अभयारण्य जिसे मुकन्दरा हिल्स नेशनल पार्क का दर्जा प्राप्त है तथा झालावाड़ जिले में ऐतिहासिक गागरोन किला, झालावाड़ जिले में ऐतिहासिक गागरोन किला, झालरापाटन में सूर्य मन्दिर, कोलवी की गुफायें, इत्यादि प्रमुख पर्यटन आकर्शण के स्थान है। उपरोक्त सभी स्थल कोटा नगर से लगभग 100–150 कि.मी. की परिधि में स्थित है।

(6) सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक :–

सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत सन 1971 में 950 एकड़ (16.5प्रतिशत)भूमि थी जो बढ़कर 2012 में लगभग 2810 एकड़ हो गई है,जो कि कुल विकसित क्षेत्र का 13. 24 प्रतिशत है। अतः आबादी विस्तार के अनुपात में सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक क्षेत्र में वृद्धि तुलनात्मक रूप से कम हुई है। सार्वजनिक एवं अर्द्धसार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत शैक्षणिक,चिकित्सा एवं अन्य सामुदायिक सुविधायें सम्मिलित हैं।

आमोद–प्रमोद

नगर के निवासियों एवं पर्यटकों के मनोरंजन एवं आमोद–प्रमोद हेतु मास्टर प्लान–2031 के अन्तर्गत पूर्व मास्टर प्लान–2023 के नगरीयकरण योग्य क्षेत्र के बाहर आवश्यकतानुसार विभिन्न स्थलों पर 1,840 एकड़ भूमि अतिरक्त प्रस्तावित की गयी है।

(1) उद्यान एवं खुले स्थल

सार्वजनिक उद्यान एवं खुले स्थलों को सामान्य तौर पर नगर के फेफड़ों के रूप में माना जाता है ये किसी सीमा तक नगर को सामाजिक एवं भौतिक स्वरूप प्रदान करते है। प्रत्येक नगरीय क्षेत्र के लिये सार्वजनिक उद्यानों, खुले स्थलों, खेल के मेदानों तथा अन्य मनोरंजन सुविधाओं का व्यवस्थित एवं युक्तिसंगत वितरण होना चाहिए। अतः विभिन्न प्रकार की मनोरंजन सुविधाओं का प्रावधान करने हेतु एक युक्तिसंगत योजना विकसित की गयी है। स्थानीय स्तर के उद्यान एवं खेल स्थलों हेतु विस्तृत आवासीय योजनाऐं एवं सेक्टर प्लान बनाते समय प्रस्तावित जनसंख्या के आधार पर स्थल आरक्षित किये जायेंगे। यह प्रावधान मास्टर प्लान में अंकित नही किया गया है।

नदी, जलाशयों, नहरों इत्यादि के कारण कोटा में कई प्राकृतिक सुन्दर स्थल है। विभिन्न स्तरों की आमोद–प्रमोद सुविधाऐं प्रदान करने के लिये इनका पूर्ण लाभ लिया गया है।

इसके अलावा चम्बल नदी के पश्चिम में बालिता सड़क एवं चम्बल नदी के मध्य नदी के किनारे लगभग 511 एकड़ अतिरिक्त भूमि पर उद्यान एवं खुला स्थान प्रस्तावित किया गया है। शम्भूपरा ग्रोथ सेक्टर में लगभग 66 एकड़ भूमि तथा उद्यान एवं खुले स्थान हेतु प्रस्तावित है। बून्दी सड़क उत्तरी योजना क्षेत्र में लगभग 19 एकड़ बारां सड़क उत्तरी योजना क्षेत्र में लगभग 280 एकड़, बारां सड़क दक्षिणी योजना क्षेत्र में लगभग 626 एकड़ भूमि, कन्सुआ योजना क्षेत्र में लगभग 80 एकड़ भूमि, रानपुर योजना क्षेत्र में लगभग 20 एकड़ भूमि पर उद्यान एवं खुले स्थान का प्रावधान रखा गया है। इस प्रकार 2031 की भावी आवश्यकतओं के लिये विभिन्न स्थलों पर कुल लगभग 1613 एकड़ अतिरिक्त भूमि उद्यान एवं खुले स्थल हेतु प्रस्तावित किये गयी है।

नगर विकास न्यास, राजस्थान आवासन मंडल एवं नगर निगम द्वारा विकसित योजनाओं में विभिन्न उद्यानों एवं खुले स्थलों का प्रावधान रखा गया है, किन्तु इन स्थलों पर वृक्षा–रोपण एवं रख–रखाव का अभाव है अतः इन स्थलों एवं खुले स्थलों हेतु आरक्षित स्थलों पर सामुदायिक एवं धार्मिक अतिक्रमण की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिस पर भी रोक लगाया जाना आवश्यक है।

मास्टर प्लान–2031 के अन्तर्गत पूर्व मास्टर प्लान–2023 के नगरीयकरण योग्य क्षेत्र के बाहर बारां सड़क उत्तरी योजना क्षेत्र में 75 एकड़ व बारां सड़क दक्षिणी योजना क्षेत्र में 52 एकड़ अतिरिक्त भूमि स्टेडियम एवं खेल मैदानों हेतु भूमि प्रस्तावित की गई है। बून्दी सड़क दक्षिणी योजना क्षेत्र में शम्भूपुरा क्षेत्र कोटा में नगर के मध्य काफी पुराना छत्र विलास उद्यान स्थित है। नगर के विकास के साथ–साथ चम्बल उद्यान, गांधी उद्यान, ट्रेफिक गार्डन, भीतरिया कुण्ड उद्यान इत्यादि विकसित हुए है। विभिन्न योजनाओं में छोटे स्तर के कई उद्यान, पार्क इत्यादि नगर विकास न्यास एवं आवासन मण्डल एवं नगर निगम द्वारा विकसित किये गए हैं।

(अ)शैक्षणिक :–

कोटा नगर में वर्तमान में कोटा विश्वद्यिालय, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, अभियांत्रिकी महाविद्यालय, चिकित्सा महाविद्यालय, पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, महिला औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, राजकीय महाविद्यालय, वाणिज्य महाविद्यालय एवं

जानकी देवी बजाज महिला महाविद्यालय कार्यरत हैं। उल्लेखित शैक्षणिक संस्थानों के संस्थापन एवं विकास के कारण गत दशक में कोटा नगर का स्वरूप औद्योगिक नगरी से शैक्षणिक नगरी के रूप में विकसित हुआ है।

नगर में निजी क्षेत्र में विगत वर्शें में 1 विश्वविद्यालय झालावाड़ सड़क पर केवल नगर के समीप, 8 अभियांत्रिकी महाविद्यालय, 1 दन्त चिकित्सा महाविद्यिालय एवं अनेक सामान्य एवं व्यावसायिक महाविद्यालय स्थापित हुए है। वर्तमान में निजी क्षेत्र के 2 विश्वविद्यालय व भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (I.I.T.) रानपुर में तथा 1 कृषि विश्वविद्यालय बोरखेड़ा सड़क पर प्रस्तावित है। इसके अतरिक्ति 53 राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय / माध्यमिक विद्यालय एवं 356 निजी उच्च माध्यमिक विद्यालय/माध्यमिक विद्यालय हैं। वर्तमान में 151 राजकीय प्राथमिक/उच्च प्राथमिक एंव निजी विद्यालय एवं महाविद्यालय किराये के भवनों में अपर्याप्त स्थानों पर संचालित हैं, जहाँ पर मापदण्डों के अनुरूप सुविधाओं का अभाव है।

विद्यमान भू–उपयोग मानचित्र मानचित्र 2012 में प्रमुख विद्यालय परिसरों को ही दर्शाया गया है। वर्ष 2012 में प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षणिक संरचना को तालिका में दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या – 4.3.8

शैक्षणिक संरचना–कोटा–2012

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर (संख्या)	आयु वर्ग	आयु वर्ग में विद्यालय जाने योग्य बालक/ बालिकाओं की संख्या (अनुमानित)	कुल पंजीकृत	कुल भर्ती विद्यालयों का शिक्षा योग्य/ बालक/ बालिकाओं पर प्रतिशत	विद्यालय में औसत छात्रों की संख्या	विद्यालय की संख्या
1	प्राथमिक विद्यालय (1–5)	5–10	25,122	23,363	93	132	191

2	उच्च प्राथमिक विद्यालय (6–8)	11–13	45,089	40,129	89	159	283
3	मध्यमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय (6–8)	14–17	1,07,360	96,798	90.16	258	416
	योग	–	177571	160290	–	549	890

स्त्रोतः नगर नियोजन विभाग व कार्यालय प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, कोटा।

उपरोक्त विद्यालय एवं महाविद्यालयों के अतिरिक्त कोटा नगर में पिछले दशक में कई तकनीकी कोचिंगसंस्थान विकसित हुए हैं, जिसमें अभियान्त्रिकी एवं चिकित्सा संस्थानों में प्रवेश परीक्षाओं की कोंचिग दी जाती है। इन कोचिंग संस्थानों में लगभग 80,000 विद्यार्थी प्रति वर्ष कोचिंग प्राप्त करते हैं। इन संस्थानों में राजस्थान राज्य के अलावा अधिकांश राज्यों, जैसे मध्य प्रदेश, छतीसगढ़, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, गुजरात एवं अन्य राज्यों से विद्यार्थी आते है। इसका प्रभाव कोटा के उच्च माध्यमिक विद्यालयों पर भी पड़ा है, जिसके कारण विद्यालयों एवं विद्यार्थियों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्वि हुई है। उक्त कोचिंग संस्थानों का प्रभाव यहाँ की अर्थव्यवस्था पर विशेश रूप से हुआ है, अर्थव्यवस्था के उत्थान के फलस्वरूप नगर के महानगरीय स्वरूप की शुरूआत हुई है।

(ब)चिकित्सा :–

कोटा नगर में राजकीय सामान्य अस्पताल नयापुरा क्षेत्र में स्थित है जो कि 'महाराव भीमसिंह अस्पताल' के नाम से जाना जाता है। चिकित्सा महाविद्यालय की स्थापना होने के पश्चात महाराव भीमसिंह चिकित्यालय, चिकित्सा महाविद्यालय से संबंद्व है। इसकी वर्तमान क्षमता 474 बिस्तर की है। इसी परिसर में जे.के.लोन महिला चिकित्सालय एवं टी.बी. अस्पताल भी है। इन सभी को मिलाकर महाराव भीमसिंह चिकित्सालय व संलग्न समूहों की कुल क्षमता 849 बिस्तर की है। मेडिकल कॉलेज से सबंद्व 1000 बिस्तर का अस्पताल भी अस्तित्व में आ चुका है एवं आंशिक रूप से विभिन्न विभागों की 470 बिस्तर की क्षमता कार्यशील हो चुकी है। इसके अतिरिक्त रामपुरा सैटेलाइट चिकित्सालय, इ.एस.आई.

अस्पताल, रेलवे अस्पताल एवं प्रथम श्रेणी आयुर्वेदिक औशधालय एवं एलोपैथिक डिस्पेन्सरियों की कुल संख्या 28 है, जिनकी कुल क्षमता 208 बिस्तर की है। वर्तमान में कोटा में आयुर्वेदिक चिकित्सालय, होम्योपेथिक चिकित्सालय एवं यूनानी चिकित्सालयों की कुल संख्या 12 हैं, जिनकी कुल क्षमता 30 बिस्तर की है। पिछले दशक में प्रमुख निजी अस्पतालों में दादाबाड़ी क्षेत्र में भारत विकास परिशद अस्पताल कार्यरत है एवं इसके अतिरिक्त नगर में लगभग 85 निजी नर्सिंग एवं मेटरनिटी होम कार्यरत हैं। अधिकांश निजी नर्सिंग होम अपर्याप्त स्थल एवं अपर्याप्त सुविधाओं के साथ कार्यरत है।

कोटा संभाग के अन्तर्गत बून्दी, सवाई माधोपुर, बारां, झालावाड़ एवं कोटा जिला आते हैं। उक्त जिलों की अधिकांश जनता उच्चतर चिकित्सा सुविधाओं के लिये कोटा नगर पर निर्भर है।

(स) सामाजिक/संस्कृति :–

झालावाड़ सड़क पर नगर विकास न्यास कोटा द्वारा विकसित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्थानों हेतु योजना में कई संस्थाएँ, जैसे कि इन्स्टीट्यूशन ऑफ इंजिनियर्स, लॉयन्स क्लब, करणी विकास समिति, मूक–बधिर छात्रावास, वृद्वाश्रम एवं विद्यालय तथा विभिन्न समाजों के सामुदायिक भवन एवं धार्मिक स्थल विकसित हो चुके है। नगर के दक्षिण में खड़े गणेश जी मन्दिर के निकट स्थित कबीर चौराहे के आस–पास भी विभिन्न समाजों के सामुदायिक भवन विकसित हुए है।

(द) धार्मिक, ऐतिहासिक एवं धरोहर स्थल :–

नगर के मध्य चम्बल नदी के किनारे गढ़ पैलेस स्थित है। छत्रविलास तालाब के उत्तर में क्षार भाग में ऐतिहासिक छतरियां है। चम्बल नदी के पश्चिम में नान्ता ग्राम के समीप ऐतिहासिक अभेड़ा महल एवं तालाब स्थित है। थेकड़ा स्थित शिव मन्दिर, कोटा नगर के दक्षिण में रगबाड़ी बालाजी एवं खड़े गणेश जी महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। इसके अतिरिक्त रावतभाटा सड़क पर गोदावरी धाम धार्मिक स्थल स्थित हैं। नगर के मध्य छत्रविलास तालाब में ऐतिहासिक जल महल में। डी.सी.एम. सड़क पर कन्सुआ क्षेत्र में ऐतिहासिक प्राचीन (ई0पू0 700 वर्ष) शिवजी के मन्दिर का विकास कार्य भी किया गया है, जो कि पर्यटन की दृश्टि से एक महत्वपूर्ण स्थल है।

(य)अन्य सामुदायिक सुविधायें :–

कोटा नगर में मनोरंजन के लिए वर्तमान में 9 छविगृह विद्यमान है, जिनमें से 1 स्टेशन सड़क पर, 1 नयापुरा चौराहे पर, 3 नगर के दक्षिण में ओम सिने प्लेक्स तथा 4 छविगृह

झालावाड़ सड़क पर स्थापित सिटी मोल में कार्यरत है। इसके अतिरिक्त 2 छविगृह बन्द है एवं एरोड्राम चौराहा स्थित छविगृह की भूमि पर एक मल्टीफ्लेक्स निर्माणधीन है।

नगर में एक राजकीय सम्भागीय स्तर की लाईब्रेरी, सूचना केन्द्र नयापुरा में राजकीय महाविद्यालय के समीप स्थित है। नगर के 2 संग्रहालय है, जो छत्रविलास उद्यान एवं गढ़ पैलेस में स्थित है। विश्राम गृह एवं डाक बंगला स्टेशन सड़क पर स्थित है। नगर प्रमुख डाक एवं तार कार्यालय नयापुरा में स्थित है। नगर में कई होटल एवं धर्मशालाऐं हैं। नगर में आर.टी.डी.सी. का ट्यूरिस्ट होटल छत्रविलास उद्यान के बीच में स्थित हैं, जबकि सिंचाई विभाग का विश्राम गृह किशोर पुरा क्षेत्र में स्थित है। नगर विकास न्यास, कोटा द्वारा नगर की विभिन्न आवासीय योजनाओं 21 सामुदायिक भवन निर्मित किये गये है। नगर निगम कोटा द्वारा भी 32 सामुदायिक भवन निर्मित किये गये हैं, जिसमें से 12 भवन एवं परिसर सामुदायिक सुविधाओं के लिये उपलब्ध हैं एवं अन्य सेक्टर कार्यालय, औशघालय, हैल्पलाइन, विद्यालय इत्यादि उपयोग में आ रहे है। इसके अलावा विभिन्न संस्थाओं एवं समाजों तथा निजी विकासकर्ताओं द्वारा भी विभिन्न सामुदायिक भवनों का निर्माण किया गया है।

(र) जनउपयोगी सुविधायें :–

पीने योग्य जल की आपूर्ति, विद्युत आपूर्ति, जल–मल निस्तारण की व्यवस्था नगरीय जीवन की मूलभूत आवश्यकतायें हैं। अतः नगर के विकास के साथ–साथ इनका उचित प्रावधान किया जाना आवश्यक है।

(i)जल आपूर्ति :–

कोटा नगर चम्बल नदी के किनारे स्थित है अतः नगर में पेय जल की आपूर्ति का स्त्रोत चम्बल नदी है। बैराज से बायं एवं दायं मुख्य नहर निकल रही है। दायं मुख्य नहर नगर के मध्य से कन्सुआ औद्योगिक क्षेत्र के समीप से निकल रही है। अतः कोटा नगर में कृषि, औद्योगिक एवं घरेलू जल आपूर्ति की पर्याप्त समता है। इसके अतिरिक्त ट्यूबवेल एवं हैण्डपंप भी जल वितरण के मुख्य स्त्रोत है। चम्बल नदी के किनारे बैराज एवं इसका बड़ा जलाशय अकेल गढ़ में स्थित है। नगर का प्रमुख जह आपूर्ति केन्द्र अकेल गढ़ के नाम से ही जाना जाता है। वर्तमान में अकेल गढ़ में स्थित संयत्र की पीने योग्य पानी वितरण करने की वास्तविक आपूर्ति 251 एम.एल.डी. एवं वांछित आपूर्ति 269 एम.एल.डी. है। अकेलगढ़ एवं जलआपूर्ति केन्द्र की स्थापना वर्ष 1927 में हुई थी। नगर के दक्षिण में गत 10 वर्शो में नगर विकास न्यास, कोटा द्वारा कई आवासीय योजनाएँ विकसित की गई है, जिनमें जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा अभी तक जलापूर्ति विकसित नही की जा

सकी है। इस क्षेत्र में नगर विकास न्यास द्वारा विकसित कुछ योजनाओं में ट्यूबवेल से सप्लाई की जा रही है। नगर के दक्षिण में महावीर नगर, इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र इत्यादि क्षेत्रों में जल आपूर्ति का पर्याप्त दबाब नही है।

वर्मतान में चम्बल नदी के पश्चिम मे हुए नगरीय विस्तार की आवश्ययकता के दृश्टिगत चम्बल नदी के पश्चिमी किनारो पर कोटा बैराज के जलाशय से इन्टेकवेल, सकतपुरा जल आपूर्ति केन्द्र एवं यहां से जलापूर्ति नेटवर्क की वृहद परियोजना विकासतर हैं। नगर में लगभग 85% आबादी को जन स्वाथ्य अभियांत्रिकी विभाग द्वारा जल आपूर्ति की जा रही है। वर्तमान में औसत जल आपूर्ति 240 लीटर प्रतिव्यक्ति प्रतिदिन है। नगर में जल वितरण पाईप लाईन की कुल लम्बाई 1257 कि.मी. है। इसके अतिरिक्त नगर में जल आपूर्ति हेतु 1116 हैण्डपम्प, 90 ट्यूबवैल, 23 ओवरहेड टैंक एवं 13 सी.डब्ल्यू.आर. हैं। ओवरहैड टैंक एवं सी.डब्ल्यू.आर की कुल भराव क्षमता लगभग 325 लाख लीटर है। वर्ष 2012 के कोटा के जलापूर्ति कनेक्शनों को तालिका में दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या – 4.3.9

जलापूर्ति कनेक्शन–कोटा–2012

क्र.सं.	मद	कनेक्शनों की संख्या
1	घरेलू	158122
2	व्यावसायिक	4017
3	औद्योगिक	1227
4	अन्य	831
	योग	164197

स्त्रोत : जनस्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग, कोटा

(ii) जल–मल निकास एवं ठोक कचरा निस्तारण प्रबन्धन :–

वर्तमान में कोटा में पर्यावरण की दृश्टि से एवं चम्बल को प्रदूशण से बचाने हेतु यह महसूस किया गया कि सीवरेज व्यवस्था विकसित की जावे ताकि जल–मल का उचित स्थल पर निस्तारण हो सके। नगर के पुराने भाग में आंशिक रूप से शुश्क शौचालय भी स्थित है, जिन्हे अधिकांशतः फ्लश लेट्रिन में परिवर्तित कर दिया भाग में राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा विकसित सीवेज व्यवस्था से बिना ट्रीटमेंट किये हुये सीवेज का सीधे ही सामुदायिक सेप्टिक टैंक, खुली भूमि अथवा नालों में निस्तारण हो रहा है। वर्तमान में कोटा नगर में व्यक्तिगत रूप से सेप्टिक टैंक बनाकर मल निस्तारण की व्यवस्था का प्रचलन है।

कोटा के दक्षिण में भूमि चट्टानी है जहां नई कॉलोनियों का विकास हो रहा है। इसके अतिरिक्त चम्बल के सिंचाई क्षेत्र में बारां सड़क पर स्थित निचली भूमियों पर भी कॉलोनियाँ विकसित हो चुकी है। जिनमें जल–मल निकास की समस्या गंभीर है। शहर के पुराने भाग में शुश्क शौचालय भी बने हुए है। कोटा क्षेत्र का सामान्य ढलान उत्तर एवं उत्तर पूर्व की ओर है। नगर की अनुकूल भौतिक परिस्थितियों के बावजूद नगर के कई क्षेत्रों की जल निकास व्यवस्था सही नही है एवं खुली नालियों से पानी बहता हुआ चम्बल नही में प्रवाहित होता है।

विगत वर्शो में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग द्वारा नगर के अधिकांश भाग को सम्मिलित करते हुए समन्वित सीवरेज योजना तैयार की गई है। प्रथम चरण में एशियन विकास बैंक से प्राप्त होने वाले ऋण द्वारा नगर के उत्तरी भाग में सीवरेज नेटवर्क विकसित किया गया है। वर्तमान में नगर विकास न्यास द्वारा द्वितीय चरण में चम्बल नदी के दोनों किनारों पर स्थित नगर के भाग एवं आंशिक दक्षिणी भाग को एन.आर.सी.पी. योजना के तहत सीवरेज नेटवर्क से जोड़ा जा रहा है।

इस परियोजना के तहत कोटा नगर में साजीदेहड़ा नाले के समीप एवं ग्राम धाकड़खेड़ी के समीप 2 सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किये गये है, जो कि अभी कार्यरत नही हुये हैं। चम्बल नदी के पश्चिम में नगरीय विस्तार की आवश्यकताओं के अनुसार ग्राम बालिता के निकट सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट का कार्य निर्माणरत है। उक्त योजनाओं के क्रियान्वयन से सीवेज का ट्रीटमेंट के उपरान्त ही निस्तारण किया जायेगा।

वर्तमान में कोटा नगर में ठोस कचरे के निस्तारण हेतु नगर से दूर थेकड़ा एवं डाबी सड़क पर स्थल चिन्हित हैं। नगर में घरों से निकलने वाले कूड़ा–करकट के संग्रहण एवं निस्तारण हेतु उचित व्यवस्था नही है। फलस्वरूप पर्यावरण प्रदूशित होता है। डम्पिंग स्थलों पर संग्रहित कूडा–करकट अवांछित स्थलों पर ही निस्तारित कर दिया जाता है।

(iii)विद्युत :–

कोटा नगर में चम्बल नदी के पश्चिम में 1240 मेगावॉट का सुपर थर्मल पॉवर प्लाण्ट है। समीपवर्ती जिलों में यथाझालावाड़ में कालीसिंध पॉवर प्रोजेक्ट, बारां जिले में छबड़ा थर्मल पॉवर प्लांट तथा अडानी पॉवर प्लान्ट, वर्तमान में विकसित किये जा रहे है।

कोटा नगर के निकट मुख्य पन विद्युत उत्पादन केन्द्र राणाप्रताप सागर, गांधी सागर एवं जवाहर सागर बांध स्थित है। कोटा के समीप ही रावतभाटा में एटॉमिक पॉवर स्टेशन है। कोटा नगर से लगभग 49 कि.मी. की दूरी पर अन्ता कस्बे में गैस आधारित विद्युत उत्पादन केन्द्र एन.टी.पी.सी. भी है। निजी क्षेत्र के छोटे बायोमॉस पॉवर प्लांट नगर में रंगपुर के

समीप तथा सवाईमाधोपुर जिले में उनियारा एवं बारां जिले में छीपाबड़ौद में स्थापित हैं, जो कि कचरे/भूसे से बिजली का उत्पादन करते हैं। इस प्रकार वर्तमान में कोटा एवं उसके आस–पास के क्षेत्रों से कुल 4600 मेगावॉट विद्युत उत्पादन हो रहा है, जो कि वर्ष 2015 तक बढ़ कर 8000 मेगावॉट होना विकासरत है।

कोटा नगर में जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड द्वारा वर्तमान व्यवस्था का रख–रखाव एवं वितरण किया जाता है। नगर में विद्युत आपूर्ति का मुख्य स्त्रोत सकतपुरा एवं बारां सड़क पर डायरा स्थित दो 220/132 के.वी. विद्युत केन्द्र एवं महावीर नगर, गोपाल मिल, वृहद् औद्योगिक क्षेत्र स्थित तीन 132 केवी विद्युत केन्द्र हैं।

इनके अतिरिक्त नगर में विभिन्न क्षेत्रों में लगभग बीस 33 केवी विद्युत उप केन्द्र कार्यरत/निर्माणधीन हैं। रानपुर में 220/132 केवी विद्युत केन्द्र प्रस्तावित है। वर्ष 2001 में कोटा नगर में विद्युत कनेक्शन एवं औसत प्रतिदिन विद्युत उपभोग को तालिका में दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या – 4.3.10

विद्युत कनेक्शन एवं उपभोग–2012–कोटा

क्र.सं.	मद	कनेक्शन	प्रतिदिन उपयोग (लाख यूनिटों में)
1	घरेलू	2,20,976	11.64
2	औद्योगिक	5,035	13.73
3	सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था	482	0.67
4	अन्य	55,780	14.34
	योग	**2,82,273**	**40.38**

स्त्रोत : जयपुर विद्युत निगम लि0, कोटा।

(iv)श्मशान एवं कब्रिस्तान :–

वर्तमान में कोटा नगर में श्मशान एवं कब्रिस्तान खेड़ली फाटक, भदाना, छावनी, विज्ञान नगर, नयापुरा, कुन्हाडी, शवदाह घाट की गली, चम्बल रेस्ट हाउस के पास, केशवपुरा, सुभाश नगर, कन्सुआ, लाड़पुरा, रंगतालाब व काला तालाब के मध्य स्थित हैं। इनमें से अधिकांशतः श्मशान एवं कब्रिस्तान चम्बल नदी के किनारे एवं नालों पर स्थित हैं। विगत कुछ वर्शो में कई श्मशानों एवं कब्रिस्तानों पर सुविधाऐं विकसित की गई हैं।

नगर के एकीकृत विकास एवं नागरिकों की स्थानीय एवं प्रादेशिक आवश्यकताओं को पूरा करने की दृश्टि से विभिन्न सार्वजनिक सुविधायें तथा श्मशान/कब्रिस्तान इत्यादि का प्रावधान रखा गया है। स्थानीय विशेशताऐं, आवासीय घनत्व व भावी विस्तार की सम्भावनाओं को दृश्टिगत रखते हुए इन सार्वजनिक एवं अर्द्व सार्वजनिक सुविधाओं का विभिन्न स्तरों पर वितरण किया गया है। इन सुविधाओं हेतु मास्टर प्लान–2031 के अन्तर्गत पूर्व मास्टर प्लान–2023 के नगरीयकरण योग्य क्षेत्र के बाहर कुल 3074 एकड़ अतिरिक्त भूमि प्रस्तावित की गई है।

(1)शैक्षणिक :–

कोटा नगर दक्षिणी–पूर्वी राजस्थान का तकनीकी एवं सामान्य एवं सामान्य शिक्षा हेतु प्रमुख केन्द्र है एवं भविश्य में भी शैक्षणिक गतिविधियों का केन्द्र बना रहेगा। शैक्षणिक संस्थानों के संस्थापन एवं विकास के कारण गत दशक में कोटा नगर का स्वरूप औद्योगिक नगरी से शैक्षणिक नगरी के रूप में परिवर्तित हुआ है। वर्ष 2031 की प्रस्तावित शैक्षणिक संरचना को तालिका में दर्शाया गया है :–

तालिका संख्या – 4.3.11

प्रस्तावित शैक्षणिक संरचना–कोटा–2031

क्र. सं.	कक्षा स्तर	आयु वर्ग	आयु वर्ग में प्रति विद्यालय जाने योग्य बालक/बालिकाऐं	विद्यार्थियों का प्रतिशत	विद्यालय में पंजीकृत छात्रों की संख्या	विद्यालयों की संख्या	प्रति विद्यालय छात्रों की औसत संख्या
1	प्राथमिक विद्यालय (1–5)	5–10	3,05,000	90%	2,74,500	685	400
2	उच्च प्राथमिक (6–8)	11–13	2,12,500	85%	1,80,625	360	500
3	मध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय	14–17	2,15,000	78%	1,67,700	419	400

स्त्रोत :– नगर नियोजन विभाग एवं सलाहकार के अनुमान।

प्रमुख शैक्षणिक आवश्यकताओं हेतु कैथुन सड़क के दक्षिण में लगभग 1260 एकड़ एवं झालावाड़ सड़क के पूर्व में 102 एकड़ भूमि प्रस्तावित की गई है। रानुपर ग्रोथ सेन्टर एवं शम्भूपुरा ग्रोथ सेन्टर में भी शैक्षणिक उपयोग हेतु भूमि प्रस्तावित की गयी है। निजी क्षेत्र के दो विश्वविद्यालय भी रानपुर योजना क्षेत्र में प्रस्तावित है। बोरखेड़ा सड़क पर कृषि विश्वद्यिालय हेतु भूमि प्रस्तावित है। इस प्रकार कुल 2197 एकड़ भूमि शैक्षणिक उपयोग हेतु प्रस्तावित की गयी है।

उपरोक्त के अतिरिक्त सैकण्डरी एवं सीनियर सैकण्डरी स्तर, प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों हेतु विस्तृत आवासीय योजनाओं में एवं सैक्टर प्लान तैयार करते समय स्थल आरक्षित किये जायेंगे। माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय अन्य शैक्षणिक प्रयोजनार्थ स्थानों पर भी अनुज्ञेय होगें। मास्टर प्लान भू–उपयोग योजना में सार्वजनिक व अर्द्वसार्वजनिक भू–उपयोग के अंतर्गत शैक्षणिक उपयोग श्रेणी के अंतर्गत दर्शित विभिन्न उप श्रेणियों के उपयोग एक दूसरे में अनुज्ञेय होंगे।

(2) चिकित्सा :–

कोटा नगर स्थानीय जनसंख्या के अतिरिक्त, संभाग की जनसंख्या के लिए भी चिकित्सा का प्रमुख केन्द्र बना रहेगा। इस दौरान कोटा में चिकित्सा महाविद्यालय से संबंध 1000 बिस्तर का अस्पताल अस्तित्व में आ चुका है, जहाँ पर विभिन्न विभाग आंशिक रूप से चिकित्सा सेवाऐं दे रहे है।

मास्टर प्लान–2031 के अन्तर्गत पूर्व मास्टर प्लान–2023 के नगरीयकरण योग्य क्षेत्र के पश्चात बून्दी सड़क दक्षिणी योजना क्षेत्र में शम्भूपुरा में लगभग 8 एकड़, बारां सड़क दक्षिणी योजना क्षेत्र में लगभग 102 एकड़ भूमि बारां सड़क उत्तरी योजना क्षेत्र में लगभग 40 एकड़ भूमि, रानपुर योजना क्षेत्र में लगभग 10 एकड़ अतिरिक्त भूमि चिकित्सीय सुविधाओं हेतु प्रस्तावित की गयी है। अन्य योजना क्षेत्रों में भी चिकित्सा सुविधा हेतु स्थल प्रास्तावित की गयी है। अन्य योजना क्षेत्रों में भी चिकित्सा सुविधा हेतु स्थल प्रस्तावित किये गये है। इस प्रकार कुल 160 एकड़ भूमि चिकित्सा सेवाओं हेतु प्रस्तावित है।

(3) सामाजिक/सांस्कृतिक :–

मास्टर प्लान क्रियान्वयन के अन्तर्गत विस्तृत योजनाऐं बनाते समय आवासीय योजनाओं में सामाजिक/सांस्कृति भवनों के लिए भूमि आरक्षित किया जाना प्रस्तावति है।

(4)धार्मिक स्थल/ऐतिहासिक :–

कोटा में अनेक धार्मिक एवं ऐतिहासिक क्षेत्र हैं। आवासीय योजनाऐं बनाते समय धार्मिक स्थलों हेतु भूमि आरक्षित की जायेगी। ऐतिहासिक महत्व के धार्मिक क्षेत्रों एवं अन्य

ऐतिहासिक स्थलों/स्मारकों के रख रखाव के लिए पुरातत्व विभाग द्वारा उचित कार्यवाही की जानी चाहिए।

(5) अन्य सामुदायिक सुविधायें :–

अन्य सामुदायिक सुविधाओं के अन्तर्गत पुलिस स्टेशन, डाक एवं तार कार्यालय, दूरदर्शन, अग्निशमन केन्द्र, क्लब, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाऐं, धार्मिक संस्थाऐं, धर्मशालाऐं, छात्रावास, छोटे स्तर की चिकित्सा सुविधाऐं, नर्सिंग होम, सरकारी व्यायामशाला, आंगनबाड़ी केन्द्र, प्राथमिक स्तर की शैक्षणिक सुविधायें इत्यादि विकसित की जा सकती है। मास्टर प्लान–2031 के अन्तर्गत पूर्व मास्टर प्लान–2023 के नगरीयकरण योग्य क्षेत्र के पश्चात बून्दी सड़क उत्तरी योजना क्षेत्र, शम्भूपुरा ग्रोथ सेन्टर में एवं रानपुर योजना क्षेत्र में दक्षिणी बाईपास पर स्थल प्रस्तावित किये गये है। इस प्रकार कुल 256 एकड़ भूमि अन्य सामुदायिक सुविधाओं हेतु प्रस्तावित की गयी है।

(6) (अ) जल आपूर्ति :–

कोटा नगर चम्बल नदी के किनारे स्थित है एवं बैराज के कारण समीप ही बड़ा जलाशय है, अतः कोटा नगर में जल आपूर्ति हेतु पर्याप्त जल संसाधन उपलब्ध है। कोटा नगर में वर्तमान जल आपूर्ति हेतु अकेलगढ़ में जल आपूर्ति केन्द्र स्थित है। चम्बल नदी के पश्चिम में स्थित नगर के भाग की जल आपूर्ति की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नगर विकास न्यास द्वारा सकतपुरा मे जल शोधन एवं आपूर्ति केन्द्र एवं पाईप लाइनों की वृहद परियोजना निर्माणरत है।

वर्तमान में नगर विकास न्यास द्वारा विकसित की जा रही नई योजनाऐं वर्तमान जल आपूर्ति केन्द्र अकेलगढ़ से अपेक्षाकृत काफी ऊँचे तल पर स्थित हैं, अतः वर्ष 2031 तक कोटा के भावी विस्तार के दृश्टिगत दक्षिण में ऊँचे तल पर पूर्व मास्टर प्लान–2023 के नगरीयकरण योग्य क्षेत्र में प्रस्तावित नगरीय उपयोगों हेतु प्रस्तावित बाई पास सड़क के दक्षिण में चम्बल नदी के किनारे नया जल आपूर्ति केन्द्र प्रस्तावित है। पुराने नगर में बढ़ते हुए आबादी घनत्व के कारण कई स्थानों पर वर्तमान पाईप लाइन की क्षमता अपर्याप्त है एवं कई स्थानों पर पाईप लाइन पुरानी होने के कारण क्षतिग्रस्त हो चुकी है। अतः कोटा नगर में विद्यमान एवं भावी जनसंख्या के आकंलन के आधार पर सर्वेक्षण एवं अनुमान लगाकर इन पाईप लाईनों को बदलना आवश्यक है। इसके साथ ही अन्य नई योजनाओं जैसे हाउसिंग फॉर ऑल–2022, प्रधानमन्त्री आवास योजना, मुख्यमन्त्री जन आवास योजना के तहत तथा ऐसी अन्य योजनाओं के अन्तर्गत विकसित होने वाली योजनाओं एवं वर्ष 2031 तक भविश्य की आवश्यकता हेतु अनुमान लगाकर जलदाय विभाग द्वारा विस्तृत

जलापूर्ति योजनाऐं तैयार कर विकास किया जाना प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त नगर के विकास हेतु प्रस्तावित रानपुर ग्रोथ सेन्टर एवं शम्भूपुरा ग्रोथ सेन्टर के लिए पृथक से जलापूर्ति योजनाऐं तैयार किया जाना प्रस्तावित है।

(6)(ब) जल–मल निस्तारण व्यवस्था :–

राजस्थान के अन्य नगरों की भांति कोटा में भी अभी तक कोई नियोजित जल–मल निस्तारण व्यवस्था संचालित नही है। पुराने नगर में शुश्क शौचालय थे जिन्हे अधिकांशतः फ्लश लेट्रिन में परिवर्तित कर दिया गया है। नई योजनाओं में सेप्टिक टेंक युक्त फ्लश लेट्रिन हैं। नगर के आंशिक भाग में विद्यमान सीवेज व्यवस्था से बिना ट्रीटमेंट किये हुये सीवेज का सीधे ही सामुदायिक सेप्टिक टैंक, खुली भूमि अथवा नालों में निस्तारण हो रहा है।

विगत वर्शो में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग द्वारा नगर के अधिकांश भाग को सम्मिलित करते हुए समन्वित योजना तैयार की गई है। प्रथम चरण मे एशियन विकास बैंक से प्राप्त होने वाले ऋण द्वारा नगर के उत्तरी भाग में सीवेरज नेटवर्क विकसित किया गया है। वर्तमान में नगर विकास न्यास द्वारा द्वितीय चरण में चम्बल नदी के दोनों किनारों पर स्थित नगर के भाग एवं आंशिक दक्षिणी भाग को एन.आर.सी.पी. योजना के तहत एवं नगर के शेश दक्षिणी भाग को यू.आई.डी.एस.एस.एम.टी. योजना के तहत सीवरेज नेटवर्क से जोड़ा जा रहा है। नगर के दक्षिण मे विकसित हो रही अधिकांश योजनायें चट्टानी भूमि पर स्थित है अतः इन योजनाओं में सीवर लाइन बिछाने का कार्य वर्तमान में भारी मशीनों की मदद से किया जा रहा है।

शहर मे साजीदेहड़ा नाले के समीप किशोरपुरा दरवाजे के पास एवं ग्राम धाकड़खेड़ी के समीप 2 सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किये गये है, जो कि अभी कार्यरत नही हुआ है। चम्बल नदी के पश्चिम में नगरीय विस्तार की आवश्यकताओं के अनुसार ग्राम बालिता के निकट सीवेज ट्रीटमेन्ट प्लांट का कार्य निर्माणरत है। उक्त योजनाओं के क्रियान्वयन से सीवेज का ट्रीटमेंट के उपरान्त ही निस्तारण किया जायेगा।

नगर के दक्षिण में विकसित हो रही अधिकांश योजनायें चट्टानी भूमि पर स्थित हैं अतः इन योजनाओं में सीवर लाइन बिछाने का कार्य वर्तमान में भारी मशीनों की मदद से किया जा रहा है, अतः यह वांछित है कि नये क्षेत्रों में योजनायें विकसित होने से पूर्व ही सीवर लाईन डाली जाए अन्यथा चट्टानी भूमि होने के कारण योजना विकसित होने के उपरान्त सीवर लाइन डालना तकनीकी दृश्टि से कठिन कार्य होगा। नगर के दक्षिण में स्थित ग्राम लखावा एवं रानपुर में प्रस्तावित नगरीय विकास की जल–मल निस्तारण हेतु ग्राम लखावा के दक्षिण

में एवं राश्ट्रीय राजमार्ग–52 के पश्चिम में जनोपयोगी सुविधाओं हेतु स्थल चिन्हित किया गया है। इसके अतिरिक्त बारां सड़क उत्तरी योजना क्षेत्र के जल–मल निस्तारण हेतु ग्राम चन्द्रसेल के निकट भूमि प्रस्तावित की गयी है। सीवरेज एवं अपशिश्ट जल का परिशोधन किया जाकर उपचारित जल को औद्योगिक, कृषि, बागवानी आदि उपयोगों में लेने हेतु कार्ययोजना तैयार की जानी चाहिए। अन्य सभी प्रकार के व्यर्थ जाने वाले जल के सिंचाई, बागवानी इत्यादि में उपयोग की योजना तैयार की जानी चाहिए।

(6)(स) ठोस कचरा निस्तारण प्रबन्धन :–

स्वच्छ वातावरण के लिये घृणोत्पादक पदार्थें के निस्तारण एवं इसके पुर्नउपयोग की उचित व्यवस्था आवश्यक है। सोलिड वेस्ट निस्तारण हेतु स्थलों का चयन नगर से दूर वायु की दिशा को देखते हुऐ किया जाना चाहिये। ईंट भट्टों व खदानों की अनुपयुक्त भूमि, यदि उपलब्ध हो तो, इस प्रकार के कार्य के लिये उपयोग में ली जा सकती है। वर्तमान में कोटा नगर में घरों से कूड़ा करकट के संग्रहण हेतु कोई उचित व्यवस्था नही है एवं लोगों द्वारा सड़क पर ही कूड़ा डाला जाता है, जिसका समय पर निस्तारण सम्भव नही हो पाता है। इस कारण नगर में पर्यावरण प्रदूशण होता है।

अतः यह आवश्यक है कि घरों से निकलने वाले कूड़ा–करकट के संग्रहरण हेतु उचित व्यवस्था की जाये, ताकि कचरा सड़कों पर नही रहे। साथ ही कूड़ा–करकट के संग्रहण एवं इसके निर्धारित स्थलों पर निस्तारण हेतु नगर निगम द्वारा विस्तृत योजना तैयार की जानी चाहिये। वर्तमान में कोटा नगर में डाबी सड़क पर आबादी से दूर गढ्ढों की नीची भूमि को सोलिड–वेस्ट डिस्पोजल हेतु चिन्हित किया गया है। नगर मे वर्तमान एवं 2031 की भावी आवश्यकताओं के लिए उक्त स्थल पर्याप्त नही हैं। नगर का विकास अपने रेखीय विस्तार के स्वरूप को छोड़ अब चहुँओर हो रहा है। अतः विकास की सभी दिशाओं मे निचले स्तर की भूमियों का चयन कर, उन्हें ठोस कचरा निस्तारण हेतु चिन्हित करना आवश्यक है, ताकि विभिन्न क्षेत्रों से निकलने वाले कचरे का निस्तारण उसी दिशा में किया जा सके एवं कचरा अनावश्यक रूप से नगर के मध्य से होकर नही ले जाना पड़े।

(6) (द) विद्युत आपूर्ति :–

नगर की जनसंख्या व आर्थिक गतिविधियो में वृद्वि के साथ –साथ विद्युत की मांग में वृद्वि होना स्वाभाविक है। जयपुर विद्युत वितरण निगम लि. द्वारा प्रस्तावित भू–उपयोग योजना को ध्यान में रखकर एक समन्वित योजना तैयार करना अपेक्षित है। मुख्य सड़कों, व्यवसायिक क्षेत्रों एवं औद्योगिक क्षेत्रों में प्रकाश व्यवस्था में सुधार किया जाना चाहिये। प्रस्तावित भू उपयोग योजना में प्रमुख बाह्य मार्ग के सहारे दक्षिण में झालावाड़ सड़क के

निकट एवं बून्दी सड़क पर चम्बल नदी के समीप, रानपुर ग्रोथ सेन्टर मे, शम्भूपुरा ग्रोथ सेन्टर एवं चन्द्रसेल सड़क पर, विद्युत उप केन्द्रें/जल आपूर्ति केन्द्रों की स्थापना, जनोपयोगी सुविधाओं हेतु आरक्षित वृहद स्थलों में निर्मित की जा सकेगी। सब स्टेशन एवं छोटे स्तर के केन्द्रों हेतु सैक्टर प्लान एवं विस्तृत आवासीय योजना बनाते समय स्थल आरक्षित किये जायेंगे।

(7)श्मशान एवं कब्रिस्तान :–

वर्तमान में नगर में स्थित श्मशान और कब्रिस्तानों को यथावत रखा गया है, परन्तु जो श्मशान और कब्रिस्तान नगर के विकसित भागों में स्थित हैं उनमें चार दिवारी के साथ–साथ सघन वृक्षोरोपण किया जाना प्रस्तावित है, ताकि वातावरण पर विपरित प्रभाव नहीं पड़े। नये श्मशान और कब्रिस्तान मांग के अनुसार परिधि नियन्त्रण क्षेत्र में स्थापित किये जा सकेगें। पर्यावरण संतुलन की दृश्टि से विद्युत चलित शवदाह गृह स्थापित किये जाने चाहिए एवं इनके प्रति आम जनता में जागरूकता हेतु उचित प्रचार–प्रसार किया जाना चाहिए।

हाईवे/अन्य डवलपमेन्ट कन्ट्रोल योजना क्षेत्र :–

जयपुर – जबलपुर राश्ट्रीय राजमार्ग–52, पिण्डवाडा – शिवपुरी राश्ट्रीय राजमार्ग–27 (ईस्ट वेस्ट कोरिडोर का एक भाग), कोटा – लालसोट राज्य राजमार्ग–1ए तथा राज्य राजमार्ग–51 पर एवं इनके प्रस्तावित बाईपास मार्गों पर प्रस्तावित नगरीय भू–उपयोग सीमा के पश्चात नगरीय क्षेत्र–2031 तक राजमार्गो के दोनों तरफ सड़क मार्गाधिकार एवं 30 मीटर वृक्षारोपण पट्टी के पश्चात 500 मीटर की गहराई तक यह क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है। इसके अतिरिक्त धर्मपुरा जाने वाली सड़क व रंगपुर सड़क क दोनों तरफ सड़क मार्गाधिकार के पश्चात 500 मीटर की गहराई तक यह क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है। यातायात क नियमों व मापदण्डों को ध्यान में रखते हुए इस क्षेत्र का विकास किया जायेगा ताकि राश्ट्रीय राजमार्ग एवं राज्य राजमार्ग के सहारे नियंत्रित/नियोजित विकास सम्भव हो सके। आवश्यकता अनुरूप इस क्षेत्र की योजना भी प्रस्तावित की जा सकेगी। इस योजना क्षेत्र में इस संबध में जारी राजकीय परिपत्र दिनांक – 12.05.2016 व 11.04.2017 तथा समय–समय पर राज्य सरकार द्वारा जारी निर्देशों/परिपत्रों में उल्लेखित भू–उपयोग अनुज्ञेय होंगे। किसी भी उपयोग को अनुज्ञेय किये जाने से पूर्व निर्धारित मापदण्डों का ध्यान रखा जाना आवश्यक रूप से सुनिश्चित किया जायेगा :–

ग्रीन बिल्डिंग/इको फ्रेन्डली हाउसेज/फार्म हाउस

आई.टी.पार्क/बायोटेक पार्क

इंटिग्रेटेड आवासीय टाउनशिप/ग्रुप हाउसिंग

मोटल/रिपोर्ट/हॉलीडे कॉटेज रिपोर्ट/हेल्थ रिसोर्ट

एम्यूजमेन्ट पार्क/अन्य पर्यटन सुविधाऐं

इंस्टीट्यूशनल/चिकित्सा/शैक्षणिक आदि

वेयर हाउसिंग/फूड स्टोरेज गोदाम

जनोपयोगी सुविधाऐं

सामान्य व्यवसायिक/फ्यूअल स्टेशन/पेट्रोल पम्प/सर्विस स्टेशन

ट्रांसपोर्टेशन(ट्रांसपोर्ट नगर/ट्रक स्टैण्ड/टर्मिनल्स/बस टर्मिन्लस/हाईवे फेसेलिटिज)

कुटी उद्योग

कृषि एवं डेयरी फार्म

ग्रामीण आबादी विस्तार एवं अनुसंधान उपयोग

परिधि नियंत्रण पटटी में अनुज्ञेय भू–उपयोग

यह भू–उपयोग राज्य मार्गो के साथ–साथ नगरीय विकास के रेखीय स्वरूप को नियोजित तरीके से आत्मसात करने मे सहायक होगा। इस हेतु कुल 16357 एकड़ भूमि प्रस्तावित है।

(7) परिसंरण :–

(अ) यातायात व्यवस्था :–

वर्तमान में जयपुर–जबलपुर राश्ट्रीय राजमार्ग–52 एवं पिण्ड़वाडा–शिवपुरी राश्ट्रीय राजमार्ग–27 नगर के मध्य से होकर गुजर रहे हैं एवं इनके बाईपास निर्माणधीन प्रस्तावित हैं। बाईपास नही होने के कारण नगर के मध्य एकमात्र दक्षिण से उत्तर की ओर जाने वाली स्टेशन सड़क पर स्थानीय यातायात एवं भारी यातायात का काफी दबाव है। फलस्वरूप नगर में यातायात, दुर्घटना एवं प्रदूशण संबंधित समस्यायें बहुतायत से उत्पन्न हो रही है। यह सड़क स्थानीय यातायात के लिए अपर्याप्त है। साथ ही सड़क के इर्द–गिर्द नगर की प्रमुख औद्योगिक एवं वाणिज्यिक गतिविधयां होने के कारण इस सड़क से भारी यातायात ले जाना उचित नही है। अतः यह नितान्त आवश्यक है कि राश्ट्रीय राजमार्ग–52 एवं राश्ट्रीय राजमार्ग–27 के बाई–पास हेतु शीघ्र व्यवस्था की जायें। गत वर्ष में उपरोक्त समस्या के समाधान हेतु झालावाड़ सड़क को दक्षिण में नदी पार कर बून्दी सड़क से जोड़ते हुए राजमार्ग–52 का बाईपास का कार्य निर्माणाधीन है। उक्त बाईपास हेतु चम्बल नही पर नया गॉव के समीप पुल का निर्माण कार्य जारी है। उपरोक्त सभी बाईपास के निर्माण से दक्षिण दिशा से आने वाला समस्त यातायात सीधे ही बून्दी सड़क की ओर

निकल जायेगा एवं नगर में विद्यमान स्टेशन सड़क को यातायात के वर्तमान दबाव से राहत मिलेगी।

कोटा का प्रभाव क्षेत्र चम्बल सिंचित क्षेत्र में होने के कारण आसपास के क्षेत्रों जिसमें मुख्यतः दायीं मुख्य नहर एवं बायीं मुख्य नहर से जुड़े क्षेत्र से कृषि उत्पादन कोटा नगर के घने विकसित क्षेत्र से हुआ औद्योगिक क्षेत्र में स्थित कृषि उपज मण्डी (भामाशाह मण्डी) तक आता है। साथ ही बारां सड़क जो कि राश्ट्रीय राजमार्ग–27 हैं, से भारी यातायात झालावाड़ सड़क (राश्ट्रीय राजमार्ग–52) की तरफ नगर के मध्य घने विकसित क्षेत्र से होकर गुजरता था । उक्त यातायात नगर की वर्तमान स्टेशन सड़क पर से गुजरने के कारण यहाँ पर यातायात की काफी समस्यायें थी। अतः बारां सड़क आने वाले कृषि उत्पादन के भारी यातायात को सीधे कृषि उपज मण्डी ले जाने एवं अन्य भारी यातायात को सीधे झालावाड़ सड़क पर ले जाने हेतु मास्टर प्लान 2023 में प्रस्तावित एक बाह्य सड़क निर्मित की गई है। दक्षिणी बाईपास सड़क को बारां सड़क से झालावाड़ सड़क व रावतभाटा सड़क के मध्य का भाग निर्मित हो चुका है, जिससे भारी यातायात का आवागमन शुरू होने से नगर में यातायात समस्याओं से आंशिक राहत मिली है।

नगर के मध्य स्थित स्टेशन सड़क पर यातायात के दबाव को कम करने के लिए रेलवे लाईन के समानान्तर स्टेशन से औद्योगिक क्षेत्र तक सड़क निर्मित की गई है। इस सड़क के निर्माण से नगर के उत्तरी व दक्षिणी भाग में स्थित औद्योगिक क्षेत्र के बीच सीधा सम्पर्क उपब्लध हो सका है, जिससे कि बारां सड़क से आने वाला यातायात भी इस मार्ग का उपयोग कर सीधे दक्षिण में स्थित औद्योगिक क्षेत्र एवं उपज मण्डी तक जा सकता है। अतः इस उप प्रमुख सड़क के निर्माण से नगर के मध्य स्थित स्टेशन सड़क पर यातायात के दबाव में कमी आई है। पिण्डवाडा–शिवपुरी राश्ट्रीय राजमार्ग (राश्ट्रीय राजमार्ग–27) का वर्तमान एलाइनमेन्ट चम्बल नदी के पश्चिम में काफी घुमावदार एवं विकसित क्षेत्र के मध्य से होकर है। साथ ही इसका इसका राश्ट्रीय राजमार्ग–52 पर मिलान बिन्दु चम्बल पुलिया के मुहाने पर लघु कोण के घुमाव पर है। अतः उक्त सड़क के एलाइनमेन्ट में परिवर्तन करते हुए नगर विकास न्यास द्वारा ग्राम नान्ता के पश्चिम से सीधा ही बून्दी सड़क पर मिलाने का कार्य विकसित है। दक्षिणी बाईपास के पूर्णतया विकसित होने तक यह सड़क नगर के भारी यातायात समस्या में राहत प्रदान करेगी। नयापुरा से राश्ट्रीय राजमार्ग–52 के वर्तमान मार्ग पर स्थित चम्बल पुल के दोहरीकरण का कार्य निर्माणाधीन है । इस पुल पर से राज्य राजमार्ग–52 का समस्त भारी यातायात गुजरता है एवं नगरीय यातायात में बाघाऐं

एवं रूकावटें उत्पन्न करता है। अतः यह कार्य शीघ्र अतिशीघ्र पूर्ण किया जाना आवश्यक है। रावतभाटा सड़क पर (राज्य राजमार्ग–33) नगर के मध्य से निकल रही है।

झालावाड़ सड़क के अतिरिक्त नगर की अन्य प्रमुख सड़को में डी.सी.एम. रोड़, रावतभाटा रोड़, रंगबाड़ी रोड़, जहां पर स्थानीय यातायात का भारी दबाव है। इसके अतिरिक्त कोटड़ी चौराहे से बजरंग नगर को जोड़ने के लिए I–आकार के फ्लाईओवर का निर्माण भी शीघ्र अतिशीघ्र पूर्ण किया जाना आवश्यक है। किशोरपुरा दरवाजा पुराने नगर एवं नये विकसित क्षेत्रों को जोड़ने वाला नगर कोट का एक महत्वपूर्ण दरवाजा है। यातायात को सुनियोजित करने हेतु किशोरपुरा सड़क से किशोरपुरा गेट के पश्चिम से गढ़ पैलेस तक 2 लेन एलिवेटेड सड़क बनायी गई है। साथ ही सूरजपोल दरवाजे के पास स्थित गुमानपुरा पुलिया को चौडी करने का कार्य भी किया गया है। इससे पुराने नगर एवं नये विकसित क्षेत्रों के बीच आवागमन सुचारू हुआ है।

कोटा नगर का विस्तार मुख्यतायाः उत्तर–दक्षिण दिशा में हो रहा है, जिससे रेलवे स्टेशन से कोटा नगर के दक्षिण में विकसित योजनाओं की दूरी 15–16 कि.मी. से भी अधिक हो गई है। अतः विभिन्न आवासीय क्षेत्रों एवं कार्यस्थलों से, रेलवे स्टेशन व बस स्टेशन की दूरी निरन्तर बढती जा रही है, जो कि परिसंचरण की दृश्टि से उचित नही है। पुराने नगर में गलियां काफी सकड़ी हैं व टेढ़ी–मेढ़ी है, जिसके कारण यातायात अवरूद्व होता है। पुराने नगर की तुलना में नई विकसित बस्तियों में सड़के अपेक्षाकृत अच्छे स्तर है। नगर के पुराने हिस्सों में गलियों/सड़को की चौड़ाई प्रायः 5 फीट से 10 फीट के बीच है तथा कोई निश्चित सड़क व्यवस्था नही है। रामपुरा बाजार, बजाजखाना, घन्टाघर, पुरानी सब्जीमंडी, शास्त्री मार्केट, इन्द्रामार्केट इत्यादि जगहों पर पार्किंग की उचित व्यवस्था नही है, जिससे इन क्षेत्रों में भीड़भाड़ रहती है एवं व्यस्त समय में वाहनों का निकलना दूभर हो जाता है। वर्तमान में नगर विकास न्यास के विशेश प्रयासों द्वारा पुराने शहर में पार्किंग व्यवस्था एवं सम्पर्क सुधार हेतु विकास कार्य किये जा रहे हैं।

(ब) बस तथा ट्रक टर्मिनल :–

वर्तमान में बस अड्डा नयापुरा क्षेत्र में चम्बल पुलिया के समीप कार्यरत है, जो कोटा के बढ़ते विकास को देखते हुए बहुत छोटा एवं असुविधाजनक है। इस बस स्टैण्ड के प्रवेश मार्ग पर चम्बल पुलिया से तेज घुमाव होने एवं राश्ट्रीय राजमार्ग–12 एवं 27 पर स्थित होने की वजह से यहां पर यातायात की बहुत समस्या रहती है। इस क्षेत्र में निजी बसों एवं जीपों के संचालन से यातायात समस्या और भी गम्भीर हो रही है। विद्यमान बस अड्डे के पहुंचमार्ग पर चम्बल पुलिया से तेज घुमाव होने के कारण यहां पर यातायात समस्यों पैदा

होती है, साथ ही उक्त भूमि पर बस अड्डा के विस्तार हेतु भी अतिरिक्त भूमि उपलब्ध नही है। अतः बस स्टेण्ड को स्थानान्तरित करने हेतु मास्टर प्लान में डी.सी.एम. सड़क पर प्रस्तावित स्थल पर नगर विकास न्यास की लगभग 3 एकड़ भूमि पर नया बस अड्डा निर्माणरत है।

नगर विकास न्यास, कोटा के द्वारा झालावाड़ सड़क पर यातायात नगर विकसित किया गया है, किन्तु गया है, किन्तु वहां पर परिवहन व्यवसाय अभी तक पूर्ण रूप से स्थानान्तरित नही होने के फलस्वरूप उक्त गतिविधियां नगर के मध्य से मुख्यतः डी.सी.एम. सड़क पर भी आंशिक रूप से संचालित हो रही हैं, जिससे नगर में यातायात संबंधी अनेक समस्याऐं पैदा हो रही है।

(स) रेंल एवं हवाई सेवा :–

कोटा, दिल्ली–मुम्बई बड़ी रेलवे लाईन पर एक प्रमुख जंक्शन है। मुख्य रेलवे स्टेशन नगर के उत्तर में स्थित है। नये विकसित क्षेत्रों की सुविधा के दृश्टिगत डकनिया रेलवे स्टेशन विकसित किया गया है, जहां पर कुछ ट्रेनों का ठहराव होता है। कोटा हवाई अड्डा स्थल पर पर्याप्त भूमि एवं हवाई पट्टी भी उपलब्ध नही है। नगर के मध्य में स्थित होने के कारण आसपास विकसित हो चुके है।

तालिका संख्या – 4.3.12

प्रस्तावित भू–उपयोग– कोटा 2031

क्रम सं.	विवरण	भू–उपयोग क्षेत्रफल (एकड़ में)	अतिरिक्त प्रस्तावित विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	नगरीयकरण योग्य क्षेत्र का प्रतिशत
1.	आवासीय	15716	36.92	32.04
2.	व्यावसायिक	937	2.20	1.91
3.	औद्योगिक	1300	3.05	2.65
4.	सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी	63	0.15	0.13
5.	आमोद – प्रमोद	1840	4.32	3.75
6.	सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक	3074	7.22	6.27

7.	हाईवे/अन्य डवलपमेन्ट कन्ट्रोल क्षेत्र	16357	38.42	33.35
8.	विशेष क्षेत्र	0	0	0
9.	परिसंचरण	3283	7.71	6.69
	कुल प्रस्तावित विकसित क्षेत्र	**42570**	**100**	**86.79**
10.	जलाशय	1726	-	3.52
11.	कृषि एवं पौधशालाऐं	1606	-	3.27
12.	सरकारी आरक्षित	3150	-	6.42
13.	राख निस्तारण	0	-	0
	नगरीयकरण योग्य कुल क्षेत्र	**49052**	**-**	**100**

स्त्रोत :– नगर नियोजन विभाग एवं सलाहकार अनुमान

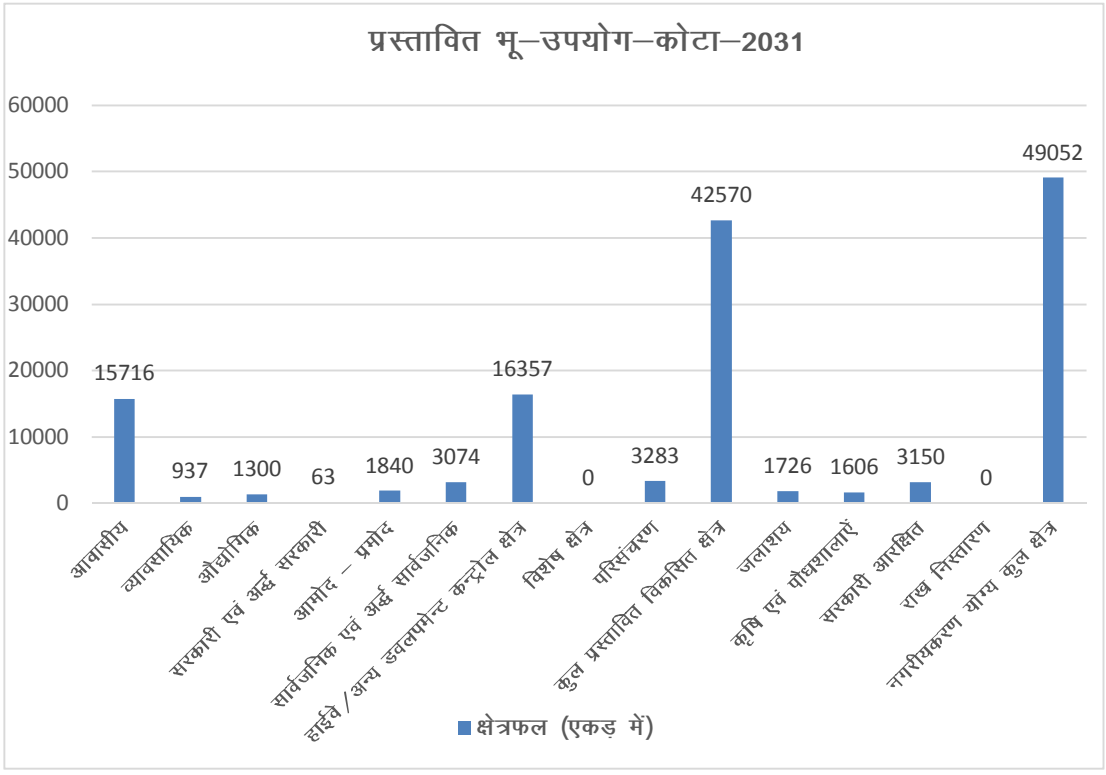

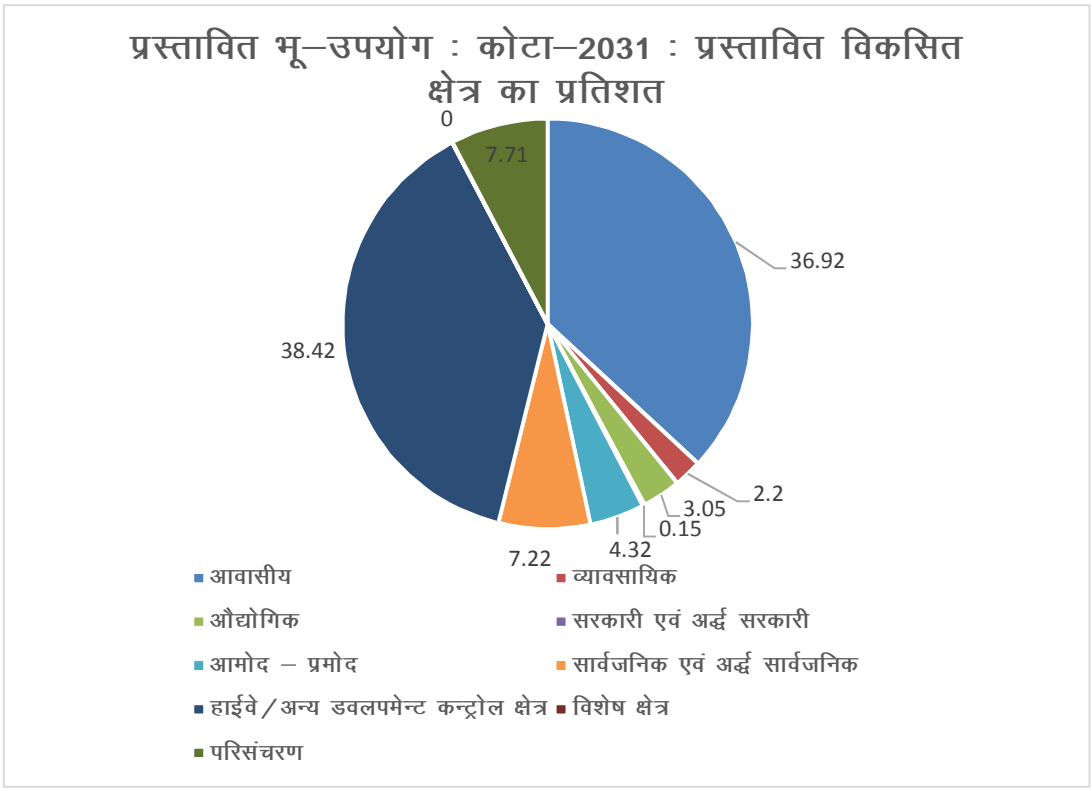

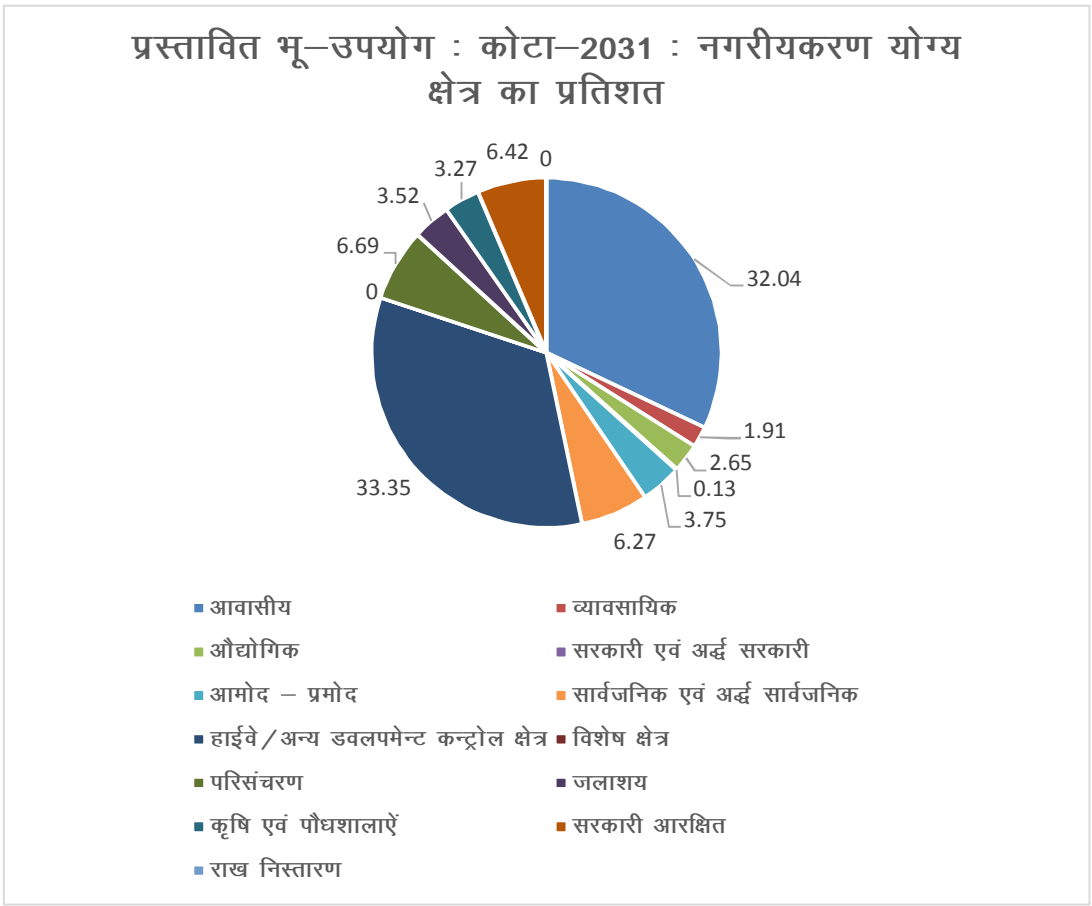

आलेख संख्या–8 : प्रस्तावित भू–उपयोग– कोटा 2031

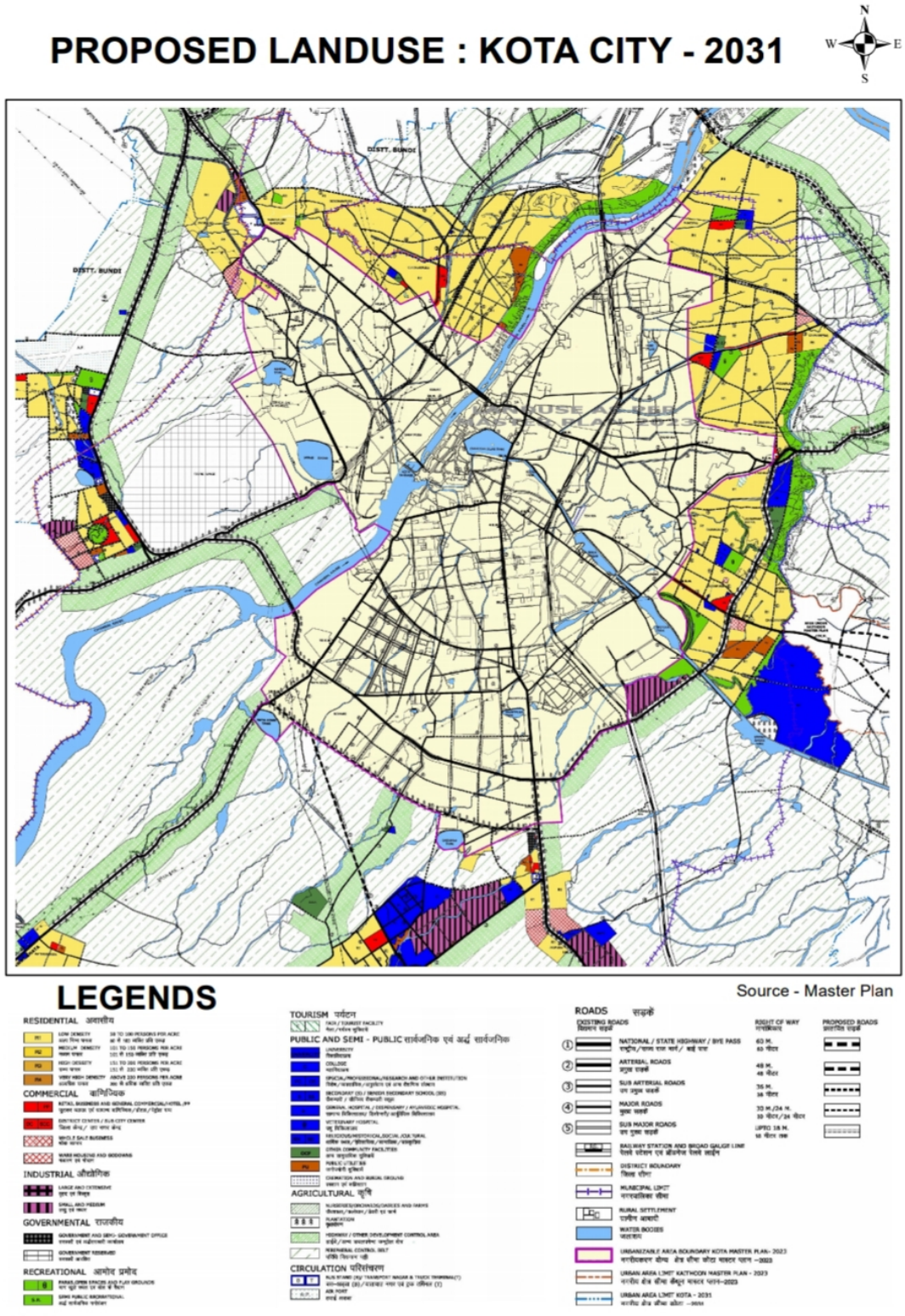

मानचित्र संख्या–8 : कोटा नगर – भूमि उपयोग (प्रस्तावित) 2031

4.4 नगर का वर्तमान स्वरूप तथा प्रभाव क्षेत्र :–

वर्तमान समय में कोटा नगरीय क्षेत्र को कुल 60 वार्डों में विभाजित किया गया है जो इस प्रकार हैं :

वार्ड संख्या 1 – बड़गाँव – नान्ता

इसका विस्तार कोटा–दिल्ली लाइन से चम्बल पुलिया पर मील संख्या 575 से नदी के किनारे दक्षिण की ओर चलकर कुन्हाड़ी पुलिया से कोटा–बून्दी रोड़ पर चलकर, कोटा डेम रोड़ से नगर–निगम सीमा के अन्तिम छोर तक तथा कोटा डेम रोड़ पर नगर–निगम सीमा के अन्तिम छोर से सीमा के सहारे उत्तर की ओर चलकर बून्दी रोड़ पर मील संख्या 6 पर क्रास करके, सीमा के उत्तर–पश्चिमी कोने से सीमा के सहारे रेलवे लाइन पर मील संख्या 575 तक है।

वार्ड संख्या 2 – थर्मल कॉलोनी – सकतपुरा

यह वार्ड नदी के किनारे–किनारे थर्मल कॉलोनी के नाले से नदी के किनारे दक्षिण की ओर चलकर नगर–निगम की सीमा के अन्तिम छोर तक, वहाँ से कोटा डेम रोड़ क्रॉसिंग तक, होते हुए सड़क के सहारे उत्तर की ओर चलकर जवाहर सागर की दक्षिणी सीमा से अभेड़ा रोड़ क्रासिंग से उत्तर की ओर रेलवे पुलिया तक तथा नहर पुलिया से नहर के सहारे पूर्व की ओर चलकर, थर्मल नहर पुलिया से उत्तर की ओर सड़क चलकर, थर्मल कॉलोनी की उत्तर सीमा से चम्बल नदी पर नाले तक स्थित है।

वार्ड संख्या 3 – शिवपुरा

यह वार्ड दादाबाड़ी छोटा चौराहा मकान नं. 3–सी–1, से दक्षिण की ओर चलकर सैक्टर नं. 5 व 6 के सामने होकर मकान नं. 4–एफ–1 तिराहे तक, यहाँ से पश्चिम की ओर सड़क–सड़क चलकर हरबंस लाल जी की बगीची से उत्तर चलकर मील संख्या 6 तक स्थित है। यहाँ से पश्चिम की ओर चलकर नदी के किनारे तक, यहाँ से नदी के किनारे–किनारे चलकर शमशान घाट किशोरपुरा तक यहाँ से नगर निगम गैरीज की उत्तरी सड़क से रावतभाटा रोड़ पर दक्षिण की ओर चलकर दादाबाड़ी छोटा चौराहा, मकान 3–सी–1 तक स्थित है।

इसी वार्ड में कोटा इंजीनियरिंग कॉलेज, शिवपुरा बस्ती, आर.ए.सी. बटालियन एवं आवासन मण्डल के मकान नसिया जी का जैन मन्दिर, डेयरी आदि भाग शामिल है।

वार्ड संख्या 4–टीचर्स कॉलोनी, महावीर नगर, विस्तार योजना

यह वार्ड रंगबाड़ी रोड़ पर टीचर्स कॉलोनी के मकान नं. 2–क–2 से दक्षिण की और चलकर नगर निगम की सीमा तक स्थित है। यहाँ से नगर निगम सीमा के सहारे–सहारे रावतभाटा रोड़ पर मील संख्या 6 तक है। यहाँ से उत्तर की ओर चलकर महावीर नगर विस्तार योजना के सेक्टर नं. 1 व 2 के उत्तर वाली सड़क से रंगबाड़ी रोड़ पर मकान नं. 2–व–2 तक स्थित है।

इस वार्ड में टीचर्स कॉलोनी, सेक्टर नं. 2, महावीर नगर विस्तार योजना, सेक्टर नं. 1 व 2 श्रीनाथपुरम् योजना आदि कोटा शहर के भाग शामिल हैं।

वार्ड संख्या 5 – महावीर नगर तृतीय सेक्टर नं. 5, 7

इस वार्ड में महावीर नगर प्रथम के मकान नं. एम.पी.बी. 23 से दक्षिण की ओर चलकर मकान नं. एम.पी.बी. 132 तक, यहाँ से गोबरिया बावड़ी रोड़ से पश्चिम की ओर चलकर रंगबाड़ी रोड़ पर चौराहे तक। यहाँ से उत्तर की ओर चलकर महावीर नगर तृतीय की डिस्पेंसरी के सामने होकर दक्षिण वाली सड़क पर चलते हुए मकान नं 5–जी–10 के सामने होकर आई.एल. कॉलोनी की बाउन्ड्री की दक्षिण सीमा से मकान नं. एम.पी.बी. 23 तक स्थित है।

इस वार्ड में स्वामी विवेकानन्द विद्यालय महावीर नगर प्रथम का पश्चिमी भाग एवं महावीर नगर तृतीय का सेक्टर नं. 5, 7 आदि भाग शामिल हैं।

वार्ड संख्या 6 – आई.एल. कॉलोनी – अनन्तपुरा

यह वार्ड कॉमर्स कॉलेज चौराहे के पास आई.एल. की सीमा के उत्तर–पूर्वी कोने से दक्षिण चलकर नगर–निगम सीमा के सहारे–सहारे महावीर नगर प्रथम से उत्तर की ओर चलकर पश्चिम में आई.एल. कॉलोनी की पश्चिमी सीमा के सहारे चलकर उत्तर–पश्चिमी कोने से पूर्व की ओर चलकर उत्तर–पूर्वी कोने तक स्थित है।

वार्ड संख्या 7 – इन्द्रप्रस्थ एरिया – डकनियां तालाब

उक्त वार्ड रेलवे लाईन पुलिया संख्या 202 से रेलवे लाईन के सहारे–सहारे मील संख्या 56 तक एवं यहाँ से नगर–निगम सीमा के सहारे–सहारे मील संख्या 6 तक, यहाँ से उत्तर की ओर चलकर कॉमर्स कॉलेज चौराहे से यू.आई.टी. दुकानों के उत्तर में होकर पूर्व की ओर चलकर शमशान के सामने रेलवे पुलिया नम्बर 202 तक स्थित है (चित्र 2.2)।

वार्ड संख्या 8 – इन्द्रागाँधी नगर –

यह कंसुआ नहर एक्यूडेक्ट से डी.सी.एम. चौराहे पर श्रीराम रेयंस की उत्तरी सीमा से डी.सी.एम. जाने वाली रेलवे लाइन एवं उत्तर की ओर रेलवे पुलिया के नाले तक तथा यहाँ नाले के सहारे–सहारे एक्यूडेक्ट तक विस्तृत है।

वार्ड संख्या 9 – उम्मेदगंज – श्रीरामनगर

यह वार्ड डी.सी.एम. चौराहे पर नहर पुलिया से कोटा कैथून रोड़ के सहारे–सहारे उम्मेदगंज को शामिल करते हुए, डी.सी.एम. को जाने वाली रेलवे लाईन के सहारे–सहारे श्रीराम फर्टीलाईजर्स की दक्षिणी सीमा से श्रीराम रेयंस डी.सी.एम. चौराहे पर नहर पुलिया तक सीमित है।

वार्ड संख्या 10 – कंसुआ

कंसुआ नहर एक्यूडेक्ट से नाले के सहारे–सहारे गत्ता फैक्ट्री की दक्षिणी सीमा से डी.सी.एम. रोड़ क्रॉस करके नहर पुलिया से नहर एक्यूडेक्ट तक। इसमें कंसुआ की सम्पूर्ण बस्ती सम्मिलित है।

वार्ड संख्या 11 – रायपुरा – देवली अरब – नयागाँव

इस वार्ड का विस्तार कोटा–बारां रोड़ पर पुलिस लाईन नगर–निगम की सीमा तक, नगर–निगम सीमा के सहारे–सहारे कैथून रोड़ तक तथा डी.सी.एम. चौराहे पर नहर पुलिया क्रास करके थेकड़ा के पास रोड़ पर फाटक तक है।

वार्ड संख्या 12 – बोरखेड़ा – पुलिस लाईन

यह रघुनाथ हॉस्टल तिराहे से पूर्व की ओर चलकर, माल–गोदाम फाटक क्रास करके महात्मा गाँधी कॉलोनी की दक्षिणी सीमा से नगर–निगम की सीमा एवं दक्षिण की ओर कोटा–बारां रोड़ तथा पुलिस लाइन चौराहे होते हुए अंटाघर चौराहे तक है।

वार्ड संख्या 13 – रंग तालाब–काला तालाब – खारी बावड़ी

रेलवे अस्पताल के नहर पुलिया से नगर–निगम सीमा के सहारे–सहारे काला तालाब, खारी बावड़ी शामिल करते हुए महात्मा गाँधी कॉलोनी की दक्षिणी सीमा से माल गोदाम फाटक से, मानस गांव जाने वाली सड़क पर नहर पुलिया तक स्थित है।

वार्ड संख्या 14 – पुरोहित जी की टापरी – सोफिया स्कूल

इसकी स्थिति रेलवे फाटक पर पी.डब्ल्यू.डी. प्रथम ऑफिस से पूर्व की ओर चलकर, रेलवे अस्पताल नहर पुलिया तक एवं दक्षिण की ओर चलकर माल गोदाम फाटक से मानस गांव जाने वाली सड़क पर नहर पुलिया तक यहाँ मोल गोदाम फाटक तक है (चित्र 2.2)।

वार्ड संख्या 15 – कासिम गली – भीमगंजमण्डी – गुरूद्वारा इलाका

इसका विस्तार कोटा रेलवे स्टेशन से दक्षिण की ओर रेलवे ऑफिस बंगले तक एवं माला रोड़ पार करके दरबार अहाते के उत्तर–पूर्वी कोने से विवेकानन्द पार्क के सामने होते हुए मनोज सिनेमा की मुख्य सड़क पर चलकर रंगपुर रोड़ पर चलते हुए कासिम गली जंक्शन तक है।

वार्ड संख्या 16 – रेलवे वर्कशोप कॉलोनी – तुल्लापुरा

यह कोटा जंक्शपन पर कोटा–बीना रेलवे लाइन के सहारे–सहारे नगर–निगम सीमा से रेलवे अस्पताल, रेलवे पुलिया तक विस्तृत है।

वार्ड संख्या 17 – भदाना

रंगपुर रोड़ नगर–निगम सीमा से पूर्व दिशा की ओर तथा रेलवे फाटक तक स्थित है।

वार्ड संख्या 18 – गोपाल मील – गणेशपुरा – कैलाशपुरा

इसका विस्तार चम्बल रेलवे पुलिया के पास नदी के सहारे–सहारे पूर्व दिशा की ओर चलकर रंगपुर रोड़ पर नगर निगम की सीमा तक एवं यहाँ से गोपाल मील के सामने होकर बीना रेलवे लाइन पर कोटा जंक्शन तक है।

वार्ड संख्या 19 – नेहरू नगर–संजय नगर – रेलवे माइक्रोवेव टावर

यह ार्ड चम्बल नदी से कोटा जंक्शन तक, यहाँ दक्षिण में चुंगी नाके होते हुए दानमल अहाते से कासिम गली से रंगपुर रोड़ तक स्थित है (चित्र 2.2)।

वार्ड संख्या 20 – डडवाड़ा – चौपड़ा फार्म – राधाकृष्ण मंदिर–माताजी का मंदिर

इस वार्ड का विस्तार माइक्रोवेव टावर के सामने पुलिया से दक्षिण चलकर डडवाड़ा में बालाजी के मंदिर के सामने होकर मृदा संरक्षण कार्यालय तक है।

वार्ड संख्या 21 – इमानुएल स्कूल–भगतसिंह कॉलोनी, आर्य समाज

यह वार्ड कल्पतरू भवन के सामने सड़क तिराहे से मुख्य सड़क चलते हुए, तारे स्कूल भीमगंजमण्डी होते हुए मनोज टॉकीज से आर्मी एरिया की उत्तरी सीमा तक एवं मृदा संरक्षण कार्यालय के उत्तर–पश्चिम से शांति नगर तक फैला है।

वार्ड संख्या 22 – खेड़ली दरबार कोठी – आदर्श कॉलोनी, इन्द्रा कॉलोनी

रेलवे लाईन के सहारे आगे माल गोदाम फाटक से आर्मी एरिया तक एवं सूचना केन्द्र तिराहे पर खेड़ली फाटक से चम्बल नदी के किनारे होते हुए मनोज टॉकीज तिराहे तक स्थित है।

वार्ड संख्या 23 – खेड़ली–सुभाष कॉलोनी – जननायक, गांवड़ी – दोस्तपुरा

उक्त वार्ड आर.एस.ई.बी. कार्यालय खेड़ली से मुख्य सड़क पर नेहरू पार्क, सर्किट हाउस चौराहे, कलेक्ट्री चौराहे व बृजराज भवन से चंबल नदी एवं खेड़ली में पुराने पम्पिंग स्टेशन तक विस्तृत है।

वार्ड संख्या 24 – नवरंग होटल – पी.एन.टी. कार्यालय – हरिजन बस्ती

यह वार्ड कलेक्ट्री चौराहे से एम.बी.एस. अस्पताल होते हुए नयापुरा सब्जीमंडी से बृजराज भवन तक विस्तृत है।

वार्ड संख्या 25 – बस स्टेण्ड – संजय नगर बस्ती – सब्जीमंडी, मालियों का चौक

यह वार्ड नयापुरा में विवेकानन्द चौराहे से होते हुए बस स्टेण्ड के पास चंबल नदी पुलिया से शमशान घाट तक विस्तृत है।

वार्ड संख्या 26 – एम.बी.एस. अस्पताल – सरस्वती कॉलोनी, कालपुरा – लक्की बुर्ज

इस वार्ड के अन्तर्गत कलेक्ट्री चौराहे से सर्किट हाउस तिराहा होते हुए बाल माध्यमिक विद्यालय, गोरधनपुरा नहर पुलिया, बरकत उद्यान, जैन दिवाकर अस्पताल, मैगजीन स्कूल व देश की धरती के सामने होते हुए लाड़पुरा गेट तक का क्षेत्र सम्मिलित है।

वार्ड संख्या 27 – कुन्हाड़ी – रोड़वेज वर्कशोप – पॉवर हाउस

इसका विस्तार चम्बल पुलिया से नदी के सहारे थर्मल कॉलोनी होते हुए नहर की पुलिया तक तथा यहाँ से रेलवे पुलिया तक है।

वार्ड संख्या 28 – गुलाब बाड़ी – शीतला माता मंदिर, मैगजीन स्कूल

यह वार्ड जैन दिवाकर से जयपुर गोल्डन, विक्रम चौक होते हुए लाड़पुरा में कर्बला घाट तक तथा देश की धरती प्रेस के सामने होकर समता भवन तक फैला है (चित्र 2.2)।

वार्ड संख्या 29 – निगम कार्यालय – रामपुरा महारानी, महात्मा गाँधी स्कूल

इस वार्ड का विस्तार लाड़पुरा बाजार से दक्षिण की ओर रामपुरा बाजार होते हुए शिवदास घाट की गली से नदी तक है।

वार्ड संख्या 30 – अनाज कटला – मोची कटला – मुसाफिर खाना, मोहरापाड़ा

इस वार्ड की स्थिति रामपुरा मुख्य सड़क पर शिवदास घाट की गली से बजाजखाना होते हुए चौथमाता के सामने चिड़ीमारों के नोहरे से बम्भोला घाट तक है।

वार्ड संख्या 31 – चन्द्रघटा–बम्भोला घाट – हरिजन बस्ती

यह वार्ड मकबरा पुलिस थाने से पाटनपोल गेट होते हुए कोट के सहारे–सहारे भट्ट जी घाट तथा नदी के सहारे बम्भोला घाट तक विस्तृत है।

वार्ड संख्या 32 – भट्ट जी घाट – राधा विलास बस्ती

इस वार्ड का विस्तार भट्ट जी घाट से लाल बुर्ज, कैथूनीपोल गेट, टिपटा चौराहे होते हुए गढ़ तक है।

वार्ड संख्या 33 – किशोरपुरा – पुरानी बस्ती – दशहरा मैदान, चम्बल रेस्ट हाऊस

यह वार्ड किशोरपुरा दरवाजे से सी.ए.डी. चौराहे होते हुए ट्राफिक उद्यान की उत्तरी सीमा से चम्बल रेस्ट हाऊस तक फैला है।

वार्ड संख्या 34 – शास्त्री नगर – वक्फ नगर

उक्त वार्ड सी.ए.डी. चौराहे से दक्षिण की ओर मोती महल, जैन मंदिर व चिल्ड्रन स्कूल के सामने होकर आर.ए.सी. तिराहे होते हुए उत्तर की ओर चम्बल गार्डन तक फैला है।

वार्ड संख्या 35 – पी.एन.टी. कॉलोनी – दादाबाड़ी आवासन मण्डल – दादाबाड़ी विस्तार योजना

यह वार्ड दादाबाड़ी तिरो से दक्षिण की ओर मोदी कॉलेज के उत्तर वाली सड़क से दादाबाड़ी विस्तार योजना, चौराहे से पी.एन.टी. कॉलोनी तक स्थित है।

वार्ड संख्या 36 – बालाकुंड–बसंत विहार – गणेश तालाब

यह वार्ड रंगबाड़ी रोड़, मोदी कॉलेज से दक्षिण की ओर केशवपुरा चौराहा, बसंत विहार तिराहा होते हुए रावतभाटा रोड़, गणेश तालाब योजना तक फैला है।

वार्ड संख्या 37 – केशवपुरा बस्ती – टीचर्स कॉलोनी

यह वार्ड केशवपुरा चौराहे से दक्षिण की ओर टीचर्स कॉलोनी, रावतभाटा रोड़ तथा यहाँ से उत्तर की ओर डेयरी तक विस्तृत है।

वार्ड संख्या 38 – महावीर नगर द्वितीय – महावीर नगर तृतीय

इस वार्ड का विस्तार महावीर नगर द्वितीय से पूर्व की ओर आई.एल. बाऊन्ड्री तक, यहाँ से दक्षिण की ओर महावीर नगर तृतीय तक है।

वार्ड संख्या 39 – कॉमर्स कॉलेज – तलवण्डी – आवासन मंडल कॉलोनी

यह वार्ड कॉमर्स कॉलेज चौराहे से दक्षिण की ओर तलवण्डी आवासन मण्डल कॉलोनी तक स्थित है।

वार्ड संख्या 40 – तलवण्डी ए से सी सेक्टर–हाऊसिंग बोर्ड

झालावाड़ रोड़ पर तलवण्डी तिराहे से कॉमर्स कॉलेज, केशवपुरा चौराहे तक तथा यहाँ से डी.ए.वी. स्कूल के सामने होकर चौधरी नर्सिंग होम के सामने तक इस वार्ड का विस्तार है।

वार्ड संख्या 41 – विज्ञान नगर सेक्टर एक

विज्ञान नगर से झालावाड़ मुख्य सड़क तक पूर्व की ओर पार्क से सब्जीमण्डी तिराहे से पूर्व की ओर पुराने थाने के भवन तक यह वार्ड विस्तृत है।

वार्ड संख्या 42 – संजय गाँधी नगर – विज्ञान नगर

यह वार्ड आई.टी.आई. छात्रावास, रेलवे लाईन क्रासिंग तक लाईन के सहारे–सहारे रेलवे पुलिया तक, पुराने थाने से पी.एन.टी. कॉलोनी को शामिल करते हुए विज्ञान नगर मस्जिद के उत्तर में होकर संजय नगर रोड़ तक फैला हुआ है।

वार्ड संख्या 43 – गोविन्द नगर – प्रेम नगर – सूर सागर

यह वार्ड थेकड़ा नगर पुलिया से नहर के सहारे सूर सागर होते हुए पुलिया तक, यहाँ से डी.सी.एम. रोड़ क्रॉस करके गत्ता फैक्ट्री के दक्षिण से एस.एफ.एस. चौराहे से पुलिया के पास होते हुए नाले के सहारे रेलवे लाइन तक विस्तृत है।

वार्ड संख्या 44 – छावनी – रामचन्द्रपुरा

इस वार्ड का विस्तार छावनी, सब्जीमण्डी से आमली हाऊस व पाल हाऊस के सामने होकर एक मीनार मस्जिद होते हुए रेलवे पुलिया तथा कैथून रोड़ पुलिया तक है।

वार्ड संख्या 45 – भोई मोहल्ला – पॉल हाऊस – कोलियों का मंदिर

इस वार्ड की स्थिति मुख्य सड़क छावनी पर पश्चिम वाली गली से उत्तर की ओर छावनी शमशान घाट तक, यहाँ से तालाब के किनारे–किनारे हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, रामचन्द्रपुरा से दक्षिण की ओर चलकर एक मीनार मस्जिद रोड़ से पॉल हाऊस तक तथा मुख्य सड़क छावनी से जैन मंदिर व गुरूद्वारे के सामने तक विस्तृत है।

वार्ड संख्या 46 – तिलक नगर – निगम कॉलोनी – कच्ची बस्ती, आर्य समाज

यह वार्ड मरूधर होटल के सामने तिराहे से बजरंग दाल मील रोड़ से विकास भवन के उत्तर में होकर तालाब के किनारे छावनी चौराहे तक फैला है।

वार्ड संख्या 47 – सब्जीमण्डी – भोई मोहल्ला – अब्दुल वहीद मेमोरियल अस्पताल

इस वार्ड का विस्तार गोरधनपुरा चौराहे से सब्जीमण्डी चौक होते हुए मंदिर हनुमान जी तक, यहाँ से तालाब के सहारे विकास भवन के उत्तर में कोटा, झालावाड़ रोड़ तक है।

वार्ड संख्या 48 – अग्रवालों की धर्मशाला – हनुमान जी का मंदिर

यह वार्ड गोरधनपुरा नहर पुलिया से कोटरी तालाब, हनुमान जी का मंदिर, सब्जीमण्डी चौक होते हुए कोटा–झालावाड़ रोड़ तक फैला हुआ है।

वार्ड संख्या 49 – आवासन मण्डल, वल्लभबाड़ी – गुमानपुरा, पुरानी आबादी

यह वार्ड छत्र विलास तालाब के पास महादेव मंदिर से दक्षिण की ओर गोरधनपुरा चौराहे, गुमानपुरा नहर पुलिया तक तथा यहाँ से नहर के किनारे–किनारे तालाब तक स्थित है।

वार्ड संख्या 50 – आर्य समाज रोड़ – हिन्दू धर्मशाला, कोतवाली – अग्रसेन बाजार

यह वार्ड लाड़पुरा में दीगोद वालों की हवेली से विक्रम चौक ट्राफिक पुलिस ऑफिस, सरोवर टाकीज होते हुए गीता भवन के सामने से सब्जीमण्डी रोड़ पर मोहन सिनेमा के सामने होकर बजाजखाना तक विस्तृत है।

वार्ड संख्या 51 – इन्द्रा मार्केट – भैरू गली गुदड़ी

सब्जीमण्डी में पुराना मोटर स्टेण्ड होते हुए लाल बुर्ज से पाटनपोल गेट एवं सर्राफा बाजार तक इस वार्ड का विस्तार है।

वार्ड संख्या 52 – कोलीपाड़ा – मोहन सिनेमा – लुहारों का मंदिर

यह वार्ड पुरानी सब्जीमण्डी में सुंदर धर्मशाला से मोहन टाकीज, सूरजपोल गेट होते हुए गंज शहीदां के सामने होकर लुहारों के मंदिर तक स्थित है।

वार्ड संख्या 53 – बाबरापाड़ा – पलायथा हाउस – रामतलाई

उक्त वार्ड पुराने मोटर स्टेण्ड से लुहारों के मंदिर, बालिका हायर सैकेण्डरी स्कूल, सूरजपोल डिस्पेंसरी, सूरजपोल गेट, साबरमती कॉलोनी, कैथूनीपोल गेट होते हुए लाल बुर्ज तक फैला है।

वार्ड संख्या 54 – नीलकंठ महादेव – अफीम गोदाम, साबरमती कॉलोनी

गढ़ चौराहे से कैथूनीपोल गेट, साबरमती कॉलोनी, नहर पुलिया, गुमानपुरा पुलिया से नहर के सहारे–सहारे पश्चिम की ओर चलकर किशोरपुरा गेट तक यह वार्ड फैला है।

वार्ड संख्या 55 – बल्लभनगर – सिंधी कॉलोनी – चम्बल कॉलोनी, रामद्वारा

यह वार्ड गुमानपुरा नहर पुलिया से दक्षिण की ओर घोड़े वाले बाबा, एरोड्राम बाऊन्ड्री, सी.ए.डी. चौराहे होते हुए किशोरपुरा पुलिया तक स्थित है।

वार्ड संख्या 56 – जवाहर नगर – तलवंडी–सी सेक्टर, सी.ए.डी. कार्यालय

इस वार्ड का विस्तार एरोड्राम चौराहे से कोटा–झालावाड़ रोड़ पर तलवंडी तिराहे, चौधरी नर्सिंग होम, डी.ए.वी. स्कूल, रंगबाड़ी रोड़, सी.ए.डी. चौराहे, यू.आई.टी. कार्यालय तक है।

वार्ड संख्या 57 – शॉपिंग कॉम्प्लेक्स – जैन मंदिर टेलिफोन कार्यालय

ई.एस.आई. अस्पताल के पास विज्ञान नगर शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के उत्तर वाली सड़क से सब्जीमंडी तिराहे तक इस वार्ड का विस्तार है।

वार्ड संख्या 58 – छत्रपुरा – मोटर मार्केट – पोलोटेक्निक गार्डन

यह वार्ड एरोड्राम से आई.टी.आई. भवन, संजय नगर सड़क पर चलकर विज्ञान नगर मस्जिद के सामने ई.एस.आई. अस्पताल तक फैला हुआ है।

वार्ड संख्या 59 – तलाईपाड़ा – दुग्ध फैक्ट्री – नई अनाज मण्डी गुमानपुरा थाना

कैथून रेलवे पुलिया से डी.सी.एम. पुलिया, आई.टी.आई. के सामने, ऐरोड्राम चौराहे, छावनी चौराहे होते हुए कैथून रोड़ तक इस वार्ड की स्थिति है।

वार्ड संख्या 60 – न्यू कॉलोनी – शॉपिंग सेन्टर – टीचर्स कॉलोनी

इस वार्ड का विस्तार गोरधनपुरा चौराहे से एरोड्राम चौराहे, घोड़े वाले बाबा चौराहे होकर गुमानपुरा नहर पुलिया तक है।

वर्ष 2020 में नगर निगम ने कोटा को उतर तथा दक्षिण में विभाजित कर कोटा उतर को 70 वार्ड़ों में बाँटा गया हैं तथा कोटा दक्षिण को 80 वार्ड़ों में विभाजित किया गया हैं।

तालिका संख्या – 4.4.1

कोटा नगर में वार्ड़ो के अनुसार जनसंख्या (2011)

वार्ड संख्या	वार्डो के अनुसार जनसंख्या			वार्ड संख्या	वार्डो के अनुसार जनसंख्या		
	कुल जनसंख्या	पुरूष	स्त्री		कुल जनसंख्या	पुरूष	स्त्री
1.	27,764	14,518	13,246	31.	16,206	8,459	7,747
2.	22,992	11,950	11,042	32.	24,016	12,765	11,251
3.	13,840	7,186	6,654	33.	17,563	9,308	8,255

4.	16,362	8,556	7,806	34.	18,904	9,963	8,941
5.	33,521	17,878	15,643	35.	16,410	8,686	7,724
6.	16,761	9,037	7,724	36.	15,367	7,862	7,505
7.	28,455	15,149	13,306	37.	13,540	7,090	6,450
8.	31,592	16,856	14,736	38.	15,044	7,857	7,187
9.	29,192	15,834	13,358	39.	31,037	16,297	14,740
10.	13,175	7,055	6,120	40.	17,018	8,849	8,169
11.	11,511	6,230	5,281	41.	18,085	9,434	8,651
12.	14,112	7,448	6,664	42.	21,051	10,975	10,076
13.	19,855	10,590	9,265	43.	10,628	5,591	5,037
14.	22,812	12,096	10,716	44.	18,882	9,781	9,101
15.	16,628	8,655	7,973	45.	7,202	3,821	3,381
16.	14,910	7,760	7,150	46.	23,680	13,166	10,514
17.	17,357	9,734	7,623	47.	10,056	5,211	4,845
18.	12,384	6,534	5,850	48.	11,558	6,017	5,541
19.	17,826	9,439	8,387	49.	10,410	5,406	5,004
20.	13,473	6,888	6,585	50.	12,516	6,484	6,032
21.	15,100	7,851	7,249	51.	13,964	7,126	6,838
22.	18,861	9,650	9,211	52.	11,291	5,894	5,397
23.	12,933	6,721	6,212	53.	13,619	6,985	6,634
24.	10,782	5,607	5,175	54.	10,817	5,612	5,205
25.	16,118	8,531	7,587	55.	14,313	7,965	6,348
26.	12,117	6,305	5,812	56.	19,452	10,746	8,706
27.	13,310	6,980	6,330	57.	14,876	8,023	6,853
28.	10,401	5,474	4,927	58.	13,382	6,958	6,424
29	17,919	9,685	8,234	59.	11,727	5,961	5,766
30.	14,998	7,928	7,070	60.	12,019	6,184	5,835

स्त्रोतः– जनगणना रिर्पोट कोटा 2011

KOTA CITY -LOCATION MAP (WARD -WISE)

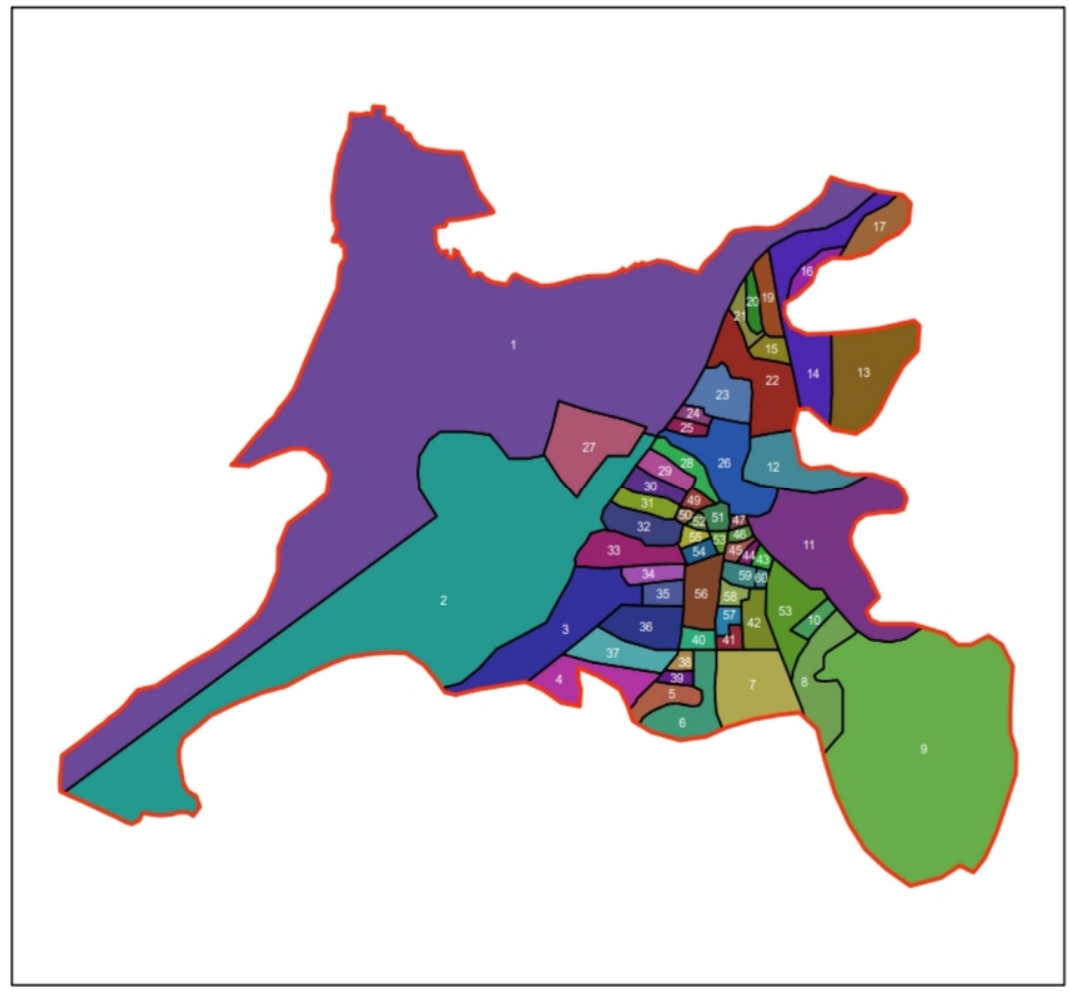

मानचित्र संख्या–9 : कोटा नगर – वार्ड़ अवस्थिति

प्रभाव क्षेत्र :–

प्रत्येक बस्ती, चाहे वह छोटी हो या बड़ी, गांव हो या कस्बा, नगर हो या महानगर, केन्द्रीय कार्यो द्वारा अपने समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करती है। वह आर्थिक व सामाजिक कार्यो का संग्रह केन्द्र होती है। बड़ी बस्तीयों में ऐसे कार्यो की संख्या अधिक होती है जबकि छोटी बस्ती में कम। नगर या कस्बा ऐसी सेवाऐं प्रदान करता है जो न केवल उसमे निवास करने वाले व्यक्ति ही उनका लाभ उठाते है, बल्कि समीपवर्ती क्षेत्र के लोग भी उनकी सेवाओं का लाभ प्राप्त करते है। डिकिन्सन ने कहा है कि नगर का किसी स्थान पर बनें रहना नगर के उन कार्यो तथा सेवाओं पर निर्भर करता है जिनके द्वारा वह अपने समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करता है।

नगर कभी भी अलग–थलग रूप से नही रह सकता। वह अपने समीपवर्ती चारों ओर से घिरे प्रदेश पर भोजन, दुध, साग–सब्जी, फल आदि के लिए निर्भर करता है। उससे अपने व्यापारिक संस्थानों के लिए थोक व फुटकर व्यापारी, औद्योगिक संस्थानों के लिए कार्यकर्ता व कच्चा माल प्राप्त करता है। इस क्षेत्र में अनेक व्यक्ति प्रशासनिक, यातायात आदि कार्यो के लिए नगर में आते है। इस प्रकार प्रत्येक नगर अपने चारों ओर के क्षेत्र से गहरा संबंध रखता है। वह अपने इस क्षेत्र की सेवा करता है तथा उसके बदले में कुछ सेवाऐं प्राप्त करता है। मार्क जेफरसन नगर ओर उसके समीपवर्ती क्षेत्र के संबंधो का विश्लेशण करते हुए कहता है कि 'नगर स्वयं जन्म नही लेते बल्कि समीपवर्ती देहात क्षेत्र ही उसको कुछ ऐसे कार्य करने के लिए जन्म देता है जिन कार्यो को उस देहात क्षेत्र के मध्य में स्थित बस्ती द्वारा ही किया जा सकता है।

नगर अपने देहात क्षेत्र के अतिरिक्त उत्पादन पर निर्भर करते है। यें यातायात मार्गो के केन्द्र होते है तथा इस देहात क्षेत्र से यातायात मार्गो द्वारा जुड़े होते है। यहां से इस क्षेत्र के चारों दिशाओं में मार्ग फैले रहते है जिनके द्वारा नगर इस क्षेत्र की सेवा करता है। उसक प्रमुख उद्देश्य ऐसे कार्यो को विकसित करना है जिनके द्वारा वह अपने इस देहात या समीपवर्ती क्षेत्र पर प्रभाव डाल सके। नगर अपने कार्य, व्यापारिक, औद्योगिक प्रशासकिय, सांस्कृतिक करता है जो न केवल नगरवासियों के लिए होते है बल्कि समीपवर्ती देहात क्षेत्र के लिए भी होते है। इन कार्यो द्वारा सेवा करने के बदले में वह अपनी प्राथमिक आवश्यकता की वस्तुऐं प्राप्त करता है। उदाहरणार्थ नगर को भोजन, साक–सब्जी की आवश्यकता होती है जो वह अपने क्षेत्र से प्राप्त करता है तथा बदले में कारखानों मे बना तैयार माल तथा उच्च कार्यो द्वारा इस देहात क्षेत्र की सेवा करता है। इस प्रकार नगर व उसका समीपवर्ती क्षेत्र आपस में गहरा संबंध रखते है। जितने देहात क्षेत्र से नगर का संबंध

होता है उस क्षेत्र को नगर का प्रभाव क्षेत्र कहते है। यद्यपि नगर अपने कुछ कार्यो द्वारा दूरवर्ती क्षेत्र से भी संबंध रखता है, उदाहरण के तौर पर नगर में उत्पादित माल का विक्रय क्षेत्र विश्वव्यापी भी हो सकता है, इस कार्य के आधार पर नगर का प्रभाव क्षेत्र नही आका जा सकता। नगर का प्रभाव क्षेत्र वह क्षेत्र होता है, जो उसके चारों ओर सतत् रूप से फैला होता है। यह क्षेत्र नगर से सामाजिक–आर्थिक दृश्टि से संबंध होता है, नगर भी उस पर निर्भर करता है। इस प्रकार यह प्रभाव क्षेत्र दो आकर्शण बिन्दुओं का मिश्रण है, एक तो नगर जो केन्द्र बिन्दु के रूप में होता है, तथा दूसरा नगरीय प्रदेश, जो एक स्थानिक इकाई होता है, जिस पर नगर का प्रभाव विस्तृत होता है। यह दोनों बिन्दु स्वानिक सत्ता बनाते है, जिसको ग्रन्धित प्रदेश का नाम भी दिया जाता हैं।

उपरोक्त संदर्भ में देखने पर पता चलता है कि कोटा नगर का चूंकि जुडाव परिवहन माध्यम बेहतर ढंग से विकसित है। अतः यहां व्यापारिक गतिविधियां दूर–दूर तक के क्षेत्रों में अर्थात राश्ट्रीय स्तर तक विभिन्न राज्यो मे भी फैली हुई है। जैसे उद्योगों के लिए आने वाला सामान कोचिंग के लिए कोटा आने वाले विद्यार्थी व दैनिक आवश्यकताओं में फूल, फल , सब्जी, दुध आदि दुर–दुर के क्षेत्रों से भी कोटा मे खपत हेतु आते है।

अध्याय – 5

बून्दी में नगरीकरण की स्थिति तथा प्रवृत्तियाँ

बून्दी में नगरीकरण की स्थिति तथा प्रवृत्तियाँ :–

बून्दी नगर राजस्थान तथा हाड़ोती क्षेत्र का एक सुन्दर नगर है जो बहुत ही खुबसूरत उच्चावच स्थितियों बीच स्थापित है यदपि कोटा नगर से पूर्व बून्दी नगर की स्थापना हो चुकी थी परन्तु यहॉ नगरीकरण की प्रक्रिया कोटा नगर से तुलनात्मक रूप में धिमी रही है अतः कोटा नगर की अपेक्षा बून्दी नगर का विकास भी इन कारणों से प्रभावित रहा है। यहॉ नगरीकरण की प्रक्रिया निम्नलिखित भीशर्कों में वर्णित है।

5.1 ऐतिहासिक परिपेक्ष :–

बून्दी शहर, बून्दा की नाल नामक संकरी घाटी में स्थापित है। मीणा सरदार बून्दा के नाम पर इसका नामकरण किया गया है। सन 1342 ई. में राव देवा (देवी सिंह) हाड़ा ने इसे मीणाओं से छीनकर घाटी के मध्य बून्दी नगर बसाकर उसने यहॉ अपना राज्य स्थापित किया। राव देवा (देवी सिंह) वर्तमान बून्दी का संस्थापक था। हाड़ा वंश के राव राजा बारसिंह ने 1354 ई. में बून्दी के प्रसिद्व किले का निर्माण कराया था। किले का निर्माण ऊंची पहाड़ियों पर बून्दी के उत्तर में कराया गया है। अठारहवीं शताब्दी में प्रथम परकोटे का निर्माण दरवाजों के साथ किया गया। सन 1885 ई. में रानी जी की बावड़ी व इसके परकोटे का निर्माण, खोजागेट व लंकागेट का भी निर्माण करवाया गयां। बून्दी पर स्वतंत्रता प्राप्ति तक लगभग 24 राव राजाओं ने शासन किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1947 में बून्दी का भारतीय संघ में विलय हो गया। मार्च 1948 में बून्दी और दक्षिणी–पूर्वी राजस्थान की अन्य रियासतें तत्कालीन संयुक्त राजस्थान में सम्मिलित हो गई। सन् 1950 में इसे वर्तमान राजस्थान का अंग बनाकर पूर्ण जिले का स्तर प्रदान किया गया। महाराव ईश्वरी सिंह (1927–1945) के शासन काल में परकोटे के अन्दर महत्वपूर्ण भवनों जैसे, कलेक्ट्रेट, अस्पताल, सिविल लाईन्स इत्यादि का निर्माण किया गया। आजादी के बाद चम्बल परियोजना के प्रथम चरण के पूर्ण होने पर इस क्षेत्र में नये आर्थिक अवसर उपलब्ध हुये। औद्योगिक क्षेत्र व अनाज मण्डी का निर्माण हुआ। नये आवासीय क्षेत्रों का विकास हुआ। शहर का विकास दक्षिण और पूर्व में परकोटे के बाहर हुआ। नब्बे के दशक में शहर में रेलवे लाइन (कोटा–चित्तौड़) आने के बाद दक्षिण दिशा में सिलोर मार्ग पर भी विकास प्रारम्भ हुआ है। चित्तौड़ सड़क पर कई औद्योगिक ईकाइयों का निर्माण हुआ है, जबकि नैनवॉ सड़क पर कृषि भूमि पर कई आवासीय कॉलोनियों का विकास हुआ है।

अपने साहित्यिक एवं सांस्कृतिक वैभव के लिए विख्यात बून्दी जिला छोटी काशी अथवा द्वितीय काशी के नाम से जाना जाता है। साहित्यिक व सांस्कृतिक विरासत के साथ– साथ

बून्दी जिलें को अपने गौरवमयी ऐतिहासिक अतीत के लिए वीरभूमि कहलाने का गौरव प्राप्त है।लगभग सात सौ वर्शों तक हाड़ा शासकों की कर्मभूमि रहा बून्दी जिला वर्ष 1242 से पूर्व मीणा सरदार जेता के अधीन एक छोटा सा गॉव था। बाम्बावदा नरेश राव देवा ने इस राज्य को 24 जून 1242 को मीणा सरदार जेता को परास्त कर अपने अधिकार में ले लिया। हाड़ा शासकों ने इस राज्य का 1242 से 1947 तक काफी विस्तार किया। बून्दी जिले को प्राचीन काल में अरावली श्रेणी की तलहटी में स्थित होने के कारण बून्दा का नाल नाम से जाना जाता था। बून्दा मीणा अन्तिम मीणा सरदार जैता मीणा का पितामह था। जिस समय राव देवा ने बून्दी पर अधिकार किया उस समय बून्दी राज्य के अधीन मात्र बारह गॉव थे। हाड़ा शासकों ने बून्दी राज्य का विस्तार वर्तमान कोटा,बॉरा,सवाईमाधोपूर व झालावाड़ तक किया। बून्दी राज्य के इतिहास की कुछ प्रमाणिक जानकारियॉ सूर्यमल्ल मिश्रण कृत वंश भास्कर व वंश प्रकाश से मिलती है।

बून्दी राज्य के इतिहास को तीन प्रमुख कालों में विभक्त किया जा सकता है –

1.स्थापना – 1242 से 1818 ई.

2.ब्रिटिश प्रभुत्व – 1818 से 1947 ई.

3.स्वतंत्रता के पश्चात –1947 से वर्तमान

1.स्थापना – (1242 से 1818 ई.)

बून्दी पर हाड़ा शासकों का शासन वर्ष 1242 से प्रारम्भ होता है। जबकि राव देवा ने अन्तिम मीणा सरदार जैता को परास्त कर बून्दी को अपने अधिकार में ले लिया। राव हाड़ा शासकों के कारण ही कोटा–बून्दी तथा इनके समीपवर्ती भाग को हाड़ावाटी या हाड़ौती एवं इसके शासकों को राव के नाम से जाना जाता था।

इस अवधि में बून्दी पर शासन करने वाले शासकों में राव देवा,राव बेरीशाल, राव बरसिंह,राव सुरजन,राव विश्णु सिंह,राव रत्न सिंह,राव शत्रुशाल, राव बुद्धसिंह व राव उम्मेद सिंह प्रमुख थे।

राव बरसिंह (1336–1393) ने 1411 ई. में बून्दी के प्रसिद्ध तारागढ़ दुर्ग की नीव रखी। राव सुरजन (1554–1585) ने अकबर के रणथम्भौर घेरे के समय अकबर से संधि की । राव रतन सिंह (1607–1631) जहॉगीर व शाहजहॉ के दरबार में मनसबदार थे। राव शत्रुशाल (1631–1658) ने दारा की और से 1658 में सामूगढ़ के उतराधिकार युद्ध में भाग लिया। राव बुद्ध सिंह (1695–1738) ने भी 1707 में शाहजादा आजम के विरूद्ध मुअज्जम की और

से उतराधिकार युद्ध में भाग लिया। इसके पश्चात 1748 से 1770 ई. तक 22 वर्शों तक राव उम्मेद सिंह ने शासन किया।

2.ब्रिटिश प्रभुत्व – 1818 से 1947 ई.

1770 से 1821 ई. के मध्यांतर में बून्दी पर क्रमशः राव राजा अजीत सिंह (1770–1773 ई.) तथा राव विश्णु सिंह (1773–1821) ने शासन किया। राव विश्णु सिंह ने 1818 ई. में अंग्रेजो से संधि कर ली । 1818 से 1947 ई. तक बून्दी राज्य का इतिहास राजनीतिक दृश्टि से स्थायी रहा। इस काल के प्रमुख शासक राव विश्णुसिंह, राव रामसिंह,राव रधुवीरसिंह,राव ईश्वरी सिंह थे। राव रामसिंह (1821–1889) का काल बून्दी का स्वर्णयुग कहलाता है। उनके शासन काल में आय में वृद्धि, नये कल्याणकारी कानून , भूमि सुधार,साहित्य– शिक्षा में वृद्धि हुई। राव रधुवीर सिंह (1889–1927) को अपनी श्रेश्ठ शासन व्यवस्था हेतु अंग्रेजी सरकार से कई उपाधियॉ मिली।

प्रशासनिक परिवर्तनों का अध्ययन करने से यह तथ्य स्पश्ट होता है कि प्रशासन तीव्रता से पुरातन व्यवस्था को समाप्त करता हुआ आधुनिक युग की व्यवस्था से समायोजन स्थापित कर रहा था। इस काल में प्रशासन का विकेन्द्रीकरण हुआ। राजकीय सेवाओं के नियम निर्धारितकिए गए, पुलिस विभाग का गठन हुआ तथा सेना व न्याय जैसी सेवाओं को आधुनिक बनाने के प्रयास किए गए।

3.स्वतंत्रता के पश्चात –1947 से वर्तमान

ब्रिटिश साम्राज्य में प्रान्तों का निर्माण केवल प्रशासनिक सुरक्षा,सैनिक व बचत के दृश्टिकोण से किया गया। ब्रिटिश शासन के अर्न्तगत राजस्थान चार एजेन्सियों में विभक्त था –

1.मेवाड़ व दक्षिणी राजपुताना एजेन्सी

2.जयपुर एजेन्सी

3.पश्चिमी राजपुताना स्टेट एजेन्सी

4.राजपुताना स्टेट एजेन्सी

इनमें से राजपुताना स्टेट एजेन्सी में कोटा,बारां,बून्दी,झालावाड़,भरतपुर,धौलपुर,करौली राज्य थे। वर्तमान राजस्थान का निर्माण 1948 से प्रारंभ होकर विभिन्न चरणों में होता हुआ वर्ष 1956 में पूरा हुआ। सर्वप्रथम 17 मार्च 1948 को अलवर,भरतपुर,धौलपुर,करौली रियासतों ने मिलकर मत्स्य संध की स्थापना की। इसके एक सप्ताह बाद ही 25 मार्च 1948 को बांसवाड़ा, कुशलगढ़,बून्दी,डूंगरपुर, झालावाड़,किशगढ़, कोटा, प्रतापगढ़,शाहपुरा, टोंक आदि

रियासतों ने अलग संध बना लिया जिसे पूर्वी राजस्थान कहा गया। कोटा को इस संध की राजधानी बनाया गया। वास्तव में राजस्थान के निर्माण में यही प्रथम दृढ़ कदम था। यही पूर्वी राजस्थान आगे चलकर 1 नवम्बर 1956 को वर्तमान राजस्थान के रूप में सामने आया।वर्तमान में रास्थान को प्रशासनिक दृश्टि से सात संभागों में बॉटा गया है तथा बून्दी जिला को संभाग के अन्तर्गत रखा गया है।

5.2 आकारिकी व प्रवृति :–

नगरीय आकारिकी का अर्थ नगरों के आकार या स्वरूप के विषय में विवेचना करना है। अंग्रेजी भाशा का Morphologyग्रीक भाशा के दो शब्दोंMorphy = fromअर्थात आकार (रूप) तथा logos = Discourse अर्थात विवरण से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है। Discourse on from आकार के बारे में विवरण।आकारिकी शब्द का प्रयोग मुख्यतः जीव विज्ञान में पादपों व जन्तुओं के रूप तथा संरचना के सम्बन्ध में किया गया है। लेकिन भूगोल में इसका प्रयोग भू–आकृतिक विज्ञान व बस्तियों के भूगोल में किया जाने लगा है। नगरीय आकारिकी के अन्तर्गत नगरों की आकृति व आन्तरिक संरचना का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

पृथ्वी पर नगर मानव द्वारा निर्मित अधिवास है। नगर का आन्तरिक भूगोल बहुत ही दिलचस्प होता है। इसका आकार बहुत बड़ा होता है। इसलिए ये अपना आन्तरिक भूगोल अलग ही रखते है यदि हम किसी बड़े नगर को देखे तो हमें उसमें दो मुख्य बाते देखने को मिलती है। एक तो कही रिहायशी इमारतों की अधिकता तो कही पर दुकानों की अधिकता ओर कही पर उधोगों का जमधट देखने को मिलता है।

बून्दी नगर इतिहास में कोटा नगर के अग्रज के रूप में स्थापित हुआ था परन्तु कालांतर में अपने आप में सीमित रहने के कारण इस नगर में विकास बेहद धीमी गति से हुआ और कोटा नगर के अपेक्षा यह विकास के दौड़ में पिछड़ गया और आर्थिक, राजनीतिक व भोगोलिक कारणों ने इसके विकास कि गति को अभी तक भी धीमा ही बनाये रखा हुआ है।

इतिहास के जानकारों के अनुसार बून्दी की स्थापना जो 1924 में हुई थी तब इसमें केवल 12 गॉव और मात्र 300 घर ही थे। समय के साथ कोटा के आगे बून्दी का महत्व कम होता गया। ब्रिटिश राज के तहत बून्दी स्वतंत्र रूप में अस्त्तित्व में रहा ।1947 के बाद यह नगर राजस्थान राज्य का हिस्सा बन गया। बून्दी नगर मुख्यतः अपने शानदार ऐतिहासिक महलों ,किलों जो अरावली की नाग पहाड़ी पर स्थित है,बावड़ियो, झील, कुण्ड़ आदि के

कारण पर्यटन का आकर्शण रहा है जो सीमित मात्र में ही पर्यटकों को अपनी और खीच पाता है। अतः इस नगर का विकास बेहद धीमा रहा , धरातलीय उच्चावच के कारण भी नगर का विकास उपयुक्त जगहों पर हुआ जिससे इसका फैलाव सीमित हो गया। बून्दी के विकास में पीछे रहने का एक प्रमुख कारण यहॉ कोटा जंक्शन जैसे स्टेशन का विकास न हो पाना भी है जिससे आवागमन की सुविधा होने के कारण विकास के गति धीमी हो गई। यहॉ बाजार भी छोटे ही है जो अब कुछ विकसित हुए है साथ ही नगर की आन्तरिक सड़के भी अच्छी अवस्था में नही है जो विकास को बाधित करती है जबकि कोटा नगर में अच्छी सड़को का निर्माण हुआ। नगर का विकास एन.एच.12 के साथ मुख्यतः देखा जा सकता है। विकास को बाहरी क्षेत्रों में फैलाने के लिए अब सरकारी ऑफिस व औधोगिक क्षेत्र वहां स्थापित किये जा रहे है। मुख्यतः कोटा रोड़ के सहारे नगर का विकास तेजी से हो रहा है जो सड़को के सहारे नगर के विकास की प्रवृत्ति को उजागर करता है इस प्रकार बून्दी नगर की आकारिकी पर यहां की भौगोलिक दशाओ का अधिक प्रभाव दिखाई देता है जो सड़क मार्गोंके सहारे कुछ कुछ विरूपित तारेनुमा आकारिकी प्रदर्शित करता है।

प्रवृतिः–

बून्दी नगर की जनगणना के आंकड़े सन 1901 से उपलब्ध है। सन 1901 में बून्दी शहर की जनसंख्या 19,313 थी। प्राकृतिक आपदाओं जैसे अकाल व बीमारियों के कारण वर्ष 1911–1921 के दशक में जनसंख्या वृद्वि –17.28 प्रतिशत रही है। फलस्वरूप सन 1941 तक शहर की जनसंख्या में मामूली वृद्वि हुई। सन 1941–1951 एवं 1951–1961 के दशक में वृद्वि दर क्रमशः 8.88 प्रतिशत एवं 16.66 प्रतिशत ही रही। वर्ष 1961 के पश्चात शहर की जनसंख्या में तेजी से वृद्वि हुई, जिसका मुख्य कारण चम्बल परियोजना से सिंचाई के साधन उपलब्ध होने के कारण कृषि उत्पादों में वृद्वि होने लगी। जिससे ग्रेन मण्डी का निर्माण व कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना प्रमुख रहा। वर्ष 1961 से 2001 तक के 40 वर्शो के दौरान बून्दी शहर की जनसंख्या 26,448 से बढ़कर 88,871 (तीन गुना से भी अधिक) हो गयी, और 2011 में बढ़कर 115559हो गयी। जो शहर की तीव्र विकास की ओर इंगित करती है। वर्ष 1901 से वर्ष 2011 तक की जनसंख्या वृद्वि की प्रवृत्ति को तालिका में दर्शाया गया हैः–

तालिका संख्या – 5.2.1

बून्दी नगर में जनसंख्या वृद्वि की प्रवृत्ति–बून्दी–1901–2011

वर्ष	जनसख्या	दस वर्ष का अन्तर	प्रतिशत वृद्धि (+) या कमी(–)
1901	19313	–	–
1911	19598	(+)285	(+)1.48
1921	16105	(–)3493	(–)17.28
1931	17991	(+)1886	(+)11.71
1941	20846	(+)2855	(+)15.87
1951	22697	(+)1851	(+)8.88
1961	26478	(+)3781	(+)16.66
1971	34492	(+)8014	(+)30.27
1981	48027	(+)13535	(+)39.24
1991	65047	(+)17020	(+)35.44
2001	88871	(+)23824	(+)36.63
2011	115559	(+)26688	(+)30.03

स्त्रोतः– जनगणना प्रतिवेदन, 2011,राज.।

5.3 भूमि उपयोग :–

बून्दी शहर 2001 में 88,871 की आबादी का शहर था। बून्दी नगर पालिका सीमा का क्षेत्र लगभग 27.79 वर्ग किलोमीटर अर्थात 6866 एकड़ है। वर्ष 2008 शहर का कुल नगरीयकृत क्षेत्र लगभग 2630 एकड़ है, जिसमें से 2120 एकड़ विकसित क्षेत्र एवं शेश भूमि जलाशय, कृषि एवं अन्य खुली भूमि के अन्तर्गत आती है। विद्यमान भू–उपयोग के गणना के आधार पर कुल विकसित क्षेत्र का 42.74 प्रतिशत आवासीय, 7.80 प्रतिशत वाणिज्य, 7.22 प्रतिशत औद्योगिक, 1.70 राजकीय व अर्द्वराजकीय, 2.92 प्रतिशत आमोद–प्रमोद के अन्तर्गत, 15.33 प्रतिशत सर्वाजनिक एवं अर्द्व सार्वजनिक तथा 23.01 प्रतिशत क्षेत्र परिसंचरण के अन्तर्गत आता है। तालिका में विद्यमान भू–उपयोग वर्ष 2008 को दर्शाया गया है।

तालिका संख्या – 5.3.1

विद्यमान भू–उपयोग–बून्दी–2008

क्र.सं.	भू–उपयोग	क्षेत्रफल (एकड़ में)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	नगरिकृत क्षेत्र का प्रतिशत
1.	आवासीय	906	42.74	34.45
2.	वाणिज्यिक	150	7.08	5.70
3.	औद्योगिक	153	7.22	5.81
4.	राजकीय एवं अर्द्ध राजकीय	36	1.70	1.37
5.	आमोद–प्रमोद	62	2.92	2.36
6.	सार्वजनिक व अर्द्ध सार्वजनिक	325	15.35	12.35
7.	परिसंचरण	488	23.01	18.55
	विकसित क्षेत्र	**2120**	**100.00**	–
8.	कृषि	97	–	3.69
9.	जलाशय	276	–	10.50
10.	अन्य रिक्त एवं अर्द्ध विकसित क्षेत्र	77	–	2.94
11.	सरकारी आरक्षित	60	–	2.28
	कुल नगरीयकृत क्षेत्र	**2630**	–	**100.00**

स्त्रोत – नगर नियोजन विभाग सर्वेक्षण एवं आकलन अनुसार।

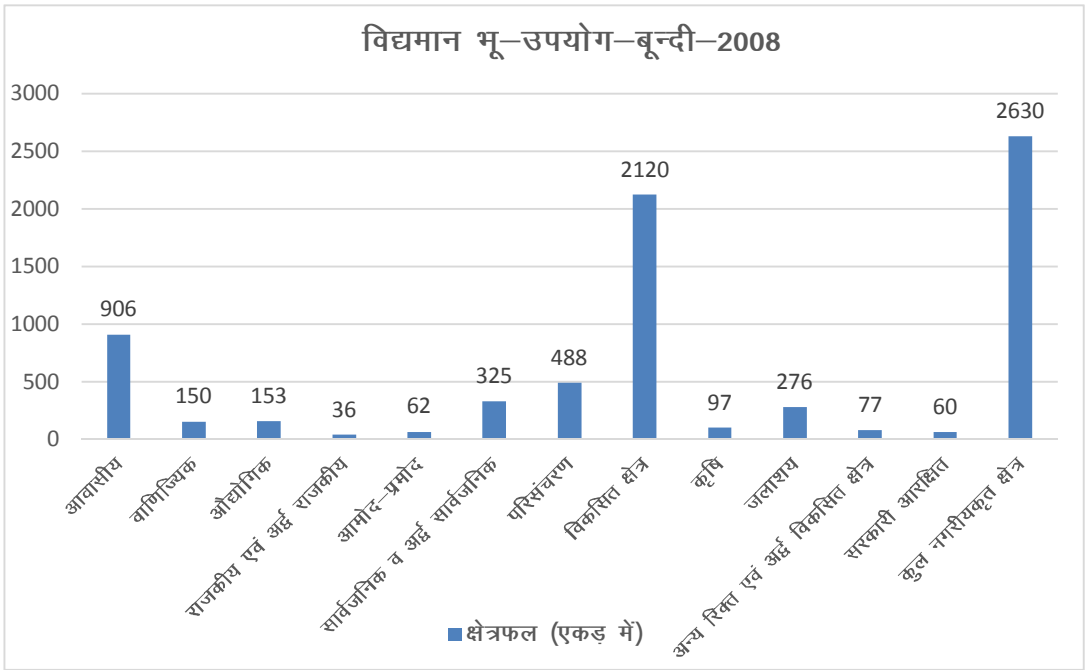

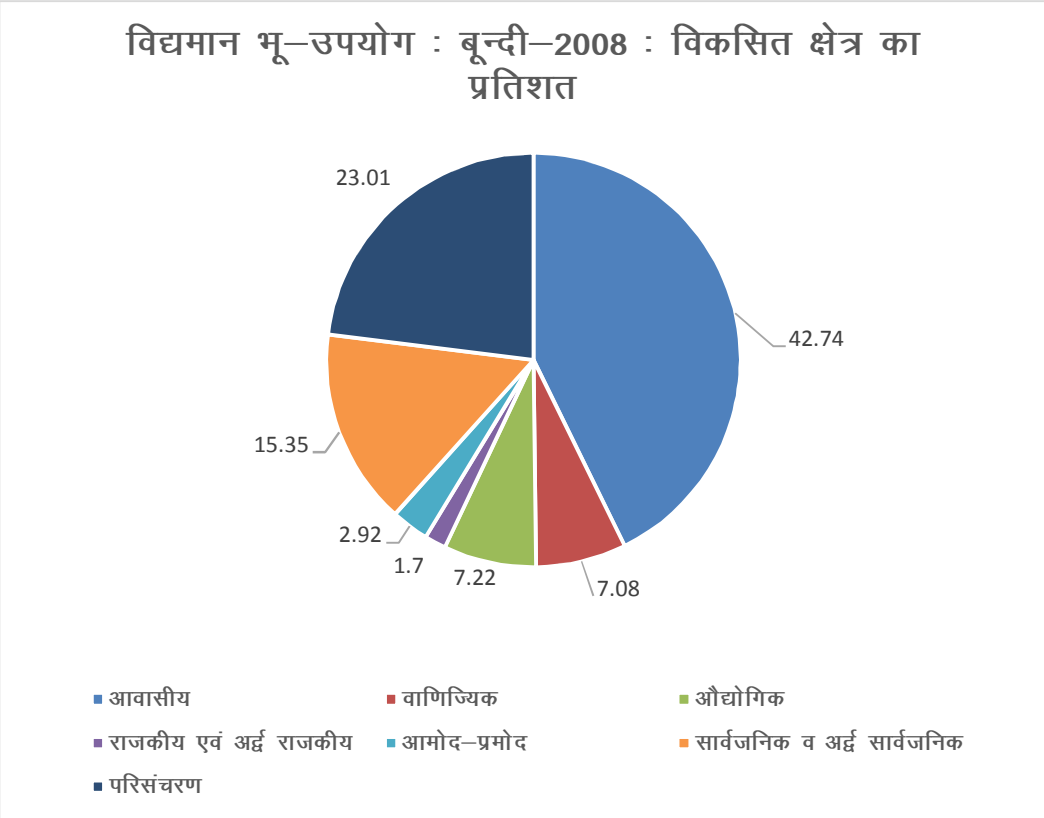

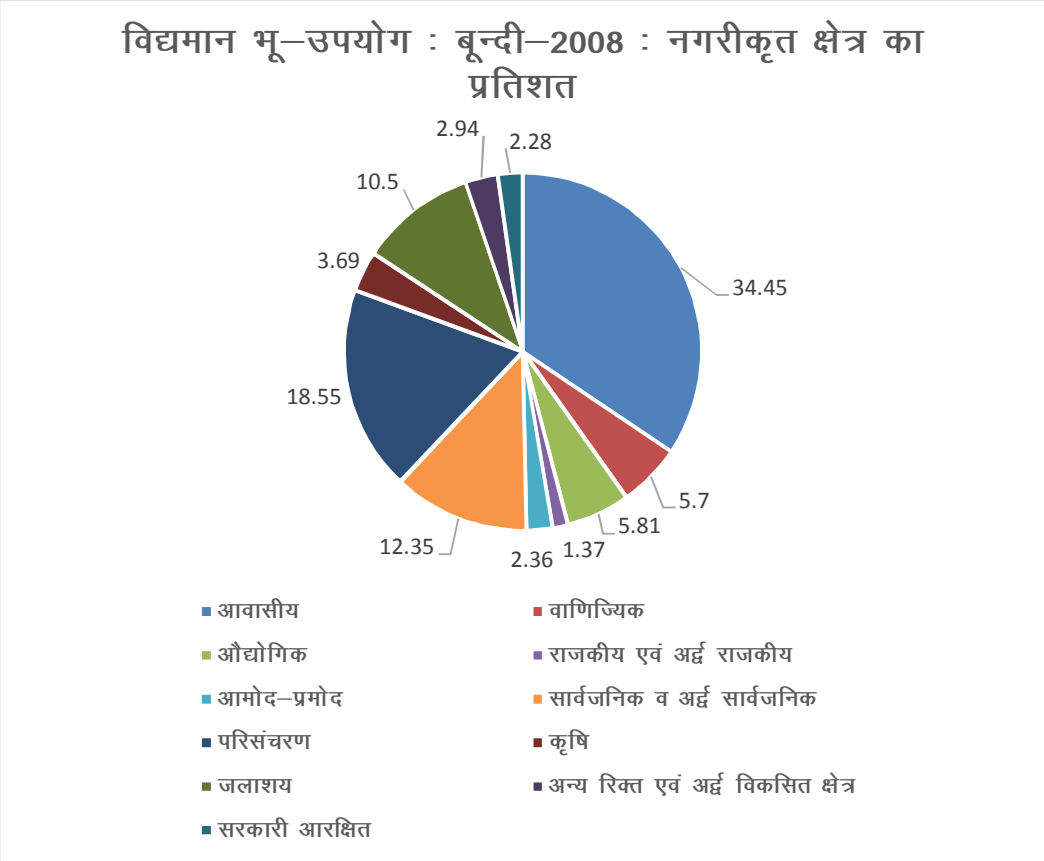

आलेख संख्या–9 : विद्यमान भू–उपयोग–बून्दी–2008

LANDUSE : BUNDI CITY - 2008

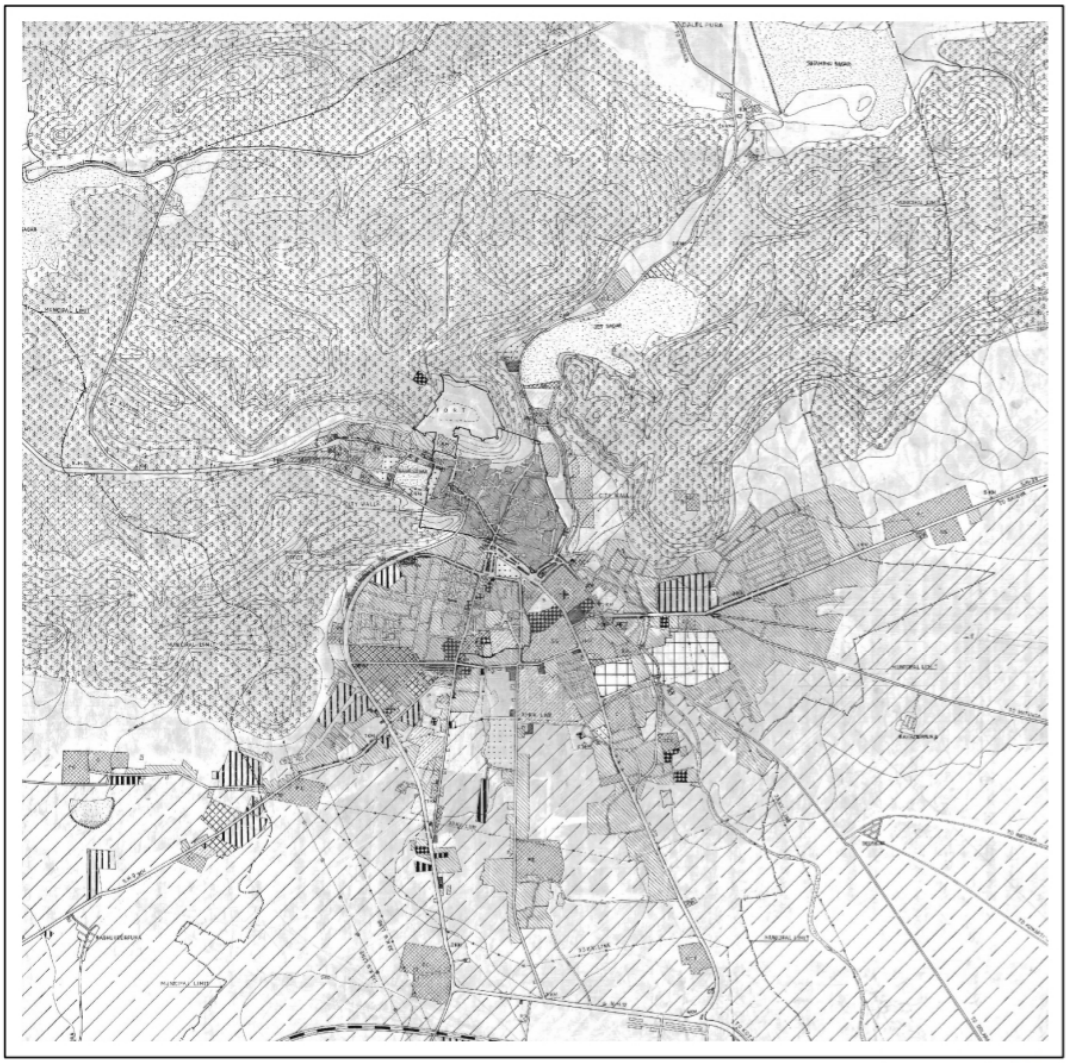

Source - Master Plan

LEGENDS

RESIDENTIAL आवासीय
WALLED CITY परकोटा नगर
OTHER AREAS अन्य क्षेत्र
COMMERCIAL वाणिज्यिक
RETAIL BUSINESS & GENERAL COMMERCIAL / HOTEL(H)/PETROL PUMP(P) फुटकर व्यापार एवं सामान्य वाणिज्यिक / होटल / पेट्रोल पम्प (P)
WHOLESALE BUSINESS थोक व्यापार
WAREHOUSING AND GODOWNS भण्डारण एवं गोदाम
INDUSTRIAL औद्योगिक
SMALL AND MEDIUM लघु एवं मध्यम
GOVERNMENTAL राजकीय
GOVERNMENT AND SEMI GOVERNMENT OFFICES शासकीय एवं अर्द्ध शासकीय कार्यालय
GOVERNMENT RESERVED शासकीय आरक्षित
RECREATIONAL मनोरंजन
PARKS/OPEN SPACES AND PLAY GROUNDS बाग / खुले स्थान एवं खेल के मैदान
FAIRS/TOURIST FACILITIES मेला / पर्यटक सुविधाएं

PUBLIC AND SEMI-PUBLIC सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक
COLLEGE (C) महाविद्यालय
SPECIAL/PROFESSIONAL/RESEARCH AND OTHER INSTITUTION विशेष / व्यावसायिक / अनुसंधान एवं अन्य शैक्षणिक संस्थान
SECONDARY SCHOOLS (S)/SENIOR SECONDARY SCHOOLS (SS) सेकण्डरी स्कूल (S)/सीनियर सेकण्डरी स्कूल (S.S.)
GENERAL HOSPITAL / DISPENSARY, P.H.C. सामान्य चिकित्सालय / डिस्पेन्सरी / प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
AYURVEDIC/HOMEOPATHIC/UNANI/NATUROPATHY HOSPITAL आयुर्वेदिक / होमियोपैथिक / यूनानी / प्राकृतिक चिकित्सालय
VETERINARY HOSPITAL पशु चिकित्सालय
RELIGIOUS, HISTORICAL(RH)/SOCIAL, CULTURAL (SC) धार्मिक, ऐतिहासिक / सामाजिक, सांस्कृतिक
OTHER COMMUNITY FACILITIES अन्य सामुदायिक सुविधाएं
PUBLIC UTILITIES सार्वजनिक सुविधाएं
CREMATION AND BURIAL GROUNDS श्मशान एवं कब्रिस्तान

AGRICULTURAL कृषि
NURSERIES/ORCHARDS/DAIRIES AND FARMS पौधशाला / फलोद्यान / डेयरी एवं फार्म
PLANTATION/FOREST LAND वृक्षारोपण / वन भूमि
CULTIVATED LANDS कृषि भूमि
CIRCULATION परिसंचरण
RAILWAY STATION AND YARD रेलवे स्टेशन एवं यार्ड
ROAD TRANSPORT TERMINAL BUS-(B) सड़क परिवहन अड्डा - बस - (B)
VACANT LAND खाली भूमि
WATER BODIES जलाशय
RURAL SETTLEMENTS ग्राम आबादी
MUNICIPAL BOUNDARY नगर पालिका सीमा

मानचित्र संख्या–10 : बून्दी नगर – भूमि उपयोग 2008

(1) आवासीयः–

(अ) आवासनः–

बून्दी शहर के विद्यमान भू–उपयोग 2008 के सर्वेक्षण के अनुसार आवासीय उपयोग के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल 906 एकड़ है, जो विकसित क्षेत्र का 42.74 प्रतिशत है। शहर का औसत नगर घनत्व लगभग 52 व्यक्ति प्रति एकड़ एवं औसत व्यवसाय घनत्व लगभग 122 व्यक्ति प्रतिशत एकड़ है। पुराने शहर की आबादी का औसत घनत्व लगभग 260 व्यक्ति प्रति एकड़ है एवं बाहरी विकसित क्षेत्र का घनत्व लगभग 75 व्यक्ति प्रति एकड़ है।

बून्दी शहर नगरपालिका सीमा 40 वार्डो में विभक्त है, जिसमें से परिकोटे के अन्तर्गत 14 वार्ड आते है, जिनका क्षेत्रफल लगभग 106.00 एकड़ है। अधिकतम घनत्व वार्ड संख्या 22 में 425 व्यक्ति प्रति एकड़ है।

बून्दी शहर के आवासीय विकास का स्वरूप शहर के ऐतिहासिक विकास से संबंधित है। आवासीय विकास को चार भागों में विभक्त कर सकते हैं।

(1) परकोटे के अन्दर का भाग जिसमें संकड़ी गलियॉ, बड़ी हवेलियॉ, प्राचीन मन्दिर, बावड़ियॉ एवं चौपड़ है, जो कि राजपूताना काल के वास्तु की सच्ची झलक देती है। इसमें से कुछ क्षेत्र अत्यधिक सघन हैं, जिनका औसत आवासीय घनत्व 400 व्यक्ति प्रति एकड़ से भी अधिक है।

(2) परकोटे से लगा हुआ क्षेत्र जहॉ अपेक्षाकृत चौड़ी सड़के, चौड़ी गलियॉ व पार्क इत्यादि हैं, जिसका औसत आवासीय घनत्व 150 व्यक्ति प्रति एकड़ है।

(3) शहर के दक्षिण में स्वतंत्रता के बाद विकसित सिविल लाईन्स क्षेत्र जो कोटा सड़क पर योजनाबद्व तरीके से विकसित हुआ है। यहॉ का औसत आवासीय घनत्व 40 व्यक्ति प्रति एकड़ है।

(4) शहर के पूर्व और दक्षिण–पूर्व में कृषि भूमियों पर अनियंत्रित आवासीय योजनाओं का विकास हो रहा है। सत्तर के दशक से ही छत्रपुरा व सिलोर मार्ग पर अनियोजित विकास ही रहा है, जिसका औसत आवासीय घनत्व 50 व्यक्ति प्रति एकड़ है।

(ब)कच्ची बस्तियाँः–

बून्दी शहर में 11 कच्ची बस्तियॉ है। अधिकांश कच्ची बस्तियॉ सरकारी भूमि पर विकसित हुई है। नगरपालिका द्वारा नियमित कच्ची बस्तियों में मूलभूत सुविधाऍ उपलब्ध करवाने हेतु विकास कार्य करवाये जा रहे है।

(2) वाणिज्यिकः–

शहर के कुल विकसित क्षेत्र का लगभग 7.08 प्रतिशत अर्थात 150 एकड़ भूमि पर वाणिज्यिक गतिविधियॉ संचालित है। बून्दी शहर में वाणिज्यिक गतिविधियॉ (थोक एवं फुटकर व्यापार) शहर–कोट के अन्दर तथा शहर–कोट के साथ–साथ विकसित हुए है। शहर–कोट के अन्दर वाणिज्यिक क्षेत्र सदर बाजार में संकड़े मार्गो पर सघन क्षेत्र में चल रहा है। शहर–कोट के अन्दर का बाजार क्षेत्र अनियोजित व भीड़–भाड़ वाले क्षेत्र में चल रहा है। चौगान दरवाजा एवं मीरागेट व शहर–कोट की दीवार के साथ–साथ बाजार विकसित हुए है। जिसमें मुख्य रूप से कपड़ा मार्केट, सर्राफा, किराना, जनरल मर्चेण्ट एवं बर्तन इत्यादि वाणिज्यिक गतिविधयाँ सम्मिलित है। आजाद पार्क के आस–पास के क्षेत्र में व्यापारिक गतिविधियॉ चल रही है। इन क्षेत्रों में अतिक्रमण के भारी दबाव के कारण बाजार अव्यवस्थित होते जा रहे है। शहर–कोट के बाहर नये विकसित क्षेत्रों में पुराने शहर के समीप लंका गेट के बाहर कृषि उपज मण्डी विकसित हुई है। इसके साथ ट्रांसपोर्ट, ऑटो–रिपेयर वर्कशॉप, पेट्रोल पम्प इत्यादि राश्ट्रीय राजमार्ग नम्बर 12 के बाई पास पर विकसित हो रहे है। सिलोर मार्ग पर कुछ व्यापारिक गतिविधियॉ चल रही है। अनाज भण्डारण हेतु गोदाम मुख्य रूप से अनाज मण्डी के पास एवं चित्तौड़ सड़क पर स्थित है। पत्थर व्यवसाय वर्तमान में सिलोर सड़क पर एवं मीरा दरवाजे के समाने जैत सागर मार्ग पर, अव्यवस्थित रूप से चल रहा है। शहर का भवन निर्माण सामग्री का अधिकांश व्यापार मीरा दरवाजे के बाहर केन्द्रित है। नैनवॉ सड़क पर मिश्रित बाजार विकसित हो रहा है। लंका दरवाजे के बाहर एक नियोजित वाणिज्यिक केन्द्र विकसित किया गया है। इसके अतिरिक्त नए विकसित क्षेत्रों में फुटकर मिश्रित वाणिज्यिक गतिविधियॉ चल रही है।बूंदी शहर राज्य में पर्यटन की दृश्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण कस्बा है। जैत सागर के पास आरटीडीसी का होटल व इसके आस–पास के क्षेत्र में निजी होटल चल रहे है।

बून्दी में विशिश्ट श्रेणी की कृषि उपज मण्डी है। इसके अन्तर्गत तालेड़, नैनवॉ पंचायत समिति तथा नगरपालिका, बूंदी क्षेत्र सम्मिलित है। जिसमें देई, हिण्डोली, तालेड़ा, बड़ा नयागांव, करवर एवं नैनवॉ यार्ड है। तालिका में बून्दी कृषि उपज मण्डी में जिन्सों की आवक को दर्शाया गया हैः–

तालिका संख्या– 5.3.2

बून्दी कृषि उपज मण्डी में जिन्सों की आवक वर्ष : 2007–2008

क्र.सं.	जिन्स	मात्रा (क्विन्टल में)
1	गेहूँ	1042677
2	धान	13821
3	मक्का	1118
4	ज्वार	2333
5	जौ	1700
6	चना	27557
7	मसूर	1424
8	मूंग	347
9	उड़द	845
10	स्रसों	164721
11	सोयाबीन	10667
12	धनियॉ	6098
13	मैथी	6395
14	थ्तल	15

स्त्रोतः–कृषि उपज मण्डी समिति 'विशिश्ट श्रेणी' बून्दी।

(3)औद्योगिकः–

वर्तमान में बून्दी में 153 एकड़ भूमि औद्योगिक प्रयोजनार्थ काम में आ रही है, जो विकसित क्षेत्र का लगभग 7.22 प्रतिशत है। उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या वर्ष 1991 एवं 2001 में क्रमशः 3494 (19.54 प्रतिशत) एवं 5233 (20 प्रतिशत) थी। वर्ष 1981 से 2001 के बीच उद्योागों में कार्यरत व्यक्तियों का प्रतिशत बढ़ा है। आस पास के क्षेत्र में खनिज व कृषि उत्पादन होने के कारण बून्दी में औद्योगिक क्षेत्रों का विकास किया गया है।

तालिका संख्या – 5.3.3

बून्दी में रीको द्वारा विकसित औद्योगिक क्षेत्र

क्र.सं.	औद्योगिक क्षेत्र का नाम	क्षेत्रफल
1.	बाई पास सड़क, बून्दी (बी.पी.आर.)	9.61 एकड़
2.	बून्दी–चित्तौड़ सड़क, बून्दी (बी.सी.आर.)	22.30 एकड़
3.	बून्दी–नैनवॉ सड़क, बून्दी (बी.एन.आर.)	17.30 एकड़
4.	हट्टी पुरा औद्योगिक क्षेत्र	71.36 एकड़
	कुल	**120.57 एकड**

स्त्रोतः– रीको कार्यालय, बून्दी।

इन औद्योगिक क्षेत्रों में मुख्य रूप से कृषि आधारित (तेल व चावल मिलें) उद्योग चल रहे है। इन औद्योगिक क्षेत्रों के अलावा भी चित्तौड़ एवं सिलौर रोड़ पर कई औद्योगिक ईकाईयॉ कार्यरत हैं, जिनमें मुख्यतः चावल मिलें है।

बून्दी शहर में बीड़ी बनाना, कपड़े बुनना, रंगाई, छपाई, बर्तन, जुते, बढ़ई–गिरी, लाख की चूड़ियॉ इत्यादि प्रमुख कुटीर उद्योग है। बून्दी में घरेलू उद्योग की 604 ईकाईयॉ पंजीकृत है, जिनमें कुल 4217 कार्मिक कार्यरत है।

(4) राजकीयः–

(अ)सरकारी एवं अर्द्व सरकारी कार्यालयः–

बून्दी शहर जिला मुख्यालय होने के कारण यहॉ पर लगभग सभी विभागों के जिला स्तरीय कार्यालय स्थापित है। वर्ष 1981 में बून्दी शहर में सरकारी कार्यालयों के अन्तर्गत 20 एकड़ क्षेत्र था, जो 2008 में बढ़कर 36 एकड़ हो गया है, जो कि कुल विकसित क्षेत्र का लगभगा 1.70 प्रतिशत है। जिला कलक्टर कार्यालय, जिला एवं सेशन न्यायालय, बस स्टेण्ड के पास एवं शहर के मध्य में स्थित है। कलक्टर कार्यालय परिसर में अन्य अनेक कार्यालय भी कार्यरत है। सार्वजनिक निर्माण विभाग व सिंचाई विभाग लंका दरजवाजे पर स्थित है।जलदाय विभाग, जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड व वन विभाग के कार्यालय बिबनवा सड़क पर स्थित है। मुख्य डाक घर एवं टेलीफोन विभाग का मुख्य कार्यालय नैनवॉ सड़क पर स्थित है। शहर में नगर पालिका कार्यालय आजाद पार्क के पास स्थित है। बून्दी शहर में वर्ष 2008 में केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, अर्द्व सरकारी एवं स्थानीय निकायों में कुल कामगारों की संख्या लगभग 2981 है, जो कुल जनसंख्या का 3.55

प्रतिशत है। वर्तमान में कई सरकारी एवं अर्द्व सरकारी कार्यालय निजी आवासीय भवनों एवं किराये के भवनों में चल रहे है।

(ब)सरकारी आरक्षितः–

बून्दी–कोटा सड़क पर रिजर्व पुलिस लाईन स्थित है, जिसका क्षेत्रफल लगभग 60 एकड़ है।

(5) आमोद–प्रमोदः–

वर्तमान में बून्दी शहर में आमोद–प्रमोद के अन्तर्गत कुल 62 एकड़ भूमि विकसित है, जो कि कुल विकसित क्षेत्र का 2.92 प्रतिशत है, इसका प्रमुख कारण शहरी स्तर के आमोद–प्रमोद स्थल, खेल के मैदान एवं उद्यानों का पर्याप्त सम्भावनाएँ है।

आजाद पार्क, नवल सागर पार्क, जैत सागर के पास टेरिस गार्डन, स्मृति कुँज इत्यादि शहर में आमोद–प्रमोद के प्रमुख स्थल है।

(अ) उद्यान एवं खुले स्थलः–

बून्दी शहर में मुख्य रूप से दो प्रमुख पार्क, आजाद पार्क व नवल सागर पार्क स्थित है। आजाद पार्क शहर के मध्य में चौगान दरवाजे के पास स्थित है। पार्क में मन्दिर व जवाहर लाल नेहरू जी की मूर्ति स्थापित है, जिसके चारों तरफ खुला स्थल है। परन्तु पार्क के आस पास व्यावसायिक गतिविधियॉ होने के कारण परिदृश्य सही नही लगता है। नवल सागर पार्क नवल सागर तालाब के पास बालचन्द पाड़ा पुनानी बस्ती के समीम स्थित है, जो राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 से गुजरते समय बहुत सुन्दर दृश्य प्रदान करता है। पिछले कुछ वर्शो में जैत सागर झील के पास नगरपालिका द्वारा पहाड़ी पर टेरेस गार्डन का विकास किया गया है जो कि सुन्दर प्राकृतिक परिदृश्य प्रदान करता है। जैत सागर के नजदीक ही स्मृति कुँज नामक स्थल है, जहॉ पर लोग प्रायः पिकनिक मनाते हैं। बून्दी शहर के परकोटे के अन्तर्गत 30 से अधिक प्राचीन बावड़ियॉ व कुण्ड हैं, जिनका प्राचीन समय में बहुत अधिक उपयोग किया जाता था एवं उनमें से कुछ बावड़ियॉ आज भी ऐतिहासिक महत्व रखती है।

(ब) स्टेडियम एवं खेल के मैदन :–

बून्दी शहर में अभी तक स्टेडियम उपलब्ध नहीं है और न ही उचित खेल मैदान है। महाविद्यालय व कुछ विद्यालयों में ही खेल मैदान उपलब्ध है। नये विकसित क्षेत्रों में भी खेल मैदान उपलब्ध नहीं है। छत्रपुरा रोड़ पर शहर का एक मात्र प्रमुख खुला स्थल कुंभा स्टेडियम है, जो लगभग 19.0 एकड़ में फैला हुआ है।

(स) अर्द्ध सार्वजनिक मनोरंजनः–

वर्ममान में बून्दी शहर में कुल दो छविगृह है। एक अस्पताल के दक्षिण में दूसरा बालचन्द पाड़ा में स्थित हैं। बालचन्द पाड़ा में स्थित छविगृह काफी समय से बन्द है। बून्दी शहर में डिस्ट्रिक्ट क्लब कोटा–बून्दी सड़क पर स्थित है।

(द) मेले एवं पर्यटन सुविधायेंः–

बून्दी शहर में कुम्भा स्टेडियम में डोल मेला व तेजा जी मेला भरता हैं बून्दी में ऐतिहासिक तारागढ़ किला, गढ़ पैलेस, चित्रशाला, रावबहादुर सिंह म्यूजियम, सूर्यमल मिश्र की हवेली, रानी जी की बावड़ी, भावल्दी बावड़ी, चौरासी खम्बों की छतरी, नवल सागर, जैत सागर, सुख महल, शिकार बुर्ज, क्षार बाग एवं कई बावड़ियॉ व कुण्ड हैं, जो पर्यटन की दृश्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं और पर्यटकों को आकर्शित करती है।

(6) सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिकः–

सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत सन 1981 में 160 एकड़ (23.0 प्रतिशत) भूमि थी, जो बढ़कर 2008 में लगभग 325 एकड़ हो गई है, जो कि कुल विकसित क्षेत्र का 15.33 प्रतिशत है। अतः आबादी विस्तार के अनुपात में सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक क्षेत्र में वृद्वि तुलनात्मक रूप से कम हुई है। सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत शैक्षणिक, चिकित्सा एवं अन्य सामुदायिक सुविधाऍ सम्मिलित है।

(अ) शैक्षणिकः–

बून्दी शहर में वर्तमान राजकीय एवं मान्यता प्राप्त विद्यालयों सहित 35 प्राथमिक व 60 उच्च प्राथमिक विद्यालय है। यहॉ 5 राजकीय सीनियर सैकण्डरी विद्यालय क्रमशः 2 छात्र एवं 3 छात्राओं हेतु है। दो राजकीय माध्यमिक विद्यालय, जिनमें एक छात्र एवं एक छात्राओं हेतु है। सभी विद्यालयों के पास भवन व खेल का मैदान है। शहर में 10 निजी उच्च माध्यमिक व 21 निजी माध्यमिक विद्यालय है। अधिकांश निजी विद्यालय किराये के भवनों में अपर्याप्त स्थानों पर संचालित हैं, जहॉ पर मापदण्डों के अनुरूप सुविधाओं का अभाव है।

यहॉ पर 2 राजकीय महाविद्यालय है, जिनमें से एक कोटा मार्ग पर छात्रों एवं एक लंका दरवाजे पर छात्राओं हेतु है। वाणिज्यिक शिक्षा हेतु 2 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान हैं, जिनमें से एक राजकीय व एक निजी क्षेत्र में है। एक शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं एक डाईट का प्रशिक्षण संस्थान है। विद्यमान भू–उपयोग मानचित्र 2008 में प्रमुख विद्यालय परिसरों को ही दर्शाया गया है। वर्ष 2008 की प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षणिक संरचना को तालिका में दर्शाया गया हैंः–

तालिका संख्या– 5.3.4

शैक्षणिक संरचना–बून्दी–2008

क्र. सं.	शैक्षणिक स्तर	आयु वर्ग	आयुवर्ग में विद्यालय जाने योग्य छात्र/छात्राओं की संख्या (अनुमानित)	कुल पंजीकृत छात्र	कुल भर्ती विद्यार्थियों का शिक्षा योग्य छात्र/छात्राओं पर प्रतिशत	विद्यालय में औसत छात्रों की संख्या	विद्यालयों की संख्या
1	प्राथमिक विद्यालय (कक्षा नर्सरी से 5 तक)	3–10	18240	11583	63.50	331	35
2	उच्च प्राथमिक विद्यालय (कक्षा 6 से 8 तक)	11–13	9120	5694	62.43	95	60
3	सैकण्डरी/सीनियरसैकण्डरी विद्यालय (कक्षा 9 से 12 तक)	14–17	7980	88.63	88.63	215	38

स्त्रोतः नगर नियोजन विभागीय सर्वेक्षण ।

(ब) चिकित्साः–

बून्दी शहर में राजकीय सामान्य अस्पताल शहर के मध्य में बस स्टेण्ड के समाने स्थित है, जो कि पण्डित बृज सुन्दर शर्मा (सामान्य चिकित्सालय) के नाम से जाना जाता है। इसकी वर्तमान क्षमता 212 बिस्तर की है। इसी परिसर में महिला चिकित्सालय भी है। इसके अतिरिकत पुलिस लाईन बून्दी में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (पी.एच.सी.) है, जिसमें 6 बिस्तर की क्षमता है व बालचन्द पाड़ा, बून्दी में एडपोस्ट डिस्पेंसरी है। बूंदी में एक आयुर्वेदिक चिकित्सालय 10 बिस्तर की क्षमता का एवं एक आयुर्वेदिक औशधालय व एक होम्योपेथिक औशधालय है। शहर में कई निजी पंजीकृत नर्सिंग एवं मेटरनिटी होम कार्यरत है। अधिकांश निजी नर्सिंग होम अर्पाप्त स्थल व अपर्याप्त सुविधाओं के साथ कार्यरत है। शहर में सामान्य चिकित्सालय के उत्तर में पशु चिकित्सालय है।

(स) अन्य सामुदायिक सुविधायेंः–

बून्दी शहर में मनोरंजन के लिए वर्तमान में एक रणजीत टॉकिज नाम से छविगृह विद्यमान है। शहर में एक पुस्तकालय एवं वाचनालय भावल्दी बावड़ी पर संचालित है। विश्राम गृह

एवं डाक बंगला कोटा सड़क पर स्थित है। शहर का प्रमुख डाक व तार कार्यालय नैनवॉ सड़क पर बहादुर सिंह चौराहे के पास स्थित है। बून्दी पर्यटन की दृश्टि से राजस्थान का प्रमुख ऐतिहासिक शहर है। पर्यटकों के लिए यहॉ कई होटल जैसे सुवालका, द्वारिका, ग्रांड परमेश्वरी, ड्रीजली, डायमंड व जैत सागर के किनारे आर.टी.डी.सी. का होटल स्थित है। शहर में धानमण्डी धर्मशाला व सिन्धी धर्मशाला प्रमुख है। विभिन्न संस्थाओं द्वारा सामुदायिक भवनों का निर्माण किया गया है। शहर में ड्रिस्ट्रिक्ट क्लब, विश्राम गृह के पास स्थित है।

(द) धार्मिक एवं ऐतिहासिकः–

बून्दी राजस्थान का एक ऐतिहासिक शहर है। इसके आस पास ऐतिहासिक एवं पुरातत्व महत्व के अनेक स्थान है। प्रसिद्व तारागढ़ का किला बून्दी के उत्तर में 600 फीट ऊंची पहाड़ियों पर बना है। स्मारक की संरचना अत्यन्त शानदार है। यह पर्यटकों के आकर्शण का मुख्य केन्द्र है। बून्दी महाल, अपनी स्थिति और शान शौकत के कारण बहुत महत्व रखता है। यह कई महलों का समूह है। चौरासी खम्भों की छतरी, रानीजी की बावड़ी, चारभुजा मन्दिर, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, अभयनाथ महोदव प्रमुख मन्दिर है। बाबा सेलारगाजी पीर, बडी मस्जिद, ब्रह्मपुरी मस्जिद प्रमुख मस्जिद है। शहर में मीरागेट व बाईपास सड़क पर ईदगाह है। इनके अलावा शहर में ऐतिहासिक दर्शनीय स्थल नवल सागर, फूल सागर, शिकार बुर्ज, शम्भू सागर, जैत सागर, सुख महल, भीमलत, रामेश्वर महादेव व बावड़ियॉ है।

(ध) धरोहर संरक्षणः–

बून्दी शहर एवं आस पास का क्षेत्र धरोहर सम्पदाओं से परिपूर्ण है। बून्दी शहर में पुरातत्व महत्व के तारागढ़ किला, गढ़ पैलेस, रतन दौलत, छत्र महल, रानीजी की बावड़ी, सुख महल, चौरासी खम्भों की छतरी, नागर–सागर कुण्ड, फूल सागर पेलेस, शिकार बुर्ज, बाणगंगा, क्षार बाग, धाबाई का कुण्ड, चित्रशालाऍ, मन्दिर, फूल महल, बादल महल, मोती महल, परकोटा एवं विभिन्न दरवाजे जैसे लंकागेट, खोजागेट, मीरागेट, सूरजगेट एवं मीरा साहब की दरगाह इत्यादि महत्वपूर्ण धरोहर सम्पदायें है, जिनके उचित रख–रखाव की आवश्कता है।

बून्दी के आस–पास के क्षेत्र में केशोरायपाटन कस्बे में केशवदेव जी का मन्दिर, जैन मन्दिर, इन्द्रगढ़ का किला, हिण्डोली का किला, दुगारी का किला, मैनाल मे मन्दिरों का समूह, तलवास का किला, कमलेश्वर मन्दिर इत्यादि प्रमुख धरोहर सम्पदायेंह ैं, जिनका उचित संरक्षण अत्यावश्यक है।

(र) जनापयोगी सुविधायेंः–

बून्दी में पीने योग्य जल की आपूर्ति, विद्युत आपूर्ति, जल मल निस्तारण की व्यवस्था नगरीय जीवन की मूलभूत आवश्यकताये है। अतः नगर के विस्तार के साथ–साथ इनका उचित प्रावधान किया जाना आवश्यक है।

(i) जल आपूर्तिः–

बून्दी शहर की जल आपूर्ति शहर के विभिन्न स्थानों से 20 नल कूपों द्वारा 8 उच्च जलाशयों से प्रति दिन लगभग 9.48 लाख लीटर जलापूर्ति की जाती है। नगर में प्रति व्यक्ति दिन जल आपूर्ति 106 लीटर है।

(ii) जल मल निकास एवं ठोस कचरा निस्तारण प्रबन्धनः–

बून्दी शहर की जल मल निकास की कोई उचित व्यवस्था नहीं है। वर्षा के पानी की निकासी के लिए भी नालियों का उचित प्रावधान नहीं है। जिसके कारण वर्षा के मौसम में पानी सड़कों व गलियों में एकत्रित हो जाता है। जिससे आवागमन मे काफी बाधा उत्पन्न होती है। ठोस कचरा निस्तारण नगर पालिका द्वारा किया जाता है। वर्मतान में ठोस कचरे के निस्तारण हेतु शहर से दूर उचित स्थल चिन्हित नहीं है, जिसके अभाव में नगरपालिका द्वारा खुले स्थलों पर ठोस कचरें का निस्तारण अवैज्ञानिक तरीके से कर दिया जाता है।

(iii) विद्युत आपूर्तिः–

बून्दी शहर में विद्युत आपूर्ति जयपुर विद्युत वितरण निगम द्वारा समुचित ग्रिड व्यवस्था से की जाती है। वर्तमान में विद्युत आपूर्ति 132 के.वी. ग्रिड सब स्टेशन से शहर को विभिन्न 33/11 के.वी. के सब स्टेशनों के माध्यम से की जा रही है। बून्दी शहर में कुल विद्युत उपभोग का दैनिक औसत 1.78 लाख यूनिट है।

(iv) श्मशान एवं कब्रिस्तानः–

बून्दी शहर में हिन्दुओं के लिए श्मशान मीरागेट बाणगंगा सड़क, बोहरा बगीची बालचन्द पाड़ा के पास स्थित है एवं मुस्लिम समुदाय के लिये मीरागेट पर कब्रिस्तान स्थित है।

(7) परिसंचरणः–

(अ) यातायात व्यवस्थाः–

बून्दी शहर कोटा–चित्तौड़ बड़ी रेल लाईन पर स्थित है। रेलवे स्टेशन, राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 के दक्षिण में शहर से छत्रपुरा सड़क से जुडा हुआ है। बून्दी से कोटा, चित्तौड़

नीमच, उदयपुर एवं कोटा से देश के अन्य प्रमुख शहरों से बड़ी रेल लाईन से सीधा सम्पर्क है। बून्दी शहर के मध्य से राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 (जयपुर–जबलपुर) गुजरता है। जिस पर भारी यातायात एवं स्थानीय यातायात का अत्यधिक दबाव रहता है, जिससे यातायात सम्बन्धी कई समस्याओं उत्पन्न होती है। राज्य राजमार्ग संख्या 9 (चित्तौड़–बूंदी) व 29 (लाखेरी–इन्द्रगढ़–सवाईमाधोपुर) बूंदी से निकलते है। इनके अतिक्ति बून्दी शहर मे प्रमुख सड़क मार्ग रेलवे ओवरब्रिज से बस स्टेण्ड, आजार्द पार्क से बाई पास सड़क तक, सर्किट हाउस, लंका दरवाजा, बाई पास तक का मार्ग, छत्रपुरा सड़क, सिलोर सड़क, महावीर सर्किल से मीरागेट, बाणगंगा तक का मार्ग जहॉ पर यातायात का अत्यधिक दबाव रहता है। बून्दी शहर का विस्तार नैनवॉ सड़क पर, सिलोर सड़क, छत्रपुरा सड़क एवं बाई पास के आस पास के क्षेत्र में हो रहा है। अतः विभिन्न आवासीय क्षेत्रों एवं कार्य स्थलों की दूरी बढ़ती जा रही है, जिससे सड़कों पर यातायात का दबाव बढ़ रहा है। पुराने शहर में गलियॉ बहुत संकड़ी व टेढ़ी–मेढ़ी है, जिसके कारण यातायात अवरूद्व होता है। शहर में निश्चित सड़क व्यवस्था नहीं है। प्रमुख बाजार पुराने शहर के अन्दर है, जिससे शहर के अन्दर यातायात का भारी दबाव रहता है।

(ब) बस तथा ट्रक टर्मिनलः–

राजस्थान पथ परिवहन निगम का बस स्टेण्ड शहर के अन्दर कलेक्ट्रेट के पास सामान्य अस्पताल के सामने स्थित है। शहर के मध्य में स्थित होने के कारण बसों के आवागमन में अत्यधिक असुविधा रहती है। यहॉ पर बहुत भीड़ भाड़ रहती है। रणजीत टॉकिज के आव पास के क्षेत्र से निजी जीपों का संचलान होता है, जिससे नैनवॉ सड़क पर यातायात असुविधाजनक रहता है। बाई पास सड़क पर मोटर मार्केट विकसित किया गया है। बाई पास सड़क पर ऑटो मोबाईल रिपेयर दुकानें होने से इस क्षेत्र में भी यातयात का दबाव रहता है।

(स) रेल व हवाई सेवाः–

बून्दी, कोटा–चित्तौड़ बड़ी रेल लाईन पर एक प्रमुख स्टेशन है। रेलवे स्टेशन शहर के दक्षिण में स्थित है। बून्दी में हवाई अड्डा व हवाई पट्टी उपलब्ध नहीं है।

प्रस्तावित भू–उपयोग योजना :–

भू–उपयोग योजना विभिन्न योजनागत और सिद्धान्तों का स्थानिक विस्तार के रूप में रूपान्तरण है। इसकी रचना नगर की वर्तमान विशेशताओं तथा विद्यमान एवं सम्भावित आर्थिक संरचना के आधार पर की गई है। नगरीय भूमि एक दुर्लभ संसाधन है, अतः इसका

उपयोग जहाँ तक सम्भव हो, समस्त नागरिकों की आवश्यकताओं तथा विधिसम्मत आंकाक्षाओं को सन्तुश्ट करने के लिए किया जाना चाहिए। बून्दी नगरीय क्षेत्र की भू–उपयोग योजना इस उद्देश्य से तैयार की गई है कि अन्य सम्बन्धित नगरीय समस्याओं का सम्पूर्ण समाधान हो सके। सम्पूर्ण अधिसूचित नगरीय क्षेत्र का संतुलित तथा समन्वित विकास इसका प्रमुख लक्ष्य है। वर्तमान परिस्थितियों से सम्बन्धित विभिन्न अध्ययनों के आधार पर नियोजन के मानदण्डो का निर्धारण किया गया है। क्षेत्र विशेश की उपयुक्तता में विभिन्न नगरीय कार्यो की स्थल स्थिति की पहचान दर्शायी गई है। सम्पूर्ण बून्दी नगरीय क्षेत्र की वर्ष 2033 तक की आवश्यकताओं हेतु लगभग 6344 एकड़ विकसित क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है, जिसमें से 2972 एकड़ भूमि आवासीय प्रयोजनार्थ प्रस्तावित है, जो कि कुल प्रस्तावित विकसित क्षेत्र का 46.85 प्रतिशत है। इसी प्रकार कुल प्रस्तावित विकसित क्षेत्र का 7.05 प्रतिशत व्यावसायिक, 8.05 प्रतिशत औद्योगिक, 1.43 प्रतिशत सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी, 6.32 प्रतिशत आमोद–प्रमोद एवं 10.52 प्रतिशत सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक प्रयोजनार्थ भूमि प्रस्तावित की गई है, जबकि शेष 19.78 प्रतिशत (1255 एकड़) भूमि परिसंचरण के अन्तर्गत प्रस्तावित है। वर्ष 2033 के प्रस्तावित भू–उपयोग को तालिका में दर्शाया गया हैः–

तालिका संख्या– 5.3.5

प्रस्तावित भू–उपयोग– बून्दी 2033

कम सं.	**भू–उपयोग**	**क्षेत्रफल (एकड़ में)**	**प्रस्तावित विकसित क्षेत्र का प्रतिशत**	**नगरीयकरण योग्य क्षेत्र का प्रतिशत**
1.	आवासीय	2972.00	46.85	44.36
2.	व्यावसायिक	447.00	7.05	6.67
3.	औद्योगिक	511.00	8.05	7.63
4.	सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी	91.00	1.43	1.36
5.	आमोद – प्रमोद	401.00	6.32	5.98
6.	सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक	667.00	10.52	9.96
7.	परिसंचरण	1255.00	19.78	18.73
	कुल प्रस्तावित विकसित	**6344.00**	**100.00**	–

	क्षेत्र			
8.	जलाशय	276.00	—	4.11
9.	कृषि एवं पौधशालाऐं	20.00	—	0.30
10.	सरकारी आरक्षित	60.00	—	0.90
	नगरीयकरण योग्य कुल क्षेत्र	**6700.00**	—	**100.00**

स्त्रोतः— नगर नियोजन विभाग अनुमान।

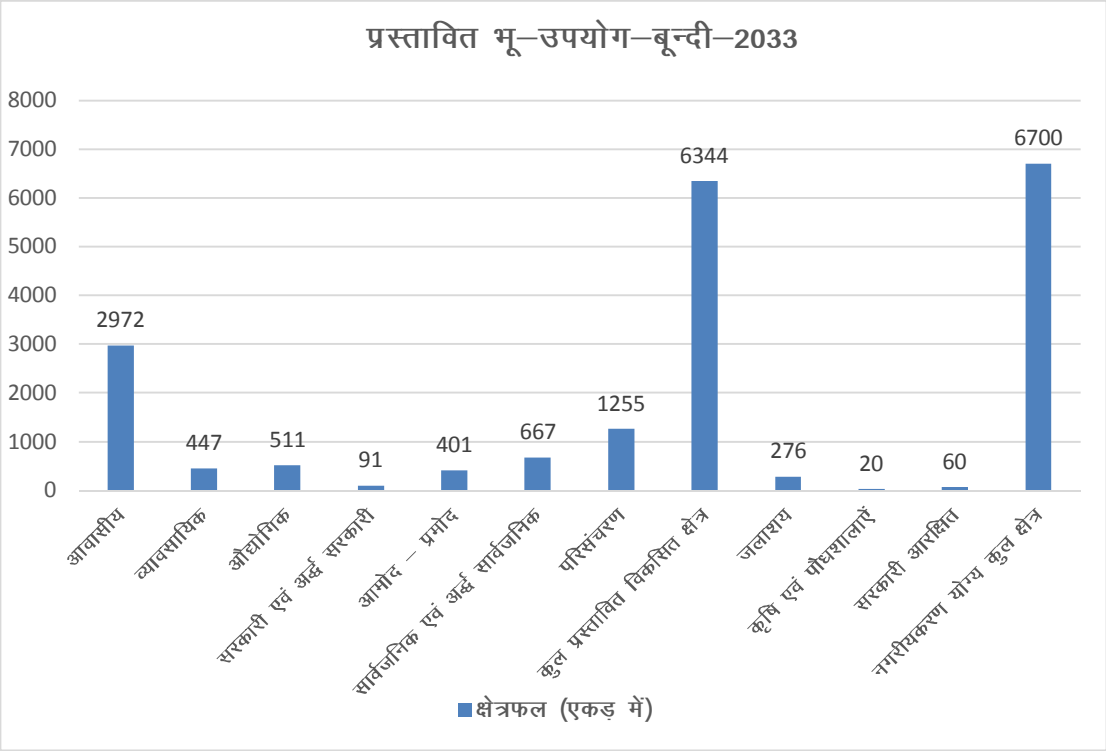

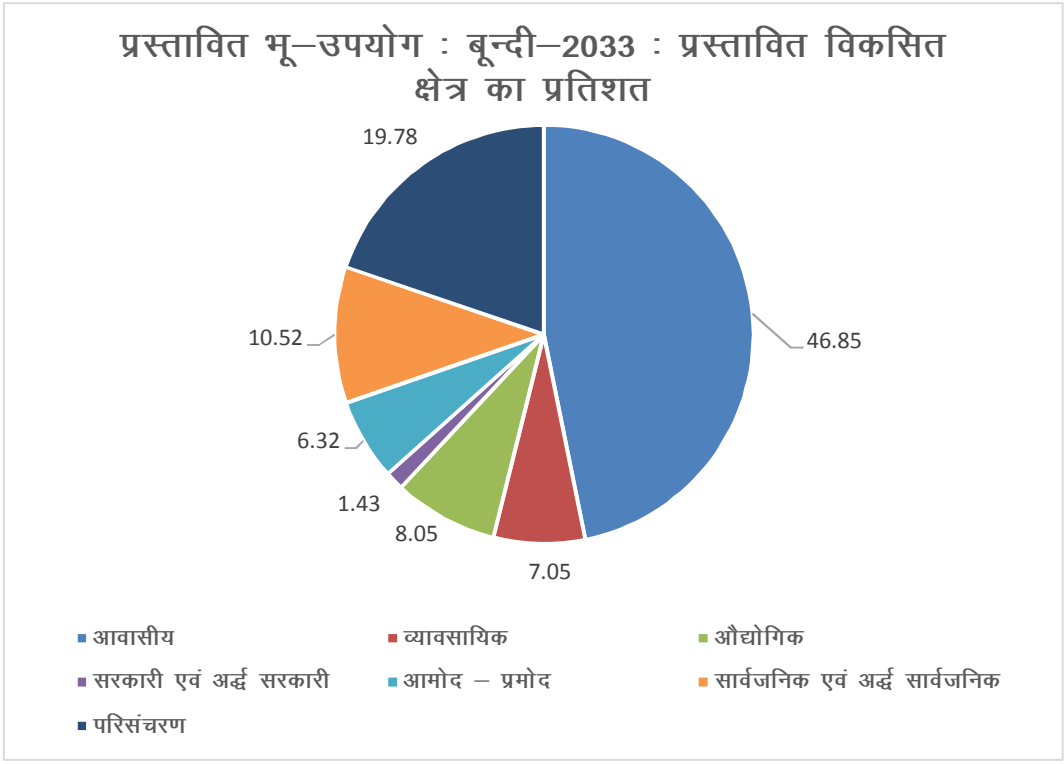

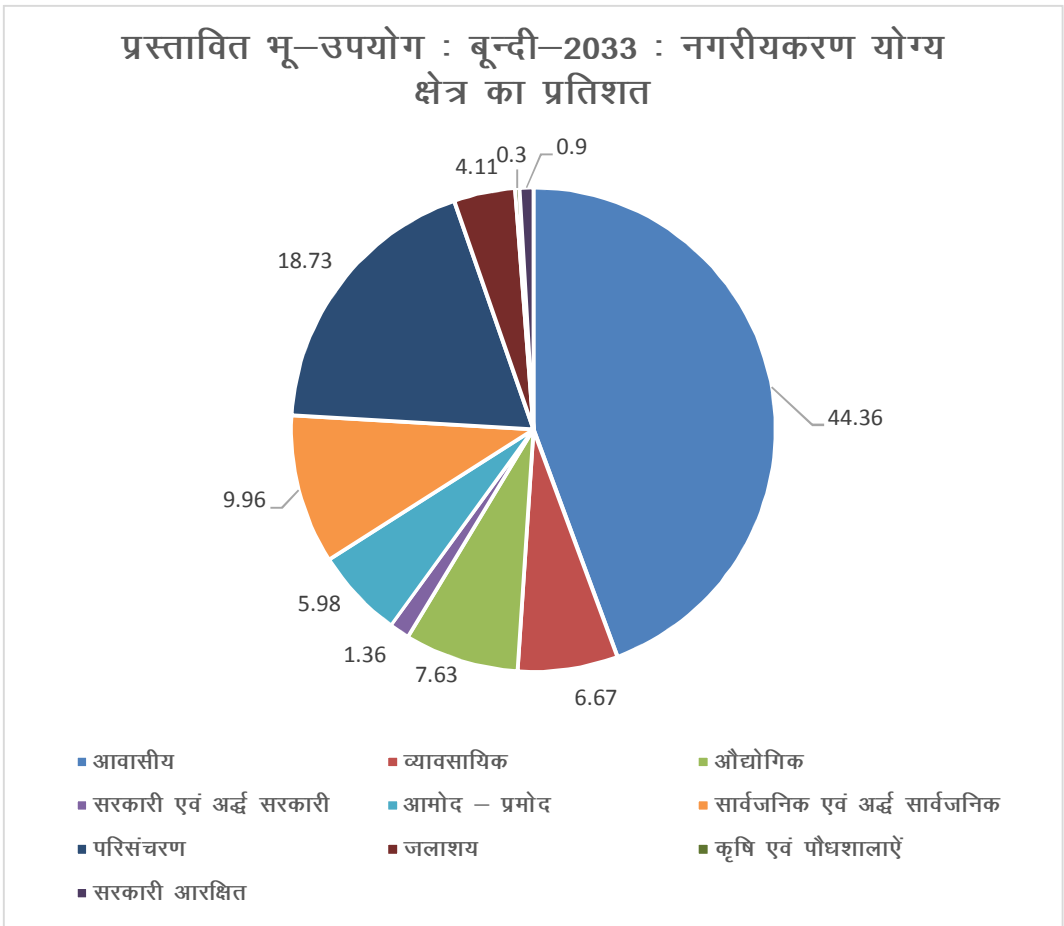

आलेख संख्या–10 : प्रस्तावित भू–उपयोग– बून्दी 2033

PROPOSED LANDUSE : BUNDI CITY - 2033

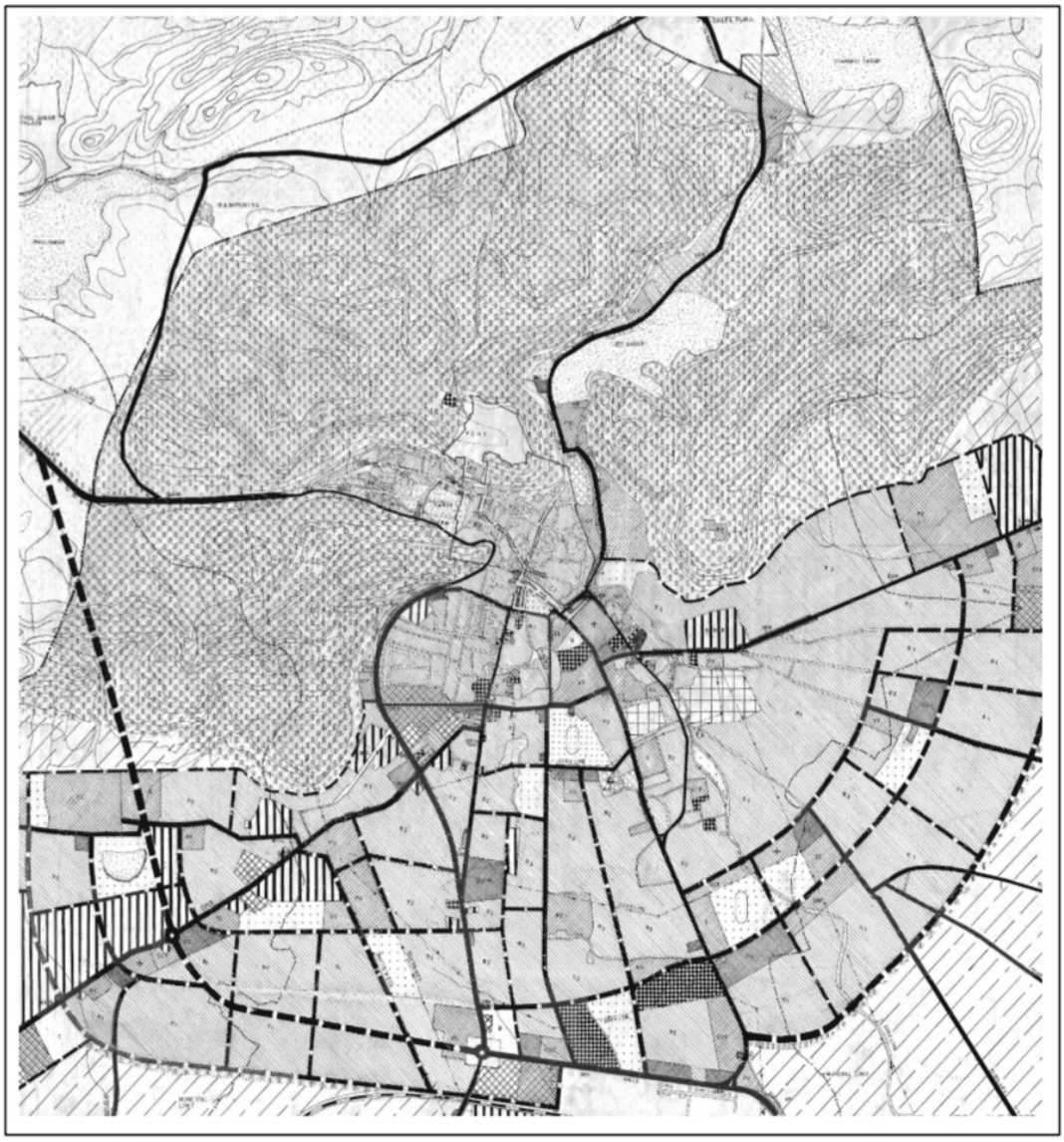

Source - Master Plan

LEGENDS

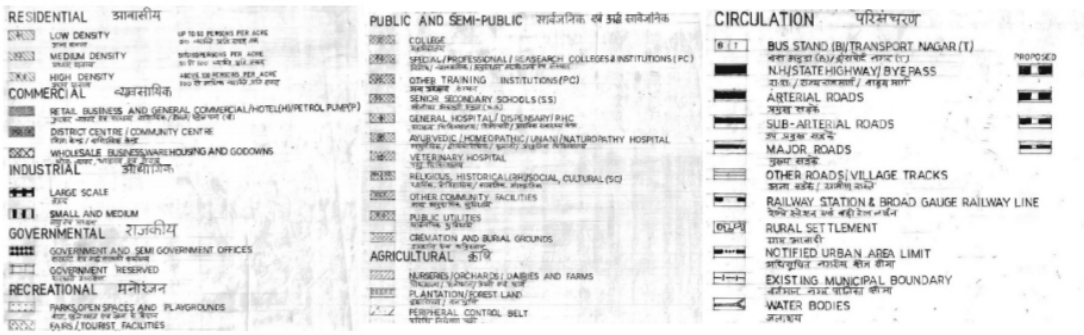

मानचित्र संख्या–11 : बून्दी नगर – भूमि उपयोग (प्रस्तावित) 2033

आवासीय :–

आवासीय क्षेत्रों की योजना इस ढंग से तैयार की गई है कि इससे स्वस्थ सामुदायिक पर्यावरण को प्रोत्साहन मिले तथा कार्य–स्थलों और आमोद–प्रमोद के स्थलों तक आने जाने के समय में कमी हो। युक्ति–संगत आवासीय विकास, नागरिकों को सुविधाजनक जीवन प्रदान कर सकेगा, जिससे सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध प्रगाढ़ होगा एवं लोगों को आवासीय बस्तियों के निकट ही प्रतिदिन की आवश्यकताओं हेतु सामुदायिक सुविधाऐं एवं जनोपयोगी सेवाऐं प्राप्त हो सकेगी। इस दृश्टि से शहर की कुल अनुमानित आबादी लगभग 2.20 लाख व्यक्तियों को बसाने के लिए वर्ष 2033 तक लगभग 2972 एकड़ आवासीय क्षेत्र प्रस्तावित किया गया है, जिसका औसत आवासीय घनत्व लगभग 74 व्यक्ति प्रति एकड़ होगा। शहर के भीतरी भाग एवं कार्य–केन्द्रों के समीप अपेक्षाकृत उच्च आवासीय घनत्व प्रस्तावित किया गया है, ताकि अधिकतर लोग इनके समीप ही रह सकें। नगर परिधि क्षेत्र में कम घनत्व वाले आवासीय क्षेत्र प्रस्तावित किये गये है। बून्दी के आवासीय क्षेत्रों के लिए कुल तीन घनत्व वाले आवासीय क्षेत्र प्रस्तावित किये गये है। बून्दी के आवासीय क्षेत्रों के लिए कुल तीन घनत्व श्रेणियाँ क्रमशः 50 व्यक्ति प्रति एकड़, 51 से 100 व्यक्ति प्रति एकड़ एवं 100 से अधिक व्यक्ति प्रति एकड़ प्रस्तावित की गई है। आवासीय क्षेत्रों में उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर तक की शैक्षणिक संस्थाएँ स्वीकृत की जा सकेंगी।

निम्न तालिका में उपरोक्तानुसार प्रस्तावित विभिन्न आवासीय घनत्वों की श्रेणीवार प्रस्तावित क्षेत्रफल व जनसंख्या का विवरण तालिका में दर्शाया गया है :

तालिका संख्या– 5.3.6

प्रस्तावित आवासीय घनत्ववार क्षेत्रफल एवं जनसंख्या

क.स.	प्रस्तावित आवासीय घनत्व श्रेणी	प्रस्तावित आवासीय क्षेत्रफल	अनुमानित आवासीय घनत्व	अनुमानित जनसंख्या
1.	R1–50 प्रतिव्यक्ति एकड़ तक	1722	50	86,100
2.	R2– 51 से 100 व्यक्ति प्रति एकड़	875	100	87,500
3.	R3– 100 व्यक्ति प्रति एकड़ से अधिक	375	150	56,250
		2972	–	2,29,850

स्त्रोतः– नगर नियोजन विभाग अनुमान।

(1) आवासनः–

शहर की कुल अनुमानित जनसंख्या (2.20 लाख) का वितरण छोटे छोटे क्षेत्रों में किया जायेगा, जिनमें विभिन्न पदानुक्रम में सामुदायिक सुविधाएँ एवं सेवाएँ प्रदान की जायेगी। इस प्रकार 3000 से 5000 तक जनसंख्या की एक आवासीय योजना इकाई एवं 3–4 आवासीय योजना इकाईयों को मिलाकर 15–20 हजार जनसंख्या के आवासीय योजना क्षेत्र होगें। ऐसे प्रत्येक योजना क्षेत्र को उच्च माध्यमिक विद्यालय, स्थानीय शोपिंग सेन्टर, सार्वजनिक उद्यान और अन्य सामुदायिक सुविधाओं से परिपूर्ण किया जायेगा। इस प्रकार एक से अधिक योजना क्षेत्रों को मिलाकर योजना जिला होगा, जिसकी अनुमानित जनंसख्या 50,000 से 1.00 लाख तक होगी, जिसमें स्थानीय स्तर की विभिन्न सुविधाऐं जैसे सामान्य महाविद्यालय, चिकित्सालय, उद्यान, खेल के मैदान, डिस्ट्रिक्ट सेन्टर, पुलिस स्टेशन, पोस्ट ऑफिस, बैंक, सिनेमा एवं अन्य सामुदायिक सुविधाऐं विकसित की जा सकेगी।

(2) इन्फोरमल सेक्टर के लिए आवासः–

आवास मानव समुदाय की एक प्रमुख आवश्यकता है, इसके अन्तर्गत सर्वाधिक भूमि की आवश्यकता होती है। अतः यह प्रस्तावित किया जाता है कि स्थानीय नगरपालिका मण्डल और आवासन मण्डल भविश्य में आवश्यकतानुसार परियोजना तैयार करें और समाज के कमजोर वर्गो को आवासीय सुविधाएँ उपलब्ध करावें। कार्य केन्द्रो के समीप कर्मचारियों एवं कमजोर आयवर्ग के व्यक्तियों के लिए सामूहिक आवासीय योजना तैयार किया जाना प्रस्तावित है। रीको द्वारा भी औद्योगिक श्रमिकों के लिए आवास परियोजना आरम्भ की जा सकती है ताकि औद्योगिक क्षेत्रों के समीप कच्ची बस्तियों के रूप में बेतरतीब विकास को रोका जा सके। ग्रामीण सामूहिक आवास योजनाएँ, ग्रीमीण विकास एवं पंचायतीराज विभाग द्वारा हाथ में ली जा सकती है।

(3) नगरीय नवीनीकरण/कच्चीबस्तियाँः–

शहर में अनियमित एवं अनियोजित ढंग से बसे हुए क्षेत्रों के लिए नवीनीकरण कार्यक्रम बनाये जाना प्रस्तावित है। ऐतिहासिक दृश्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्रो के लिए भी संरक्षण कार्य किये जाने का प्रस्ताव है। नियमित कच्ची बस्ती क्षेत्रों में पर्यावरण सुधार कार्यक्रम की आवश्यकता है, ताकि इनमें आधारभूत सुविधाऐं जैसे कि पीने का पानी, सार्वजनिक शौचालय, बरसाती नालियाँ, सड़कों पर रोशनी इत्यादि का उचित प्रबन्ध किया जा सके। पुनर्वास उन क्षेत्रों के लिए किया जायेगा, जो आवास के योग्य नहीं है। पुनर्विकास कार्य उन क्षेत्रों के लिए किया जायेगा जहाँ कच्ची बस्तियाँ नियमित हो चुकी है। कच्ची बस्ती

क्षेत्रों के सुधार और उनके पुनर्विकास पर विशेश ध्यान दिया जाना प्रस्तावित है। विस्थापन और पुनर्वास की समस्याओं पर एकीकृत दृश्टिकोण से विचार किया जाकर इस कार्य हेतु विस्तृत योजनाएँ विकसित किया जाना प्रस्तावित है। ऐसी योजनाएँ बनाते समय यह ध्यान रखा जावेगा कि इनसे न्यूनतम विस्थापन हो।

वाणिज्यिक :–

बून्दी शहर जिला मुख्यालय होने के कारण क्षेत्रीय गतिविधियों का एक प्रमुख केन्द्र है एवं कृषि आधारित वाणिज्यिक और व्यापारिक केन्द्र है और भविश्य में भी रहेगा। उत्पादन केन्द्र के रूप में विकसित होने के कारण यहाँ पर आर्थिक नियोजन की पर्याप्त संभावनाएँ है। अनुमान है कि वर्ष 2033 तक लगभग 14,520 व्यक्ति (अर्थात कुल काम करने वालो का लगभग 22 प्रतिशत) विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियों में कार्यशील होंगे। मास्टर प्लान में कुल 447 एकड़ क्षेत्र वाणिज्यिक क्रिया–कलापों हेतु प्रस्तावित किया गया है। वाणिज्यिक गतिविधयों को शहर में विभिन्न भागों में अधिक तर्क–संगत रूप से वितरित किये जाने और दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं के लिये मुख्य वाणिज्यिक केन्द्र तक जाने से बचने के लिये एक पदानुक्रम व्यवस्था प्रस्तावित की गई है, ताकि विभिन्न स्तरों पर वाणिज्यिक सुविधायें उपलब्ध हो सके, जैसा कि तालिका में दर्शाया गया है:–

तालिका संख्या– 5.3.7

प्रस्तावित प्रमुख वाणिज्यिक क्षेत्रों का विवरण–बून्दी–2033

क्रम सं.	विवरण	क्षेत्रफल (एकड़ में)
1.	मुख्य वाणिज्यिक केन्द्र (पुराना शहर)	36
2.	जिला केन्द्र	27
3.	सामुदायिक केन्द्र	54
4.	अन्य वाणिज्यिक केन्द्र	39
5.	थोक व्यापार	209
6.	भण्डारण एवं गोदाम	82
	योग	447

मास्टर प्लान में विभिन्न वाणिज्यिक गतिविधियों के लिये उपयुक्त स्थल प्रस्तावित किये गये है। वाणिज्यिक उपयोग के अन्तर्गत कुल प्रस्तावित क्षेत्र लगभग 447 एकड़ है, जो प्रस्तावित

कुल विकसित क्षेत्र का लगभग 7.05 प्रतिशत है। मास्टर प्लान में प्रस्तावित सड़कों का मार्गाधिकार छोड़कर ही व्यावसायिक अनुमति दी जायेगी।

(1) मुख्य वाणिज्यिक केन्द्र (पुराना शहर):–

वर्तमान में शहर का मुख्य बाजार शहर–कोट के अन्दर सदर बाजार, शहर–कोट के साथ–साथ चौगान दरवाजा से मीरा गेट तक व शहर–कोट की दीवार के साथ साथ बाजार विकसित हुए है। आजाद पार्क के आस–पास के क्षेत्र तथा शहर–कोट के बाहर पुराने शहर के समीप व लंका–गेट के बाहर भी वाणिज्यिक गतिविधियाँ चल रही है।

(2) जिला केन्द्र :–

बून्दी शहर में चल रही वाणिज्यिक गतिविधियों से उत्पन्न होने वाले यातायात के भारी दबाव को कम करने के लिये बून्दी में 27 एकड़ का एक जिला केन्द्र बून्दी–कोटा मार्ग पर सड़क के पूर्व में प्रस्तावित किया गया है। जिला केन्द्र में खुदरा दुकानें, सिनेमा हॉल, मल्टीप्लेक्स, होटल, रेस्टोरेन्ट, सामुदायिक भवन, मनोरंजन केन्द्र, स्वास्थ्य केन्द्र, अग्निशमन केन्द्र, डाक व तार घर, कार्यालय, बैंक, पुलिस स्टेशन व खुले स्थल इत्यादि का प्रावधान रखा जायेगा।

(3) सामुदायिक केन्द्र :–

बून्दी में वाणिज्यिक गतिविधियों के विकेन्द्रीकरण करने की दृश्टि से नये विकसित किये जाने वाले क्षेत्रों की वाणिज्यिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न क्षेत्रों में 4 सामुदायिक केन्द्र प्रस्तावित किये गये है जिनका कुल क्षेत्रफल लगभग 54 एकड़ है।

सामुदायिक केन्द्र प्रत्येक योजना क्षेत्र के वाणिज्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र के रूप के कार्य करेंगे। वर्ष 2033 हेतु प्रस्तावित वाणिज्यिक केन्द्रों को तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या– 5.3.8

प्रस्तावित सामुदायिक केन्द्रों का विवरण–बून्दी–2033

क्रम सं.	सामुदायिक केन्द्र का नाम	क्षेत्रफल (एकड़ में)
1.	चित्तौड़गढ़ सड़क के दक्षिण व प्रस्तावित प्रमुख सड़क के पश्चिम में	12
2.	माटूण्दा सड़क के उत्तर में प्रस्तावित प्रमुख सड़क के पश्चिम का क्षेत्र	14

3.	बिबनवा सड़क के पश्चिम व प्रस्तावित प्रमुख सड़ के दक्षिण में	9
4.	राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 व सिलोर सड़क के जंक्शन पर	19
	योग	54

(4) अन्य वाणिज्यिक केन्द्र :–

बून्दी में अन्य वाणिज्यिक केन्द्र और स्थानीय केन्द्र चित्तौड़ सड़क पर रघुवीर पुरा ग्राम के पास, चित्तौड़ सड़क व राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 के जंक्शन के उत्तर–पश्चिम का क्षेत्र, छत्रपुरा सड़क पर प्रस्तावित स्टेडियम के दक्षिण का क्षेत्र, एन.एच.–12 के बाईपास के उत्तर में एवं नैनवाँ सड़क के दक्षिण में आई.टी.आई. के सामने एवं अन्य मुख्य सड़कों पर, ऐसी जगहों पर जहाँ वितरण की दृश्टि से इनकी जरूरत है, इन केन्द्रो का प्रावधान किया गया है। इस हेतु लगभग 39 एकड़ क्षेत्रफल प्रस्तावित किया गया है।

(5) थोक व्यापार :–

बून्दी जिला चम्बल सिंचित क्षेत्र तथा उपजाऊ भूमि वाला होने के कारण बून्दी में 'विशिश्ट श्रेणी' की कृषि उपज मण्डी लंका–गेट के बाहर सिलोर सड़क एवं राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 के मध्य में लगभग 37 एकड़ भूमि पर स्थित है। नगरीय क्षेत्र के अंतर्गत सम्मिलित राजस्व ग्राम कुंवारती में 126 एकड़ भूमि कृषि उपज मण्डी हेतु प्रस्तावित की गई है। शहर में अन्य थोक व्यापार हेतु अलग से कोई स्थान निर्धारित नहीं है। वर्तमान में थोक व्यवसाय व भवन निर्माण सामग्री व्यवसाय शहर में विभिन्न स्थानों पर सड़क के आस–पास एवं शहर के मध्य में ही चल रहा है। अतः थोक व्यापार हेतु बून्दी रेलवे स्टेशन के पश्चिम में राश्ट्रीय उच्च मार्ग संख्या–12 के दक्षिण में लगभग 18 एकड़ भूमि प्रस्तावित की गयी है। भवन निर्माण सामग्री हेतु चित्तौड़ सड़क पर लगभग 16 एकड़ भूमि प्रस्तावित है। लगभग 25 एकड़ भूमि नैनवा सड़क के दक्षिण में प्रस्तावित बाह्य मार्ग के पश्चिम में थोक व्यापार हेतु प्रस्तावित की गई है।

(6) भण्डारण एवं गोदाम :–

शहर में वाणिज्यिक गतिविधियों के बढ़ते प्रभाव के दृश्टिगत वस्तुओं के भण्डारण की आवश्यकता हेतु मास्टर प्लान में भण्डारण एवं गोदाम के लिये भी भूमि प्रस्तावित की गई है। वर्तमान में कृषि उपज मण्डी के पास एवं चित्तौड़ सड़क पर स्थित गोदामों को यथावत रखते हुये भण्डारण एवं गोदाम स्थलों के लिये चित्तौड़ सड़क पर लगभग 38 एकड़ एवं सिलोर सड़क व राश्ट्रीय उच्च मार्ग संख्या–12 पर रेलवे लाइन के उत्तर में लगभग 19 एकड़ अतिरिक्त भूमि प्रस्तावित की गयी है। इस प्रकार भण्डारण एवं गोदाम हेतु कुल लगभग 82 एकड़ भूमि प्रस्तावित की गई है।

औद्योगिक :–

बून्दी शहर में रीको द्वारा चार औद्योगिक क्षेत्रों का विकास किया गया है, जिसमें से एक बाई पास सड़क (बी.पी.आर.) रिपेयर शॉप के रूप में विकसित किया गया है। एक औद्योगिक क्षेत्र बून्दी–चित्तौड़ सड़क (बी.सी.आर) व एक बून्दी–नैनवा सड़क (बी.एन.आर.) पर विकसित किया गया है। हट्टीपुरा औद्योगिक क्षेत्र में काफी क्षेत्र खाली पड़ा हुआ है जो कि उद्योगों के विकास हेतु उपयोग में लिया जाना ही प्रस्तावित है। बून्दी के आस पास के क्षेत्र में खनिज व कृषि उत्पादन होने के कारण औद्योगिक विकास की अच्छी सम्भावनाएँ है। मुख्य रूप से कृषि आधारित (तेल व चावल मिलें) उद्योग स्थापना की सम्भावना अधिक है। यह अनुमान किया गया है कि वर्ष 2033 तक लगभग 13200 व्यक्ति उद्योगों में कार्यरत रहेगें, जो कि कुल कार्यशील व्यक्तियों का 20 प्रतिशत होगा। वर्ष 2033 हेतु औद्योगिक गतिविधियों का विवरण तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या– 5.3.9

प्रस्तावित सामुदायिक केन्द्रों का विवरण–बून्दी–2033

कम सं.	उद्योग का प्रकार	काम करने वाले व्यक्तियों की संख्या	काम करने वालों का प्रतिशत	प्रस्तावित नियोजित घनत्व प्रति (एकड़ में)	नियोजित क्षेत्रफल (एकड़ में)
1.	घरेलू उद्योग	2640	20	–	–
2.	वृहद तथा लघु एवं मध्यम उद्योग	10560	80	20–25	511
	योग	13200	100	–	511

स्त्रोतः– नगर नियोजन विभाग अनुमान।

(1) औद्योगिक क्षेत्र :–

रीको द्वारा विकसित औद्योगिक क्षेत्रों के अतिरिक्त बून्दी में औद्योगिक विकास की सम्भावनाओं को ध्यान में रखते हुये औद्योगिक क्षेत्र का चयन वायु के बहाव की दिशा, आवागमन सुविधा, माल व व्यक्तियों के परिवहन के साधन, अधिक बेहतर आवासीय एवं कार्य–क्षेत्र संबधों को ध्यान में रखते हुये किया गया है। चित्तौड़ सड़क के उत्तर में लगभग 260 एकड़ भूमि एवं चित्तौड़ सड़क के दक्षिण में जी.एस.एस. के पश्चिम में लगभग 40 एकड़ भूमि अतिरिक्त औद्योगिक विकास हेतु प्रस्तावित है। नैनवाँ सड़क के उत्तर तथा 40 एकड़ भूमि अतिरिक्त औद्योगिक विकास हेतु प्रस्तावित है। नैनवाँ सड़क के उत्तर तथा आई.टी.आई. के पूर्व में लगभग 60 एकड़ भूमि औद्योगिक क्षेत्र हेतु प्रस्तावित की गयी है।

(2) घरेलू उद्योग :–

आवासीय व वाणिज्यिक क्षेत्रों में घरेलू उद्योग चालू रहने दिये जा सकते है। इन इकाईयों की स्थिति गुण–दोश के आधार पर उत्पन्न होने वाली ध्वनि, धुआँ, रासायनिक प्रदूशण, परिवहन समस्या, औद्योगिक अवशेश विसर्जन पद्धति इत्यादि पर विचार करके अनुमोदित की जायेगी, जिससे उपरोक्त किसी प्रकार की समस्या विशेशकर आवासीय क्षेत्रों में उत्पन्न न हो।

राजकीय :–

(1) सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी कार्यालय :–

बून्दी शहर जिला मुख्यालय होने के कारण यहाँ पर जिला स्तरीय लगभग सभी कार्यालय कार्यरत है। ऐसा अनुमान है कि वर्ष 2033 तक सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी कार्यालयों में कुल कार्यशील व्यक्तियों का 15 प्रतिशत अर्थात 9900 व्यक्ति कार्यरत होगें। सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी कार्यालयो हेतु वर्ष 2033 तक की भावी आवश्यकताओं के लिये लगभग 55 एकड़ अतिरिक्त भूमि प्रस्तावित की गई है। इस प्रकार कुल 91 एकड़ भूमि सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी कार्यालयों हेतु मास्टर प्लान में प्रस्तावित है। छत्रपुरा सड़क पर लगभग 27 एकड़ एवं कोटा–बून्दी सड़क पर लगभग 30 एकड़ भूमि सरकारी व अर्द्ध सरकारी कार्यालयों हेतु प्रस्तावित है। किराये के भवनों में चल रहे सरकारी भवनों को भी उक्त स्थलों पर स्थापित किया जाना प्रस्तावित है।

(2) सरकारी आरक्षित :–

बून्दी शहर के वर्तमान में कोटा–बून्दी सड़क पर राजकीय महाविद्यालय के उत्तर में एवं देवपुरा सड़क पर पुलिस लाईन को यथावत रखा जाना प्रस्तावित है।

आमोद–प्रमोद :–

बून्दी शहर के निवासियों एवं प्रवासियों/पर्यटकों के मनोरंजन (आमोद–प्रमोद) हेतु वर्तमान में मात्र 62 एकड़ भूमि ही विकसित है। अतः क्षितिज वर्ष 2033 तक की आवश्यकता अनुसार विभिन्न स्थलों पर 341 एकड़ अतिरिक्त भूमि प्रस्तावित की गयी है।

(1) उद्यान एवं खुले स्थल :–

सार्वजनिक उद्यान और खुले स्थलों को सामान्य तौर पर नगर के फेफड़ो के रूप में माना जाता है, ये किसी सीमा तक शहर को स्वच्छ सामाजिक एवं भौतिक स्वरूप प्रदान करते हैं। प्रत्येक नगरीय क्षेत्र के लिए सार्वजनिक उद्यानों, खुले स्थलों, खेल के मैदानों तथा अन्य मनोरंजन सुविधाओं का व्यवस्थित एवं युक्तिसंगत प्रावधान होना चाहिए। अतः विभिन्न प्रकार की मनोरंजन सुविधाओं का प्रावधान करने हेतु एक युक्तिसंगत योजना विकसित की गयी है, जिनमें स्थानीय स्तर के उद्यान एवं खुले स्थलों हेतु विस्तृत आवासीय योजनाऐं एवं सेक्टर प्लान बनाते समय प्रस्तावित जनसंख्या के आधार पर स्थल आरक्षित किये जायेंगे। यह सुविधा मास्टर प्लान में अंकित नहीं की गयी है।

बून्दी शहर एक संकरी घाटी में बसा हुआ है। बून्दी शहर में अनेक प्राचीन बॉवड़ियाँ व तालाब है। यहाँ के प्राचीन तालाबों व जलाशयों के कारण यहाँ पर प्राकृतिक सौन्दर्य व उद्यानों का विकास हुआ है। शहर में स्थित ऐतिहासिक नवल सागर पार्क, जैत सागर पर टेरेस गार्डन एवं स्मृति कुंज इत्यादि का समुचित रख–रखाव एवं योजना–बद्ध विकास प्रस्तावित है। शहर में उद्यानों एवं खुले स्थलों हेतु लगभग 339 एकड़ अतिरिक्त भूमि विभिन्न क्षेत्रों में प्रस्तावित की गयी है जिससे सभी क्षेत्रों में, विशेशकर नये प्रस्तावित क्षेत्रो में खुला वातावरण उपलब्ध करवाया जा सकेगा। बून्दी शहर के नये मास्टर प्लान में नैनवाँ रोड़ पर प्रस्तावित औद्योगिक क्षेत्र के पूर्व में लगभग 18 एकड़ भूमि, माटून्दा सड़क के पश्चिम में 23 एकड़ भूमि, बिबनवा सड़क के पश्चिम में प्रस्तावित स्टेडियम के पूर्व में लगभग 24 एकड़, रेलवे स्टेशन के पास एवं राश्ट्रीय उच्च मार्ग संख्या–12 के उत्तर में 31 एकड़, छत्रपुरा कृषि फॉर्म के उत्तर–पूर्व में लगभग 25 एकड़, चित्तौड़गढ़ सड़क के दक्षिण में 28 एकड़ एवं शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र के पश्चिम में लगभग 11 एकड़ भूमि उद्यानों एवं खुले स्थलों के विकास हेतु प्रस्तावित की गयी है।

उपरोक्त के अलावा शहर के मध्य में स्थित पौधशालाएँ एवं फलोद्यान भी शहर के खुले स्थल एवं हरित पट्टी के रूप में कार्य करेंगे।

स्थानीय निकाय (नगरपालिका, बून्दी) एवं राजस्थान आवासन मण्डल द्वारा विकसित योजनाओं में विभिन्न उद्यानों एवं खुले स्थलों का प्रावधान रखा गया है, किन्तु इन स्थानों

पर वृक्षारोपण एवं रख–रखाव का अभाव है। अतः इन स्थलों पर सघन वृक्षारोपण किया जाना प्रस्तावित है। साथ ही कई स्थानों एवं खुले स्थलों हेतु आरक्षित स्थलों पर सामुदायिक एवं धार्मिक अतिक्रमण की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिस पर भी रोक लगाया जाना आवश्यक है।

(2) स्टेडियम एवं खेल मैदान :–

बून्दी शहर में अभी तक कोई समुचित स्टेडियम व उचित खेल मैदान उपलब्ध नहीं है। केवल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय व कुछ विद्यालयों में खेल मैदान उपलब्ध है। शहर का एक मात्र प्रमुख खुला स्थल कुम्भा स्टेडियम है, जिसमें तीज मेला लगता है। भविश्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुये छत्रपुरा सड़क के पूर्व में लगभग 33 एकड़ भूमि एवं कोटा रोड़ पर प्रस्तावित कॉलेज के पूर्व में लगभग 37 एकड़ भूमि स्टेडियम एवं खेल मैदान हेतु प्रस्तावित है। इसके अलावा विस्तृत आवासीय योजनाएँ एवं सेक्टर प्लान तैयार करते समय क्षेत्रवार आवश्यकताओं हेतु खेल मैदानों का प्रावधान रखा जायेगा।

(3) अर्द्ध सार्वजनिक मनोरजन :–

अर्द्ध–सार्वजनिक मनोरंजन के अन्तर्गत क्लब, छविगृह, तरण ताल, मनोरंजन–पार्क, वाटर–पार्क एवं विज्ञान–पार्क इत्यादि आते है। वर्तमान में शहर में केवल एक ही छविगृह व एक ही क्लब है। नये विकसित किये जाने वाले जिला केन्द्र व सामुदायिक केन्द्रों में अर्द्ध–सार्वजनिक मनोरंजन हेतु स्थल आरक्षित किया जाना प्रस्तावित है।

(4) मेले/पर्यटन सुविधायें :–

बून्दी शहर में ऐतिहासिक तारा–गढ़ पैलेस, चित्र–शाला, राव बहादुर सिंह संग्रहालय, सूर्य मल मिश्र जी की हवेली, रानी जी की बावड़ी, चौरासी खम्भों की छतरी, नवल सागर, जैत सागर, सुख महल, शिकारबुर्ज, क्षार बाग एवं अन्य महत्वपूर्ण बावड़ियाँ व तालाब पर्यटन की दृश्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। यहाँ पर प्राकृतिक तालाब, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व के अनेक स्थल होने से यहाँ पर्यटन विकास की अपार सम्भावनाएँ है। विगत कुछ वर्शो में बून्दी में विदेशी व स्वदेशी पर्यटकों की संख्या में निरन्तर बढ़ोतरी हो रही है। इसके अतिरिक्त बून्दी के आस पास के क्षेत्रों में प्रमुख पर्यटन एवं आकर्शण के केन्द्र है।

सवाई माधोपुर में बाघ–अभ्यारण्य, रणथम्भौर किला, केशवरायपाटन में एतिहासिक व धार्मिक महत्व का केशवदेव जी का मन्दिर, रावतभाटा में बाड़ौली मन्दिर, राणा प्रताप सागर, जवाहर सागर, दरा अभ्यारण्य, झालावाड़ में गागरोन का किला, सूर्य मन्दिर प्रमुख पर्यटन आकर्शण के स्थल है। उक्त स्थलों के उचित प्रचार–प्रसार व पर्यटन सुविधाओं के अभाव में

बून्दी शहर में पर्यटन का वांछित विकास नहीं हो पाया है। अतः विस्तृत पर्यटन योजना तैयार की जानी प्रस्तावित है।

बून्दी शहर में तीज मेला व तेजाजी का मेला भरता है। तीज मेला छत्रपुरा सड़क पर कुम्भा स्टेडियम में लगता है। परन्तु विगत वर्शो में इस स्थल पर स्थानीय निकाय द्वारा विभिन्न विभागों को भूमि आवंटन कर दिये जाने से मेला स्थल के क्षेत्रफल में कमी आई है, जबकि बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ खले क्षेत्र की आवश्यकता अधिक हो गयी है। अतः भविश्य में इस पर किसी प्रकार के निर्माण/आवंटनकी अनुमति नहीं दी जाये। बून्दी में पर्यटन सुविधाओं हेतु जैत सागर के पास लगभग 25 एकड़ भूमि व शम्भू सागर के पश्चिम में लगभग 36 एकड़ भूमि प्रस्तावित की गयी है जिसमें होटल, रेस्तरां, रिसोर्ट, केम्पिग ग्राउण्ड, धर्मशालाएँ, हेण्डीक्राफ्ट मार्केट, वाटर–पार्क, एम्यूजमेन्ट–पार्क, आर्ट गैलरी, गोल्फ कोर्स एवं पार्किंग इत्यादि सुविधाएँ विकसित की जानी प्रस्तावित है।

बून्दी शहर में पर्यटकों को आकर्शित करने तथा अधिक समय रूकने व ठहराव को अधिक आराम दायक तथा यादगार बनाने के लिये निम्नलिखित सुधार एवं विकास के सुझाव दिये गये हैः–

1. पर्यटन स्थलों को सड़क मार्ग द्वारा जिला मुख्यालय से जोड़ा जावे।
2. बून्दी के नजदीक कोटा शहर में नियमित रूप से हवाई सेवा को संचालित कर सुचारू रूप से देश के अन्य शहरों से जोड़ा जाना चाहिए एवं सड़क मार्ग व रेल मार्ग का विकास और अच्छी तरह से किया जाना चाहिए।
3. रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड पर पर्यटन सूचना केन्द्र स्थापित किये जाने चाहिये।
4. पर्यटकों के आकर्शण की दृश्टि से प्रस्तावित पर्यटन सुविधा हेतु आरक्षित स्थल पर कैम्पिंग ग्राउण्ड, अम्यूजमैन्ट पार्क, रिसोर्ट, वाटर पार्क इत्यादि विकसित किये जाने चाहिए।
5. बड़े होटल मास्टर प्लान के प्रस्तावित जिला केन्द्र व सामुदायिक केन्द्र में स्थापित किये जा सकेगें।
6. बून्दी शहर एवं इसके आस–पास स्थित ऐतिहासिक तथा धार्मिक स्थलों को सूचीबद्ध किया जाकर उनके संरक्षण एवं सौन्दर्यीकरण हेतु संबंधित विभागों द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जाना प्रस्तावित है।
7. पर्यटकों को सुरक्षित पर्यटन माहौल प्रदान करने के लिए अलग से पर्यटन परिसर विकसित किया जाने का प्रस्ताव है।

8. शहर में स्थित पर्यटन स्थलों के आस पास स्वच्छ वातावरण प्रदान करने हेतु साफ–सफाई की उचित व्यवस्था किया जाना आवश्यक है।

सार्वजनिक एवं अर्द्ध सार्वजनिक :–

बून्दी शहर के एकीकृत विकास एवं नागरिकों की स्थानीय/क्षेत्रीय आवश्यकताओं को पूरा करने की दृश्टि से बून्दी मास्टर प्लान में विभिन्न सार्वजनिक सुविधाओं का प्रावधान रखा गया है। स्थानीय विशेशताओं, आवासीय घनत्व व भावी विस्तार की सम्भावनाओं को दृश्टिगत रखते हुये इन सार्वजनिक और अर्द्ध सार्वजनिक सुविधाओं का विभिन्न स्तरों पर वितरण किया गया है। इन सुविधाओं हेतु मास्टर प्लान में 667 एकड़ भूमि प्रस्तावित की गयी है।

(1) शैक्षणिक :–

बून्दी शहर जिला मुख्यालय होने के कारण एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक केन्द्र है। मुख्य रूप से यहाँ पर बून्दी शहर के अतिरिक्त आस–पास के ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं। सरकारी नीतियों एवं भविश्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बून्दी शहर के मास्टर प्लान में शैक्षणिक उपयोग हेतु सन् 2033 तक के लिये लगभग 373 एकड़ भूमि प्रस्तावित की गई है।

प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर की शैक्षणिक सुविधाओं का प्रावधान आवासीय क्षेत्रों की विस्तृत योजना बनाते समय योजनाओं के ले–आउट में किया जायेगा। अतः इनकी स्थिति एवं विद्यालयों का स्थान मास्टर प्लान की भू–उपयोग योजना में नहीं दर्शाया गया है। वर्तमान व नये विकसित किये जाने वाले क्षेत्रों के लिए 8 उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रस्तावित किये गये है। व्यावसायिक शिक्षा हेतु नैनवाँ सड़क पर विद्यमान औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के उत्तर में भविश्य की आवश्यकताओं हेतु लगभग 78 एकड़ भूमि प्रस्तावित की गयी है। यहाँ पर दो राजकीय महाविद्यालय है। भविश्य की आवश्यकताओं हेतु कोटा सड़क पर लगभग 15 एकड़ भूमि और अस्तोली सड़क पर लगभग 22.50 एकड़ भूमि महाविद्यालयों हेतु प्रस्तावित की गयी है। अन्य शैक्षणिक उपयोग हेतु शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के पश्चिम में अतिरिक्त भूमि प्रस्तावित की गयी है। वर्ष 2033 की प्रस्तावित शैक्षणिक संरचना को तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या– 5.3.10

प्रस्तावित शैक्षणिक सरंचना – बून्दी–2033

क्रम सं.	विद्यालय का स्तर	आयु वर्ग	आयु वर्ग में विद्यालय जाने योग्य बालक बालिकाओ की संख्या	आयु वर्ग में विद्यालय जाने योग्य कुल बालक /बालिकाओ का प्रतिशत	विद्यालयो में पंजीकृत छात्र/ छात्राओं की संख्या	विद्यालयो की संख्या	प्रति विद्यालय छात्रों की संख्या
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	नर्सरी से पांचवी तक	3–10	37400	80	29920	100	300
2.	6–8	11–13	16500	90	14850	85	175
3.	9–12	14–17	15400	75	11550	46	250

स्त्रोतः– नगर नियोजन विभाग के अनुमान।

(2) चिकित्सा :–

बून्दी शहर में वर्तमान में 212 बिस्तर की क्षमता का राजकीय सामान्य चिकित्सालय शहर के मध्य में बस स्टेण्ड के सामने स्थित है। इसी परिसर में जिला स्तरीय महिला चिकित्सालय भी संचालित है। इसके अतिरिक्त पुलिस लाईन बून्दी में 6 बिस्तर की क्षमता का एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र है एवं शहर में एक आयुर्वेदिक चिकित्सालय 10 बिस्तर की क्षमता का तथा एक होम्योपैथिक औशधालय भी कार्यरत है। उपरोक्तानुसार राजकीय चिकित्सा सुविधाओं के अतिरिक्त अनेक निजी नसिंग होम एवं मैटरनिटी होम भी संचालित है। शहर के मध्य में एक पशु चिकित्सालय भी कार्यरत् है। शहर की भविश्य की आवश्यकताओं के लिये चित्तौड़ सड़क के दक्षिण में 7.50 एकड़ भूमि सामान्य चिकित्सालय

के लिए व कोटा–बून्दी सड़क से प्रस्तावित उप प्रमुख मार्ग के दक्षिण में लगभग 10 एकड़ भूमि सामान्य चिकित्सालय के लिए तथा नैनवाँ सड़क के दक्षिण में 8 एकड़ भूमि पशु चिकित्सालय हेतु प्रस्तावित की गयी है। डिस्पेंसरी एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्तर की सुविधाएँ विस्तृत आवासीय योजनाएँ एवं सेक्टर प्लान तैयार करते समय प्रस्तावित की जायेगी।

(3) सामाजिक/सांस्कृतिक :–

मास्टर प्लान क्रियान्वयन के अन्तर्गत विस्तृत योजनाएँ बनाते समय आवासीय योजनाओं में सामाजिक/सांस्कृतिक भवनों के लिये भूमि आरक्षित किया जाना प्रस्तावित है।

(4) धार्मिक/ऐतिहासिक :–

बून्दी शहर एवं इसके आस–पास के क्षेत्र में अनेक धार्मिक/ऐतिहासिक महत्व के स्थल स्थित है। इन धार्मिक एवं एतिहासिक स्थलों के रख रखाव के लिए पुरातत्व विभाग द्वारा उचित कार्यवाही की जानी प्रस्तावित है।

(5) धरोहर संरक्षण :–

बून्दी शहर एवं आस पास के क्षेत्र के पुरातत्व महत्व के तारागढ़ किला, गढ़ पैलेस, रतन दौलत, छत्र महल रानीजी की बावड़ी, सुख महल, चौरासी खम्भों की छतरी, नागर–सागर कुण्ड, फूल सागर पेलेस, शिकार बुर्ज, बाणगंगा, क्षार बाग, धाबाई का कुण्ड, चित्रशालाएँ, मन्दिर, फूल महल, बादल महल, मोती महल, परकोटा एवं दरवाजे जैसे लंकागेट, खोजागेट, मीरागेट, सूरजगेट एवं मीरा साहब की दरगाह, केशोराय पाटन में केशोदेव जी का मन्दिर, जैन मन्दिर, इन्द्रगढ़ का किला, हिण्डोली का किला, दुगारी का किला, मैनाल में मन्दिरों का समूह, तलवास का किला, कमलेश्वर मन्दिर इत्यादि की पुरातत्व विभाग द्वारा विस्तृत कार्य योजना बनाई जाकर इनका उचित रख–रखाव व संरक्षण किय जाना प्रस्तावित है।

(6) अन्य सामुदायिक सुविधाएँ :–

अन्य सामुदायिक सुविधाओं के अन्तर्गत बैंक, पुलिस स्टेशन, डाक व तार कार्यालय, दूरदर्शन, अग्निशमन केन्द्र, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ, धर्मशालाएँ छात्रावास इत्यादि विकसित किये जा सकते है। बून्दी शहर में उपलब्ध विद्यमान सामुदायिक सुविधाओं के अतिरिक्त वर्ष 2033 तक की आवश्यकताओं हेतु आकलन कर चित्तोड़ सड़क पर 7 एकड़, कोटा–बून्दी सड़क पर 23 एकड़ एवं प्रस्तावित महाविद्यालय के उत्तर में 10 एकड़, एन.एच. –12 के बाईपास के उत्तर में व छत्रपुरा सड़क के पश्चिम में 9 एकड़ एवं दौलाड़ा सड़क

के पश्चिम में प्रस्तावित प्रमुख सड़क के दक्षिण में 19 एकड़ एवं नैनवां सड़क के दक्षिण में प्रस्तावित बाह्य मार्ग के पश्चिम में 20 एकड़ भूमि प्रस्तावित की गई है।

(7) जनोपयोगी सुविधाएँ :–

जल आपूर्ति, विद्युत व्यवस्था, जलमल निकास व्यवस्था एवं ठोस कचरा निस्तारण का प्रावधान नगरीय जीवन की मूलभूत आवश्यकताएँ है। उपयुक्त जल आपूर्ति के बिना कोई नगरीय क्षेत्र कभी विकास नहीं कर सकता है। उचित जल मल निस्तारण व्यवस्था के अभाव में एक स्वच्छ नगरीय पर्यावरण विकसित नहीं किया जा सकता है। जनोपयोगी सुविधाओं हेतु नैनवाँ सड़क के दक्षिण में 10 एकड़, चित्तौड़ सड़क पर जी.एस.एस. के दक्षिण में 27 एकड़ व कोटा सड़क पर 4 एकड़ भूमि प्रस्तावित की गई है।

(अ) जल आपूर्ति :–

वर्तमान में बून्दी शहर में प्रति–व्यक्ति प्रतिदिन जल आपूर्ति 106 लीटर है। बून्दी शहर में विद्यमान एवं भावी जनसंख्या के आंकलन पर वर्ष 2033 तक की आवश्यकताओं का अनुमान लगाकर जलदाय विभाग द्वारा जलापूर्ति के विस्तार हेतु एक समन्वित योजना तैयार किया जाना प्रस्तावित है, ताकि शहर में जल आपूर्ति व्यवस्था में समुचित/आशातीत सुधार किया जा सके।

(ब) जल–मल निस्तारण व्यवस्था :–

राजस्थान के अन्य शहरों की भाँति बून्दी में भी अभी तक कोई नियोजित जल–मल निस्तारण सुविधा नहीं है। पुराने शहर में शुश्क शौचालय थे, जिन्हें अधिकांशतः फ्लश में परिवर्तित कर दिया गया है। नई योजनाओं में सेप्टिक टैंक युक्त फ्लश लेट्रिन है। वर्तमान में बून्दी शहर में सीवरेज ट्रीटमेण्ट प्लाण्ट नहीं है। सीवरेज का सीधे ही खुली नालियों अथवा नालों में निस्तारण हो रहा है। स्थानीय निकाय विभाग भू–उपयोग योजना के अनुरूप जल–मल निकास की समुचित योजना बनायेगा। जल–मल निकास संयत्र का स्थान जन–स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग से विचार विमर्श कर सुनिश्चित किया जायेगा।

(स) ठोस कचरा निस्तारण प्रबन्धनः–

स्वच्छ वातावरण के लिए घृणोत्पादक पदार्थो के निस्तारण एवं इसके पुनः उपयोग की उचित व्यवस्था आवश्यक है। ठोस कचरा (सोलिडवेस्ट) निस्तारण हेतु स्थलों का चयन शहर के दूर, वायु की दिशा को देखते हुए किया जाना चाहिए। ईट–भट्टों एवं खदानों की

अनुपयुक्त भूमि, यदि उपलब्ध हो तो इस प्रकार के कार्यो के लिये उपयोग में ली जा सकती है। वर्तमान में बून्दी में घरों से कूडा–करकट एकत्रित करने हेतु कोई उचित में ली जा सकती है। लोगों द्वारा सड़कों पर ही कूड़ा डाल दिया जाता है, जिसका समय पर उचित ढंग से निस्तारण सम्भव नहीं हो पाता है। इस कारण कस्बे में पर्यावरण प्रदूशित रहता है। अतः यह आवश्यक है कि घरों से निकलने वाले कूड़ा करकट को एकत्रित करने के लिये उचित व्यवस्था की जाये ताकि कचरा सड़कों पर नहीं फैले एवं ठोस कचरे के निस्तारण हेतु नगर–पालिका द्वारा विस्तृत कार्य योजना तैयार की जानी चाहिए।

(द) विद्युत आपूर्तिः–

शहर की जनसंख्या व आर्थिक गतिविधियों की वृद्वि के साथ विद्युत की मांग में भी वृद्वि होना आवश्यक है। जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड द्वारा प्रस्तावित भू–उपयोग योजना को ध्यान में रखकर विस्तृत वितरण की एक सुमचित योजना तैयार करना अपेक्षित है।

(8) श्मशान एवं कब्रिस्तानः–

वर्तमान में कस्बें में स्थित श्मशानों और कब्रिस्तानों को यथावत रखा गया है। भविश्य में नये श्मशान व कब्रिस्तान आवश्यकता अनुसार परिधि नियंत्रण क्षेत्र में स्थानीय निकाय/जिला प्रशासन द्वारा स्थापित किये जा सकेंगे।

परिसंचरणः–

किसी भी कस्बे/शहर की परिसंचना व्यवस्था वहॉ के भावी भू–उपयोग प्रस्तावों का अभिन्न अंग होती है। परिसंचरण हेतु प्रमुख मार्गो की चौड़ाई, पार्किंग व्यस्था एवं यातायात के आवागमन को इस प्रकार प्रस्तावित किया गया है ताकि स्थानीय जनता एवं पर्यटक आदि के आवागमन के लिये उत्कृश्ट यातायात व्यवस्था संचालित की जा सके। कस्बे की विभिन्न सड़कों के मार्गाधिकार वहॉ पर होने वाले यातायात के अनुरूप निर्धारित किये गये है। बून्दी शहर अपने परिक्षेत्र के लिये एक सेवा केन्द्र की भूमिका अदा करता रहेगा। शहर में उद्योग, व्यापार एवं वाणिज्यिक गतिविधियों के विस्तार की निकट भविश्य में प्रबल सम्भावनाऍ है। अतः यहॉ के लिये अपने परिक्षेत्र से वस्तुओं एवं यात्रियों के परिवहन एवं आवागमन हेतु कुशल यातायात व्यवस्था होना आवश्यक है।

(1)प्रस्तावित यातायात संरचनाः–

बून्दी शहर में वर्तमान में क्षेत्रीय यातायात का भार मुख्य रूप से अन्दर की विद्यमान सड़कों, यथा राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या 12 का बाई–पास, महावीर सर्किल से बाई–पास सड़क तक

का मार्ग, सर्किट हाउस से लंका दरवाजा होते हुए बाईपास तक का मार्ग, छत्रपुरा सड़क, सिलोर सड़क, महावीर सर्किल से मीरागेट होते हुए बाईपास तक के स्थित मार्गो पर यातायात का अत्यधिक दबाव रहता है। चित्तौड़ सड़क पर भी भण्डारण एवं गोदाम एवं औद्योगिक क्षेत्र होने से यातायात का भारी दबाव रहता है। नैनवॉ सड़क पर औद्योगिक क्षेत्र, शैक्षणिक संस्थायें, सरकारी कार्यालय व आवासीय एवं वाणिज्यिक क्षेत्र होने के कारण यातायात का दबाव रहता है।

(अ) सड़कों का मार्गाधिकारः–

राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या 12 का बाई–पास (फोरलेन) 200' चौड़ा प्रस्तावित किया गया है। मास्टर प्लान में प्रस्तावित बाह्य मार्ग शहर की प्रमुख सड़कों कोटा–बून्दी मार्ग व नैनवॉ सड़क को मिलाते हुये 200 फीट चौड़ा प्रस्तावित किया गया है। प्रस्तावित बाह्य मार्ग राश्ट्रीय राजमार्ग, राज्य राजमार्ग, प्रमुख सड़कों एवं उप प्रमुख सड़कों के निर्माण एवं सुधार हेतु नगर/पालिका/राज्य लोक निर्माण विभाग द्वारा विस्तृत कार्य योजना बनाया जाना प्रस्तावित है। प्रमुख व उप प्रमुख सड़कें, विभिन्न आवासीय एवं कार्य केन्द्रों के मध्य सम्पर्क सुविधा प्रदान करेगी। अन्य सड़कों की चौड़ाई सेक्टर प्लान एवं विस्तृत आवासीय योजनाऐ बनाते समय निर्धारित की जावेगी। यथा सम्भव सड़कों का मार्गाधिकार निर्धारित मापदण्डों के अनुसार रखा जायेगा। वर्ष 2023 हेतु विभिन्न सड़कों का प्रस्तावित मार्गाधिकार तालिका में दर्शाया गया हैः–

तालिका संख्या– 5.3.11

विद्यमान सड़कों का प्रस्तावित मार्गाधिकार–बूंदी–2008

क्र. सं.	सड़कों की श्रेणी	प्रस्तावित न्यूनतम मार्गाधिकार (फीटों में)
1.	**राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12**	
	1. रेलवे ओवरब्रिज से सिलोर रोड़ जंक्शन तक	200
	2. सिलोर रोड़ जंक्शन से चित्तौड़–गढ़ सड़क चौराहे तक	200
	3. चित्तौड़–गढ़ सड़क चौराहे से मोटर मार्केट तिराहा मोड़ तक	120
	4. मोटर मार्केट तिराहा से पुरानी चुंगी नाका बालचन्द पाड़ा तक	100
	5. चुंगी नाका बालचन्द पाड़ा से नगरीय क्षेत्र सीमा तक	200

2.	**राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–9**	
	1. चित्तौड़–गढ़ सड़क व राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या 12 के चौराहे से रघुवीर पुरा ग्राम मोड़ तक	100
	2. रघुवीर पुरा मोड से नगरीय क्षेत्र सीमा तक	200
3.	**राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या–29**	
	1. रणजीत टॉकीज से रीको औद्योगिक क्षेत्र तक	100
	2. रीको औद्योगिक क्षेत्र से आई.टी.आई. तक	120
	3. आई.टी.आई. से नगरीय क्षेत्र सीमा तक	200
4.	**प्रमुख सड़कें**	
	1. राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 से शम्भु सागर दलेलपुरा ग्राम तक	100
5.	**उप प्रमुख सड़कें**	
	1. दलेलपुरा ग्राम से मीरा गेट तिराहा तक	100
	2. मीरा गेट तिराहे से महावीर सर्किल तक	60
	3. रेलवे ओवरब्रिज (राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12) के तिराहे से रणजीत टॉकीज तक (कोटा–बून्दी पुरानी सड़क)	100
	4. रणजीत टॉकीज से महावीर सर्किल तक	100
	5. आजाद पार्क से बाई–पास मोड़ राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 तक	80
	6. आजाद पार्क से खोजा गेट तक	60
	7. खोजा गेट से छत्रपुरा ग्राम होते हुये राश्ट्रीय संख्या–12 बाई–पास तक	80
	8. सूर्य मल मिश्र की मूर्ति से लंका गेट तक	60
	9. लंका गेट से सिलोर रोड़ राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 तक	80
	10. सर्किट हाउस से लंका गेट होते हुए राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 बाई–पास तक	100
	11. सिलोर रोड़ जंक्शन से चित्तौड़ रोड़ एवं राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 के चौराहे तक	100
	12. मीरा गेट से नैनवा सड़क से देवपुरा ग्राम होते हुए पुरानी बून्दी कोटा सड़क तक	80

तालिका संख्या– 5.3.12

विभिन्न मार्गो की प्रस्तावित मानक चौड़ाई–बूंदी–2033

क्र.सं.	सड़क का प्रकार	मार्गाधिकार (फीटों में न्यूनतम)
1.	राश्ट्रीय राजमार्ग, राज्य राजमार्ग एवं बाह्य मुख्य मार्ग/बाई पास	200
2.	प्रमुख मार्ग	120
3.	उप प्रमुख मार्ग	100
4.	मुख्य मार्ग/ग्रामीण सड़कें	80

(ब) सड़कों को चौड़ा करना एवं उनका सुधारः–

विभाग द्वारा यह नीति निर्धारित की गई है कि सभी वर्तमान सार्वजनिक मार्ग, जिन्हें प्रमुख, उप प्रमुख और मुख्य सड़कों के रूप में भू–उपयोग योजना में प्रस्तावित किया गया है, जहॉ तक सम्भव हो मानक चौड़ाई के होंगे, किन्तु शहर के भीतरी स्थानों पर कतिपय बाधाओं के कारण तथा शहर के बीच सड़कें चौड़ी किया जाना सम्भव नहीं है या सड़क चौड़ी करने में भारी निवेश करना पड़े और अधिक संख्या में इमारतों को तोड़ना पड़े तो अपेक्षाकृत निम्न मानक को अपनाया जा सकता है। यह सुनिश्चित किया जावे कि भविश्य में किये जाने वाले समस्त विकास कार्य प्रस्तावित भू–उपयोग एवं निर्धारित मापदण्डों के अनुरूप हों। जहॉ तक आवश्यक हो शहर के महत्वपूर्ण चौराहों की विस्तृत कार्य योजनाऍ बनाकर उनके अनुरूप ही विकास कार्य किये जाने चाहिए।

राजमार्ग एवं प्रमुख बाह्य मार्ग, जिनका मार्गाधिकार 200 फीट अथवा सक्षम प्राधिकारी द्वारा जो भी निर्धारित किया जावे, के दोनों ओर सड़क के मध्य से 70 फीट मार्गाधिकार की दूरी रखते हुए, 16 फीट चौड़ी सर्विस रोड़ रखी जावेगी। इस सर्विस रोड़ के बाहर की तरफ दोनों ओर विद्युतीकरण एवं हरियाली के लिए 14 फीट अथवा मार्गाधिकार की समुचित चौडाई के अनुपात में अतिरिक्त क्षेत्र छोड़ा जायेगा। नगरीयकरण योग्य क्षेत्र के बाहर सभी राजमार्गो/बाईपास/बाहय मार्गो के सहारे सभी विकास–कर्ताओं द्वारा उपरोक्त मार्गो के मार्गाधिकार के पश्चात 100 फीट चौडी पट्टी सघन वृक्षारोपण हेतु छोड़नी होगी तथा इस पट्टी के बाद समस्त अनुज्ञेय विकास कार्य सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी स्वीकृति के पश्चात ही किये जा सकेंगे।

समस्त आन्तरिक सड़कें राजमार्गो/बाईपास अथवा बाह्य मार्गो के सर्विस रोड़ पर 1 कि.मी. के अन्तराल पर ही मिलेंगी, तत्तपश्चात यह सर्विस रोड़ राजमार्गो/बाईपास/बाह्य मार्गो पर 2 कि.मी. की दूरी के बाद ही मिलेगी। अतः राजमार्गो/बाईपास/बाह्य मार्गो पर 2 कि. मी. से पहले कोई सड़क एक दूसरे को नही काटेगी। इस प्रकार यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि राजमार्ग/बाईपास/प्रमुख बाह्य मार्गो पर यातायात सुरक्षित एवं समुचित गति से निर्बाध रूप से संचालित हो सके। राजमार्गो/बाईपास/बाह्य मार्गो के साथ–साथ परिधि नियन्त्रण पट्टी मे वे समस्त भू–उपयोग आ सकेंगे, जो परिधि नियंत्रण पट्टी मे अनुज्ञेय हैं तथा परिधि नियंत्रण पट्टी में अन्य भू–उपयोग जैसे कि ग्रामीण विकास विभाग द्वारा स्थापित राजमार्ग सेवा केन्द्र, पेट्रोल पप्प, ग्रामीण आबादी का विस्तार, मोटल, कुक्कुट–शालाएँ, रिसोर्ट, फार्म–हाउस, ईंट भट्टे, दुग्ध शाला, फलौद्यान, पौधशाला, एम्यूजमेंट–पार्क, वाटर–पार्क, गौशाला, कृषि सेवा केन्द्र तथा कृषि आधारित लघु उद्योग भी सक्षम प्राधिकारी द्वारा निर्धारित मापदण्ड/अनुमोदित सैट बैक के साथ स्वीकृत किये जा सकेंगे।

(स) चौराहों का सुधारः–

नगर पालिका, बून्दी द्वारा शहर के प्रमुख चौराहों की कार्य योजना तैयार कर नियोजित तरीके से चौराहों का विकास किया जाना प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त नये विकसित होने वाले क्षेत्रों में पहले से ही विभिन्न चौराहों की कार्य योजना तैयार कर चौराहों का विकास किया जाना प्रस्तावित है, ताकि भविश्य में यातायात की समस्यायें उत्पन्न न हो।

(द) पार्किंग व्यवस्थाः–

शहर के व्यस्त एवं घनी आबादी वाले तथा प्रमुख व्यावसायिक केन्द्रों, यथा परकोटा शहर, महावीर सर्किल, आजाद पार्क के आस पास का क्षेत्र, अस्पताल, बस स्टेण्ड व कलेक्ट्रेट के आस पास का क्षेत्र एवं लंका गेट के समीप इत्यादि जगहों पर पार्किंग का उचित प्रावधान नहीं है। इन क्षेत्रों में विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियॉ चल रही है। शहर में विभिन्न स्थानों पर उचित पार्किंग प्रावधान छोड़े बिना व्यावसायिक निर्माण हो रहे है, जिसके कारण पार्किंग समस्या निरन्तर बढ़ रही है। अतः उक्त स्थलों पर उचित पार्किंग स्थल विकसित किये जाना आवश्यक है। इसके साथ यह भी आवश्यक है कि स्थानीय निकायों द्वारा की जाने वाली विभिन्न निर्माण स्वीकृतियों, जैसे कि बहु–मंजिले आवासीय परिसर, व्यावसायिक परिसर इत्यादि में पार्किंग के उचित प्रावधान रखे जावें।

(2) बस तथा ट्रक टर्मिनलः–

बून्दी में राश्ट्रीय राजमार्ग संख्या–12 के बाई–पास सड़क पर रीको द्वारा मोटर मार्केट व ऑटो मोबाईल रिपेयर शॉप विकसित किया गया है। अतः वर्तमान में इसके आस–पास के क्षेत्र एवं शहर के मध्य में चल रही ट्रांसपोर्ट गतिविधियों को स्थानान्तरित किया जाना प्रस्तावित है। वर्ष 2003 की आवश्यकताओं के लिये चित्तौड़ सड़क पर लगभग 19 एकड़ भूमि परिवहन नगर हेतु प्रस्तावित की गयी है, जिसमें यातायात कार्यालय, वर्कशॉप, भोजनालय, रेस्टोरेन्ट, दुकानें एवं पार्किंग स्थलों का प्रावधान किया जायेगा।

(ii) बस तथा ट्रक टर्मिनलः–

वर्तमान में बून्दी में बस स्टैण्ड शहर के मध्य में कलेक्ट्रेट के पास संचालित है। बस स्टेण्ड में वर्तमान में पर्याप्त भूमि उपलब्ध है। फिर भी शहर के भावी विकास को देखते हुए एन0एच0–12 के बाईपास पर स्टेशन रोड़ के समीप नया बस स्टेण्ड लगभग 16 एकड़ भूमि पर प्रस्तावित किया गया है।

(3) रेल मार्ग एवं हवाई सेवाः–

बून्दी, कोटा–चित्तौड़ बड़ी लाईन पर एक प्रमुख स्टेशन है। रेलवे स्टेशन शहर क दक्षिण में स्थित है। बून्दी में वर्तमान में हवाई अड्डा व हवाई पट्टी उपलब्ध नही है।

परिधि नियंत्रण पट्टीः–

नगर की परिधि में अवांछनीय/अनियंत्रित विकास पर नियंत्रण के उद्देश्य से 2003 तक के लिए प्रस्तावित नगरीयकरण योग्य क्षेत्र के चारों ओर परिधि नियंत्रण पट्टी प्रस्तावित है। इस क्षेत्र मे आने वाली भूमि का उपयोग मुख्य रूप से कृषि, वन विकास एवं इसके सहायक क्रियाकलापों एवं सीमित खनन आदि के लिए किया जा सकेगा। इससे परिधि नियंत्रण पट्टी में आने वाले, ग्रामों, जो कि नगरीयकरण योग्य क्षेत्र 2033 के बाहर है, का विकास भी नियंत्रित एवं योजनाबद्व तरीके से हो सकेगा। इस क्षेत्र में ग्रामीण विकास विभाग द्वारा स्थापित राजमार्ग सेवा केन्द्र, पेट्रोल पम्प, ग्रामीण आबादी का विस्तार, मोटल, कुक्कुट शालायें, रिसोर्ट, फार्म हाउस, कृषि आधारित लघु उद्योग भी निर्धारित मापदण्ड/अनुमोदित सेट बेक के साथ आ सकेंगे। शहर में स्थित ईंट तथा चूना भट्टों को योजनाबद्व रूप से उपरोक्तानुसार परिधि नियंत्रण पट्टी क्षेत्र में स्थानान्तरित किया जाना प्रस्तावित है।

ग्रामीण आबादी क्षेत्रः–

परिधि नियंत्रण पट्टी के अन्दर, किन्तु प्रस्तावित नगरीयकरण योग्य क्षेत्र के बाहर स्थित गॉवों का विकास ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के अन्तर्गत ही किया जायेगा। गॉवों का प्राकृतिक आबादी विस्तार नियोजित रूप से बढ़ने दिया जायेगा, ताकि सुव्यवस्थित ढंग से आबादी का विस्तार हो सके। इस संबंध में यह तथ्य अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं गम्भीर चिन्तन का है कि यदि नियोजित आबादी विस्तार का प्रावधान नहीं किया गया है तो इस बात की पूरी सम्भावना है कि जनता ग्रामीण आंचलों में विवेकपूर्ण ढंग से निर्माण करने के प्रति लालायित होगी, जिससे न केवल ग्रामीण क्षेत्रो में अवैध निर्माण की समस्या उत्पन्न होगी वरन यह प्रावृत्ति नगरीय क्षेत्र बाहर के इलाकों में मानकच्युत एवं यदृच्छ नगरीय विकास को जन्म देगी जिसके परिणामस्वरूप नियोजित नगरीय विकास का सम्पूर्ण उद्देश्य ही अर्थहीन बनके रह जायेगा। अतः ग्रमीण आबादी विस्तार को दृश्टिगत रखते हुए इन गॉवों का नियोजित ढंग से विस्तार हेतु आवश्यकता अनुसार योजनायें बनायी जायेंगी, जिसमें आवश्यक भू–उपयोग को समायोजित किया जावेगा।

5.4 नगर का वर्तमान स्वरूप तथा प्रभाव क्षेत्र :–

बून्दी के 45 वार्ड निम्न प्रकार है –

वार्ड नं. 1 – लगदरिया भेरू से प्रारम्भ होकर कोटा बून्दी रोड पर बून्दी की तरफ आते हुए न. प. सीमा तक आकर जयपुर कोटा रोड को क्रॉस कर पुराना सथुर चुंगी नाका लेते हुए पठार–पठार चलकर लगदरिया भेरू तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 2 – मोरडी की छतरी से प्रारम्भ होकर पठार–पठार चलकर सम्पूर्ण अम्बेडकर कॉलोनी को लेते हुए मोरडी की छतरी तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 3 – गणेश लाल शर्मा के मकान से चल रही सुबोाध की चक्की से प्रारम्भ होकर शास्त्री शिशु निकेतन तक आकर रोड क्रास कर वापितस गणेश लाल शर्मा गर्ग चक्की तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 4 – बाई – पास रोड कृषि उपज मण्डी समिति के गेस्ट हाउस किसान भवन से प्रारम्भ होकर जयपुर रोड की तरफ चलकर दाहिने हाथ की आबादी को लेते हुए वापिस गेस्ट हाउस किसान भवन तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 5 – डॉ. नागोरी मकान न. 2ए–1 से प्रारम्भ होकर मकान न. 3ए 38 पर आकर यहां से वापिस बाई पास रोड़ की तरफ घुमकर दाहिने हाथ की आबादी को लेते हुए डॉ. नागोरी के मकान तक का तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 6 – गिरधर गोपाल एडवोकेट के मकान से प्रारम्भ होकर बोहरा के मकान को शामिल कर वापिस मुड़कर दाहिने हाथ की आबादी को लेते हुए गिरधर गोपाल एडवोकेट के मकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 7 – चार भुजा मन्दिर से प्रारम्भ होकर बुलबुल के चबुतरे को लेते हुए मुडकर जगदीश मन्दिर व चार भुजा मन्दिर तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 8 – कल्याण जी चाय वाले की दुकान से प्रारम्भ होकर कॅवर प्रसाद जी वैध जी के मकान को लेकर सीधे रोड रोड चलकर कल्याण जी की चाय तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 9 – बोहरा नागदी में स्थित हकीमी मस्जिद से प्रारम्भ होकर पप्पु बोहरा के मकान को लेते हुए दायें तरफ की आबादी को लेते हुए हकीमी मस्जिद तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 10 – पुरानी कोतवाली के पास स्थित पिंजारा पंचायत दुकान से प्रारम्भ होकर हम्मीद भाई रंगरेज के मकान को लेते हुए पिंजारा दुकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 11 – सागर कटपीस स्टोर के. एन. सिंह चौराहे से प्रारम्भ होकर जोधपुर मिश्ठान भण्डार को शामिल करते हुए वापिस सागर कट पीस स्टोर तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 12 – प्रकाश राईस मील से प्रारम्भ होकर छाबडा गेरेज पर आकर बाये हाथ की आबादी को लेकर प्रकाश राईस मील तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 13 – मुमताज अली का नोहरा से प्रारम्भ होकर बग्गा की दुकान को शामिल कर वापिस कोटा रोड चलकर दाहिने हाथ की आबादी को लेकर मुमताज अली के नोहरे तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 14 – इमली जी के गणेश मन्दिर से प्रारम्भ होकर प्रभात एन्टरप्राइजेज को लेते हुए वापिस इमली के गणेश जी तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 15 – नाथू लाल कुमावत के मकान से प्रारम्भ होकर कालू पेन्टर के मकान को लेकर नाथू लाल कुमावत के मकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 16 – छत्रपुरा कृषि फार्म के पास से प्रारम्भ होकर छत्रपुरा कृषि फार्म की दीवार के पास आबादी को शामिल कर छत्रपुरा रोड पर आकर दयाल राठोड़ के मकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 17 – कुम्भा स्टेडियम से प्रारम्भ होकर त्रिमूर्ति कॉलोनी को लेकर कुम्भा स्टेडियम तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 18 – खोजागेट गणेश जी से प्रारम्भ होकर रेन बसेरे के पीछे की सम्पूर्ण बस्ती नर्सरी रोड तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 19 – नगर परिशद के पूर्वी कोने से प्रारम्भ होकर विद्युत विभाग को शामिल कर रानीजी की बावडी को लेते हुए नगर परिशद के कोने तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 20 – खोजा गेट से शुरू होकर पेट्रोल पम्प वाले के मकान को लेकर खोजा गेट कियोस्क तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 21 – कासट मेहन्दी वाले की दुकान से प्रारम्भ होकर बिरला किताबे वाले की दुकान को शामिल कर वापिस कासट मेहन्दी वाले की दुकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 22 – गफूर सेलानी के मकान से प्रारम्भ होकर फर्राशो के तकिये पर आकर रोड क्रास कर गोपाल शर्मा के मकान को लेकर वापिस गफूर सेलानी के मकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 23 – रजाक भाई के मकान से प्रारम्भ होकर इरफान भाई चुड़े वाले के मकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 24 – श्रृंगी क्लिनिक ब्राह्मणो की हताई से प्रारम्भ होकर राजेन्द्र शर्मा के मकान को लेकर यहां से मुड़कर दाहिने हाथ की आबादी को लेते हुए वापिस श्रृंगी क्लिनिक तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 25 – मनोहर बावडी से प्रारम्भ होकर गुफरान टेलर के मकान को व महेश मेवाडा के मकान को लेते हुए मनोहन बावडी तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 26 – चोमुखा गणेश मन्दिर से प्रारम्भ होकर मोची बाजार में मुडकर बायें हाथ की आबादी को शामिल करते हुए वापिस चोमुखा गणेश जी मन्दिर तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 27 – नागदी बाजार से प्रारम्भ होकर गाड़ी खाना स्कूल को शामिल कर भूरी बाई क मकान को लेकर नागदी बाजार तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 28 – खेल संकुल से प्रारम्भ होकर कुम्भा स्टेडियम रोड आकर वापिस खोजा गेट रोड की तरफ आकर खेल संकुल तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 29 – कॉलेज हॉस्टल से प्रारम्भ होकर ग्राण्ड परमेश्वरी होटल रोड पर आकर रणजीत निवास की ओर मुडकर वापिस कॉलेज हॉस्टल तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 30 – पुराना चुंकी नाका देवपुरा से प्रारम्भ होकर सीमेन्ट रोड पर आकर यहां से देवपुरा की ओर चलते हुए बायें हाथ की आबादी को शामिल कर वापिस पुराना चुंकी नाका देवपुरा तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 31 – भीम शंकर शर्मा रिटायर तहसीलदार से प्रारम्भ होकर बुद्वराज सोलंकी के मकान को शामिल कर वापिस कोटा रोड पर स्थित भीम शंकर शर्मा के मकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 32 – मीरा गेट पर जकात पर स्थित पुलिस चौकी से प्रारम्भ होकर मीरा गेट की तरफ मुडकर भंवर लाल जी की दुकान को शामिल कर रोड क्रास कर वापिस मीरा गेट स्थित पुलिस चौकी तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 33 – हरियाली रिसोर्ट के पास जेतसागर पुलिया से प्रारम्भ होकर दुल्हे साहब की दरगाह को लेते हुए जेतसागर नाले पर उतरकर हरियाली रिसोर्ट के पास जेतसागर पुलिया तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 34 – नेनवां रोड पर स्थित नेहरू फर्नीचर वर्क्स के मकान से प्रारम्भ होकर बहादुर सिंह सर्किल की तरफ चलकर दाहिंने हाथ की आबादी को शामिल कर नेहरू फर्नीचर वर्क्स के मकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 35 – बहादुर सिंह सर्किल पर स्थित हनी होटल से प्रारम्भ होकर डेफेन्स स्कूल की तरफ की सम्पूर्ण आबादी महिपत जी के मकान को लेते हुए वापिस हनी होटल तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 36 – नये माटुन्दा रोड से अन्दर घुसकर जवाहन नगर हाउसिंग बोर्ड से प्रारम्भ होकर जवाहर नगर के पीछे वाले समस्त हिस्से को लेते हुए वापिस जवाहर नगर हाउसिंग बोर्ड शिव मन्दिर पार्क तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 37 – शिवराज सिंह पटवारी के मकान से प्रारम्भ होकर जवाहर नगर हाउसिंग बोर्ड की आबादी को छोड़ते हुए भारत नगर मे दाये हाथ की समस्त आबादी को लेकर वापिस नये माटुन्दा रोड पर शिवराज सिंह पटवारी के मकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 38 – माटून्दा तिराहे से वहीद भाई के मकान से प्रारम्भ होकर श्री महावरी बेवरेज आईसक्रीम एवं कोल्ड ड्रिक्स को लेकर तिराहें पर स्थित वहीद भाई के मकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 39 – पुराना माटुन्दा रोड व नया माटुन्दा रोड से प्रारम्भ होकर राधा कृश्ण मन्दिर को लेकर वापिस तिराहे तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 40 – नेनवा रोड़ पर सज्जन सिंह इन्द्रा कॉलोनी के मकान से प्रारम्भ होकर गंगा डेयरी व कुमावत सदन को लेकर सज्जन सिंह के मकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 41 – नेनवा रोड पर जलदाय विभाग के सामने हेमचन्द सिंह रिटायर रेल्वे ड्राईवर के मकान से प्रारम्भ होकर जफर भाई बाये हाथ की आबादी को लेते हुए वापिस हेमचन्द सिंह रिटायर रेल्वे ड्राईवर के मकान तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 42 – चांदना होटल के सामने नेनवा रोड पर राज श्री टेन्ट हाउस से प्रारम्भ होकर पानी की टंकी की तरफ आकर बाये हाथ की आबादी को शामिल कर रजत गृत निर्माण कार्यालय को लेकर वापिस राज श्री टेन्ट हाउस नेनवा रोड तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 43 – रजत गृह कॉलोनी नम्बर 5 पर श्री माल प्रोपर्टी डीलर से प्रारम्भ होकर इसमें गेट नं. 6, 7 एवं 8 तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 44 – शुक्ल बावड़ी दरवाजे से प्रारम्भ होकर चौथ माता मन्दिर पुनम जी की बगीची बडे तालाब को लेते हुए गिनती के दरवाजे से निकलकर सुख महल को शामिल कर रामद्वारा होते हुए शुक्ल बावडी तक का समस्त दरम्यानी भाग।

वार्ड नं. 45 – मल्ला साहब मन्दिर के सामने भेरू जी मन्दिर के पास से शुरू होकर सेलार गाजी पर जानें वाले मार्ग पर स्थित निसार साईकिल वाले व रूपेश शर्मा के मकान को लेते हुए भैरू जी के मन्दिर जो मल्ला साबह मन्दिर के पास है, तक का समस्त दरम्यानी भाग।

बून्दी नगर परिशद द्वारा गत वर्ष नगर को 60 वार्ड़ो में पुनः विभाजित कर योजना बनाई जा रही हैं।

तालिका संख्या – 5.4.1

बून्दी नगर में वार्ड़ो के अनुसार जनसंख्या (2011)

वार्ड संख्या	वार्डो के अनुसार जनसंख्या			वार्ड संख्या	वार्डो के अनुसार जनसंख्या		
	कुल जनसंख्या	पुरूष	स्त्री		कुल जनसंख्या	पुरूष	स्त्री
1.	1,884	1,016	868	24.	3,834	1,983	1,851
2.	5,721	3,040	2,681	25.	1,587	825	762
3.	1,807	944	863	26.	4,051	2,084	1,967
4.	3,066	1,580	1,486	27.	3,570	1,882	1,688
5.	2,885	1,445	1,440	28.	6,127	3,181	2,946
6.	1,570	778	792	29.	3,965	2,086	1,879
7.	2,326	1,215	1,111	30.	1,561	835	726
8.	3,839	1,921	1,918	31.	1,958	1,038	920
9.	1,053	539	514	32.	3,789	1,962	1,827
10.	2,164	1,109	1,055	33.	2,630	1,415	1,215
11.	980	490	490	34.	3,174	1,664	1,510
12.	4,176	2,167	2,009	35.	2,372	1,261	1,111
13.	1,060	553	507	36.	1,165	584	581
14.	726	378	348	37.	1,737	908	829
15.	1,549	792	757	38.	1,521	791	730
16.	4,193	2,183	2,010	39.	1,564	803	761
17.	2,659	1,381	1,278	40.	1,267	660	607
18.	3,721	1,912	1,809	41.	1,633	857	776
19.	2,036	1,032	1,004	42.	1,012	555	457
20.	1,714	886	828	43.	1,210	676	534
21.	4,602	2,404	2,198	44.	987	579	408
22.	1,697	883	814	45.	1,510	804	706
23.	1,986	1,018	968				

स्त्रोतः– जनगणना रिर्पोट बून्दी 2011

BUNDI CITY - LOCATION MAP
(WARD - WISE)

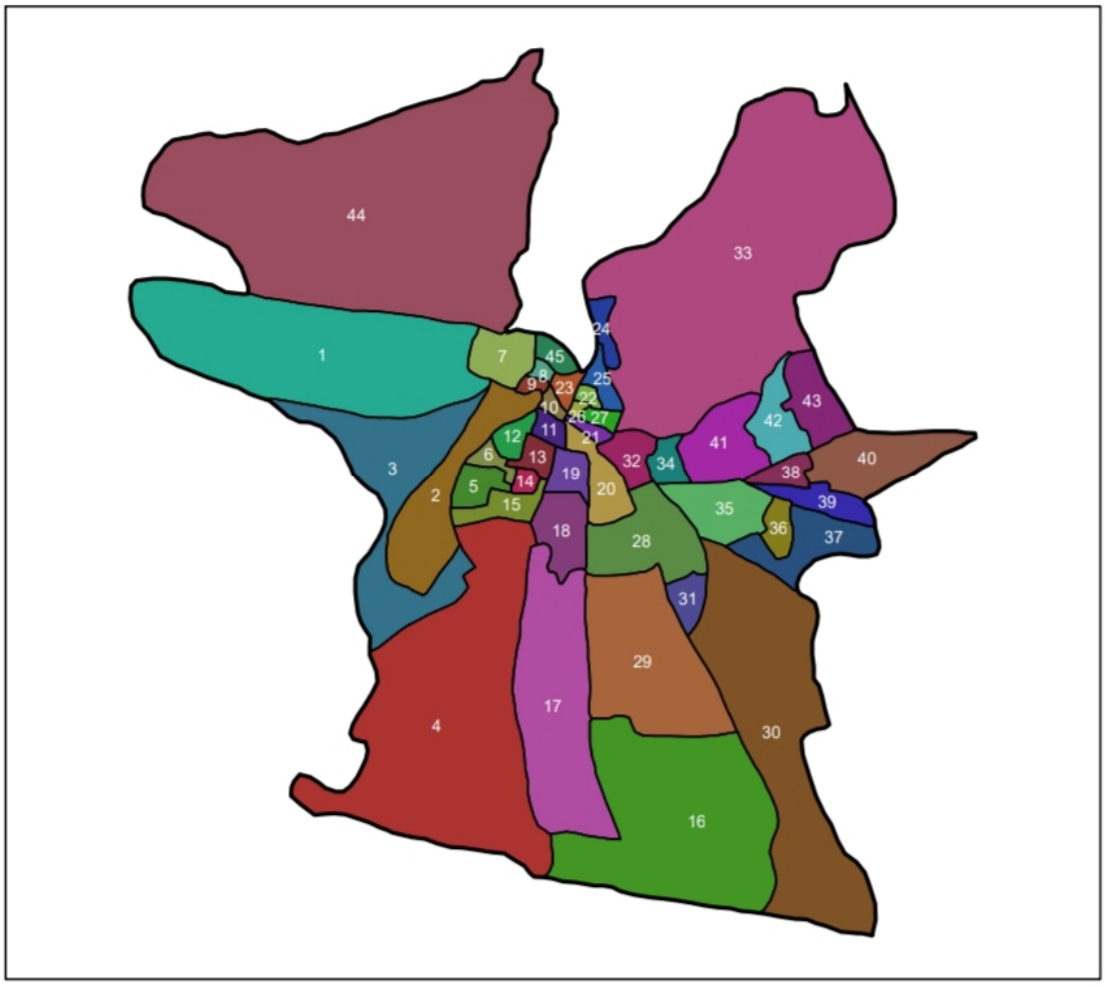

Legend

BUNDI CITY BOUNDARY

WARD BOUNDARY

WARD NO. 1 TO 45

0 550 1,100 2,200 3,300 4,400 Meters

मानचित्र संख्या–12 : बून्दी नगर – वार्ड़ अवस्थिति

नगर का प्रभाव क्षेत्र :–

क्षेत्र के सीमांकन का विषय बड़ा कठिन है। नगर व उसके सहायक प्रदेश के बीच संबंध समय के साथ बदलते रहते है। वर्तमान समय में इन संबंधों में विराट परिवर्तन हो रहे है। विकसित परिवहन एवं संचार के साधनों ने नगर की प्रभाव सीमा को विस्तृत एवं व्यापक बना दिया है, अब नगरों का प्रभाव समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्र तक ही सीमित नही रह गया है, बल्कि दूरवर्ती क्षेत्र से लोग रोजाना लम्बी दूरी तय करके नगरों में काम करने जाने लगे है। अतः इस अस्थिरता को देखते हुए नगर – प्रभाव सीमा को आसानी से आका नही जहा सकता हैं। अनेक विदेशी तथा भारतीय विद्ववानों ने इस विषय पर विभिन्न नगरों को लेकर अध्ययन प्रस्तुत किये है।

क्षेत्र द्वारा नगर के लिए किये जाने वाले कार्य – नगर का समीपवर्ती क्षेत्र नगर की साग–सब्जी, अनाज की पूर्ती करता है। नगर के समीप जिन भागो से यह समान नगर मे मंगाया जाता है वह इन वस्तुओं का सप्लाई क्षेत्र कहलाता है। यह समीपवर्ती क्षेत्र नगर के औद्योगिक, परिवहन तथा प्रशासनिक संस्थानों के लिए श्रमिक भी प्रदान करता है। इस प्रकार ये कार्य नगर की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करते है।

नगर द्वारा अपने प्रभाव क्षेत्र के लिए किये जाने वाले कार्य नगर उच्च सेवाओं का केन्द्र होता है। यहां पर उच्च शिक्षा संस्थान, प्रशासनिक दफ्तर, थोक व्यापारिक संस्थान, समाचार–पत्र, उच्च चिकित्सा आदि सुविधाऐं पाई जाती है। जिनका लाभ उठाने के लिए समीपवर्ती क्षेत्र के लोग यहां पर आते है। नगर के इन कार्यो को समीपवर्ती क्षेत्र से ही बल मिलता है। नगर की बस सेवा इन कार्यो का प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने में महत्वपूर्ण भाग अदा करती है।

नगर के प्रभाव – क्षेत्रों को सीमांकित करने के विषय पर जितने भी अध्ययन किये गये है, वह यह सब बताते है कि नगर व उसके समीपवर्ती प्रदेश आपस में परस्पर संबंधित है। उनका अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर है। नगरीय बस्तीयां अपने लिये भोजन, दुध, साग–सब्जी आदि का उत्पादन नही करती है। अपने व्यापारिक औद्योगिक तथा परिवहन संस्थानों के लिए श्रमिकों की आवश्यकता होती है ओर उसकी यह सब आवश्यकताऐं समीपवर्ती प्रदेश द्वारा ही पूरी की जाती है। यह समीपवर्ती प्रदेश इसके बदले में नगर से कुछ सेवाऐं प्राप्त करता है। नगर अपने समीपवर्ती प्रदेश की आय में वृद्वि करता है तथा इसके आर्थिक विकास में सहायता करता है। वह उसे रोजगार की सुविधा प्रदान करता है।

वह शिक्षा, प्रशासनिक, न्याय, पुलिस, अकृषित सामान, तीव्रगामी आधुनिक यातायात सुविधाऐं, वित, मनोंरजन, संचार, बीमा आदि सुविधाऐं प्रदान करता है। इस प्रकार स्पश्ट है

कि नगर व समीपवर्ती प्रदेश परस्पर एक दूसरे से जुडे है। दोनों एक दूसरे के पूरक है। वें परस्पर आर्थिक व सामाजिक दृश्टि से जुडे हुए है। आधुनिक यातायात साधनो ने नगरों को अपनो प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने में बड़ी मदद की है तथा समीपवर्ती प्रदेश की जनता को नगरों के सीधे सम्पर्क मे ला दिया है ताकि वे नगरीय सुविधाओं का लाभ उठा सके।

डॉ. उजागर सिंह :– 1961 में इन्होंने इलाहाबाद नगर के अमलैण्ड को निर्धारित किया है। उन्होने साग–सब्जी सप्लाई, दुध ओर खोया, इन्टर कॉलेजों का शिक्षा– क्षेत्र, अन्य सप्लाई तथा व्यापार क्षेत्र को आधार माना है। उसमें जिले के प्रशासन की सीमा भी दिखाई है। बहुत से कार्यो के सम्मिलित प्रभाव को देखते हुए अमलैण्ड के दो प्रमुख भाग किये है।

(1) प्रमुख अमलैण्डः– प्रमुख अमलैण्ड की सीमा निर्धारित करने में साग–सब्जी सप्लाई, दुध खोया सप्लाई तथा प्रमुख हाई सैकेण्डरी स्कूलों के खिचाव क्षेत्रों को आधार माना गया है। यह भी क्षेत्र है जिनका नगर से आर्थिक व स्वाभाविक दृश्टि से निकटतम गहरा संबंध है। इस क्षेत्र से क्रय व विक्रय करने के लिए तथा कार्य करने के लिए लोग प्रतिदिन सुबह नगर में आते है तथा शाम को वापस लोट जाते है।

(2) गौण अमलैण्डः– गौण अमलैण्ड दों प्रकार के पायें जाते है। एक तो भितरी गौण तथा दूसरे बाहय गौण क्षेत्र। भितरी गौण अमलैण्ड की सीमा को इन्टरमिडिएट कॉलेजों के आकृशण क्षेत्र द्वारा निर्धारित किया गया है। यह क्षेत्र बस सेवा के अनुरूप हैं। यह वह क्षेत्र है जहां से विद्यार्थी तथा कार्यकर्ता नगर में सप्ताह के पहले दिन आते है ओर सप्ताह समाप्त होने पर घर जाते है। नगर से थोक माल ले जाकर व्यापारी लोग यहां आकर फुटकर में माल बेचते है तथा इस क्षेत्र के निवासी अधिक अच्छा तथा बढ़िया सामान खरीदने के लिए व अस्पतालों, बैंकों ओर प्रशासनिक संस्थानों से संबंधित कार्यो के लिए नगर मे प्रतिदिन न आकर कभी–कभी आते है।

बून्दी नगर में मुख्यतः स्थानीय उत्पादन वाली वस्तुओं को निकट के क्षेत्रो से लाकर बेचा जाता है, कही आवश्यक वस्तुओं के लिए तो बून्दी नगर कोटा नगर पर भी निर्भर करता है। अतः बून्दी नगर भी अधिकांश मामले में कोटा नगर के प्रभाव क्षेत्र में आता है। इसका कारण है कोटा नगर का बून्दी नगर की अपेक्षा 10 गुना बड़ा है। इस प्रकार हम कह सकते है कि लगभग हर दृश्टि से कोटा नगर का प्रभाव क्षेत्र बून्दी के प्रभाव क्षेत्र से कही गुना बड़ा और व्यापक है।

अध्याय – 6

कोटा तथा बून्दी नगरीकरण का तुलनात्मक स्वरूप

कोटा तथा बून्दी नगरीकरण का तुलनात्मक स्वरूप :–

नगरों के विभिन्न आकार रूप हमें दिखाई देते है कुछ नगर बड़े है कुछ छोटे हैं कुछ पुराने तथा कुछ नये है इसी क्रम में यदपि बून्दी नगर कोटा नगर से पूर्ण स्थापित हुआ है परन्तु भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक अनुकुल परिस्थितियों के कारण कोटा नगर में नगरीकरण तीव्र गति से हुआ है जो कि उपरोक्त अध्यायों में वर्णित किया जा चुका है। बून्दी नगर भी नगरीकरण की दौड़ में शामिल हैं परन्तु कोटा नगर बून्दी की अपेक्षा काफी बड़े रूप में अपना विस्तार कर चुका है। इन दोनो नगरों के तुलनात्मक स्वरूप का विश्लेशण निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत किया गया है।

6.1 नगरीय आकारिकी :–

कोटा नगर का विकास भी मुख्यतः चम्बल के बीहड़ो में सुरक्षा व कृषि एवं पीने और अन्य कार्यों के लिए सदा वाहिनी चम्बल नदी की उपलब्धता के कारण ही सम्भव हो पाया है। कालान्तर में बून्दी नगर के अपेक्षा कोटा नगर विकास की दोड़ में आगे निकल गया इसमें यहॉ के बेहतर भोगोलिक दशाओं का योगदान प्रमख रहा है। यातायात के साधनों व सम्पर्क रास्तों के विकास होने से कोटा अधिक बेहतर ढ़ंग से अन्य प्रदेशों से जुड़ गया और इस कारण विकास को गति प्राप्त हुई।

शुरुआती समय में यहॉ औधोगिक विकास ने बहार से लोगों को आजीविका के लिए आकर्शित किया तो उधोगो के तेजी से विकास हुआ यह औधोगिक नगर बन गया इसे दिल्ली व जयपुर के काउन्टर मेग्नेट के रूप में विकसित किया जाने लगा कलंटर में पुनः आये बदलाव व उधोगो के पतन के साथ यहॉ बच्चों के लिए कोचिंग की शुरूआत हुई और वह आज कोचिंग उधोग के रूप में स्थापित हो गया जहॉ पुरे भारत से लाखों बच्चें पढ़ने आते है।

विकास की गति में कोटा नगर ने परकोटे में बंद अपनी आकारिकी की सीमितता को तोड़ का परकोटे के बाहर फैलाव शुरू किया जिससे परकोटे के अन्दर की तंग गलियों,बाजारों व आवासों को एक खुली जगह प्राप्त होती चली गयी जिससे मुख्यतः गुमानपुरा व एरोड्रम के आस पास के क्षेत्रों ,स्टेशन क्षेत्रों व मुख्य सड़कों के दोनो और कुछ व्यस्थित बाजारों का विकास हुआ जो आज बड़े बड़े मोल के रूप में स्थापित हो चुके है। नगर के उतर में स्टेशन क्षेत्र से लेकर नगर के दक्षिण में महावीर नगर , कोटा विश्वविद्यालय तक व पूर्व में नया नोहरा , बोर्खंदी से लेकर पश्चिम में चम्बल पार नान्ता क्षेत्र तक नगर का फैलाव हो चुका है।

पश्चिम में चम्बल नदी की रोक के कारण इा क्षेत्र में नगरीय विकास धीमा हुआ , कोटा में मुख्यतः नगर के विकास की प्रवृति राश्ट्रीय राजमार्गों व राजकीय मार्गों के साथ देखी जाती है जो इसे हवाई जहाज नुमा आकृति प्रदान करती है जो सामान्यतः अधिकांशनगरों की मुख्य आकारिकी भी है। वहीं

बून्दी नगर इतिहास में कोटा नगर के अग्रज के रूप में स्थापित हुआ था परन्तु कालांतर में अपने आप में सीमित रहने के कारण इस नगर में विकास बेहद धीमी गति से हुआ और कोटा नगर के अपेक्षा यह विकास के दौड़ में पिछड़ गया और आर्थिक, राजनीतिक व भोगोलिक कारणों ने इसके विकास कि गति को अभी तक भी धीमा ही बनाये रखा हुआ है।

इतिहास के जानकारों के अनुसार बून्दी की स्थापना जो 1924 में हुई थी तब इसमें केवल 12 गॉव और मात्र 300 घर ही थे। समय के साथ कोटा के आगे बून्दी का महत्व कम होता गया। ब्रिटिश राज के तहत बून्दी स्वतंत्र रूप में अस्त्तित्व में रहा ।1947 के बाद यह नगर राजस्थान राज्य का हिस्सा बन गया। बून्दी नगर मुख्यतः अपने शानदार ऐतिहासिक महलों ,किलों जो अरावली की नाग पहाड़ी पर स्थित है,बावड़ियो, झील, कुण्ड़ आदि के कारण पर्यटन का आकर्शण रहा है जो सीमित मात्र में ही पर्यटकों को अपनी और खीच पाता है। अतः इस नगर का विकास बेहद धीमा रहा , धरातलीय उच्चावच के कारण भी नगर का विकास उपयुक्त जगहों पर हुआ जिससे इसका फैलाव सीमित हो गया। बून्दी के विकास में पीछे रहने का एक प्रमुख कारण यहॉ कोटा जंक्शन जैसे स्टेशन का विकास न हो पाना भी है जिससे आवागमन की सुविधा होने के कारण विकास के गति धीमी हो गई। यहॉ बाजार भी छोटे ही है जो अब कुछ विकसित हुए है साथ ही नगर की आन्तरिक सड़के भी अच्छी अवस्था में नही है जो विकास को बाधित करती है जबकि कोटा नगर में अच्छी सड़को का निर्माण हुआ। नगर का विकास एन.एच.12 के साथ मुख्यतः देखा जा सकता है। विकास को बाहरी क्षेत्रों में फैलाने के लिए अब सरकारी ऑफिस व औधोगिक क्षेत्र वहां स्थापित किये जा रहे है। मुख्यतः कोटा रोड़ के सहारे नगर का विकास तेजी से हो रहा है जो सड़को के सहारे नगर के विकास की प्रवृत्ति को उजागर करता है इस प्रकार बून्दी नगर की आकारिकी पर यहां की भौगोलिक दशाओ का अधिक प्रभाव दिखाई देता है जो सड़क मार्गों के सहारे कुछ कुछ विरूपित तारेनुमा आकारिकी प्रदर्शित करता है।

6.2 नगरीय जनसंख्या :–

2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की कुल जनसंख्या 1951014 व्यक्ति है जिसमें 1021161 पुरूष एवं 929853 महिलाऐं हैं। इस जनसंख्या के अन्तर्गत 774410 कुल ग्रामीण जनसंख्या है (सारणी संख्या 2.8) जिसमें401331 पुरूष एवं 373079 महिलाऐं सम्मिलित हैं। यहाँ पर नगरीय जनसंख्या1176604 व्यक्ति है जिसमें 619830 पुरूष एवं 556774 महिलाऐं सम्मिलित है।

जनसंख्या वृद्धि –जनसंख्या वृद्धि से तात्पर्य किसी निश्चित क्षेत्र में पाये जाने वाली जनसंख्या में निश्चित समय अन्तराल में वृद्धि अथवा कमी होती है।

तालिका संख्या 6.2.1

कोटा शहर की जनसंख्या वृद्धि (1901–2011)

वर्ष	जनसंख्या	अन्तर	वृद्धि दर (प्रतिशत में)
1901	33657	-	
1911	32753	-904	-2.69
1921	31707	-1046	-3.19
1931	32876	+6169	+19.46
1941	47389	+9463	+24.98
1951	65107	+17768	+37.53
1961	120345	+55238	+84.84
1971	212991	+92646	+76.98
1981	358241	+145250	+68.20
1991	537371	+179130	+50.00
2001	694316	+156945	+29.21
2011	1001694	+307378	+44.27

स्त्रोत :– सांख्यिकी रूपरेखा 2011, आर्थिक सांख्यिकी निदेशालय राजस्थान, जयपुर

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि 1901 में कोटाशहर की जनसंख्या 33657 थी, किन्तु 1911 एवं 1921 में यहाँ की जनसंख्यामें कमी अंकित की गयी। इसका कारण उस समय सम्पूर्ण प्रदेश में पड़नेवाला 'छप्पानियाँ अकाल' था।

1941 एवं 1951 में क्रमशः 47389 एवं 65107 जनसंख्या थी। वर्ष1951 के पश्चात् शहर की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई तथा 1961 में120345 तथा 1971 में 212991 हो गयी। वर्ष 2001 में यहाँ की जनसंख्या 694316 अंकित की गयी। जनसंख्या वृद्धि दर 1951–1961 के दशक मेंसर्वाधिक 84.84 प्रतिशत रही। ऋणात्मक वृद्धि दर 1911–1921 के दशक मेंरही। 1960–1961 में वृद्धि दर 76.98 प्रतिशत थी, जो 1981–91 में 50प्रतिशत रह गयी और 1991–2000 के दशक में 29.21 प्रतिशत रही जोजनसंख्या वृद्धि में लगभग 21 प्रतिशत कमी रही जो परिवार कल्याणकार्यक्रमों की सफलता का द्योतक है। 2001 से 2011 में जनसंख्या वृद्धि दर44.27 प्रतिशत रही जो पुनः जनसंख्या वृद्धि दर को प्रदर्शित करती है। इस प्रकार पिछले दशकों में 1961 के दशक तकजनसंख्या वृद्धि हुई तथा इसके बाद 2001 तक वृद्धि दर में लगातार कमीहुई तथा 2011 में पुनः वृद्धि दर बढ़ने लगी। इस प्रकार आने वाले समय मेंयह जनसंख्या वृद्धि की समस्या मुसीबत का कारण बन सकती है।

इतिहास के जानकारों के अनुसार बून्दी की स्थापना जो 1924 में हुई थी तब इसमें केवल 12 गॉव और मात्र 300 घर ही थे। समय के साथ कोटा के आगे बून्दी का महत्व कम होता गया। ब्रिटिश राज के तहत बून्दी स्वतंत्र रूप में अस्त्तित्व में रहा ।1947 के बाद यह नगर राजस्थान राज्य का हिस्सा बन गया।

सन 1901 में बून्दी शहर की जनसंख्या 19,313 थी। प्राकृतिक आपदाओं जैसे अकाल व बीमारियों के कारण वर्ष 1911–1921 के दशक में जनसंख्या वृद्वि –17.28 प्रतिशत रही है। फलस्वरूप सन 1941 तक शहर की जनसंख्या में मामूली वृद्वि हुई। सन 1941–1951 एवं 1951–1961 के दशक में वृद्वि दर क्रमशः 8.88 प्रतिशत एवं 16.66 प्रतिशत ही रही। वर्ष 1961 के पश्चात शहर की जनसंख्या में तेजी से वृद्वि हुई, जिसका मुख्य कारण चम्बल परियोजना से सिंचाई के साधन उपलब्ध होने के कारण कृषि उत्पादों में वृद्वि होने लगी। जिससे ग्रेन मण्डी का निर्माण व कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना प्रमुख रहा। वर्ष 1961 से 2001 तक के 40 वर्शो के दौरान बून्दी शहर की जनसंख्या 26,448 से बढ़कर 88,871 (तीन गुना से भी अधिक) हो गयी, और 2011 में बढ़कर 115559हो गयी। जो शहर की तीव्र विकास की ओर इंगित करती है। वर्ष 1901 से वर्ष 2011 तक की जनसंख्या वृद्वि की प्रवृत्ति को तालिका में दर्शाया गया है:–

तालिका संख्या – 6.2.2

बून्दी नगर में जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति–बून्दी–1901–2011

वर्ष	जनसख्या	दस वर्ष का अन्तर	प्रतिशत वृद्धि (+) या कमी(–)
1901	19313	–	–
1911	19598	(+)285	(+)1.48
1921	16105	(–)3493	(–)17.28
1931	17991	(+)1886	(+)11.71
1941	20846	(+)2855	(+)15.87
1951	22697	(+)1851	(+)8.88
1961	26478	(+)3781	(+)16.66
1971	34492	(+)8014	(+)30.27
1981	48027	(+)13535	(+)39.24
1991	65047	(+)17020	(+)35.44
2001	88871	(+)23824	(+)36.63
2011	115559	(+)26688	(+)30.03

स्त्रोतः– जनगणना प्रतिवेदन,2011,राज.।

6.3 नगरीय व्यवसायिक गतिविधियाँ :–

सन 2001 एवं 2011 की जनगणना के अनुसार कोटा नगर में जनसंख्या का कार्यशील सहभागिता अनुपात अनुमानतः 25.32 प्रतिशत व 26.30 प्रतिशत रहा। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार कोटा नगर में कुल 1,75,845 व्यक्ति कार्यशील थे। वर्ष 2011 में जनगणना के अनुमानों से स्पश्ट होता हैं कि कोटा नगर में औद्योगिक तथा कृषि गतिविधियों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या में गिरावट आयी हैं, जबकि निर्माण, व्यापार एवं वाणिज्य तथा सेवा क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि हुई है। नगर नियोजन विभाग के अनुसार वर्ष 2011 में उद्योगों में 21.25 प्रतिशत, व्यापार एवं वाणिज्य में 21.00 प्रतिशत व अन्य सेवाओं में 32.26 प्रतिशत के कार्यरत रहने का अनुमान हैं।

तालिका संख्या – 6.3.1

व्यावसायिक संरचना कोटा 2001–2011

क्र. स.	व्यवसाय	2001		2011	
		कामगार व्यक्तियों की संख्या	कामगार व्यक्तियों का प्रतिशत	कामगार व्यक्तियों की संख्या	कामगार व्यक्तियों का प्रतिशत
1.	कृषि, खनन, एवं सहायक गतिविधियाँ	13,188	7.50	18,000	6.83
2.	उद्योग	42,290	24.05	55,980	21.26
3.	निर्माण	15,105	8.59	23,780	9.03
4.	व्यापार एवं वाणिज्यिक गतिविधियाँ	34,906	19.85	55,330	21.00
5.	परिवहन एवं संचार	17,567	9.99	25,350	9.62
6.	अन्य सेवायें	52,789	30.02	84,955	32.26
	योग	1,75,845	100.00	2,63,365	100.00
	कुल जनसंख्या का प्रतिशत	25.32 प्रतिशत		26.30 प्रतिशत	

स्त्रोत :–नगर नियोजन विभाग एवं सलाहकार

कोटामें वर्तमान में 4050 एकड़ भूमि औद्योगिक प्रयोजनार्थ काम में आ रहीं है, जो कि विकसित क्षेत्र का लगभग 19.09% है। उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या वर्ष 1971, 1981 एवं 2001 में क्रमशः 17,950 (28.2%), 29,634 (28.9%) एवं 36,073 (23.6%) थी। वर्ष 1981 से 2012 के बीच उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों के प्रतिशत में गिरावट का प्रमुख कारण यहां की कुछ प्रमुख इकाईयों का बन्द होना है तथा कोंचिग गतिविधियों की वृद्वि से भी आमजन का सेवा क्षेत्र में रूझान बढ़ा है।

अतः वर्तमान में औद्योगिक परिवेश को देखते हुए यह स्पश्ट है कि बड़ी रेल लाईन, चम्बल नदी एवं बिजली की उपलब्धता के कारण 60 के दशक में यहाँ बड़े उद्योगों की स्थापना हुई, जिनमें श्रीराम उद्योग (वर्तमान में बंद), इन्स्टूमेंटेशन लि. इत्यादि प्रमुख है। प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र डी.सी.एम. रोड़ इन्डस्ट्रीयल एस्टेट का क्षेत्रफल लगभग 1100 एकड़,

झालावाड़ रोड इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र, जिसका क्षेत्रफल लगभगा 900 एकड़ है। विशेश औद्योगिक क्षेत्र, आढ्र.एल. का क्षेत्रफल लगभग 60 एकड़ है। कन्सुआ सड़क के उत्तर में स्थित औद्योगिक क्षेत्र जिसमें लघु एवं मध्यम उद्योग स्थापित हैं का क्षेत्रफल लगभग 190 एकड़ है। रीको द्वारा नगर के दक्षिण में रानपुर स्थित औद्योगिक क्षेत्र का क्षेत्रफल लगभग 300 एकड़ है।

मास्टर प्लान–2023 में बारां सड़क पर प्रस्तावित औद्योगिक क्षेत्र विकसित नही हो सका। सेमकोर उद्योग भी वर्ष 2011 से बन्द है। वर्तमान में नगर में 27 बड़े एवं मध्यम उद्योग स्थापित है, जिनमें से 14 उद्योग उत्पादन दे रहे हैं। अन्य 13 उद्योग किन्ही कारणों`स उत्पादन नही दे पा रहे है। इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र में मुख्यतः कोटा स्टोन कटिंग व पॉलिशिंग तथा रसायन आधारित उद्योग इकाईयाँ स्थापित हैं। इन प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों के अलावा रावतभाटा सड़क पर तिलम संघ, सोयाबीन प्लांट एवं सरस डेयरी स्थित है।

विगत वर्शों में कोटा, इसके एवं आस–पास के क्षेत्रों में स्थित 8 सोयाबीन प्लांट कार्यरत होने से सोयाबीन तेल एवं डी0ओ0सी0 के उत्पादन के मुख्य केन्द्र के रूप में विकसित हुआ है। कोटा में मुख्यतः कोटा स्टोन, सैण्ड स्टोन, तिलहन, दलहन, अनाज, खाद्यान, खाद, मैटेलिक एवं नान मैटेलिक ऑक्साइड, वेल्डिंग रॉड एवं रसायन उद्योग स्थित है। इन उद्योगों के मुख्य उत्पादन तेल, पाईप, दूध, हींग, खाद, रसायन, ग्लास, सीमेन्ट, सिल्क साड़ी, धागा, अन्य कपड़े, रेडिमेड, फर्नीचर, कागज, स्टेशनरी, चमड़े की वस्तुऐं, रबड़, प्लास्टिक, खनिज, टाईल्स, विद्युत मशीनरी, ऑटोमोबाइल स्पेयर पार्ट्स, ट्रांसपोर्ट उद्योग, मरम्मत मशीनरी, निर्माण संबंधी औजार एवम् मशीनें, सर्विस उद्योग इत्यादि है।

सन 1991 एवं 2001 की जनगणना के अनुसार बून्दी शहर की जनसंख्या का कार्यशील सहभागिता अनुपात क्रमशः 27.49 प्रतिशत व 29.44 प्रतिशत रहा। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार बून्दी शहर में कुल 26,168 व्यक्ति कार्यशील थे। वर्ष 1991 व 2001 की गणना से स्पश्ट होता है कि बून्दी शहर में उद्योगों में क्रमशः 19.54 प्रतिशत व 20 प्रतिशत एवं व्यापार व वाणिज्यिक गतिविधियों में लगभग 22 प्रतिशत व्यक्ति कार्यशील है। स्पश्ट है कि बून्दी औद्योगिक एवं व्यापार गतिविधियों के मुख्य केन्द्र के रूप में विकसित हो रहा है। वर्ष 1991 व 2001 की वाणिज्यिक संरचना को तालिका में दर्शाया गया हैः–

तालिका संख्या – 6.3.2

व्यावसायिक संरचना–बून्दी–1991–2008

क्र. सं.	व्यवसाय	1991		2001		2008	
		कामगार व्यक्तियों की संख्या	काम करने वाले कुल व्यक्तियों का प्रतिशत	कामगार व्यक्तियों की संख्या	काम करने वाले कुल व्यक्तियों का प्रतिशत	कामगार व्यक्तियों की संख्या	काम करने वाले कुल व्यक्तियों का प्रतिशत
1.	कृषि, खनन एवं सहायक गतिविधियॉ	2021	11.30	3140	12	3910	12
2.	उद्योग	3494	19.54	5234	20	6516	20
3.	निर्माण	1001	6.60	1570	6	1955	6
4.	व्यापार एवं वाणिज्य	3955	22.12	5757	22	7167	22
5.	परिवहन एवं संचार	1721	9.62	2355	9	2932	9
6.	अन्य सेवाऍ	5689	31.82	8112	31	10100	31
		17881	100.00	26168	100.00	32580	100.00

स्त्रोतः– जनगणना भारत सरकार एवं नगर नियोजन विभाग अनुसार।

बून्दी में शहर के कुल विकसित क्षेत्र का लगभग 7.08 प्रतिशत अर्थात 150 एकड़ भूमि पर वाणिज्यिक गतिविधियॉ संचालित है। बून्दी शहर में वाणिज्यिक गतिविधियॉ (थोक एवं फुटकर व्यापार) शहर–कोट के अन्दर तथा शहर–कोट के साथ–साथ विकसित हुए है। शहर–कोट के अन्दर वाणिज्यिक क्षेत्र सदर बाजार में संकड़े मार्गो पर सघन क्षेत्र में चल रहा है। शहर–कोट के अन्दर का बाजार क्षेत्र अनियोजित व भीड़–भाड़ वाले क्षेत्र में चल रहा है। चौगान दरवाजा एवं मीरागेट व शहर–कोट की दीवार के साथ–साथ बाजार विकसित हुए है। जिसमें मुख्य रूप से कपड़ा मार्केट, सर्राफा, किराना, जनरल मर्चेण्ट एवं बर्तन इत्यादि वाणिज्यिक गतिविधयाँ सम्मिलित है। आजाद पार्क के आस–पास के क्षेत्र में

व्यापारिक गतिविधियॉ चल रही है। इन क्षेत्रों में अतिक्रमण के भारी दबाव के कारण बाजार अव्यवस्थित होते जा रहे है। शहर–कोट के बाहर नये विकसित क्षेत्रों में पुराने शहर के समीप लंका गेट के बाहर कृषि उपज मण्डी विकसित हुई है। इसके साथ ट्रांसपोर्ट, ऑटो–रिपेयर वर्कशॉप, पेट्रोल पम्प इत्यादि राश्ट्रीय राजमार्ग नम्बर 12 के बाई पास पर विकसित हो रहे है। सिलोर मार्ग पर कुछ व्यापारिक गतिविधियॉ चल रही है। अनाज भण्डारण हेतु गोदाम मुख्य रूप से अनाज मण्डी के पास एवं चित्तौड़ सड़क पर स्थित है। पत्थर व्यवसाय वर्तमान में सिलोर सड़क पर एवं मीरा दरवाजे के समाने जैत सागर मार्ग पर, अव्यवस्थित रूप से चल रहा है। शहर का भवन निर्माण सामग्री का अधिकांश व्यापार मीरा दरवाजे के बाहर केन्द्रित है। नैनवॉ सड़क पर मिश्रित बाजार विकसित हो रहा है। लंका दरवाजे के बाहर एक नियोजित वाणिज्यिक केन्द्र विकसित किया गया है। इसके अतिरिक्त नए विकसित क्षेत्रों में फुटकर मिश्रित वाणिज्यिक गतिविधियॉ चल रही है।बूंदी शहर राज्य में पर्यटन की दृश्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण कस्बा है। जैत सागर के पास आरटीडीसी का होटल व इसके आस–पास के क्षेत्र में निजी होटल चल रहे है।

बून्दी में विशिश्ट श्रेणी की कृषि उपज मण्डी है। इसके अन्तर्गत तालेड़, नैनवॉ पंचायत समिति तथा नगरपालिका, बूंदी क्षेत्र सम्मिलित है। जिसमें देई, हिण्डोली, तालेड़ा, बड़ा नयागांव, करवर एवं नैनवॉ यार्ड है। वर्तमान में बून्दी में 153 एकड़ भूमि औद्योगिक प्रयोजनार्थ काम में आ रही है, जो विकसित क्षेत्र का लगभग 7.22 प्रतिशत है। उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों की संख्या वर्ष 1991 एवं 2001 में क्रमशः 3494 (19.54 प्रतिशत) एवं 5233 (20 प्रतिशत) थी। वर्ष 1981 से 2001 के बीच उद्योागों में कार्यरत व्यक्तियों का प्रतिशत बढ़ा है। आस पास के क्षेत्र में खनिज व कृषि उत्पादन होने के कारण बून्दी में औद्योगिक क्षेत्रों का विकास किया गया है।

तालिका संख्या – 6.3.3

बून्दी में रीको द्वारा विकसित औद्योगिक क्षेत्र

क्र.सं.	औद्योगिक क्षेत्र का नाम	क्षेत्रफल
1	बाई पास सड़क, बून्दी (बी.पी.आर.)	9.61 एकड़
2	बून्दी–चित्तौड़ सड़क, बून्दी (बी.सी.आर.)	22.30 एकड़
3	बून्दी–नैनवॉ सड़क, बून्दी (बी.एन.आर.)	17.30 एकड़
4	हट्टी पुरा औद्योगिक क्षेत्र	71.36 एकड़
	कुल	**120.57 एकड**

स्त्रोतः– रीको कार्यालय, बून्दी।

इन औद्योगिक क्षेत्रों में मुख्य रूप से कृषि आधारित (तेल व चावल मिलें) उद्योग चल रहे है। इन औद्योगिक क्षेत्रों के अलावा भी चित्तौड़ एवं सिलौर रोड़ पर कई औद्योगिक ईकाईयॉ कार्यरत हैं, जिनमें मुख्यतः चावल मिलें है।

बून्दी शहर में बीड़ी बनाना, कपड़े बुनना, रंगाई, छपाई, बर्तन, जुते, बढ़ई–गिरी, लाख की चूड़ियॉ इत्यादि प्रमुख कुटीर उद्योग है। बून्दी में घरेलू उद्योग की 604 ईकाईयॉ पंजीकृत है, जिनमें कुल 4217 कार्मिक कार्यरत है।

6.4 भूमि उपयोग :–

कोटा नगर 1971 में 2,12,991 की आबादी का नगर था। वर्ष 1971 में एवं 1991 में नगर की नगर परिशद सीमा क्रमशः 34,880 एकड़ व 50,589 एकड़ थी। वर्तमान में नगर निगम सीमा क्षेत्रफल लगभग 1,30,260 एकड़ (527.03 वर्ग कि.मी.) हैं नगर का वर्तमान नगरीयकृत क्षेत्र 32,880 एकड़ है, जिसमें से केवल 21,221 एकड़ ही विकसित क्षेत्र के अन्तर्गत् है, शेश भूमि सरकारी आरक्षित, कृषि अन्य रिक्त एवं अर्द्व विकसित, जलाशय व राख निस्तारण के अन्तर्गत् आती है। नगर के अन्दर सघन आबादी के विकास के कारण आवासीय क्षेत्र विकसित क्षेत्र का 43.84% है। नगर औद्योगिक नगर होने के फलस्वरूप औद्योगिक उपयोग के अन्तर्गत 19.09% क्षेत्र आता है। आमोद–प्रमोद के अन्तर्गत केवल 2.40% क्षेत्र सम्मिलित है, जबकि सार्वजनिक एवं अर्द्वसार्वजनिक उपयोग के अन्तर्गत 13.24% क्षेत्र है। वाणिज्यिक भू–उपयोग 5.51% तथा सरकारी एवं अर्द्वसरकारी उपयोग के अन्तर्गत केवल 1.15% क्षेत्र ही है। तालिका में विद्यमान भू–उपयोग वर्ष 2012 को दर्शाया गया है –

तालिका संख्या – 6.4.1

भू–उपयोग–कोटा–2012

क्रं. सं.	भू–उपयोग	क्षेत्रफल (एकड़ में)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	नगरीकृत क्षेत्र का प्रतिशत
1	आवासीय	9304	43.84	28.30
2	वाणिज्यिक	1170	5.51	3.56
3	औद्योगिक	4050	19.09	12.32
4	सरकारी एवं अर्द्वसरकारी	243	1.15	0.74
5	आमोद प्रमोद	510	2.40	1.55

6	सार्वजनिक व अर्द्वसार्वजनिक	2810	13.24	8.55
7	परिसंचरतण	3134	14.77	9.53
	विकसित क्षेत्र	21221	100.00	64.54
8	जलाशय	1391		4.23
9	कृषि	365		1.11
10	अन्य रिक्त एवं अर्द्वविकसित भूमियां	3283		9.98
11	सरकारी आरक्षित	5759		17.52
12	राख निस्तारण क्षेत्र	861		2.62
	नगरीकृत क्षेत्र	32880		100.00

स्त्रोत :– नगर नियोजन विभाग एवं सलाहकार सर्वेक्षण एवं आंकलन

बून्दी शहर 2001 में 88,871 की आबादी का शहर था। बून्दी नगर पालिका सीमा का क्षेत्र लगभग 27.79 वर्ग किलोमीटर अर्थात 6866 एकड़ है। वर्ष 2008 शहर का कुल नगरीयकृत क्षेत्र लगभग 2630 एकड़ है, जिसमें से 2120 एकड़ विकसित क्षेत्र एवं शेश भूमि जलाशय, कृषि एवं अन्य खुली भूमि के अन्तर्गत आती है। विद्यमान भू–उपयोग के गणना के आधार पर कुल विकसित क्षेत्र का 42.74 प्रतिशत आवासीय, 7.80 प्रतिशत वाणिज्य, 7.22 प्रतिशत औद्योगिक, 1.70 राजकीय व अर्द्वराजकीय, 2.92 प्रतिशत आमोद–प्रमोद के अन्तर्गत, 15.33 प्रतिशत सर्वाजनिक एवं अर्द्व सार्वजनिक तथा 23.01 प्रतिशत क्षेत्र परिसंचरण के अन्तर्गत आता है।

तालिका संख्या – 6.4.2

विद्यमान भू–उपयोग–बून्दी–2008

क्र.सं.	भू–उपयोग	क्षेत्रफल (एकड़ में)	विकसित क्षेत्र का प्रतिशत	नगरिकृत क्षेत्र का प्रतिशत
1.	आवासीय	906	42.74	34.45
2.	वाणिज्यिक	150	7.08	5.70
3.	औद्योगिक	153	7.22	5.81
4.	राजकीय एवं अर्द्व राजकीय	36	1.70	1.37
5.	आमोद–प्रमोद	62	2.92	2.36
6.	सार्वजनिक व अर्द्व	325	15.35	12.35

	सार्वजनिक			
7.	परिसंचरण	488	23.01	18.55
	विकसित क्षेत्र	**2120**	**100.00**	—
8.	कृषि	97	—	3.69
9.	जलाशय	276	—	10.50
10.	अन्य रिक्त एवं अर्द्व विकसित क्षेत्र	77	—	2.94
11.	सरकारी आरक्षित	60	—	2.28
	कुल नगरीयकृत क्षेत्र	**2630**	—	**100.00**

स्त्रोतः— नगर नियोजन विभाग सर्वेक्षण एवं आकलन अनुसार।

6.5 नगरीय प्रभाव क्षेत्र :—

प्रत्येक बस्ती, चाहे वह छोटी हो या बड़ी, गांव हो या कस्बा, नगर हो या महानगर, केन्द्रीय कार्यो द्वारा अपने समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करती है। वह आर्थिक व सामाजिक कार्यो का संग्रह केन्द्र होती है। बड़ी बस्तीयों में ऐसे कार्यो की संख्या अधिक होती है जबकि छोटी बस्ती में कम। नगर या कस्बा ऐसी सेवाऐं प्रदान करता है जो न केवल उसमे निवास करने वाले व्यक्ति ही उनका लाभ उठाते है, बल्कि समीपवर्ती क्षेत्र के लोग भी उनकी सेवाओं का लाभ प्राप्त करते है। डिकिन्सन ने कहा है कि नगर का किसी स्थान पर बनें रहना नगर के उन कार्यो तथा सेवाओं पर निर्भर करता है जिनके द्वारा वह अपने समीपवर्ती क्षेत्र की सेवा करता है।

नगर कभी भी अलग—थलग रूप से नही रह सकता। वह अपने समीपवर्ती चारों ओर से घिरे प्रदेश पर भोजन, दुध, साग—सब्जी, फल आदि के लिए निर्भर करता है। उससे अपने व्यापारिक संस्थानों के लिए थोक व फुटकर व्यापारी, औद्योगिक संस्थानों के लिए कार्यकर्ता व कच्चा माल प्राप्त करता है। इस क्षेत्र में अनेक व्यक्ति प्रशासनिक, यातायात आदि कार्यो के लिए नगर में आते है। इस प्रकार प्रत्येक नगर अपने चारों ओर के क्षेत्र से गहरा संबंध रखता है। वह अपने इस क्षेत्र की सेवा करता है तथा उसके बदले में कुछ सेवाऐं प्राप्त करता है। मार्क जेफरसन नगर ओर उसके समीपवर्ती क्षेत्र के संबंधो का विश्लेशण करते हुए कहता है कि 'नगर स्वयं जन्म नही लेते बल्कि समीपवर्ती देहात क्षेत्र ही उसको कुछ ऐसे कार्य करने के लिए जन्म देता है जिन कार्यो को उस देहात क्षेत्र के मध्य में स्थित बस्ती द्वारा ही किया जा सकता है।

नगर अपने देहात क्षेत्र के अतिरिक्त उत्पादन पर निर्भर करते है। यें यातायात मार्गो के केन्द्र होते है तथा इस देहात क्षेत्र से यातायात मार्गो द्वारा जुड़े होते है। यहां से इस क्षेत्र

के चारों दिशाओं में मार्ग फैले रहते है जिनके द्वारा नगर इस क्षेत्र की सेवा करता है। उसक प्रमुख उद्देश्य ऐसे कार्यो को विकसित करना है जिनके द्वारा वह अपने इस देहात या समीपवर्ती क्षेत्र पर प्रभाव डाल सके। नगर अपने कार्य, व्यापारिक, औद्योगिक प्रशासकिय, सांस्कृतिक करता है जो न केवल नगरवासियों के लिए होते है बल्कि समीपवर्ती देहात क्षेत्र के लिए भी होते है। इन कार्यो द्वारा सेवा करने के बदले में वह अपनी प्राथमिक आवश्यकता की वस्तुऐं प्राप्त करता है। उदाहरणार्थ नगर को भोजन, साक–सब्जी की आवश्यकता होती है जो वह अपने क्षेत्र से प्राप्त करता है तथा बदले में कारखानों मे बना तैयार माल तथा उच्च कार्यो द्वारा इस देहात क्षेत्र की सेवा करता है। इस प्रकार नगर व उसका समीपवर्ती क्षेत्र आपस में गहरा संबंध रखते है। जितने देहात क्षेत्र से नगर का संबंध होता है उस क्षेत्र को नगर का प्रभाव क्षेत्र कहते है। यद्यपि नगर अपने कुछ कार्यो द्वारा दूरवर्ती क्षेत्र से भी संबंध रखता है, उदाहरण के तौर पर नगर में उत्पादित माल का विक्रय क्षेत्र विश्वव्यापी भी हो सकता है, इस कार्य के आधार पर नगर का प्रभाव क्षेत्र नही आका जा सकता। नगर का प्रभाव क्षेत्र वह क्षेत्र होता है, जो उसके चारों ओर सतत् रूप से फैला होता है। यह क्षेत्र नगर से सामाजिक–आर्थिक दृश्टि से संबंध होता है, नगर भी उस पर निर्भर करता है। इस प्रकार यह प्रभाव क्षेत्र दो आकर्शण बिन्दुओं का मिश्रण है, एक तो नगर जो केन्द्र बिन्दु के रूप में होता है, तथा दूसरा नगरीय प्रदेश, जो एक स्थानिक इकाई होता है, जिस पर नगर का प्रभाव विस्तृत होता है। यह दोनों बिन्दु स्वानिक सत्ता बनाते है, जिसको ग्रन्धित प्रदेश का नाम भी दिया जाता हैं। इस प्रदेश को विद्वानों ने अलग–अलग कही नाम दिये है।

इस प्रभाव क्षेत्र को जो केन्द्र बिन्दु का समीपवर्ती क्षेत्र होता है ओर वह नगरीय केन्द्र की सेवा करता है जिसके द्वारा वह स्वयं भी सेवाऐं प्राप्त करता है अनेक नामों से पुकारा जाता है। इनमे से कुछ इस प्रकार है – अमलैण्ड, नगर प्रदेश, खिंचाव क्षेत्र, नगर पृष्ठ प्रदेश, नगर प्रभाव क्षेत्र का घेरा, सहायक क्षेत्र, नगरीय क्षेत्र, ग्रन्थित प्रदेश, व्यापार क्षेत्र, प्रभाव क्षेत्र आदि।

नगर प्रभाव – क्षेत्र के सीमांकन का विषय बड़ा कठिन है। नगर व उसके सहायक प्रदेश के बीच संबंध समय के साथ बदलते रहते है। वर्तमान समय में इन संबंधों में विराट परिवर्तन हो रहे है। विकसित परिवहन एवं संचार के साधनों ने नगर की प्रभाव सीमा को विस्तृत एवं व्यापक बना दिया है, अब नगरों का प्रभाव समीपवर्ती ग्रामीण क्षेत्र तक ही सीमित नही रह गया है, बल्कि दूरवर्ती क्षेत्र से लोग रोजाना लम्बी दूरी तय करके नगरों में काम करने जाने लगे है। अतः इस अस्थिरता को देखते हुए नगर – प्रभाव सीमा को

आसानी से आका नही जहा सकता हैं। अनेक विदेशी तथा भारतीय विद्ववानों ने इस विषय पर विभिन्न नगरों को लेकर अध्ययन प्रस्तुत किये है।

क्षेत्र द्वारा नगर के लिए किये जाने वाले कार्य – नगर का समीपवर्ती क्षेत्र नगर की साग–सब्जी, अनाज की पूर्ती करता है। नगर के समीप जिन भागो से यह समान नगर मे मंगाया जाता है वह इन वस्तुओं का सप्लाई क्षेत्र कहलाता है। यह समीपवर्ती क्षेत्र नगर के औद्योगिक, परिवहन तथा प्रशासनिक संस्थानों के लिए श्रमिक भी प्रदान करता है। इस प्रकार ये कार्य नगर की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करते है।

नगर द्वारा अपने प्रभाव क्षेत्र के लिए किये जाने वाले कार्य नगर उच्च सेवाओं का केन्द्र होता है। यहां पर उच्च शिक्षा संस्थान, प्रशासनिक दफ्तर, थोक व्यापारिक संस्थान, समाचार–पत्र, उच्च चिकित्सा आदि सुविधाऐं पाई जाती है। जिनका लाभ उठाने के लिए समीपवर्ती क्षेत्र के लोग यहां पर आते है। नगर के इन कार्यो को समीपवर्ती क्षेत्र से ही बल मिलता है। नगर की बस सेवा इन कार्यो का प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने में महत्वपूर्ण भाग अदा करती है।

नगर के प्रभाव – क्षेत्रों को सीमांकित करने के विषय पर जितने भी अध्ययन किये गये है, वह यह सब बताते है कि नगर व उसके समीपवर्ती प्रदेश आपस में परस्पर संबंधित है। उनका अस्तित्व एक दूसरे पर निर्भर है। नगरीय बस्तीयां अपने लिये भोजन, दुध, साग–सब्जी आदि का उत्पादन नही करती है। अपने व्यापारिक औद्योगिक तथा परिवहन संस्थानों के लिए श्रमिकों की आवश्यकता होती है ओर उसकी यह सब आवश्यकताऐं समीपवर्ती प्रदेश द्वारा ही पूरी की जाती है। यह समीपवर्ती प्रदेश इसके बदले में नगर से कुछ सेवाऐं प्राप्त करता है। नगर अपने समीपवर्ती प्रदेश की आय में वृद्वि करता है तथा इसके आर्थिक विकास में सहायता करता है। वह उसे रोजगार की सुविधा प्रदान करता है। वह शिक्षा, प्रशासनिक, न्याय, पुलिस, अकृषित सामान, तीव्रगामी आधुनिक यातायात सुविधाऐं, वित, मनोंरजन, संचार, बीमा आदि सुविधाऐं प्रदान करता है। इस प्रकार स्पश्ट है कि नगर व समीपवर्ती प्रदेश परस्पर एक दूसरे से जुडे है। दोनों एक दूसरे के पूरक है। वें परस्पर आर्थिक व सामाजिक दृश्टि से जुडे हुए है। आधुनिक यातायात साधनो ने नगरों को अपनो प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने में बड़ी मदद की है तथा समीपवर्ती प्रदेश की जनता को नगरों के सीधे सम्पर्क मे ला दिया है ताकि वे नगरीय सुविधाओं का लाभ उठा सके।

उपरोक्त संदर्भ में देखने पर पता चलता है कि कोटा नगर का चूंकि जुडाव परिवहन माध्यम बेहतर ढंग से विकसित है। अतः यहां व्यापारिक गतिविधियां दूर–दूर तक के क्षेत्रों में अर्थात राश्ट्रीय स्तर तक विभिन्न राज्यो मे भी फैली हुई है। जैसे उद्योगों के लिए आने

वाला सामान कोचिंग के लिए कोटा आने वाले विद्यार्थी व दैनिक आवश्यकताओं में फूल, फल , सब्जी, दुध आदि दुर–दुर के क्षेत्रों से भी कोटा मे खपत हेतु आते है।
जबकि बून्दी नगर में मुख्यतः स्थानीय उत्पादन वाली वस्तुओं को निकट के क्षेत्रो से लाकर बेचा जाता है, कही आवश्यक वस्तुओं के लिए तो बून्दी नगर कोटा नगर पर भी निर्भर करता है। अतः बून्दी नगर भी अधिकांश मामले में कोटा नगर के प्रभाव क्षेत्र में आता है। इसका कारण है कोटा नगर का बून्दी नगर की अपेक्षा 10 गुना बड़ा है। इस प्रकार हम कह सकते है कि लगभग हर दृश्टि से कोटा नगर का प्रभाव क्षेत्र बून्दी के प्रभाव क्षेत्र से कही गुना बड़ा और व्यापक है।

उपरोक्त विश्लेशण के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुॅचते है कि चाहे जनसंख्या की दृश्टी से इन दोनो नगरों को देखा जाये चाहे औधोगिक या व्यापारिक गतिविधियों की दृश्टी से देखा जाये चाहे भूमि उपयोग का मूल्यांकन करें चाहे नगरों के प्रभाव क्षेत्रों को देखे दोनों नगरों में बहुत बड़ा अन्तर स्पश्ट दिखाई देता है अर्थात कोटा नगर हर दृश्टि से बून्दी नगर की अपेक्षा बेहतर साबित होता है तथा और अधिक तीव्र गति से विकास के मार्ग पर अग्रसर दिखाई देता है।

अध्याय – 7
सारांश (पुनरावलोकन)

सारांश (पुनरावलोकन):–

सारांश के रूप में उपरोक्त सम्पूर्ण शोध विश्लेशण के बाद सक्षिप्त रूप में हम इस निष्कर्ष पर पहुॅचते है कि नगरीकरण की प्रक्रिया निरन्तर जारी हैं तथा राजस्थान में कोटा तथा बून्दी अपनी अपनी विशेश परिस्थितियों के साथ नगरीकृत हो रहे है। जिनमें यदपि कोटा नगर बून्दी के बाद स्थापित हुआ है परन्तु नगरीकरण की दौड़ में वह बून्दी से कई गुना आगे निकल चुका है फिर भी बून्दी नगर एक छोटे तथा एक व्यवस्थित नगर के रूप में अपनी पहचान बना रहा है तथा दोनों नगरों में सतत विकास को ध्यान में रखतें हुए मास्टर प्लान लागु किये जा रहे है। जिससे भविश्य में दोनों नगरों की बेहतर छवी हमें देखनें को मिलेगी।

7.1 नगरीकरण की प्रमुख समस्याऐं कोटा बून्दी के सन्दर्भ में :–

कोटा नगर की समस्याऐ :–

- पर्यटकों को आकर्शित करनें के लिए होटल व टूरिज्म से सम्बंधित सेवाओं पर ध्यान नही दिया जा रहा है।
- वर्तमान में रेलवे स्टेशन कोटा नगर के उतरी सिरे पर स्थित है अतःदक्षिण में भी स्थित ड़कनिया स्टेशन मुख्य रेलवे स्टेशन की तरह विकसित नही है।
- कोटा की मुख्य चम्बल नदी भी पर्यटन स्थल के रूप में पूर्ण विकसित नही है।
- स्मार्ट सिटी के रूप में कोटा के अच्छे विकास के लिए एक अच्छे हवाई अडडे की व्यवस्था नही है।
- कोटा के ऐतिहासिक स्थलों को टूरिज्म बिन्दुओं के रूप में विकसित नही किया गया है।
- दशहरा मैदान जो कि अब नियोजित रूप से विकसित किया गया है की तरह अन्य मैदान विकसित नही है।
- स्मार्ट सिटी को देखते हुए आवश्यकता अनुरूप अच्छे मॉल तथा संविधाऐं अलग अलग क्षेंत्रो में विकसित नही है।
- व्यापारिक गतिविधियों के केंन्द्र पूर्णरूप से विकसित नही है।
- कृषि व नगर व्यवस्था में बिजली की 24 घन्टें उपलब्धता सुनिश्चित नही है।
- उधोगों के पुनः चक्रित पानी का उपयोग उघानों की सिंचाई में नही किया जाता है।
- वर्षा जल प्रबन्धन का अनिवार्य रूप से बड़े संस्थानों में लागू नही है।

- नदी में होने वाले प्रदूशण को रोका नही जा रहा है तथा नदी में नोकायान को पर्यटन आकर्शण नही बनाया जा सका है।
- कम दबाव के जलापूर्ति वाली कॉलोनियों में जल उप्लब्धता सुनिश्चित नही है।
- जन जागृति द्वारा नगर को साफ रखने के प्रयास नही सीमित है।
- नगर के परिवहन के लिए बेहतर परिवहन प्लान लागु नही हुआ है।
- परिवहन प्रदूशण को कम करने के लिए इ रिक्शा व इ परिवहन का अधिक बढ़ावा नही दिया जा रहा है।
- नगर के अतिक्रमण वालें क्षेत्रों को अतिक्रमण से मुक्त नही करवाया जा रहा है।
- नदी के किनारों पर स्थित जंगलों को पूर्ण संरक्षित किया जाना आवश्यक है।
- नगर के लिए एक बेहतर जल मल निस्तारण योजना भविश्य की आवश्यकता को देखते हुए आवश्यक है।
- पर्यटन बढ़ाने के लिए जल क्रीड़ा को बढ़ावा नहीदिया जा रहा है।
- चम्बल नदी में गिरने वालो नालों को नही रोका जा रहा है।
- नगर की परिवहन की समस्या को नियोजित पार्किग व्यवस्था नही है।
- नगर के प्रमुख बाजारों को स्मार्ट बाजार के रूप में विकसित नही किया गया है।
- वर्तमान आवश्यकताओं को देखते हुए स्किल विकास केंन्द्र नही खोले गये है।
- हरित प्रयास जैसे सोलर विधुत रोशनी,मल निस्तारण की समस्या हैं।
- भीड़ वाले क्षेत्रों में पार्किग सुविधा ठीक नही है।
- कच्ची बस्ती क्षेत्रों को विकसित कियें जाने की जरूरत है।

बून्दी नगर की समस्याऐं :–

- नगर में मास्टर प्लान के अनुसार योजना लागु नही हो पाई है।
- नगर में सेक्टर प्लान्स ठीक से तैयार नही है, विभिन्न सेक्टरों को आवश्यकता अनुसार विकसित नही है।
- नगर की हरीतमा पेटी में कमी आ रही है।
- नगर के पुराने परकोटा नगर को हेरिटेज के रूप में पूर्ण संरक्षित नही है।

- नवीन कोलोनियों को नियोजित रूप से खुले खुले रूप में सभी सुविधाओं का ध्यान रखते हुए स्थापित नही है।
- नवीन सड़को को भविश्य की जनसंख्या का ध्यान रखते हुए चौड़ी नही है।
- भूमि पर बगैर नियमन काटी जा रही कोलोनियों पर रोक नही है।
- आजाद पार्क का सब्जीमण्ड़ी के सामने नया दरवाजा बने पार्क में होने वाली अवैध गतिविधयों पर रोक जरूरी है।
- मुख्य स्थानों पर सफाई के पुख्तामों की कमी है।
- सब्जीमण्ड़ी बहुमंजिला नही है।
- फुटपाथों का विकास नही हो पाया है।
- परकोटे के भीतर के शहर में बहुमंजिला इमारतों के निर्माण पर पूर्ण रोक नही है, ताकि सुन्दरता बनी रहे।
- गरीबों के लिए मकान की व्यवस्था कम है।
- नाली निर्माण ,सड़क किनारे इन्टरलोंकिग ठीक नही है।
- नगर विकास के लिए लिंक रोड़ को चौड़ा नही है,ताकि शोभायात्रा के दौरान लोग फंसे नही,गलियों व अन्य रास्ते चौड़ेनही है।
- छोटे–छोटे अतिक्रमण नही हटा पा रहे है,ताकि जाम नही लगे।
- सड़को की कम चौड़ाई भी एक समसया हैं।
- नगर के प्रमुख स्थानों व चौराहों पर कैमरे नही है,जिससे अवैध गतिविधियां हो रही है।

7.2सुझाव :–

कोटा नगर के सुझाव :–

- कोटा नगर को 100 स्मार्ट नगरों की सूची में शामिल किया गया है।
- कोचिंग नगरी होने के कारण बहार से यहॉ आने वाले लोंगो की संख्या बून्दी से ज्यादा है।
- पर्यटकों को आकर्शित करनें के लिए होटल व टूरिज्म से सम्बंधित सेवाओं के अधिक विकास की आवश्यकता है।

- वर्तमान में रेलवे स्टेशन कोटा नगर के उतरी सिरे पर स्थित है अतःदक्षिण में भी स्थित ड़कनिया स्टेशन को मुख्य रेलवे स्टेशन की तरह बनाया जाये।
- कोटा के साथ निकट स्थित बून्दी किला भी पर्यटन का प्रमुख आकर्शण है उसका विकास किया जाये।
- कोटा की मुख्य चम्बल नदी को भी पर्यटन स्थल के रूप में अधिक विकसित करने की जरूरत है।
- स्मार्ट सिटी के रूप में कोटा के अच्छे विकास के लिए एक अच्छे हवाई अडडे की सख्त आवश्यकता है।
- कोटा के ऐतिहासिक स्थलों को टूरिज्म बिन्दुओं के रूप में विकास किया जाये।
- दशहरा मैदान जो कि अब नियोजित रूप से विकसित किया गया है की तरह अन्य मैदान भी विकसित किये जाये।
- स्मार्ट सिटी को देखते हुए आवश्यकता अनुरूप अच्छे मॉल अलग अलग क्षेंत्रो में विकसित किये जाये।
- वर्तमान में एरोड्राम को शहर से बहार स्थान्तरित किया जाना है उनकी जगह इस जगह की ऑक्सीजन जोन या विश्व स्तरीय प्रदर्शनी/स्थापित की जानी चाहिए।
- कार्यक्रम केंन्द्र के रूप में विकसित किया जाये इसे व्यापारिक गतिविधियों के केंन्द्र के रूप में भी विकसित किया जा सकता है।
- सड़को के दोनो और पेड़ लगायें जाये ताकि गर्मी से राहत के साथ ऑक्सीजन प्राप्त हो सके।
- कृषि व नगर व्यवस्था में बिजली की 24 घन्टें उपलब्धता सुनिश्चित की जाये।
- उधोगों के पुनः चक्रित पानी का उपयोग उघानों की सिंचाई में किया जाये।
- वर्षा जल प्रबन्धन का अनिवार्य रूप से बड़े संस्थानों को लागू करने का अनिवार्य किया जाये।
- चम्बल नदी फ्रंट का शीध्र विकास किया जाये ताकि पर्यटन को बढ़ावा मिले।
- नदी में होने वाले प्रदूशण को रोका जाये तथा नदी में नोकायान को पर्यटन आकर्शण बनाया जाये।
- कम दबाव के जलापूर्ति वाली कॉलोनियों में जल उप्लब्धता सुनिश्चित की जाये।
- जन जागृति द्वारा नगर को साफ रखने के भी प्रयास किये जाये।

- नगर के प्रमुख स्थानों व चौराहों पर कैमरे लगाये जाये ताकि किसी अवैध गतिविधि का तुरन्त पता लग सके।
- नगर के परिवहन के लिए बेहतर परिवहन प्लान बनाया जाये और फलाईओवर का निर्माण हो।
- परिवहन प्रदूशण को कम करने के लिए इ रिक्शा व इ परिवहन को बढ़ावा दिया जाये।
- नगर के अतिक्रमण वालें क्षेत्रों को अतिक्रमण से शीध्र मुक्त करवाए जाये।
- नदी के किनारों पर स्थित जंगलों को संरक्षित किया जाये ताकि हरियाली बनी रहें।
- नगर के लिए एक बेहतर जल मल निस्तारण योजना भविश्य की आवश्यकता का देखते हुए बनायीं जाये।
- पर्यटन बढ़ाने के लिए जल क्रीड़ा को बढ़ावा दिया जाये।
- चम्बल नदी में गिरने वालो नालों को रोका जाये तथा प्रदूशण से बचाए जाये।
- कोटा को इलेक्ट्रॉनिक सिटी या शिक्षा नगरी के रूप में भी विकसित किया जा सकता है।
- नगर की परिवहन की समस्या को नियोजित पार्किग व्यवस्था द्वारा ठीक किया जा सकता है।
- नगर के प्रमुख बाजारों को स्मार्ट बाजार के रूप में विकसित कर पर्यटन को बढ़ावा दिया जाये।
- वर्तमान आवश्यकताओं को देखते हुए स्किल विकास केंन्द्र खोले जाये।
- हरित प्रयास जैसे सोलर विधुत रोशनी,मल निस्तारण के सही प्रयास किये जाये।
- भीड़ वाले क्षेत्रों में पार्किग सुविधा ठीक की जाये।
- कच्ची बस्ती क्षेत्रों को विकसित किया जाये तथा नए बनाने से रोका जाये।

बून्दी नगर के सुझावः–

- मास्टर प्लान को तुरन्त लागु करवाया जाये।
- सेक्टर प्लान्स ठीक से तैयार कर विभिन्न सेक्टरों को आवश्यकता अनुसार विकसित किया जाये।
- नगर की हरीतमा पेटी विकसित की जाये।
- नगर के पुराने परकोटा नगर को हेरिटेज के रूप में संरक्षित किया जाये।

- नवीन कोलोनियों को नियोजित रूप से खुले खुले रूप में सभी सुविधाओं का ध्यान रखते हुए स्थापित किया जाये।
- नवीन सड़को को भविश्य की जनसंख्या का ध्यान रखते हुए चौड़ा बनाया जाये।
- भूमि पर बगैर नियमन काटी जा रही कोलोनियों पर रोक लगाया जाये।
- आजाद पार्क का सब्जीमण्ड़ी के सामने नया दरवाजा बने पार्क में होने वाली अवैध गतिविधियों पर रोक लगाई जाये।
- मुख्य स्थानों पर सफाई के पुख्ता इंतजाम होना चाहिए।
- मुख्य सड़को पर पड़ें पत्थरों को हटाया जाये।
- सब्जीमण्ड़ी दो मंजिला बनाई जाये।
- फुटपाथों का विकास किया जाये।
- परकोटे के भीतर के शहर में बहुमंजिला इमारतों के निर्माण पर रोक लगे, ताकि सुन्दरता बनी रहे।
- गरीबों के लिए मकान बनाए जाये।
- नाली निर्माण ,सड़क किनारे इन्टरलोंकिग की जाये।
- नगर विकास के लिए लिंक रोड़ को चौड़ा किया जाये,ताकि शोभायात्रा के दौरान लोग फंसे नही,गलियों व अन्य रास्तों को चौड़ा किया जाना चाहिए।
- छोटे–छोटे अतिक्रमण हटाए जाये,ताकि जाम नही लगे।
- सड़को को चौड़ा किया जाये।
- मवेशी मुक्त हो नगरः सड़को और गलियों में मवेशियों से परेशानी होती है।
- हैल्पलाइन सिस्टम बेहतर होः अभी नगर निगम के हैल्पलाइन सिस्टम से लोग सन्तुश्ट नही है।
- सफाई में हो सुधारः सफाई व्यवस्था नगर निगम का मुख्य कार्य है, लेकिन कई इलाको में कचरे का सही जगह सही तरीके से निस्तारण नहीं हो रहा है।
- ड्रेनेज सिस्टम बेहतर होः नगर के ड्रेनेज सिस्टम को सुधारने की जरूरत है।
- ट्रेंचिग ग्राउंड़ः कचरा निस्तारण के लिए आधुनिक तकनीक से नगर से दूर ट्रेंचिग ग्राउंड बनाने की जरूरत है।
- जैविक कचराः निर्धारित मापदंड़ो के अनूसार जैविक कचरे के निस्तारण की व्यवस्था की जाए। अभी अस्पतालों से निकलने वाले कचरे के निस्तारण की व्यवस्था प्रभावी नही है।

- नगरीय परिवहनः नगर के सभी इलाकों तक नगर निगम की बस सेवा सुलभ नहीं है। नगर में हर इलाके के लिए बेहतर बस सेवा शुरू करने की जरूरत है।
- सार्वजनिक सम्पतिः अभी सार्वजनिक सम्पति पर कोई भी पोस्टर, बैनर लगा देता है या उसे क्षति पहुॅचा देता है उसे रोका जायें।
- नगर निगम बोर्ड़ और समितियों की बैठक नियत समय पर हो।
- कच्ची बस्तियों का विकास हो व नए पर रोक लगाई जाये।

7.3 निष्कर्ष :–

उपरोक्त शोध अध्ययन के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुचे हैं कि विश्व तथा भारत में नगरीकरण तेजी से हो रहा है।राजस्थान राज्य में भी नगरीकरण की गति उसी अनुपात में है।राजस्थान के प्रमुख नगरों में कोटा तथा बून्दी नगरों में नगरीकरण की गति अनुपातिक रूप से धीमी रही है।कोटा नगर का उदभव बून्दी से हुआ है परन्तु समय क्रम में कोटा नगर बून्दी से तेजी से आगे निकल गया है।कोटा नगर जनसंख्या के आधार पर बून्दी नगर से 10 गुना अधिक विस्तृत को चुका है। भूमि उपयोग की दृश्टि से भी कोटा नगर बून्दी नगर की अपेक्षा अधिक विस्तृत हो चुका है।कोटा नगर के तेजी से नगरीकृत होने में जल तथा विधुत की उपलब्धता तथा परिवहन जुड़ाव प्रमुख कारण है। कोंचिग संस्था ने कोटा में एक नवीन उधोग के रूप में कोटा को एक नई पहचान दी है। पर्यटन में भी कोटा बून्दी की अपेक्षा अधिक आकर्शण का केन्द्र रहा है। कोटा व बून्दी नगरों के नगरीकरण के सुनियोजित विकास के लिए मास्टरप्लान तैयार किये जा चुके है। नगरों में चौड़ी सड़को तथा अच्छी सुविधाओं की आवश्यकता है।नगरीय विकास के लिए सभी एजेंसी के बीच अच्छे समन्वय की आवश्यकता है।नगरों के बेहतर विकास के लिए सेक्टर प्लान बनाने की आवश्यकता है।नगरों में कच्ची बस्तियों पर नियंत्रण की आवश्यकता है। नगरों के सीवरेज प्लान ठीक से बनाने की जरूरत है। तभी हाड़ोती के यह दोनो प्रमुख नगर तीव्र गति से सतत विकास के पथ पर अग्रसर हो पाने में समर्थ होंगे।

ग्रन्थावली

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Bibliography

- Bosh , A .-"Studies in India's Urbanization,1901-1971', Tata Mc Graw Hill, Bombay, 1973.
- Bhattacharya , B .-"Urbanization , Urban Sustainability and the Futute of Cities', Concept Publishing Company Pvt.Ltd.,New Delhi, 2010.
- Bogue,D.J. & K.C. Zachariah-"Urbanization and Migration in india',in R.Turner (Ed.),India's Urban Future, Oxford University Press, Bombay,1962.
- Bijlani , H.V.- "Urben Problems',Centre for Urban Studies,Indian Institute of Public Administration, New Delhi,1977.
- Bulsara,J.P.-"Problems of Rapid Urbanization in India',Popular Prakashan,Bombay,1964.
- Bradnock,R.C.-"Urbanization in India'John Murray,1984.
- Bhardwaj,R.K.-"Urban Development in India' National, Delhi,1974.
- Beckinsale,R.P.&J.M.,Houston-"Urbanization and its Problem', Oxford , 1968.
- Bansal,S.C.-"Urban Geography',Meenakshee Publication, Meerut,2014.
- Carter,H.-"The Study of Urban Geography',Edward Arnold, London,2013.
- Cenusus Of India, Rajasthan, kota & Bundi up to 2011.
- Correa,C.M.-"Patterns of Urban Growth',EKISTICS,Vol.34.
- Conzen,Michqel,p.-"World Patterns of Modern Urban Change' University of Chicage,1986.
- Desai,A.R.&S.D.Pillia-"Slums and Urbanisation',Popular Prakashan, Bombay,1970.
- Davis,K.-"The Origin and Growth of Urbanization in World',American Journal of Socialogy,Vol.60,1955.
- Dubey,K.K&A.K. Singh-"Urban Environment in India:Problems and Prospects',Inter-India Pub.,New Delhi,1986.

- Davis,K.-"The Urbanization of the Human Population',in the City in Newly Developing Countires',Gerald Breese (Ed.),Prentice Hall, London , 1969.
- Davie,M.R.-"The Patterns of Urban Growth' in Studies in the Science of Society (Ed.) G.P. Murdock Yale University,New Haven,1937.
- Dsuza,S.V.-"Urbanization and Rural-Urban Differences in Literacy'Paper Presrnted at the Conference of India Association for Population Studies.New Dehli,1982.
- Davies,W.K.D.-"Appoaches to Urban Geography: "An over View' in Urban Essays': Studies in the Geography of Wales', H. Carter and W.K.D. Davies, Longman, London, 1970.
- Ginsburg & S.Kiuchi-"Recent Development in Japanese Urban Geography', AAAG., 1963.
- Garnier,J.B. & G.Chabot- "Urban Geography', Longman, London, 1967.
- Gibbs, J.P.-"Urban Research Methods' Vol.Nostrand co.Inc.,Toronto, 1961.
- Herbert, D.T. & Colin J. Thomas-"Urban Geography- A First Approach', New York, Willey & Sons, 1982.
- Harold, M. Mayor- "Readings in Urban Geography',Central Book Depot, Allahabad.
- Hauser P.M. & L.F.Schnore- "The Study of Urbanization', Me Graw-Hill, New York,1965.
- Hartshorn, T.A.-"Interpreting The City: An Urban Geography', 2nd Rev.Ed. New York, John Wiley & Sons, 1990.
- James, H.E.-"Urban Geography of India', Bulletin of the Geographical Society of Philadelphia, Vol.28,1930.
- Josi,R-"Urban Geography', Rajasthan Hindi Granth Akadamee, Jaipur, 2003.
- King,L.S.& R.G.Golledge-"Cities, Space and Behaviour: The Elements of Urban Geography' Prentice Hall Inc, New Jersey, 1978.
- Master Plan Bundi (2008-2033)
- Master Plan Kota (2012-2031)

- Mayer, H.M.-"A Survery of Urban Geography' in the "Study of Urbanization ' (Ed.) Hauser, Phillip & Schnore, John Wiley, New York , 1967.
- Mandal, K.B.-"Urban Geography: A Text Book',Concept Publication, New Delhi.
- Mishra, R.P-"Growth poles and Growth Centres in Urban and Regional Planning in india', Unpublished Ph.D. Thesis, University of Mysore, 1971.
- Mishra, R.P.- "Urban Geography' Vikas Pub.,New Delhi,1975.
- M C Gee T.G.- "Urbanization Process in the World', G.Bell London, 1971.
- Noor Mohamad-"Urbanisation, Slums and Social Conflicts: A Study of Slums in Kanpur City', Abstract of Papers, Nehu Shillong, 1987.
- Northam,R.M.-"Urban Geography', John Wiley,New York, 1975.
- Palen, J.John-"The Urban Worls', Mc Graw Hill Book Co.,1975.
- Prakasha Rao, V.L.S.-"Urbanization in india-Spatial Dimensions',Concept Pub., New Delhi, 1983.
- Rajbale-"Trends in Urbanization in India Rawat Pub., Jaipur , 1986'
- Robson, Briant. –"Urban Growth: An Appraoch', Methuen & CO.,1973.
- Robert M.Buckley- "Urbanization and Growth', Rawat Publication, Jaipur.
- Rao, V.K.R.V. & P.B. Desai-" Greater Delhi:A Study in Urbanisation 1946-1957',Asia Publishing house,New Delhi, 1984.
- Siddiqui,I.H.-"Urbanization and Social Change' Viva Publication,2010.
- Savani,J.P.-"Urbanization and urban India',Asia Pub. House,Bombay 1966.
- भल्ला,लाजपतराय : ''राजस्थान का भूगोल '' कुलदीप पब्लिकेशन्स,30,भगवान पथ मार्केट, चोड़ा रास्ता,जयपुर।
- बधेला,हेतसिंह : ''राजस्थान के इतिहास की रूपरेखा '', कॉलेज बुक ड़िपो,83,त्रिपोलिया बाजार, जयपुर।
- बंसल,सुरेश चन्द्र (2009) : ''नगरीय भूगोल '' मीनाक्षी प्रकाशन बेगम ब्रिज,मेरठ।
- मनोहर,राधवेन्द्र सिंह : ''राजस्थान के प्राचीन नगर व कस्बे '' पत्रिका प्रकाशन।
- ममोरिया,सी.बी. (1982) : ''भारत का वृहत भूगोल '' साहित्य भवन,आगरा।

- मोधे,बसंत एवं माथुर सी. एम.(1984) : ''राजस्थान की मृदाएं एवं उनका प्रबन्ध '', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,जयपुर।
- मंड़ल,राम बहादुर (2013) : ''नगरीय भूगोल की रूपरेखा''।
- लोढ़ा,आर.एम.एवं मीहेश्वरी,दीपक (1991) : ''मानव व पर्यावरण '' हिमांशु पब्लिकेशन्स,उदयपुर, दिल्ली।
- लोढ़ा,आर.एम.एवं माहेश्वरी,दीपक (1991) : ''राजस्थान का भूगोल '' हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, दिल्ली,।
- जोशी,आर.एल. (2014) : ''नगरीय भूगोल '' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- सिंह, ओमप्रकाश (2014) : ''नगरीय भूगोल''।
- सिंह,राजेश : ''ग्रामीण भूगोल '' वन्दना पब्लिकेशन्स, द्वितीय तल,जे.एम.ड़ी. हाऊस 4–बी,अंसारी रोड़ दरियागंज नई दिल्ली।
- सिन्हा,मुरली मनोहर प्रसाद (2012) : '' नगरीय भूगोल '' राजेश पब्लिकेशन्स नई दिल्ली।
- सक्सेना,अरविंद (2002) : बून्दी राज्य का इतिहास।
- शुक्ला,राजेश–रश्मि : ''नगरीय भूगोल '' अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस 4831/24,प्रहलाद गली,अंसारी रोड़,दरियागंज,नई दिल्ली।
- शर्मा,राजीव लोचन (1975) : प्रादेशिक एवं नगरीय नियोजन, किताब धर कानपुर।
- टॉड़,जेम्स (1987) : ''राजस्थान का इतिहास '' युनिक ट्रेडर्स, जयपुर।
- राव–शर्मा : ''नगरीय भूगोल '' वसुन्दरा प्रकाशन गोरखपुर।
- श्रीवास्तव, जे.पी. (1993) : ''सामाजिक सर्वेक्षण,विधियॉ और सिद्धान्त '', श्री प्रकाशन,दिल्ली।
- चौहान,तेज सिंह (1994) : ''राजस्थान एटलस '',भूगोल विभाग,राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर,विज्ञान प्रकाशन,जोधपुर।
- नागर,कैलाशनाथ (2005) : ''साख्यिकी के मूल तत्व '',मीनाक्षी प्रकाशन,मेरठ।
- शर्मा, बीनू, कोटा शहर में नगरीकरण की प्रवृत्तियाँ एवं कच्ची बस्तियों की समस्या (एक भौगोलिक अध्ययन), शोध प्रबन्ध 2013।

- गौतम, भारतेन्दु, कृषि आधारित उद्योगों का स्थानिक–सामयिक विश्लेशण जिला बून्दी का एक प्रतीक अध्ययन, शोध प्रबन्ध 2010।
- मीणा, बन्टेश कुमार, पर्यावरणीय प्रदूशण का जीवन की गुणवता पर प्रभाव (कोटा शहर का एक अध्ययन), शोध प्रबन्ध 2018।
- जिला सांख्यिकी रूपरेखाः बून्दी 2016–2019
- जिला सांख्यिकी रूपरेखाः कोटा 2016–2019

जरनल : शोध पत्रिकाएं

1. सक्सैना, एच.एम., "डिलिमिटेशन ऑफ ट्रेड एरियाज ऑफ मार्केट टाउन्स इन राजस्थान," ज्योग्राफीकल रिव्यू ऑफ इण्डिया, वोल्यूम–45, नं.–3, 1983.
2. सक्सैना, एच.एम., "कोटाः ए स्टडी इन मार्केट मॉरफोलोजी", ज्योग्राफीकल रिव्यू ऑफ इण्डिया, नं.–1, 1974, पृ.45.
3. सक्सैना, एच.एम., "मार्केटिंग ज्योग्राफी – ए रिव्यू," टू डेकन ज्योग्राफर, 1977, पृ.–250.
4. श्रीवास्तव, वी.के., "डिस्ट्रीब्यूसन पेटर्न एण्ड क्लासीफिकेशन ऑफ मार्केट सेन्टर्स इन सरयुपार प्लेन," द डेकन ज्योग्राफर, वोल्यूम–17, नं.1, पृ.–516–23.
5. श्रीवास्तव, वी.के., "पीरियोडिक मार्केट एण्ड रूरल डवलपमेन्ट, बहराइच डिस्ट्रीक्टः ए केस स्टडी," नेशनल ज्योग्राफर, वोल्यूम–12, नं.–1, 1977.
6. सिंह, ओ.पी., "फंग्सनल मॉरफोलोजी ऑफ सर्विस सेन्टर्स इन यू0पी0, ए केस स्टडी," द डेकन ज्योग्राफर, वोल्यूम–12, नं.–1, जनवरी–जून, 1974, पृ.38.
7. वर्मा, एल.एन. एण्ड सक्सैना, एच.एम., "झालारायपाटन – ए ज्योग्राफीकल स्टडी ऑफ ए मार्केट सेन्टर," द डेकन ज्योग्राफर, वोल्यूम–6, 1968, पृ.25.
8. वर्मा, आर.एस.पी. एण्ड सिंह, डी.पी. "हाइरारकी ऑफ सेन्ट्रल प्लेसः ए केस स्टडी ऑफ मधुबनी," इण्डियन ज्योग्राफीकल स्टडीज रिसर्च बूलेटिन नं.–16, 1981.

शोध प्रबन्ध, लघुशोध प्रबन्ध और प्रोजेक्ट रिपोर्ट्स

1. गौतम, एन.सी., "अरबन ज्योग्राफी ऑफ बीकानेरः ए स्टडी ऑफ फंग्सनल मॉरफोलॉजी ऑफ डेजर्ट टाउन," अनपब्लिस्ड पीएच.डी. थीसिस, जयपुरः यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान, 1978.
2. गुप्ता, बी.एल., "ज्योग्राफी ऑफ मार्केट सेन्टर्सः ए केस स्टडी ऑफ एक्स्ट्रा–वाल्ड सिटी, जयपुर," एम.ए. डेजरटेशन, जयपुरः यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान, 1971.
3. गुप्ता, बी.एल., मार्केट मॉर्फोलॉजी ऑफ जयपुर, ज्योग्राफी एनाइलाइसिस आफ मेट्रोपोलिटन सिटी, 1987.
4. गुप्ता, एम.एल., "फ्रूट एण्ड वेजिटेबल मार्केट ऑफ जयपुर," एम.ए. डेजरटेशन, जयपुरः यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान, 1977.
5. खण्डेलवाल, एम.के., "ज्योग्राफी ऑफ मार्केट सेन्टर्स (ए केस स्टडी ऑफ वाल्ड सिटी, जयपुर)," अनपब्लिस्ड एम.ए. डेजरटेशन, जयपुरः यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान, 1971.
6. कुमावत, बी.एल., "मार्केट सेन्टर्स इन अरावली रीजन," अनपब्लिस्स्ड पीएच.डी. थीसिस, उदयपुरः उदयपुर यूनिवर्सिटी, 1973.
7. माथुर, आर.एस., "जयपुर वाल्ड सिटी – ए स्टडी ऑफ चेंजिंग पेटर्न ऑफ कॉमर्शियल स्ट्रक्चर," अनपब्लिस्ड एम.ए. डेजरटेशन, जयपुरः यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान, 1978.
8. मीणा, आर.के., "विराट नगर तहसीलः ए ज्योग्राफीकल स्टडी ऑफ सर्विस सेन्टर्स," अनपब्लिस्ड एम0ए0 डेजरटेशन, जयपुरः यूनिवर्सिटी ऑफ राजस्थान, 1975.
9. पार्वती, सी., "मार्केट सेन्टर्स एण्ड स्पेशल डवलपमेन्टः ए केस स्टडी ऑफ नीलगिरी रीजन," पीएच.डी. थीसिस, मैसूरः मैसूर यूनिवर्सिटी, 1978.
10. शर्मा, शशि, (2002), "ज्योग्राफी ऑफ मार्केट सेन्टर इन मिडिल माही बेसिन (बांसवाड़ा एण्ड डूंगरपुर बेसिन), पीएच.डी. थीसिस, एम.डी.एस. यूनिवर्सिटी, अजमेर।
11. शर्मा, अनिता (2004), डवलपमेन्ट ऑफ द आर्कीटेक्चरल आर ऑफ अजमेर विथ स्पेशल रेफ्रेन्स टू बिल्डींग एण्ड मोन्यूमेन्ट्स, पीएच.डी. थीसिस, एम.डी.एस. यूनिवर्सिटी, अजमेर।
12. सक्सैना, एच.एम., "ज्योग्राफी ऑफ ट्रान्सपोर्ट एण्ड मार्केट सेन्टर्स – ए केस स्टडी ऑफ हाड़ौती पठार", अनपब्लिस्ड पीएच.डी. थीसिस, उदयपुरः उदयपुर यूनिवर्सिटी, 1969.
13. माथुर, रीना, कृषि का बदलता हुआ स्वरूप – एक भौगोलिक विश्लेशण, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, 2018.
14. शर्मा,जे.पी., डायनेमिक्स ऑफ अरबनाइजेसन सुखाड़िया यूनिवर्सिटी,उदयपुर, 2003
15. सक्सैना, रजनी, "द चेंजिंग पेटर्न ऑफ पोपूलेशन इन अजमेर सिटी (1981–1991)", एम.डी.एस. यूनिवर्सिटी, अजमेर, 2017।

Internet Website Sources

1. http://en.wikipedia.org/wiki/Camillo_Sitte
2. http://asi.nic.in/pdf_data/draft_national_conservation_policy_monuments.pdf/ 13.10.2018
3. http://dcmsme.gov.in/dips/kota.pdf
4. http://delhiplanning.nic.in/Economic%20Survey/Ecosur2018-19/PDF/chapter14.PDF
5. http://en.wikipedia.org/wiki/File:kota,_Main_Street,_c.1858
6. http://envfor.nic.in/report/0607/chap04.pdf (Annual Report, 2016-17)
7. http://homepages.rootsweb.ancestry.com/~poyntz/India/images/2018.jpg
8. http://indiagovernance.gov.in/files/slum-kota.pdf
9. http://interscience.in/IJICA_Vol1_Iss1/paper_10.pdf
10. http://jnnurm.nic.in/wp-content/uploads/2016/17/Executive_Summary.pdf
11. http://mnre.gov.in/file-manager/UserFiles/solar_city_master_plan.pdf
12. http://mpra.ub.uni-muenchen.de/41630
13. http://onewebdesigners.com/tbs-nopaidyet/pdf/ACTIVISTS%20DEMAND.pdf.18.06.2018
14. http://places.designobserver.com/media/pdf/Heritage_C_926.pdf
15. http://southasia.oneworld.net/resources/indias-urban-poverty-in-kota-slums
16. http://townplanninglectures.blogspot.in/2019/02/modern-planning-in-pakistan-and-abroad.html
17. http://whc.unesco.org/en/convention/08.09.2018
18. http://www.actionaid.org/india/campaign-urban-poor-live-and-work-dignity-kota-bundi
19. http://www.ada-kota.com/
20. http://www.architecture.ca/planningarchitecture/document/document3.html
21. http://www.citiesalliance.org/sites/citiesalliance.org/files/CA%20%20impact%20story.pdf

22. http://www.docstoc.com/docs/29445623/OVERVEIW-OF-URBAN PLANNING-OVERVEIW-OFURBAN-PLANNING-A
23. http://www.dominiopublico.gov.br/download/texto/gu012006.pdf
24. http://www.english-heritage.org.uk/professional/advice/conservation-principles/ConservationPrinciples/04.09.2018
25. http://www.highbeam.com/doc/1G1-189741074.html
26. http://www.ibef.org/download/Rajasthan_25April_19 pdf
27. http://www.prsindia.org/uploads/media/1237548287/Legislative%20Brief%20%20National%20Commission%20for%20heritage%20sites%20bill%202009.pdf/ 18/09/2018
28. http://www.scribd.com/doc/19068104/Introduction-to-Town-Planning
29. http://www.uhrc.in/downloads/Reports/Kota-Bundi-SA.pdf. 30.09.2018
30. http://www.ummid.com/news/2018/October/06.10.2018/fresh_campaign_to_clean_up_kota.htm
31. http://www.urbanindia.nic.in/programme/uwss/CSP/Draft_CSP/kota_CSP.pdf
32. https://www.mapsofindia.com
33. http://en.wikipedia.org/wiki/Camillo_Sitte
34. http://asi.nic.in/pdf_data/draft_national_conservation_policy_monuments.pdf/ 13.10.2018
35. http://dcmsme.gov.in/dips/kota.pdf
36. http://delhiplanning.nic.in/Economic%20Survey/Ecosur2018-19/PDF/chapter14.PDF
37. http://en.wikipedia.org/wiki/File:kota,_Main_Street,_c.1858
38. http://envfor.nic.in/report/0607/chap04.pdf (Annual Report, 2016-17)
39. http://homepages.rootsweb.ancestry.com/~poyntz/India/images/2018.jpg
40. http://indiagovernance.gov.in/files/slum-kota.pdf
41. http://interscience.in/IJICA_Vol1_Iss1/paper_10.pdf
42. http://jnnurm.nic.in/wp-content/uploads/2016/17/Executive_Summary.pdf
43. http://mnre.gov.in/file-manager/UserFiles/solar_city_master_plan.pdf
44. http://mpra.ub.uni-muenchen.de/41630

45. http://onewebdesigners.com/tbs-nopaidyet/pdf/ACTIVISTS%20DEMAND.pdf.18.06.2018
46. http://places.designobserver.com/media/pdf/Heritage_C_926.pdf
47. http://southasia.oneworld.net/resources/indias-urban-poverty-in-kota-slums
48. http://townplanninglectures.blogspot.in/2019/02/modern-planning-in-pakistan-and-abroad.html
49. http://whc.unesco.org/en/convention/08.09.2018
50. http://www.actionaid.org/india/campaign-urban-poor-live-and-work-dignity-kota-bundi
51. http://www.ada-kota.com/
52. http://www.architecture.ca/planningarchitecture/document/document3.html
53. http://www.citiesalliance.org/sites/citiesalliance.org/files/CA%20%20impact%20story.pdf
54. http://www.docstoc.com/docs/29445623/OVERVEIW-OF-URBAN PLANNING-OVERVEIW-OFURBAN-PLANNING-A
55. http://www.dominiopublico.gov.br/download/texto/gu012006.pdf
56. http://www.english-heritage.org.uk/professional/advice/conservation-principles/ConservationPrinciples/04.09.2018
57. http://www.highbeam.com/doc/1G1-189741074.html
58. http://www.ibef.org/download/Rajasthan_25April_19 pdf
59. http://www.prsindia.org/uploads/media/1237548287/Legislative%20Brief%20%20National%20Commission%20for%20heritage%20sites%20bill%202009.pdf/ 18/09/2018
60. http://www.scribd.com/doc/19068104/Introduction-to-Town-Planning
61. http://www.uhrc.in/downloads/Reports/Kota-Bundi-SA.pdf. 30.09.2018
62. http://www.ummid.com/news/2018/October/06.10.2018/fresh_campaign_to_clean_up_kota.htm
63. http://www.urbanindia.nic.in/programme/uwss/CSP/Draft_CSP/kota_CSP.pdf
64. https://www.mapsofindia.com

परिशिष्ट

Swadeshi Research Foundation A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Reviewed, Refereed, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex- UGC S.N. 4990
ISSN : 2394-3580, Vol. – 8, No. – 2, Dec. - 2020
2020

राजस्थान मे नगरीकरण की स्थिति : एक भौगोलिक विवेचन

प्रमोद कुमार
शोद्यार्थी (भूगोल), सामाजिक विज्ञान विभाग, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
डॉ. जे. पी. शर्मा
सहायक आचार्य (भूगोल), सामाजिक विज्ञान विभाग, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

परिचय :– नगरीकरण से तात्पर्य ऐसे समाज के परिवर्तन की प्रक्रिया से है जो मुख्य रूप से चरित्र, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और जीवन शैली मे ग्रामीण है जो मुख्य रूप से नगरीय है एवं औद्योगिक और सेवा क्षेत्र में संलग्न है। नगरीयकरण के स्तर को कुल जनसख्या के अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है जो नगरीय स्थानों मे निवास करता है। नगरीयकरण को एक पुरानी प्रक्रिया कहा जा सकता है लेकिन हाल के दशकों में नगरीकरण में तेजी देखी गई है। कस्बों की आबादी में उच्च वृद्वि और कस्बों की संख्या में उच्च वृद्वि भी आधुनिक अवधि की मुख्य विशेषताएँ है।

उद्देश्य :– इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है–

- नगरीयकरण को समझना।
- व्यापक रूप से राजस्थान के नगरीकरण का मूल्यांकन।
- नगरीयकरण प्रक्रिया को समझना।

शोध विधि :– यह शोध पत्र मूलतः द्वितियक आंकड़ो पर आधारित है जो कि भारतीय जनगणना से प्राप्त आँकड़े है। जिनका गहनता से मूल्यांकन किया गया है तथा विभिन्न तथ्यों को टेबल व मानचित्र की सहायता से प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है। आँकड़ों का दशकीय मूल्यांकन किया गया है साथ ही राजस्थान के विभिन्न नगरों का भ्रमण कर वस्तु स्थिति को जानने का भी प्रयास किया गया है।

कृषि क्रान्ति, औद्योगिक क्रान्ति, परिवहन क्रान्ति, शिक्षा और प्रौधोगिकी मे क्रान्ति, रोजगार के अवसर और पुश एण्ड पुल कारक जैसे कई कारक मुख्य रूप से नगरीयकरण के लिये जिम्मेदार रहे है। नगरीयकरण के कारको के बीच पुश एण्ड पुल कारको के प्रभाव मे ग्रामीण, नगरीय प्रवास नगरीकरण को बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लगभग 3 मिलियन लोग हर हफ्ते नगरो मे जा रहे है (प्रवास के लिये अंतराष्ट्रीय संगठन–2015)। औधोगिकीकरण और नगरीयकरण साथ–साथ चलते है। नगरीयकरण एक चक्रीय प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से राष्ट्र कृषि क्षेत्र से औधोगिक समाजो में विकसित होते है। वास्तव में औधोगिकीकरण ने नगरीयकरण प्रक्रिया को बढ़ावा दिया है और परिणामस्वरूप दुनिया का आधा हिस्सा पहले से ही नगरीकृत है। नगरीयकरण, वास्तव में एक समुदाय के सामाजिक जीवन और आर्थिक गतिविधियों के पूरे परिदृश्य में भारी बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है।

नगरीय क्षेत्र की परिभाषा के अनुसारः किसी क्षेत्र को नगर क्षेत्र होने के लिये निम्नलिखित शर्ते पुरी करनी पड़ती है।

- वह स्थान नगरपालिका, नगरनिगम, छावनी या अनुसूचित नगर क्षेत्र हो।
- अन्य स्थानो के लिये :–

(i) 5 हजार न्यूनतम जनसंख्या
(ii) पुरूष कार्यकारी जनसंख्या न्यूनतम 75% गैर कृषि कार्यो में संलग्न हो।
(iii) न्यूनतम जनघनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो।

नगरीयकरण की तीव्र दर निःसंदेह 21वीं सदी मे आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाली प्रमुख प्रक्रियों में से एक है। यह उजाकर करना दिलचस्प है कि नगरीकरण स्वयं एक समाज मे आर्थिक और तकनीकि परिवर्तनों का एक उत्पाद है और बदले मे यह अर्थव्यवस्था और प्रौधोगिकी में बदलाव लाता है। यह ऐसी तकनीक है जो अर्थव्यवस्था को आकार देने के साथ–साथ नगरीकरण की गति और विशेशता को दर्शाती है। नगरीकरण और तकनीकि परिवर्तन अन्योन्याश्रित है। हालाकि इसके कारण और प्रभाव को अलग करना मुश्किल होता है। सयुक्त राष्ट्र (2014) के अनुसार नगरीकरण के कारण दुनिया की लगभग 2 तिहाई आबादी 2050 तक नगरीय वातावरण मे रहने के लिये तैयार है। यह अनुमान लगाया जाता है की 2050 तक विकासशील दुनिया का लगभग 64% और विकसित दुनिया का 86% नगरीयकरण हो जायेगा। इस संबंध में भारतीय परिदृश्य यह है कि विकसित दुनिया की तुलना मे देश मे नगरीकरण का स्तर कम है (2011 मे 31.2%) लेकिन नगरीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगो की एक बड़ी संख्या है और दुनिया की नगरीय आबादी का 10.6% हिस्सा है। नगरीय क्षेत्र सम्पूर्ण देश

तथा राजस्थान के लिये आर्थिक विकास के संचालक के रूप में उभर रहे है। इसमें कोई अपवाद नही है। परन्तु राज्य मे मध्यम रूप से नगरीकरण हो रहा है। 2011 के अनुसार जो कि 24.87% है जो भारत 31.2% की तुलना मे कम है।

राजस्थान मे नगरीकरण की स्थिति :– राजस्थान मे नगरीय आबादी 1901 मे 1.48 मिलियन से बढ़कर 2011 में 17.05 मिलियन हो गई राजस्थान में पूर्व नगरीय आबादी पिछले 11 दशको के दौरान 11 गुना से अधिक बढ़ गई है जबकि नगरीयकरण का स्तर भी 2 गुना भी नही हो सका है क्योंकि ग्रामीण और नगरीय आबादी का विकास दर के बीच बहुत कम अन्तर है। राजस्थान मे नगरीकरण का स्तर 1901 मे 14.41% से बढ़कर 2011 में 24.87% तक लगातार बढ़ रहा है। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि 1901 और 1941 के बीच राजस्थान में नगरीयकरण का स्तर पूरे भारत की तुलना में बहुत अधिक था। 14.41% जनसंख्या राजस्थान के नगरीय क्षेत्रो में वर्श 1901 एक मे रहती थी। जबकि भारत मे यह 10.84% से थी। वर्ष 1941 में राजस्थान और भारत के लिये यह आँकड़े क्रमशः 14.67% से और 13.86% थे। वर्ष 1951 मे राजस्थान मे नगरीकरण का स्तर भारत के बराबर था लेकिन 1961 से राजस्थान नगरीयकरण के स्तर के मामले में देश से पीछे हो गया हैं। वर्ष 2011 में लगभग 31.16% जनसंख्या भारत के नगरीय क्षेत्रों मे रह रही थी जबकि राजस्थान मे केवल 24.87% जनसंख्या नगरीय क्षेत्रो मे रह रही थी। अगर हम 2011 के नगरीयकरण के स्तर की तुलना अन्य राज्य जैसे : गुजरात (42.6%), पंजाब (37.5%), हरियाणा (34.9%) और मध्यप्रदेश (27.4%) से करते है तो पाते है कि राजस्थान पिछड़ रहा है।

नगरीयकरण के स्तरो मे राजस्थान की प्रवृति (1901 से 2011)

तालिका–1

जनगणना वर्ष	नगरीयकरण स्तर प्रतिशत में	जनगणना वर्ष	नगरीयकरण स्तर प्रतिशत में
1901	14.41	1961	16.18
1911	12.87	1971	17.4
1921	13.73	1981	20.49
1931	14.15	1991	22.39
1941	14.67	2001	24.52
1951	17.1	2011	24.87

तलिका–1 में आँकड़ों की झलक देखने के बाद संपूर्ण अध्ययन अवधि का राजस्थान राज्य मे नगरीकरण के तीन प्रमुख समयो मे तार्किक रूप से विभाजित किया जा सकता है। ये है :–

1. धीमे नगरीयकरण की अवधि (1901–1941)
2. मध्यम नगरीयकरण की अवधि (1951–1971)
3. तेजी से नगरीयकरण की अवधि (1981–2011)

- **धीमे नगरीयकरण की अवधि (1901–1941)** :– 1901 और 1941 के बीच की अवधि ने न केवल राजस्थान मे बल्कि पूरे देश मे धीमी गति से नगरीकरण का प्रदर्शन किया। यह आदिम कृषि अर्थव्यवस्था का काल था। वास्तव मे यह अवधि विशेश रूप से वर्ष 1905, 1908, 1911 और 1918 मे अकाल और महामारी द्वारा चिन्हित की गई थी। इस अवधि के दौरान कई महामारी जैसे कि हैजा, मलेरिया, चैचक, प्लेग और इन्फ्लूएंजा हुआ। आमतौर पर ये महामारी अकाल से जुडी थी, जिसके परिणामस्वरूप राज्य के सभी नगरो में आबादी लगभग धट गई। नगरीय स्थानो मे रहने वाली जनसंख्या का अनुपात 1901 में 14.41% धटकर 1911 मे 12.87% हो गया। 1918–19 की महामारी इन्फ्लूएंजा राज्य के नगरीय क्षेत्रो मे भारी मृत्युदर का कारण बना। 1920 के बाद से ही राज्य के नगरीय इलाको मे आबादी बढ़ने लगी थी लेकिन बहुत धीमी गति से। 1941 मे नगरीकरण का स्तर 14.67% तक पहुँच गया जो 1901 मे नगरीयकरण स्तर से सिर्फ 0.26% अधिक था। इस अवधि के नगरीकरण के स्तर का औसत मूल्य 14% रहा।
- **मध्यम नगरीयकरण की अवधि (1951–1971)** :– राजस्थान मे 1951–1971 के बीच के माध्यम नगरीकरण का अनुभव हुआ। कुल जनसंख्या मे नगरीय आबादी का अनुपात 1941 मे 14.67% से बढ़कर 1951 में 17.1% हो गया। यह इसलिए हुआ क्योंकि राजस्थान ने देश के विभाजन के समय सिंध, बलूचिस्तान और बहावलुपर रियासत के लाखों प्रवासियो को शरण दी थी। इन प्रवासियो को राजस्थान के सभी नगरों मे रखा और स्थापित किया गया था। यह तथ्य राजस्थान के लगभग सभी प्रमुख नगरों मे सिंधी उपनिवेशो के अस्तित्व का समर्थन करता है। वर्श 1951–61 के दौरान नगरीय आबादी (19.5%) की तुलना मे 1961 मे नगरीकरण का स्तर धटकर 16.18% रह गया, जबकि ग्रामीण आबादी का विकास अधिक

(27.6%) रहा। 1971 मे नगरीयकरण का स्तर थोड़ा बढ़ गया और 17.4% तक पहुँच गया। वास्तव मे इस अवधि के दौरान नगरीकरण का औसत स्तर 17% रहा।

- **तेजी से नगरीयकरण की अवधि (1981–2011)** :– 1981 और 2011 के बीच अवधि को राजस्थान में तीव्र नगरीकरण की अवधि कहा जा सकता है। यह न केवल राजस्थान मे बल्कि पूरे देश मे सुधारों का युग था। औधोगिक विकास ने ग्रामीण क्षेत्रो से अधिशेश जनशक्ति को आकर्शित किया और ग्रामीण–नगरीय प्रवास हुआ, फलस्वरूप नगरीय क्षेत्रो मे तेजी से जनसंख्या वृद्वि हुई कुल जनसंख्या मे नगरीय आबादी का अनुपात 1971 में 17.4% से बढ़कर 1981 मे 20.49% हो गया। राज्य मे 1991, 2001 और 2011 के नगरीकरण के क्रमिक जनगणना वर्षो मे क्रमशः 22.39%, 24. 52% और 24.57% तक पंहुच गया। इस अवधि के लिये नगरीकरण का औसत स्तर 23% रहा।

2011 मे राजस्थान मे नगरीकरण के स्थानिक पैटर्न :– नगरीकरण मे स्थानिक पैटर्न परिवर्तन की परस्पर संबंधित प्रक्रियाओ की एक क्षृखला का परिणाम है। ये प्रक्रियाएँ आर्थिक, तकनीकि, जनसांख्यिकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक है। नगरीकरण को बढ़ावा देने और आकार देने वाले गतिकी के मूल मे आर्थिक कारक है। इन प्रक्रियाओं में भिन्नता नगरीकरण के पैटर्न मे स्थानिक भिन्नता लाती है। यह राजस्थान की विभिन्न जिलो के बीच नगरीयकरण के स्तरो मे अन्तर लाने वाले परिवर्तन की परस्पर प्रक्रिया मे यह भिन्नता थी। खनन और औधोगिक विकास ने राजस्थान की नगरीयकरण प्रक्रिया मे एक प्रमुख भूमिका निभाई है। राज्य के सकन घरेलू उत्पाद मे लगभग 32.5% उधोगो का योगदान हैं। भीलवाडा, कोटा, जयपुर, उदयपुर, भिवाड़ी, नीमराना आदि मे औधोगिक विकास ने राज्य मे नगरीकरण मे स्थानिक पैटर्न को प्रभावित किया है। नई दिल्ली के ट्रिकल डाउन प्रभव को राष्ट्रीय राजधानी के सबसे नजदीकी जिले भिवाड़ी–नीमराणा (अलवर) के औधोगिक और आर्थिक विकास पर आसानी से देखा जा सकता है।

राजस्थान मे नगरीकरण के स्तरो मे स्थानिक प्रतिवानो को प्रमाणित करने वाले अन्य महत्वपूर्ण कारक भौगोलिक वातावरण मे उच्च स्थानिक भिन्नता है। राजस्थान वास्तव मे, दक्षिण–पश्चिमी क्षेत्र और उतरी मैदानों के विकसित क्षेत्र के बीच एक विभाजन बेल्ट है, इसलिए थोक मात्रा मे माल राज्य से होकर गुजरता हैं परिणाम स्वरूप एक अच्छे परिवहन नेटवर्क का विकास हुआ। राष्ट्रीय राजमार्गों ने भी राजस्थान की नगरीकरण प्रक्रिया में प्रमुख भूमिका निभाई है और निश्चित रूप से राज्य मे नगरीकरण के पैटर्न को प्रभावित किया है। राजमार्ग पर स्थित नगरों ने उधोगो को आकर्शित किया और फलस्वरूप तेज दर से विकास हुआ।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक कारको के बीच पर्यटन ने राजस्थान की नगरीकरण प्रक्रिया मे एक प्रभावी भूमिका निभाई है क्योंकि यह राज्य की जीडीपी में लगभग 9% हिस्सेदारी का योगदान देता है। जयपुर, उदयपुर, जोधपुर, बीकानेर और चितौडगढ़ पर्यटको के लिये बहुत आकर्षण है। इसके परिणामस्वरूप पर्यटन का विकास हुए, जिसने नगरीकरण प्रक्रिया को बढ़ावा दिया। राजस्थान मे शैक्षणिक संस्थानो का विकास और जयपुर मे मालवीय एन.आई.टी, जोधपुर मे आई.आई.टी., जयपुर मे आई.आई.टी. और कोटा मे कोंचिग संस्थानों ने भी राज्य मे नगरीकरण पैटर्न को आकार देने मे भूमिका निभाई है।

यह उजागर करना दिलचस्प है कि नगरीकरण एक समाज मे आर्थिक, औधोगिक और तकनीकि विकास का एक उत्पाद है और बदले मे यह आर्थिक, औधोगिक और तकनीकि विकास मे बदलाव लाता है। यह वास्तव में आर्थिक विकास है जो नगरीकरण मे स्थानिक पैटर्न को आकार देता है। जब हम राजस्थान मे गरीबी की दर और नगरीयकरण की जिलेवार दर की तुलना करते है, तो हम पाते है कि जिन जिलो मे गरीबी की दर अधिक है, वे आमतौर पर कम से कम नगरीकरण है और इसके विपरित एक मध्यम डिग्री का नकारात्मक सहसंबंध मौजुद है।

राजस्थान मे नगरीकरण का स्तर (2011)

तालिका–2

क्र.स.	जिला	कुल जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या	कुल जनसंख्या में नगरीय आबादी प्रतिशत में
1	कोटा	1951014	1176604	60.3
2	जयपुर	6626178	3471847	52.4
3	टजमेर	2583052	1035410	40.1
4	जोधपुर	3687165	1264614	34.3

5	बीकानेर	2363937	800384	33.9
6	चुरू	2039547	576235	28.3
7	गंगानगर	1969168	535432	27.2
8	सीकर	2677333	633906	33.7
9	झुंझुनू	2137045	489079	22.9
10	पाली	2037573	460006	22.6
11	टोंक	1421326	317723	22.4
12	भीलवाड़ा	2408523	512654	21.3
13	नागौर	3307743	637204	21.3
14	बारां	1222755	254214	20.8
15	धौलपुर	1206516	247450	20.5
16	थ्सरोही	1036346	208654	20.1
17	बूंदी	1110906	222701	20.0
18	सवाई माधोपुर	1335551	266467	20.0
19	उदयपुर	3068420	608426	19.8
20	हनुमानगढ़	1774692	350464	19.7
21	भरतपुर	2548462	495099	19.4
22	चित्तौड़गढ़	1544338	285264	18.5
23	टलवर	3674179	654451	17.8
24	झालावाड़	1411129	229291	16.2
25	राजसमंद	1156597	183820	15.9
26	करौली	1458248	218105	15.0
27	जैसलमेर	669919	89025	13.3
28	दौसा	1634409	201793	12.3
29	प्रतापगढ़	867848	71807	8.3
30	जालौर	1828730	151755	8.3
31	बासंवाड़ा	1797485	127621	7.1
32	बाड़मेर	2603751	181837	7.0
33	डूँगरपुर	1388552	88743	6.4
	राजस्थान	**68548437**	**17048085**	**24.87**

राजस्थान मे नगरीकरण का स्तरो मे स्थानिक भिन्नता (2011)

तलिका–3

क्र.स.	नगरीकरण का स्तर	जिले
1	बहुत कम (8.3% से नीचे)	डूँगरपुर, बाड़मेर, बासंवाड़ा, जालौर एवं प्रतापगढ़
2	कम (8.4% से 16.0%)	दौसा, जैसलमेर, करौली एवं राजसमन्द
3	मध्यम (16.1% से 24.0%)	झालावाड़, अलवर, चित्तौड़गढ़, भरतपुर, हनुमानगढ़, उदयपुर, सवाई माधोपुर, बून्दी, सिरोही, धौलपुर, बारां, नागौर, भीलवाड़ा, टोंक, पाली, झुंझुनू, सीकर, गंगानगर एवं चुरू
4	उच्च (24.1% से 40%)	गंगानगर, चुरू, बीकानेर एवं जोधपुर
5	बहुत उच्च (40% से अधिक)	अजमेर, जयपुर एवं कोटा

राजस्थान नगरीयकरण के स्थानिक पैटर्न – 2011

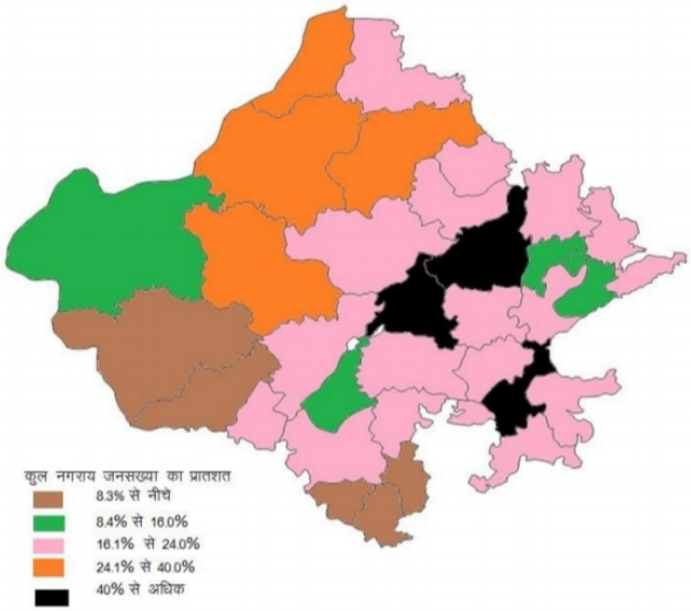

- **नगरीकरण के बहुत निचले स्तर के क्षेत्र** :– 8.4% से कम नगरीकरण के स्तर वाले क्षेत्रो को नगरीकरण के बहुत निचले स्तर के क्षेत्रो के रूप मे शामिल किया गया है। पाँच जिले अर्थात डूँगरपुर (6.4%), बाड़मेर (7.0%), बांसवाड़ा (7.1%) जालौर (8.3%) और प्रतापगढ़ (8.3%) इस श्रेणी मे आते है। ये सभी जिले आर्थिक रूप से पिछड़े है क्योंकि इन उधोगो मे कमी है और केवल कृशि पर निर्भर है। आर्थिक विकास और नगरीकरण के बीच बहुत मजबूत सकारात्मक संबंध है। इस श्रेणी मे आने वाले जिलों में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली आबादी का प्रतिशत बहुत अधिक है, इसलिए राजस्थान के कम से कम नगरीकृत जिले है। भंडारी और चक्रवर्ती के अनुसार बांसवाड़ा मे राज्य मे सबसे अधिक गरीबी दर (24.9%) है। इसके बाद डूँगरपुर (24.8%) और प्रतापगढ़ (21.4%) है। बाड़मेर और जालौर जिले नगरीकरण के स्तर की इस श्रेणी मे आते है। जिनकी दर भी क्रमशः 18.2% और 17.1% है।
- **नगरीकरण के निम्न स्तर के क्षेत्र** :– 8.4% और 16.0% के बीच नगरीयकरण के स्तर वाले क्षेत्रों को नगरीकरण के निम्न स्तर के क्षेत्रों मे शामिल किया है। दौसा 12.3%, जैसलमेर 13.3%, करौली 15.0%, राजसमंद 15.9% के जिले इस श्रेणी मे आते है। ये जिले आर्थिक रूप से कम विकसित है। फलस्वरूप नगरीकरण कम है।
- **नगरीकरण के मध्यम स्तर के क्षेत्र** :– 16.1% और 24.0% के बीच नगरीयकरण के क्षेत्र वाले क्षेत्रो को नगरीकरण के मध्यम स्तर के क्षेत्रों के रूप में शामील किया गया है। झालावाड़ 16.2%, अलवर 17.8%, चित्तौड़गढ़ 18.5%, भरतपुर 19.4%, हनुमानगढ़ 19.7%, उदयपुर 19.8%, सवाई माधोपुर 20.0%, बूंदी 20.0%, सिरोही 20.1%, धौलपुर 20.5%, बारां 20.8%, नागौर 21.3%, भीलवाड़ा 21.3%, टोंक 22.4%, पाली 22.6%, झुंझुनू 22.9% और सीकर 23.7% के जिले इस श्रेणी मे आते है। ये जिले सांस्कृतिक रूप से अग्रिम है और कुछ औधोगिक आधार भी है जिसके परिणाम स्वरूप नगरीकरण का मध्यम स्तर है।
- **नगरीकरण के उच्च स्तर के क्षेत्र** :– 24.1% और 40.0% के बीच नगरीयकरण के स्तर वाले क्षेत्रों को नगरीकरण के उच्च स्तर के क्षेत्रों के रूप में शामील किया गया है। गंगानगर 27.2%, चुरू 28.3%, बीकानेर 33.9% और जोधपुर 34.3% के जिले इस श्रेणी मे आते है। इन जिलों मे गंगनहर

और इंदिरा गाँधी नहर के निर्माण ने पीने और सिंचाई के उद्देश्य के लिये पानी उपलब्ध करवाया। जिसके परिणामस्वरूप कृशि और आर्थिक विकास हुआ।

- **नगरीकरण के बहुत उच्च स्तर के क्षेत्र** :– 40.0% से अधिक नगरीयकरण के स्तर वाले क्षेत्रों को नगरीकरण के बहुत उच्च स्तर के क्षेत्रों के रूप में शामील किया गया है। अजमेर 40.1%, जयपुर 52.7% और कोटा 60.3% जिले इस श्रेणी मे आते है। कोटा जिले मे नगरीय आबादी का प्रतिशत सबसे ज्यादा है। कोटा एक शैक्षणिक केन्द्र के रूप में उभरा है और 1971 के बाद नगरीय आबादी में उल्लेखनीय वृद्वि हुई है। कोटा जिला राज्य मे तीसरे स्थान पर है, इसलिए नगरीय आबादी का आकार 2011 मे लगभग 1.2 मिलियन की नगरी आबादी से संबंधित है। 2011 की जनगणना के अनुसार जयपुर जिले मे राज्य की सबसे बड़ी नगरीय आबादी 3.47 मिलियन है। अजमेर जिले मे 2011 मे 1.03 मिलियन नगरीय आबादी का एक बड़ा आकार है। तीनों जिले आर्थिक रूप से विकसित है और इनमे गरीबी की दर कम (9.5% से 12.7%) है परिणामस्वरूप नगरीकरण का स्तर बहुत अधिक है।

निष्कर्ष :– राजस्थान में नगरीय आबादी पिछले दशको के दौरान 11 गुना से अधिक हो गई यानि 1901 में 1.48 मिलियन से 2011 मे 17.05 मिलियन हो गई है। जबकि वास्तव में नगरीकरण का स्तर 2 गुना भी नही हो सका क्योंकि ग्रामीण और नगरीय आबादी की विकास दर में अन्तर रहा है। राजस्थान में नगरीयकरण का स्तर 1901 में 14.41% से बढ़कर 2011 मे 24.87% तक लगातार बढ़ रहा है। राजस्थान नगरीयकरण का स्तर 1901 और 1941 के बीच की अवधि में भारत की तुलना में बहुत अधिक था। वर्ष 1951 राजस्थान मे नगरीकरण भारत के बराबर था लेकिन इसके बाद राज्य पिछड गया। राज्य में कुल जनसंख्या में नगरीय आबादी का कुल अनुपात 1941 मे 14.67% से बढ़कर 1951 में 17.1% हो गया। यह इस लिए हुआ क्योंकि राजस्थान ने देश के विभाजन के समय सिंध, बलूचिस्तान और बहावलपुर रियासतों के प्रवासियो को शरण दी। 2011 राजस्थान मे नगरीय जनसंख्या 24.87% थी जो कि राष्ट्रीय नगरीय जनसंख्या 31.16% से बहुत कम था। अतः राजस्थान में नगरीयकरण की दर राष्ट्रीय नगरीयकरण की दर से कम दिखाई देती है तथा राज्य के विभिन्न जिलों मे भी नगरीयकरण की दर में विभिन्नतायें दिखाई देती है जिससे राजस्थान में सतत् विकास बाधित हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

- शर्मा व शर्मा (2011), राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन।
- सिंह व मौर्य (2011), नगरीय भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- खत्री हरिश कुमार (2012), नगरीय भूगोल, कैलाश पुस्तक सदन, भौपाल।
- बंसल सुरेश चन्द (2011), नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन।
- भल्ला, लाजपतराय (2001) "राजस्थान का भूगोल" कुलदीप पब्लिकेशन्स, भगवान पथ मार्केट, चोड़ा रास्ता, जयपुर।
- बधेला, हेतसिंह "राजस्थान के इतिहास की रूपरेखा", कॉलेज बुक ड़िपो,त्रिपोलिया बाजार, जयपुर।
- लोढ़ा, आर.एम.एवं माहेश्वरी, दीपक (1991) "राजस्थान का भूगोल "हिमांशु पब्लिकेशन्स, उदयपुर, दिल्ली,।
- जेशी, आर.एल. (2014) "नगरीय भूगोल" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- Amitabh, K. et al, (2005), A Handbook of Urbanization in Indai, Oxford University Press, Washington.
- Bala, Raj. (1986) Urbanisation in India, Rawat Publishers, Jaipur.
- Bansal, S. C. (2010) Urban Geography. Meenakshi Prakash, Begam Bridge, Meerut.
- Khullar, D. R. (2010) Bharat ka Bhugol avm Prayogic Bhugol, Kalyani Publishers, New-Delhi.
- Know, Paul L. (1994) Urbanization : An Introduction to Urban Geography. Prentice Hall, New Jersey.
- Prabha, K. (1979) Towns : A Structural analysis. Inter-India Publications, Delhi – 35.
- Ramachandran, R. (1989) Urbanisation and Urban Systems in India. Oxford, New Delhi.
- Census, India and Rajasthan (All, up to 2011)
- Web Sites

© 2020 IJRAR December 2020, Volume 7, Issue 4 www.ijrar.org (E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138)

बून्दी जिले की जनसंख्या की गत्यात्मकता

प्रमोद कुमार, शोधार्थी (भूगोल)
सामाजिक विज्ञान विभाग, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा।

डॉ. जे. पी. शर्मा, सहायक आचार्य (भूगोल)
सामाजिक विज्ञान विभाग, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा।

भूगोल प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक वातावरण का सामंजस्य पूर्ण अध्ययन करता है। पृथ्वी तल के विभिन्न क्षेत्रों में निरन्तर परिवर्तनशील परिस्थितियों के साथ बढ़ती जनसंख्या एक बहुआयामी समस्या ह। भारत तथा सभी विकासशील एवं अल्पविकसित देश अपनी बढ़ती जनसंख्या से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओं के निवारण के लिए नीतियाँ बनाते है पर वे ठीक से लागू नही हो पा रहीं हैं। राजस्थान के दक्षिण–पूर्व मे स्थित बून्दी जिला इतिहास में शौर्य व त्याग की कहानियां समेटे हुए ऐतिहासिक स्मारको, सांस्कृतिक समृद्धि और पुरातात्विक वैभव से सराबोर है। मन्दिरों की अधिकता के कारण बून्दी को छोटी काशी तथा कुण्ड–बावड़ियों की अधिकता के कारण बावड़ियों की नगरी कहा जाता है।

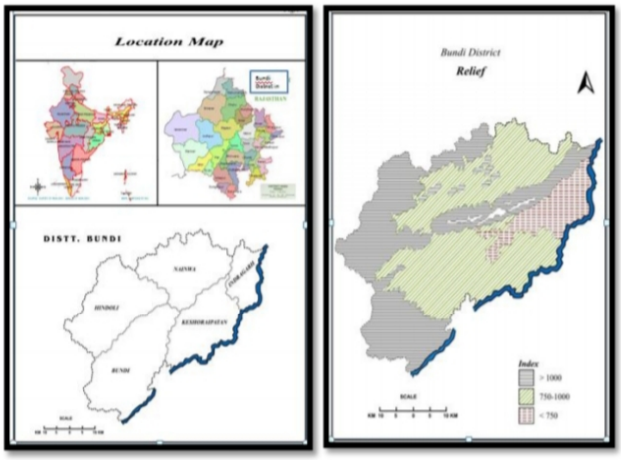

उद्देश्य–इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है

- बून्दी जिले की जनसंख्या को समझना ।
- व्यापक रूप से राजस्थान की जनसंख्या के संदर्भ में बून्दी जिले का मूल्यांकन ।
- बून्दी जिले की बढ़ती जनसंख्या की बहुआयामी प्रक्रिया को समझना ।

शोध विधि–यह शोध पत्र मूलतः द्वितियक आंकड़ो पर आधारित है जो कि भारतीय जनगणना से प्राप्त आँकड़े है। जिनका गहनता से मूल्यांकन किया गया है तथा विभिन्न तथ्यों को टेबल व मानचित्र की सहायता से प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है। आँकड़ों का दशकीय मूल्यांकंन किया गया है साथ ही राजस्थान के विभिन्न बून्दी जिले का भ्रमण कर वस्तु स्थिति का जानने का भी प्रयास किया गया है।

बून्दी जिला राजस्थान के दक्षिण–पूर्व में 24°59'11" से 25°53'11" उत्तरी अक्षांश तथा 75°19'30" से 76°19'30" पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले के पश्चिम में भीलवाड़ा उत्तर में टोंक एवं सवाई माधोपुर, दक्षिण–पश्चिम में चित्तौड़गढ़ एवं दक्षिण में कोटा जिला तथा उत्तर–पश्चिम में अजमेर जिला स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 5850 वर्ग किमी. है तथा उत्तर से दक्षिण इसकी चौड़ाई 104.6 किमी. एवं पूर्व में पश्चिम तक इसकी लम्बाई 111 किमी. है। दक्षिण में चम्बल नदी कोटा व बून्दी जिले की सीमा रेखा बनाती है।

जिले में कुल 5 तहसीलें हैं जिनमें 6 बड़े नगर व 826 आबाद गाँव है। खनिज सम्पदा की दृष्टि से चूना पत्थर मिट्टी, बलुआ पत्थर, संगमरमर जैसी निर्माण सामग्री इस जिले में उपलब्ध है। जिसका बड़े पैमाने पर उत्खनन किया जा रहा है। जिले में चंबल के अतिरिक्त मांगली,

तालेड़ा, चाकम, मेज, इन्द्राणी, घोड़ा पछाड़, आइस, कुराल आदि छोटी नदियाँ बहती है। बून्दी जिले में 25.92 प्रतिशत भाग पर वन है जो 1952 की राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार निर्धारित 33 प्रतिशत से कम है। अतः प्रदेश में वनों का विस्तार करने की आवश्यकता है।

जिले की जलवायु सामान्य दक्षिणी–पश्चिमी मानसून को छोड़कर शुष्क रहती है तथा औसत वार्षिक वर्षा 809.0 मिमि. है। लगभग 90 प्रतिशत वर्षा जून से सितम्बर के मध्य होती है। सर्दियों में जिले का न्यूनतम तापमान 2^0 सेल्सियस और गर्मियों में अधिकतम तापमान 45^0 सेल्सियस तक पहुँच जाता है ।

जनसंख्या वृद्धि

बून्दी जिले में जनसंख्या की लगातार वृद्धि हो रही है। जिले की जनसंख्या वृद्धि दर राज्य की वृद्धि दर से अधिक रही है। वर्ष 1901 में जिले की जनसंख्या मात्र 1.71 लाख थी जो 2001 में बढ़कर 9.62 लाख हो गई है। केवल 1911–21 के दशक के अतिरिक्त जिले की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होती रही है।

जिले में केवल 1911–21 के दशक में ही जनसंख्या वृद्धि में कमी हुई है क्योंकि इस समय सम्पूर्ण देश में अकाल की भीषण समस्या थी। तत्कालीन परिस्थितियों में साधनों का अभाव, पेयजल का न होना एवं स्वास्थ्य सेवाओं की अत्यन्त कमी आदि के कारण अकाल की विभीषिका की चपेट में हजारों लोगों की जाने गई जो जनसंख्या में कमी का कारण बनी ।

सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर 1961–71 के दशक में 32.84 प्रतिशत अंकित की गई है, जो राज्य की जनसंख्या परिवर्तन वृद्धि 27.83 से 5.01 प्रतिशत अधिक है। वर्ष 1991 से 2001 के दशक में यह दर 24.80 प्रतिशत रही है जो राज्य की जनसंख्या परिवर्तन वृद्धि 28.33 प्रतिशत से 3.53 प्रतिशत कम रही है। जिले की जनसंख्या परिवर्तन वृद्धि दर में कमी अच्छा संकेत है किन्तु इसे न केवल बनाए रखना है, अपितु इसमें और कमी करना अतिआवश्यक है। क्योंकि जिले के सीमित ससाधनों को ध्यान में रखते हुए जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाना अति आवश्यक हैं।

वर्ष	जनसंख्या	बून्दी में दशाब्दि परिवर्तन	राजस्थान में जनसंख्या वृद्धि (%) में	भारत में जनसंख्या वृद्धि (%) में
1901	171227	-	-	-
1911	218730	27.74	6.7	5.77
1921	187088	-14.48	-6.29	0.31
1931	216722	15.85	14.14	11.01
1941	249374	15.7	18.01	14.22
1951	280518	12.49	15.2	13.31
1961	338010	20.49	26.2	21.3
1971	449021	32.84	27.83	24.66
1981	612017	36.3	32.93	24.74
1991	770248	25.85	28.44	23.86
2001	961269	24.8	28.33	21.34

2001 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 961269 है जो राज्य की कुल जनसंख्या का 1.70 प्रतिशत है। जिसमें 18.60 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय तथा 81.40 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण है। पिछले दशक में जिले की कुल जनसंख्या 24.80 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जिले में 1991 से 2001 तक जनसंख्या में लगभग 4 गुना वृद्धि हुई है। यदि जनसंख्या इसी गति से बढ़ती रही तो जिले में 2021 में 1374682, 2031 में 1594371, 2041 में 1823168 और 2051 में 2061070 हो जाएगी। 2001 में सम्पूर्ण जिले में कार्यशील जनसंख्या 31.32 प्रतिशत है। कार्यशील जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत 35.07 नैनवाँ तहसील में है तथा सबसे कम 26.85 प्रतिशत केशवराय पाटन तहसील में है।

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार बून्दी जिले में सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या 100 प्रतिशत हिण्डोली तहसील में है तथा न्यूनतम प्रतिशत 17.19 इन्द्रगढ़ तहसील में है। बून्दी जिले की नगरीय जनसंख्या 6 छोटे नगरों में निवास करती है। कुल नगरीय जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत 51.81 बून्दी तहसील में मिलता है। जबकि नगरीय जनसंख्या का न्यूनतम प्रतिशत 8.48 नैनवाँ तहसील में है। हिण्डोली तहसील में कोई नगर नहीं होने के कारण यहाँ नगरीय जनसंख्या नहीं मिलती है। 2001 की जनगणना के अनुसार जिले में लिंगानुपात 908 है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह लिंगानुपात 909 और नगरीय क्षेत्रों में 905 है। जिले में सर्वाधिक लिंगानुपात 921 इन्द्रगढ़ तहसील में है तथा न्यूनतम लिंगानुपात 903 हिण्डोली तहसील में मिलता है। बून्दी जिले में सबसे तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर नैनवाँ तहसील में 27.99 प्रतिशत (2001) है जबकि सबसे कम जनसंख्या वृद्धि केशवराय पाटन की –32.92 प्रतिशत रही। केशवराय पाटन तहसील से नई तहसील इन्द्रगढ़ के बन जाने से केशवराय पाटन की जनसंख्या कम रह गई। जिले में सर्वाधिक दशकीय वृद्धि दर 1971–1981 में केशवराय पाटन की 52.80 प्रतिशत रही। 1981–1991 में दशक में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि दर बून्दी तहसील की रही थी।

जनसंख्या घनत्व

बून्दी जिले में तहसीलानुसार जनसंख्या घनत्व (1971-2001)

तहसील	1971	1981	1991	2001
बून्दी	84	111	146	183
हिण्डोली	71	91	113	141
नैनवाँ	75	99	116	144
के.पाटन	95	145	145	195
इन्द्रगढ़	0	0	0	169
बून्दी जिला	81	110	139	173

स्त्रोत : जिला जनगणना प्रतिवेदन, बून्दी

जिले में जनसंख्या घनत्व 173 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है जो राज्य के घनत्व का 165 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. से अधिक है। जिले के जनसंख्या घनत्व में निरंतर वृद्धि हो रही है। जिले में सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि 1991 से 2001 के दशक में हुई। सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व केशवराय पाटन में 195 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है तथा न्यूनतम जनसंख्या हिण्डोली तहसील में 141 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार बून्दी जिले की केशवराय पाटन तहसील में 195 व्यक्ति, बून्दी तहसील में 183 व्यक्ति, इन्द्रगढ़ में 169 व्यक्ति, नैनवाँ तहसील में 144 व्यक्ति तथा हिण्डोली तहसील में 141 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. घनत्व मिलता है।

सन् 1971 में सर्वाधिक जन घनत्व केशवराय पाटन तहसील का 95 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. तथा सबसे कम जनसंख्या घनत्व हिण्डोली तहसील का था 1981 में जिले में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व केशवराय पाटन तथा न्यूनतम हिण्डोली का क्रमशः 145 व 91 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. रहा। जिले में सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व केशवराय पाटन व बून्दी तहसील में यहाँ को अनुकूल भौगोलिक दशाओं उपजाऊ मिट्टी, उद्योग एवं शिक्षण स्थल तथा चम्बल की नहरों द्वारा सिंचित होने के कारण है।

लिंगानुपात

2001 की जनगणना के अनुसार बून्दी जिले में कुल जनसंख्या 961269 है। जिसमें से पुरूषों की संख्या 503827 और महिलाओं की संख्या 457442 है। प्रति हजार पुरूषों पर महिलाओं की संख्या लिंगानुपात कहलाती है। अतः 2001 की जनगणना के अनुसार जिले में प्रति हजार पुरूषों पर 908 महिलाएँ है अर्थात् जिले का लिंगानुपात 908 है। सन् 1991 में यह अनुपात 889 था। जिले में ग्रामीण क्षेत्र में लिंगानुपात 909 व नगरीय क्षेत्र में 905 है। जिले में सर्वाधिक लिंगानुपात 921 इन्द्रगढ़ तहसील में है तथा न्यूनतम लिंगानुपात 903 हिण्डोली तहसील में मिलता है।

1971 में जिले का लिंगानुपात 885 था जिसमें नगरीय लिंगानुपात 893 व ग्रामीण लिंगानुपात 885 था। अतः 1971 में जिले में 1000 पुरूषों पर 885 महिलाऐं थी वही 1981 में जिले का कुल लिंगानुपात 887 था जो बढ़कर 1991 में 889 तथा 2001 में 908 हो गया। अतः वतमान में जिले का लिंगानुपात बढ़ रहा है जो जिले के विकास के लिए सही है। 1901 से स्त्रियों की संख्या कम होती चली गई। सन् 1961 से 1971 के मध्य लिंगानुपात काफी कम हो गया था उसके बाद से लिंगानुपात में निरन्तर वृद्धि होती आ रही है।

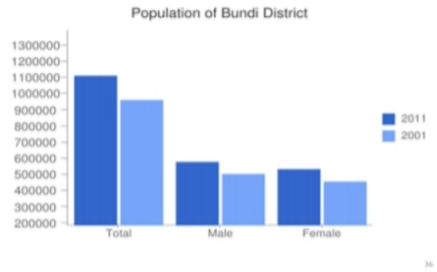

नगरीय एवं ग्रामीण जनसंख्या

भारत देश की भांति बून्दी भी गाँवों की अधिकता वाला जिला है। 2001 की जनगणना के अनुसार बून्दी जिले की कुल जनसंख्या 961269 है। जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 782338 है जो कुल जनसंख्या का 81.39 प्रतिशत है और नगरीय जनसंख्या 178931 है जो कुल जनसंख्या का 18. 61 प्रतिशत है। वर्ष 1991 में जिले में ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या क्रमशः 82.64 व 17.36 प्रतिशत थी। वर्ष 1991 से 2001 के दशक में जिले की ग्रामीण जनसंख्या में 1.24 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

सन् 2001 की जनगणना के अनुसार बून्दी जिले में सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या 100 प्रतिशत हिण्डोली तहसील में है तथा न्यूनतम प्रतिशत 17.19 इन्द्रगढ़ तहसील में है। बून्दी जिले की नगरीय जनसंख्या 6 छोटे नगरों में निवास करती है। कुल नगरीय जनसंख्या का सर्वाधिक

प्रतिशत 51.81 बून्दी तहसील में मिलता है। जबकि नगरीय जनसंख्या का न्यूनतम प्रतिशत 8.48 नैनवाँ तहसील में है। हिण्डोली तहसील में कोई नगर नहीं होने के कारण यहां नगरीय जनसंख्या नहीं मिलती है।

बून्दी जिले में सन् 1971 में ग्रामीण जनसंख्या 383473 थी जबकि नगरीय जनसंख्या 65548 थी। जिले में ग्रामीण व नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत क्रमशः 85.40 व 14.60 प्रतिशत था। जिसमें सर्वाधिक ग्रामीण जनसंख्या बून्दी तहसील में 33 प्रतिशत थी तथा सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या भी बून्दी तहसील की 52.62 प्रतिशत थी। सबसे कम ग्रामीण व नगरीय जनसंख्या नैनवाँ तहसील में क्रमशः 19.38 प्रतिशत व 11.99 प्रतिशत थी। 1981 में ग्रामीण जनसंख्या घटकर 82.99 प्रतिशत हो गई और नगरीय जनसंख्या बढ़कर 17.01 प्रतिश हो गई।

ग्रामीण जनसंख्या में निरन्तर गिरावट आ रही है। जबकि नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। 1971 से 2001 के मध्य ग्रामीण जनसंख्या में 4.01 प्रतिशत कमी दर्ज की गई। जबकि नगरीय जनसंख्या में 4.01 प्रतिशत वृद्धि हुई। प्राप्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि जिले में विकास की गति बढ़ी है लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं क्योंकि नगरों में कई प्रकार की मानवीय सुविधाएँ प्राप्त होती है जिसमें शिक्षा, चिकित्सा, यातायात, रोजगार आदि महत्वपूर्ण हैं।

साक्षरता

वर्ष 2001 की जनसंख्या के अनुसार बून्दी जिले की कुल जनसंख्या का 55.80 प्रतिशत भाग साक्षर था। जिले में स्त्री–पुरूष साक्षरता में काफी अंतर है। जिले के सभी वर्गों में अर्थात् नगरीय एवं ग्रामीण दोनों में पुरूषों की साक्षरता दर 72.17 प्रतिशत, महिला साक्षरता दर 37.76 प्रतिशत है। जिले के ग्रामीण क्षेत्र में पुरूष साक्षरता 68.99 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता दर 32.41 प्रतिशत है तथा नगरीय क्षेत्र में पुरूष साक्षरता 85.53 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता 60.15 प्रतिशत है।

जबकि 1971 में बून्दी जिले की पुरूष साक्षरता 24.48 प्रतिशत थी और महिला साक्षरता केवल 6.44 प्रतिशत ही थी। 1971 में जिले की कुल साक्षरता 16.01 प्रतिशत थी जो 2001 की तुलना में काफी कम थी। 1981 में जिले की साक्षरता बढ़कर 20.14 प्रतिशत, 1991 में 32.75 प्रतिशत जो वर्तमान 2001 तक बढ़कर 55.80 प्रतिशत हो गई।

बून्दी जिले में साक्षरता का प्रतिशत (1951 - 2001)

वर्ष	कुल साक्षरता	महिला साक्षरता	पुरूष साक्षरता
1951	6.11	1.65	10.18
1961	11.85	3.92	18.96
1971	16.01	6.44	24.48
1981	20.14	8.92	30.10
1991	32.75	9.39	40.65
2001	55.80	37.76	72.17

स्रोत : सेन्सस ऑफ इण्डिया, 2001

जिले में 1971 से 1981 के मध्य साक्षरता में वृद्धि 4.13 प्रतिशत, 1981 से 1991 के मध्य साक्षरता दर में वृद्धि 12.61 प्रतिशत तथा 1991 से 2001 के मध्य यह वृद्धि 23.05 प्रतिशत रही। इस तरह से ज्ञात होता है कि जिले में साक्षरता में लगातार वृद्धि हो रही है जो जिले के विकास के लिए अतिआवश्यक है। जिले में 1971 में महिला साक्षरता 6.44 प्रतिशत थी जो 2001 में बढ़कर 37.76 प्रतिशत हो गई। अतः इन तीन दशाब्दियों में महिला साक्षरता में 31.32 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इसी तरह पुरूष साक्षरता 1971 में 24.48 प्रतिशत तथा 2001 में 72.17 प्रतिशत दर्ज की गई। 1971 से 2001 के मध्य पुरूष साक्षरता में वृद्धि 47.69 प्रतिशत हुई। अर्थात् जिले में पुरूष साक्षरता में वृद्धि महिला साक्षरता दर से अधिक तीव्र है।

2001 में बून्दी जिले में साक्षरता का प्रतिशत 55.80 प्रतिशत है। जिसमें पुरूष साक्षरता प्रतिशत 72.17 है और महिला साक्षरता प्रतिशत 37.76 प्रतिशत है। जिले की इन्द्रगढ़ तहसील 61.59 प्रतिशत को छोड़कर कही भी साक्षरता का प्रतिशत 60 प्रतिशत से अधिक नहीं है। सबसे कम साक्षरता हिण्डोली तहसील में मिलती है।सर्वाधिक साक्षरता का प्रतिशत इन्द्रगढ़ तहसील में 61.59 है।

इससे स्पष्ट है कि जिले में साक्षरता का प्रतिशत निम्न है। अतः यथा संभव जिले के सभी भागों में अनिवार्य शिक्षा प्रारम्भ की जाए। जिले के गाँवों में साक्षरता का प्रचार होने से औसत व्यक्ति का जीवन स्तर ऊँचा उठेगा और वह अपने परिवार को सीमित करने का प्रयास करेगा। अतः जिले में शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों में विद्यालयों की संख्या में वृद्धि करने के साथ–साथ प्राढ़ शिक्षा केन्द्रों का विस्तार किया जाना चाहिए। जिले में साक्षरता का प्रसार करने हेतु प्राढ़ शिक्षा कार्यक्रम को आगे बढ़ाना चाहिए।

बून्दी जिले का जनांकिकीय इतिहास अत्यधिक विविधता लिये हुऐ है। वर्ष 1901 से 2001 तक बून्दी जिले की जनसंख्या में 5 गुना से अधिक वृद्धि हुई है। वृद्धि दर के अनुसार इस अवधि को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

- स्थिर जनसंख्या की अवधि :1901–1921
- धीमी गति से बढ़ती जनसंख्या :1921–1951
- तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या की अवधि :1951–2001

स्थिर जनसंख्या की अवधि :1901–1921 –

1901 में जिले की जनसंख्या 171227 थी जो 1911 में बढ़कर 218730 हो गई किन्तु प्रदेश में 1921 से पूर्व सूखा, अकाल, बाढ, महामारियों आदि प्राकृतिक प्रकोपों के कारण जिले की जनसंख्या 1921 में घटकर 187088 हो गई। इस दशक में 1911–1921 जनसंख्या की वृद्धि ऋणात्मक रही है।

धीमी गति से बढ़ती जनसंख्या :1921–1951 –

जिले में 1921 से 1951 कि अवधि के दौरान 1.5 लाख जनसंख्या की वृद्धि हुई है। 1921 के बाद कृषि विकास तथा स्वास्थ्य चिकित्सा सेवाओं में सुधार के कारण मृत्यु दर में तेजी से कमी आई। इस अवधि में धीमी गति से जनसंख्या वृद्धि हुई।

तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या की अवधि :1951–2011 –

1951 से 2001 की अवधि में जिले की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई। इस अवधि में 6.81 लाख जनसंख्या वृद्धि हुई और जिले की जनसंख्या 280518 से बढ़कर 961269 हो गई। तीव्र जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण चिकित्सा सेवाओं में विस्तार से जन स्वास्थ्य में सुधार एवं मृत्युदर में कमी के साथ–साथ जिले में औद्योगिक तथा कृषि विकास है।

जनगणना – 2011

जिला	कुल जनसंख्या	पुरूष	महिला	दशकीय वृद्धि दर	लिंगानुपात	घनत्व	साक्षरता	पुरूष	महिला
भारत	1,210,193,422	6,23,724,248	586,469,174	17.64	940	382	74.04	82.14	65.46
राजस्थान	68,621,012	35620086	33000926	21.44	926	201	67.06	80.51	52.66
बून्दी जिला	1,113,725	579385	534340	15.70	922	193	62.31	76.52	47.00

37

जनसंख्या नियंत्रण के सुझाव

- शिक्षा का प्रसार ।
- परिवार नियोजन की कानूनी अनिवार्यता ।
- नैतिक संयम ।
- विवाह योग्य आयु में वृद्धि ।
- मनोरंजन के सस्ते व सुलभ साधनों में वृद्धि ।
- विवेकहीन मातृत्व पर रोक ।
- सामाजिक सुरक्षा ।
- गर्भ निरोधक साधनों का प्रयोग ।
- जन चेतना का प्रसार ।

निष्कर्ष

भारत में जनसंख्या नीतियाँ ठीक से लागू नही हो पा रहीं है । बून्दी जिले में जनसंख्या प्रतिवर्ष तीव्र गति से बढ़ रही है। जिले में जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए विशेष उपायों की आवश्यकता है। तीव्र गति से बढ़ रही जनसंख्या से सभी चिंतित है क्योंकि जिस गति से जनसंख्या में वृद्धि हो रही है उस गति से आर्थिक विकास करना संभव नहीं है जो एक भयंकर चेतावनी है। यदि जनसख्या की इस तीव्र वृद्धि को रोका नहीं गया तो जिले में भोजन, जल, वस्त्र, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य और बेरोजगारी जैसी समस्याऐं विकराल रूप धारण कर लेंगी और जिले का सतत् विकास बाधित हो सकता है।

संदर्भ

- बंसल सुरेश चन्द (2011), नगरीय भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन ।
- भल्ला,लाजपतराय (2001) "राजस्थान का भूगोल " कुलदीप पब्लिकेषन्स,भगवान पथ मार्केट, चोड़ा रास्ता,जयपुर।
- लोढ़ा,आर.एम.एवं माहेष्वरी,दीपक (1991) "राजस्थान का भूगोल " हिमांषु पब्लिकेषन्स, उदयपुर, दिल्ली,।
- बघेला,हेतसिंह "राजस्थान के इतिहास की रूपरेखा ", कॉलेज बुक ड़िपो,त्रिपोलिया बाजार, जयपुर।
- जोषी,आर.एल. (2014) "नगरीय भूगोल " राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
- शर्मा व शर्मा (2011), राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन ।
- सिंह व मौर्य (2011), नगरीय भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
- खत्री हरिश कुमार (2012), नगरीय भूगोल, कैलाश पुस्तक सदन, भौपाल ।
- मास्टर प्लान : बून्दी ।
- भारत, राजस्थान, बून्दी : जनगणना 2011 तक ।
- विभिन्न वेब–साइट।